VAIRAGYA SHATAKAM
(IN HINDI)
वैराग्य शतकम्
राजा भर्तहरि द्वारा रचित १०० श्लोकों का भावार्थ

वैराग्य शतकम

VAIRAGYA SHATAKAM

(IN HINDI)

राजा भर्तहरि द्वारा रचित १०० श्लोकों का भावार्थ

वैराग्य शतकम

राजा भर्तहरि द्‌वारा रचित १०० श्लोकों का भावार्थ

२००० वर्षों पूर्व भारत की आध्यात्मिक अमूल्य निधि

प्रस्तुतकर्ता - वी. सी.सिंह
(Presented by – V.C.Singh)

परिचय

पढ़ने और समझने वाले को पठन - पाठन से जो खुशी मिलती है, उसे शब्दों में लिखकर व्यक्त नहीं किया जा सकता। शहद की मिठास क्या होती है, मिश्री की मिठास क्या होती है, यह तो खाने वाले ही जानते हैं। यह अनुभव की बात है। इसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। उस मिठास को सिर्फ दिल ही जानता है। दुःख की बात है कि दिल के पास ज़बान नहीं होती और ज़बान के पास दिल नहीं होता।

प्रत्येक शिक्षित सज्जन को इस पुस्तक - "वैराग्य शतकम्" को प्रतिदिन या सप्ताह में एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि वह इस अनित्य संसार की असारता को समझकर, कामुक इच्छाओं को त्याग कर, शुभ और निष्काम कर्मों पर ध्यान केंद्रित कर सके और अपने भविष्य के स्वर्णिम जीवन की आशा कर सके। मौत सामने आने वाली है। उज्ज्वल जीवन की योजना , इहलोक में सात्विक जीवन जियें और परलोक के मृत्यु की यात्रा के लिए उपयोगी वस्तुएं एकत्रित करें और सदा जाग्रत रहें ।

.....इस वैराग्य शतकम् के बाद के कई अनुवाद हिंदी और अन्य भाषाओं में हुए, अब भी उपलब्ध हैं। लेकिन उनके अनुवादकों ने पर्याप्त परेशानी उठानी नहीं चाही। इसीलिए हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति इस वेदान्त विषय को कंठस्थ करके भी ठीक से नहीं समझ पाते हैं। यहां वैराग्य शतकम् के १०० श्लोकों के भावार्थ को ही प्रस्तुत नहीं किया गया। केवल उन श्लोकों का हिंदी में भावार्थ है, श्लोक नहीं।

टीका और अनुवाद इसलिए किया गया है ताकि कम पढ़े-लिखे लोग भी मोक्ष का मार्ग बताने वाले इस विषय को समझ सकें और लाभ उठा सकें। यथार्थ श्लोकों का अध्ययन सारहीन हो जाता है , जब उन्हें पूरी तरह ना समझ सकें तो। इस कारण इसकी भाषा भी सरल एवं पूर्ण अर्थपूर्ण है, हृदयस्पर्शी विषयों को सरल सामान्य शब्दों में समझाया गया है।

अध्यात्म तत्त्व के विद्यार्थियों और जिज्ञासुओं को पहली निष्ठा बनानी चाहिए श्रुति प्रमाण। वेद हमारे प्रमाण हैं। वेद जो बात कह दी वह अकाट्य सत्य है। हमारी बुद्धि चाहे उसे स्वीकार करे या चाहे न स्वीकार करे। यदि बुद्धि

स्वीकार न करती हो तो और चिंतन करें , बार बार मनन करें , सत्य तत्त्व का अन्वेषण करें। श्रुति हमारी प्रमाण है, इसका आधार कभी ना छोड़ें ।

वेद प्रामाणित मुख्य रूप से तीन सिद्धांत को अपने जीवन में आप पूरी तरह से बिठा लें। इसको पचा सकते हैं तो पचा लें। सब का सार यही होगा। इसी के आधार पर पूरा शास्त्र दर्शन और चिंतन अवलम्बित है।

पहला और प्रमुख सिद्धांत यह है की जितना कुछ भी नाम रूपात्मक जगत दिखाई पढ़ रहा है , ये सब का सब अनित्य , क्षणभंगुर और मिथ्या है। प्राणी और मनुष्य इस स्थूल संसार का नमूना है। हमारा स्थूल शरीर इसी पांच तत्त्व के जगत की देन है।

इसलिए जगत के अनित्यता का एक साधारण और सर्व सम्मत उदाहरण देते है। क्या आज से १०० वर्षों पहले , आप हम , सभी लोगों में कोई धरती पर थे ? क्या आज से १०० वर्षों बाद हमसे से कोई इस धरती पर दिखेगा या जीवित रहेगा ? इसका विश्वव्यापक सही उत्तर होगा की , कोई नहीं जीवित रहेगा , इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य /प्राणियों का शरीर और यह दृश्य प्रपंच जगत अनित्य और अशाश्वत है।

आप मान चुके हैं ना कि इसमें तो कोई दो राय नहीं हैं ? ये पहला सिद्धांत है , पूरी तरह से ह्रदय में बैठ जाए , आप बहुत आगे बढ़ जाएंगे। जो दृश्य है वो अल्प होगा ,विनाशशील है , और साथ ही साथ दुःख भी देगा। इससे हमारी थोड़ी निवृति होगी। यह पहला अटल सिद्धांत है।

अब दूसरा सिद्धांत है - अगर ये सारा का सारा नाम रूपात्मक जगत अनित्य है तो, सत्य क्या है ? तो मेरा अपना स्वरूप ही , मेरी आत्मा ही परम सत्य है। मैं बिल्कुल निस्संदेह रूप से शुद्ध , बुद्ध , मुक्त आत्मा हूँ। मैं चेतन स्वरूप हूँ। इसमें निष्ठा बनें। इसका अर्थ यह है की सामान्यता आप की निष्ठा बनी हुई है कि यह मेरा शरीर है।आत्मा , परमात्मा क्या हैं ? ये मैं नहीं जानता हूँ।

अगर यह तुम्हारा शरीर है , तुम इसके मालिक हो तो क्या इसे सदा जवान बनाये रख सकते हो ? बीमार मत होने दो , मरने मत दो। क्या ऐसा होना संभव है ? कदापि नहीं , क्योंकि हमारा शरीर नाशवान है , प्रकृति का अंश है। और हम आत्म स्वरूप , अविनाशी भगवान के अंश है। ये जड़ और चेतन की गांठ ही बंधन का कारण है , अन्यथा हम सदा मुक्त हैं। निराकार जीवात्मा जब

साकार जीवात्मा बन जाता है , तब जगत में आकर साकार जीवात्मा कहलाता है कि यह मेरा शरीर है, ऐसे मानने लग जाता है।

आश्चर्य की बात यह है , मृत्यु के बाद प्रकृति / संसार , अपना अंश , दिया हुआ स्थूल शरीर , जीवात्मा के पास से तो वापस ले लेती है। फिर भी यह निर्लज जीवात्मा , अपने परम अंशी , परमात्मा / भगवान के पास नहीं जाता। उसे इस दुःखालय स्वरूप इस स्थूल संसार से ही घनिष्ठ प्रेम हो चुका है। जिसके कारणवश सदा जन्म और मरण के , ८४ लाख योनियों के चक्र में ही , कोल्हू के बैल की तरह घूमते रहता है।

हमारा शरीर हर पल निरंतर नाश की ओर जा रहा है। जब हम जन्मे थे तब जीतनी आयु थी , क्या अब भी हमारी उतनी ही आयु है ? नहीं , हर पल हमारी आयु क्षीण होते जा रही है। अब , जब यह पुस्तक आपके हाथ में हैं , आपने पड़ना शुरू किया , तब से इस पुस्तक के समाप्ति पर भी क्या उतनी ही आयु रहेगी ? नहीं , अब से लेकट इस पुस्तक के पढ़ने की समाप्ति पर आप की आयु घट जायेगी , आयु क्षीण होते जायेगी।

कहने का तात्पर्य यह है कि यह स्थूल शरीर का चोला हम नहीं हैं , बल्कि इस शरीर को धारण करने वाले , शरीरी हम हैं, हम शरीर नहीं है , हम शरीरवाले है । क्योंकि शरीर अलग और हम अलग हैं। जीवात्मा और शरीर दोनों , अलग अलग है , एक नहीं हैं। हम स्वयं , शुद्ध चेतन आत्मा , इसके चालाक हैं। तो यह मेरा शरीर कहने वाला जो चैतन्य तत्त्व है , वही मैं चैतन्य रूप नित्य सत्य ज्योति स्वरूप आत्मा , मैं ही हूँ , ऐसी निष्ठा बनानी चाहिए , हर एक को।

जैसे किसी पद नियुक्ति परीक्षा में प्रश्नपत्र का उत्तर लिखकर पेन (pen) लिखने वाले को I A S - collector बना देती है , पर वह स्वयं पेन कलेक्टर नहीं बनती। ठीक ऐसे ही , यह निष्ठा बना लेनी चाहिए की मैं शरीर नहीं हूँ , ना यह शरीर मेरा है , ना मैं इस नाशवान शरीर का हूँ। मैं तो नित्य शुद्ध मुक्त आत्मा हूँ।यह शरीर मेरा उपकरण मात्र ही है।यह शरीर मेरा वाहक है , मेरी मंज़िल तो परम पिता परमात्मा , भगवन की प्राप्ति का माध्यम है। भगवान तक पहुँचने का शरीर एक वाहन मात्र है। शरीर भगवन नहीं है।

इस निष्ठा के परिपक्व होने पर तीसरा सिद्धांत जो सामने आएगा , ये शरीर भी नाम रूप के अंतर आ जाता है। मैं शरीर नहीं , मैं सर्वव्यापक आत्मा हूँ , जैसे परमेश्वर सनातन और सर्व व्यापक हैं वैसे ही मेरी आत्मा भी सनातन , नित्य और सर्वव्यापक है। क्योंकि हम सभी जीव उसी एक परमात्मा के , भगवान के अंश हैं;

"ईश्वर अंश जीव अविनाशी
अजर -अमल सदा सुख राशि" - (राम चरित मानस) .

ये ही तीन सिद्धांत मुख्य हैं। जिसका विस्तृत वर्णन गीता , उपनिषद और वेदांत में किया गया है।प्रक्रिया में भेद है पर पुरे शास्त्र का भावार्थ इन तीन सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है। इसका निष्कर्ष यही है की नाम , रूपात्मक दृश्य जगत झूठा हैं, अनित्य है। ये जगत भासमान है , विद्यमान नहीं है। केवल मेरी आत्मा ही सत्य है।

हमारी साधना के मार्ग में ये पांच प्रतिबंध वर्तमान में हमारे भीतर आ जाते हैं। वे हैं ;
१. विषयासक्ति : शब्द , स्पर्श , रूप , रस और गंध; पांच तत्वों का समावेश ।
२. मंद प्रज्ञां।
३. कुतर्क भावना।
४. विपरीत अवधारणा / उल्टी समझ : जैसा है , वैसा ना समझना।
५. दुराग्रह : ऐसा आग्रह जो हमारे जीवन को दुःख दे दें।

उपरोक्त पांच प्रतिबंधों में से सर्वप्रथम और मुख्य प्रतिबंध - विषयासक्ति है। इस पर हम कैसे विजय प्राप्त करें या इस प्रतिबंध को कैसे पार करें, इस पर एक विशेष और बहुत उपयोगी ग्रन्थ है , जिसका नाम है - वैराग्य शतकम् या वैराग्य शतक। इस ग्रन्थ में वैराग्य को बढ़ाने वाले सौ श्लोक हैं ।

यह ग्रन्थ वैराग्य षट्कम , उज्जैनी के महाराजा , जिनका का नाम है राजा भर्तहरी, इनके द्वारा रचित यह महाग्रंथ वैराग्य षट्कम है। राजा भर्तहरि के मुख्यतः तीन ग्रंथों की रचना की है ;

१. नीतिशतकम् : यह राज्य कार्य और शासन व्यवस्था के विषय में है। यह राजसिक , रज प्रधान ग्रंथ है। यह आध्यात्मिक क्षेत्र के विद्यार्थियों को उतना उपयोगी नहीं है।

२. श्रृंगार शतकम् : इसमें नारी के रूप सौंदर्य, लावण्य का वर्णन है। यह तामसिक , तम प्रधान ग्रंथ है।यह युवा - गृहस्थियों के सुख -आनंद के विषय का एक रोचक ग्रन्थ है। आध्यात्मिक और सात्विक मार्ग के पथिकों के लिए यह भी उतना महत्वपूर्ण और उपयोगी नहीं है।

३. वैराग्य शतकम् : यह उपरोक्त दोनों परिस्थितियों से जब मनुष्य उपराम हो जाता है , तब मनुष्य के जीवन में स्वाभाविकतः इस तीसरे विषय - “वैराग्य” स्थिति में पदार्पण होता है। यह सात्विक - सत्व प्रधान ग्रन्थ है, क्योंकि यह भगवान द्वारा प्रवक्त है। । सभी प्रकार के मनुष्यों के लिए बहुत उपयोगी ग्रन्थ है, विशेषकर आध्यात्मिक और सात्विक प्रवृति के जिज्ञासुओं , विद्यार्थियों और भागवत परायण लोगों के लिए बहुत ही उपयोगी और मुक्ति प्रदत्त ग्रन्थ है।

इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा की जाए , उतनी कम ही है। । क्योंकि इस ग्रन्थ के अध्ययन से मनुष्य जाति का कल्याण हो जाता है और वह अनंत काल से चलते आ रहे इस संसार के जन्म - मृत्यु के बंधन से छूट कर उच्च -पद मुक्ति को पा जाता है , परम गति को प्राप्त हो जाता है।

और एक बात यहाँ विशेष रूप से स्पष्ट की जाती है कि इस पुस्तक में जहां - कहाँ एक युवती - नारी - महिला के विषय में , उसके गुण - अवगुणों आदि का वर्णन किया गया है , वह एक देशीय है, एक विशेष नारी - वर्ग के अंतर्गत है । मतलब ; एक प्रकार की हीन महिला - नारी के संदर्भ में ही है। सामान्य सभी महिलाओं एवं मुख्य स्त्री जाति के विषय में नहीं कहा गया है। इसे सदा सर्वदा पाठक गण याद रखें।

यह सभी जानते है कि हमारे भारत देश में प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेकानेक महान पतिव्रता स्त्रियां हुई है। जैसे - सती सावित्री , सती अनुसूया , सती सीता , और द्रौपदी इत्यादि मुख्य रूप से विख्यात हैं।

हमें उम्मीद है की पाठक गण इस - “वैराग्य शतकम्” ; ज्ञान , वैराग्य और भक्ति से ओत - प्रोत प्रधान ऐतिहासिक , आध्यत्मिक एवं मनोवैज्ञानिक ग्रन्थ को पढ़कर यथा उचित लाभ उठाएंगे। यथार्थ रूप से अपने जीवन में ढाल लेंगें। अपने व्यावहारिक जीवन में इसके महान शिक्षा का यथासंभव उपयोग करेंगे। जिसके शुभ प्रभाव से आप सभी आदरणीय पाठकगणों का जीवन आनंदमय और उत्साह से भरपूर हो जाएगा। मृत्यु भय से निवृति , बुढ़ापे को चुनौती और उज्वल भविष्य जीवन की आकांक्षा स्वतः ही उभरने लगेगी।

----- सम्पादक

दिनांक : १५ मई -२०२४ - बुधवार
स्थल : हैदराबाद , तेलंगाना - भारत

वैराग्य शतकम

कोई दो हजार वर्ष पूर्व, राजपूताना के मालवा में, उज्जयिनी के बड़े नगर में, जो अब उज्जयिनी के नाम से जाना जाता है, एक उच्च कोटि के विद्वान, नीतिज्ञ, ज्ञानी-...धर्मनिष्ठ, लोक-प्रेमी, सर्वगुण संपन्न नरपति थे। एक महान राजा राज्य करते थे । उनका शुभ नाम महाराज भर्तहरि था। वे अपने देशवासियों से अपने बच्चों से भी अधिक प्रेम करते थे और उनके कल्याण में दिन-रात लगे रहते थे।

आपके न्याय और जनहित की यह चर्चा पूरे भारत में फैल गयी थी। यही कारण है कि अन्य कई राज्य से बड़ी संख्या में लोग भी अपना देश छोड़कर इनके राज्य में बस गये। इससे उज्जयिनी की सुंदरता और समृद्धि आज के महानगरों जैसे - कोलकाता और मुंबई जैसी वैभवशाली हो गई।

महाराज भर्तृहरि के छोटे भाई का नाम था विक्रम , बाद में उन्हीं को हम लोग विक्रमादित्य के नाम से जानते हैं और उन्हीं के द्वारा भारत में विक्रम संवत चलाया गया है। उसी समय एक महान योगी संत हुए जिनका नाम था , योगी मत्स्येन्द्रनाथ। मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य हुए , बहुत प्रसिद्ध - गुरु गोरखनाथ। जिनके नाम पर उत्तर प्रदेश में एक जिला हुआ - गोरखपुर।

इसी श्रृंखला के आज , श्रीमान योगी आदित्यनाथ जी महाराज भी हैं जो नाथ सम्प्रदाय के उज्वल दीपक है और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। यह हमारे लिए बड़ी ही गौरव की बात है।

बाद में इन्ही गुरु गोरखनाथ के शिष्य हुए - राजा भर्तृहरि।इन्होने अपना सारा राजकाज अपने छोटे भाई - विक्रमादित्य को सौंप कर जंगल में निकल गए और महा योगी हो गए।

. . . .

महाराजा भर्तृहरि द्वारा लिखित इस मूल "वैराग्य शतक" की रचना संभवतः 2000 वर्ष से भी पहले हुई थी। और तभी से हमारे हिन्दू धर्म में विक्रम संवत का भी उदय हुआ। जिसकी शुरुआत राजा विक्रमादित्य ने की थी, जो महाराजा भर्तृहरि के छोटे भाई थे। और उन्हीं राजा विक्रमादित्य के नाम पर विक्रम संवत काल गणना का शुभारंभ हुआ। जो हमारे भारत देश के लिए बहुत ही गर्व की बात है।

राजा और उसके राज्य की प्रजा के अनुसार प्रजा भी राजा की तरह ही धार्मिक होती थी। लोगों ने नियमों के अनुसार अपनी-अपनी धार्मिक प्रथाओं का पालन किया। प्रजा को कोई दुःख, संकट या किसी वस्तु का अभाव नहीं था। चोरी, लूटपाट. लूट, अत्याचार, अनाचार और व्यभिचार का तो नामोनिशान ही मिट गया था। शाही दरबार में ऐसा मामला शायद ही कभी आया हो।

महाराज अपराधियों को कड़ी शिक्षा देते थे, ताकि भविष्य में लोग अपराध और पाप करने से दूर रहें। महाराज न्याय, नीति और धर्म का पालन करने वालों पर दयालु थे; वह दुष्टों और अन्यायियों के प्रति समान रूप से कठोर थे ।

उनके राज्य में शेर और बकरियाँ एक ही घाट पर पानी पीते थे। कोई किसी की आंख में आंख डालकर नहीं देख सकता था. निर्बल और बलवान सभी अपनी-अपनी धुन में मस्त थे। उस समय किसी ने जबरदस्ती प्रजा को राजा की भक्ति का पाठ नहीं पढ़ाया। प्राणी प्रसन्न होकर प्रजा स्वयं राजा को अपना पिता मानती थी और उनके प्रति अटूट श्रद्धा रखती थी।

महाराजा भर्तृहरि ने दो-तीन शादियाँ की थीं । फिर भी महाराजा किसी और एक देश की अनोखी रूप, स्वप्न, परम-सुन्दरी, रतिमानन्मादिनी, मुनि मनमोहिनी, अप्सराभास , एक शर्मीली राजकुमारी से शादी की। उस नई रानी का नाम पिंगला था। रानी पिंगला के असाधारण सौन्दर्य के कारण महाराजा उसके सौन्दर्य पर इतने मोहित हो गये कि उन्होंने अपना ज्ञान, बुद्धि, विवेक , राज कार्य और विचारशीलता त्याग दी और स्वयं को रानी को बेच दिया - उसके दास बन गये।

महारानी पिंगला जो भी चाहती थी, वह महाराजा से करवा लेती थी। राजा बिना कुछ सोचे, बिना आगे-पीछे देखे, आँखें बंद करके रानी पिंगला की इच्छा का पालन करते थे। उन दिनों महाराज एक सच्चे अंधभक्त महिला बन गये थे।

रानी पिंगला ने ऐसा जादू किया था कि महाराज अपनी सुध-बुध खो बैठे और पूरी शक्ति से उसके दास बन गये।

स्त्री का गुलाम बनना अच्छा नहीं है। औरत का गुलाम बनना ठीक नहीं, परस्त नहीं होना चाहिए। महिलाओं द्वारा नियंत्रित होना, विनाश के बीज बोना है। लेकिन इन मोहिनियों के आगे लगभग हर कोई अपना दिलो - दिमाग खो बैठता है। महाराजा ही को दोष क्यों दिया जाना चाहिए ?

जब बड़े-बड़े योगेश्वर-मुनीश्वर मोहिनी जाल में फँसकर अपनी बुद्धि खो बैठे।ऐसे कौन योगीजन, संत , महात्मा हुए हैं जिन्होंने कामुक महिलाओं की मोहक शक्ति के सामने हार नहीं मानी है ? उनके मोहन मंत्र से कौन पागल नहीं हो गए मोहिनी की माया के शिकार कौन नहीं हुए ? परम योगीश्वर, शिवजी तक , मोहिनी के रूप में के सामने अपने आप को खो बैठे, चमक-दमक और मस्ती में पागल हो गए।औरों की तो बात ही क्या ? बाकी सब तो तालाब की छोटी छोटी मछलियां हैं।

यह तो सर्व विदित कि महर्षि विश्वामित्र जैसे महान ऋषि ने मेनका के जाल में फंसकर अपनी तपस्या भंग करली थी। मरीचि और श्रृंगी जैसे महर्षियों ने उनकी मंत्रमुग्ध सुंदरता के कारण अपनी इंद्रियाँ खो दीं और तपस्या छोड़ दी। फिर आम लोगों की बात ही क्या है ? दुनिया को हराने वाले बड़े-बड़े योद्धा भी खूबसूरत महिलाओं के सामने कायर बन जाते हैं।

देखो ! भंवरा पत्थर के समान दृढ़ बम्बू वृक्ष में , आसानी से छेद कर अपना घर बना लेता है। परन्तु , वही भंवरा , मुलायम , कोमल - सुन्दर कमल के नाज़ुक फूल में भोगवृत्ति में फंसकर उसी में लिप्त हो जाता है। उसके लिए उस कोमल कमल को छेद कर बाहर निकल आना कौन सी बड़ी बात है ? पर वह कमल को छेद कर बाहर नहीं आ सकता , प्रेम -मोह में फंसने के कारण।

गर्दन पर बिखरे बालों वाला करलुमुखी सिंह , अत्यधिक मतवाला हाथी और साथ ही बुद्धिमान और बहादुर पुरुष, महिलाओं के सामने बेहद कायर हो जाते हैं। ईश्वर ने भी स्त्रियों के प्रति पक्षपात किया है। उसने उन्हें असाधारण क्षमताएँ दी हैं। उसी क्षमता से, वे मनुष्यों को उसी प्रकार अपने वश में कर लेते हैं जैसे मनुष्य मवेशियों, घोड़ों, घोड़ियों और अन्य जानवरों को वश में कर लेते हैं।

जो काम बड़े-बड़े पारखी अपनी वक्तृत्व कला से नहीं कर पाते, उसे यह खूबसूरत महिला अपने एक व्यंग्य से पूरा कर देती है। उनकी व्यंग्यात्मक शब्दों के प्रयोग

से बड़े-बड़े युद्ध जीतने वाले और कभी हार का सामना न करने वाले योद्धा स्तब्ध हो जाते हैं - भेड़-बकरियों की तरह मोहक स्त्री के वश में हो जाते हैं।

यह मोहक महिला आंखों से हत्या कर देती है और अपनी मीठी बातों और भावों से दिल चुरा लेती है। वह अपनी नाज़ और नखरों से दिल को मोह लेती है। छोटी-मोटी कामिनियों का तो जिक्र ही नहीं - यह सुन्दर स्त्री हवा और राख का सेवन करने वाले महापुरुषों को भी मोहित कर लेती है। इसीलिए लोग उन्हें मुनि मनमोहिनी भी कहते हैं।

नारी प्रेमी रूपी हिरण को बांधने के लिए मजबूत रस्सी है और हृदय रूपी मतवाले गजराज को अपने बंधन में फंसाए रखने के लिए मजबूत जंजीर है। भले ही वह कमजोर है, वह मजबूत है; गाय होते हुए भी वह बाघ है; वह कोमलांगी होते हुए भी वज्रांगी है और वह निर्मला है तो भी कुमला है।

वह अपने पति या प्रेमी को अपने वश में कर लेती है। जब वह उनके वश में हो जाता है तो उसका ज्ञान व्यर्थ हो जाता है। एक सम्मानहीन और अज्ञानी पति अपनी पत्नी के सामने मूक जानवर की तरह रहता है । उसे अपनी पत्नी की बात माननी पड़ती है, परंतु उसके कुकर्मों को देखकर भी कुछ नहीं बोलता; क्योंकि महिलाएं अपने प्रेमी को कठपुतली की तरह बनाने की ताकत रखती हैं।

जिस प्रकार महिलाएं लाख के रंग को जीरे के साथ मिलाकर पैरों पर लगाती हैं; इसी प्रकार वह अपने प्रशंसक या प्रेमी को भी अपने चरणों में रख देती है। परंतु जो लोग पूरे मन से इन जादू-टोना में लिप्त रहते हैं, जो इन पर पूरा विश्वास करते हैं और जो इनके बुरे इरादों का पालन करते हैं, उन्हें कष्ट भोगना पड़ता है, धोखा खाना पड़ता है और अंत में पछताना पड़ता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, इसलिए इनका संघ - सेवन बड़ी सावधानी से करना चाहिए।

क्योंकि यदि मनुष्य इनसे दूर रहते हैं तो इन्हें कोई फल नहीं मिलता है और यदि ये इनके संपर्क में रहते हैं तो ये पूर्ण विनाश का कारण बन जातीं हैं। जो पुरुष स्त्रियों के गुलाम बन जाते हैं, स्त्रियाँ जिन्हें अपने वश में कर लेते हैं, जो उनकी मान्यताओं पर चलते हैं, उन्हें कष्ट भोगना पड़ता है और वे उन्हें खूब नचाते हैं और जब वे स्वतंत्र हो जाते हैं तो जितना चाहें उतना मनमानी और दुष्कर्म करते हैं।

स्त्रियों के साथ अधिक सहवास नहीं करना चाहिए; क्योंकि वह उन पुरुषों के साथ खेलती हैं। जो बहुत अधिक आसक्त होते हैं, जैसे पंख उखाड़े हुए कौए की तरह उनकी गति हो जाती है। यद्यपि महाराज भर्तृहरि असाधारण विद्वान एवं

बुद्धिमान थे; परंतु भविष्य के वश में होने के कारण उन्होंने शास्त्रों की ओर ध्यान नहीं दिया और रानी पिंगला को अपने सिर पर बिठा लिया। उसकी हर बात मानने लगे और हर काम उसकी इच्छा अनुसार करने लगे ।

परिणाम यह हुआ कि उसने महाराज को अपने ऊपर पूरी तरह आसक्त पाया, उनके साथ एक खिलौने की तरह व्यवहार किया और उन्हें अपनी इच्छानुसार नचाना शुरू कर दिया। वह निडर हो गई और दुष्कर्म करने पर उतारू हो गई। वह क्या करने लगी, उसका परिणाम क्या हुआ, ये सब बातें बाद में पाठकों को पता चलेंगी। यहां हमें यह सोचना होगा कि महाराज भृतहरि जैसे चतुर शिरोमणि और विद्वान राजा ने ऐसा अवसर क्यों दिया ?

पाठक ! जैसा भविष्य बनता है मनुष्य की बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है। यदि महाराज भर्तृहरि की बुद्धि मारी न गयी होती तो वे पिंगला के हाथ की कठपुतली न बनते; तो...पिंगला को व्यभिचारिणी बनने का मौका कैसे मिलता ? अपने प्यारे भाई विक्रम से अलग होने पर उनको जीवन में कैसा महसूस हुआ होगा?

अन्त में अपनी प्रियतमा के कुकर्मों को जानकर महाराज को कैसी घृणा हुई होगी और वे राजपाट त्याग कर एक आदर्श योगी राजा कैसे बने ? ऐसा कहा जाता है कि ईश्वर की इच्छा के बिना इस संसार में एक पत्ता भी नहीं हिलता।

परन्तु भगवान जगदीश जो कुछ भी करते हैं, प्राणियों के कल्याण के लिये ही करते हैं; इसके बारे में कोई संदेह नहीं है। भगवान जगदीश की इच्छा के कारण, कई रानियों के होने के बावजूद, महाराज ने पिंगला से विवाह किया। भगवान की इच्छा से उन्होंने अपना सारा ज्ञान और बुद्धि फैला दी और रानी के क्रीतदास बन गये। यह महाराजा का बहुत बड़ा उपकार था। इतनी अच्छी बात हुई, जिसके मुकाबले... क्या इस दुनिया में नाम अमर रहता है? उनकी कीर्ति अनन्त होती ! क्या वह सर्वोच्च पद, जो उन्होंने प्राप्त किया है, प्राप्त कर सकते थे ?

यह कहना होगा कि महाराज और गोस्वामी तुलसीदासजी दोनों ने केवल इसलिए त्याग प्राप्त किया क्योंकि वे कामुक और स्त्री-वांछित थे। यह सच साबित हुआ कि अच्छाई बुराई से आती है और ईश्वर जो कुछ भी करता है, मनुष्य की भलाई के लिए ही करता है।

विष वृक्ष से अमृत फल की उत्पत्ति हुई। गोस्वामी तुलसीदास जी से मिलती-जुलती एक घटना घटी। गोस्वामी जी भी स्त्री के कारण वैराग्य को प्राप्त हुए। और महाराज भर्तृहरि जी भी स्त्रियों के कारण दुखी और वैराग्य प्रवर्त हो गये। हाँ , दोनों घटनाओं में थोड़ अंतर अवश्य है। पहले भर्तृहरि

महाराज की घटना घटी फिर गोस्वामी तुलसीदास जी की घटना घटी। तुलसीदास जी को पतिव्रता पत्नी ने वैराग्य का मार्ग दिखाया ; जबकि महाराज ने स्वयं ही , नई पत्नी के दुश्चरित्र से वैराग्य का आलिंगन किया।

पिंगला उसके पति का जीवन नष्ट कर देती है, जो उसे उसकी सारी खुशियाँ देता है, और यहाँ तक कि अपने देवर को भी मरवाने की कोशिश करती है। एक स्वार्थी स्त्री अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को भी मारने को तैयार हो जाती है। महिलाओं की करतूतों पर कहां तक बात करें ? गुस्से में आकर वह अपने अजन्मे बेटे को भी पेट में ही मार डालने का साहस कर सकती है । वह अपने गर्भ में पल रहे बेटे को भी मार डालती है।

महाराज भर्तहरि रानी पिंगला पर अपनी जान तक न्योछावर कर देते थे, चौबीस घंटे उनकी देखभाल करते थे। रात्रि में महारानी - यदि दिन को रात कहती तो महाराज को भी यही कहना पडत था । वे हर तरह से उसकी आज्ञा मानने और उससे सहमत होने को तैयार थे।

महाराज भर्तहरि में कोई दोष नहीं था। वह पूर्णतया विद्वान, बलवान, बहादुर और कुशल व्यक्ति थे ; लेकिन बाहर से पिंगला रानी महाराजा से प्रेम करने का दिखावा करती थी और अन्दर से उनके प्रति उदासीन रहती थी और एक नीच व्यक्ति से प्रेम करती थी। रानी जितनी सुंदर थी, उतनी ही चालाक और धोखेबाज थी।

वह ऊपर से गोरी और अंदर से काली, ऊपर से सुंदर और अंदर से कुरूप, ऊपर से सती और भीतर असती थी। सार्वजनिक निंदा और कुछ ताना-बाना सुनने के कारण उसने एक घृणित और बेईमान अस्तबल निरीक्षक के साथ अवैध संबंध स्थापित कर लिया था।

यह कलंक काफी समय तक छिपा रहा. इंसान अपने पापों को कितना भी छुपाए, एक न एक दिन वो सामने आ ही जाते हैं; एक ना एक दिन दुनिया को उनके बारे में पता चल ही जाता है।

अग्नि ठंडी हो जाए, चंद्रमा गरम हो जाए, बैरी जगत हितकारी हो जाए; अत: स्त्रियों की पवित्रता पर विश्वास नहीं करना चाहिए। स्त्रियों की मीठी बातें नहीं भूलनी चाहिए। उनकी जैसी चीजें हैं, वैसा ही दिल है। महिलाएं खूबसूरत चेहरों के साथ मुस्कुराती हैं, आकर्षक बातें करती हैं और तेज दिमाग से हमला करती हैं। उनके होठों में शहद और दिलों में जहर भरा हुआ होता है।

महाराज के भाई विक्रमादित्य ने अपने बड़े भाई भर्तृहरि महाराज को बहुत समझाया। रानी पिंगला के अस्तबल दरोगा के साथ अवैध संबंधों के बारे में जानकारी दी। लेकिन महाराज पिंगला के अंधे प्रेम और मोह में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें अपने भाई की एक भी बात पर विश्वास नहीं हुआ। और इसके विपरीत जे पिंगला के प्रभाव से वह विक्रमादित्य पर ही क्रोध करने लगे ।

राजकुमार-विक्रमादित्य को इससे सफलता की कोई संभावना नहीं दिखी, तब उन्होंने अपने मन में महसूस किया कि समय आने तक कोई काम नहीं होता; समय आने पर भाई की आँखें स्वयं खुल जायेंगी; उस समय चुप रहना ही उचित है।

ऐसा कहा गया है कि रानी पिंगला बहुत बड़ी चालबाज थी। वह पहले से ही जानती थी कि राजा को मेरे दुष्कर्मों, मेरे पाप कर्मों के बारे में पता चल गया है। इसलिए उसने पहले से ही चाल चलना शुरू कर दिया। वह महाराज के प्रति पहले से भी अधिक प्रेम दिखाने लगी। जब उसे अच्छी तरह मालूम हो गया कि महाराज के मन में उसके प्रति रत्ती भर भी द्वेष नहीं है और वह उस पर सोलह आने शत-प्रतिशत विश्वास करते हैं , तो उसने एक दिन उन्हें समझा-बुझाकर राजकुमार के विरुद्ध कार्यवाही कर दी। राजा के कान भर दिए।

रानी पिंगला ने महाराज से कहा- आपके छोटे भाई की नियत बहुत ख़राब है। मैं उसकी माँ की तरह हूँ; लेकिन वह इन बातों को नहीं समझता और मुझे बुरी नजरों से देखता है। कोई और होता तो वह उसके जाल में फंस जाती। लेकिन उनके जाल का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। भगवान ऐसे गलत काम करने वाले का चेहरा न दिखायें।

रानी पिंगला ने आगे कहा- मैंने सुना है कि वह नगर के एक बड़े व्यापारी की पुत्रवधू, जो अपने नगर के सेठ के पुत्र की पत्नी है , उससे भी प्रेम करता है। उन्होंने बहुत समय तक उसके पीछे दूत भेजे। उस बेचारी को अनेक प्रकार से फुसलाया गया, सब प्रकार के लालच दिये गये; लेकिन वह भी मेरी तरह सच्ची पत्नी है।

इसलिए मैं आज तक वह   उसके जाल में नहीं फंसी । अब आपके भाई ने नगर-सेठ को धमकी दी है। पता नहीं ये सच है। उन्होंने आपके नाम पर बट्टा लगा दिया। इसलिए मेरा करबद्ध निवेदन है कि आप उस पर नजर रखें, उससे सावधान रहें।

रानी की ये बातें सुनकर राजा स्तब्ध हो गये, उनका मुँह सूख गया, चेहरा तमतमा गया और आंखों में पानी भर आया। राजा का मन कभी-कभी कहता था:--"नहीं नहीं, ये सब बिल्कुल बेतुकी बातें हैं।" हमारा भाई विक्रम ऐसा नहीं हो सकता।

फिर राजा सोचने लगे - मेरा भाई विक्रमादित्य , वह एक विद्वान व्यक्ति है, वह कई अन्य महिलाओं को अपनी माँ के समान मानता है। कभी-कभी महाराज का मन कहता, “संभव है विक्रम का चरित्र खराब हो।” पिंगला जैसी सती स्त्री क्यों कर उस पर मिथ्या आरोप लगाएगी ?

पिंगला ने गुप्त रूप से उस नगर के सेठ को धमकी दी कि यदि उसने महाराज के सामने विक्रम के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं दी तो वह उसके परिवार को नष्ट कर देगी। तब उस नगर के सेठ ने मजबूरी में पिंगला की प्रार्थना स्वीकार कर ली। राज दरबार में आकर पिंगला की सलाह के अनुसार उसने विक्रम के विरुद्ध शिकायतें करनी शुरू कर दीं कि विक्रम उसकी पुत्रवधू पर बुरी नजर रखता है, आदि।

रानी पिंगला ने ये बातें महाराज के हृदय में पहले ही डाल दी थीं। नगर सेठ की शिकायत से उसके मन में कोई संदेह नहीं रह गया। रानी की कही गयी सारी बातें उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं। महाराज का चेहरा गुस्से से तमतमा गया।

राजकुमार विक्रमादित्य उस समय सभा में बैठे थे। यह सुनकर उन्होंने मन ही मन समझ लिया कि यह जादू-टोना पिंगला ने रचा है। उसने धीरे से कहा- सेठजी! ईश्वर से डरो, मनुष्य से मत डरो। इस बुढ़ापे में स्वार्थवश झूठ बोलने का पाप क्यों करते हो ?

ईश्वर सब कुछ देखता है, उसकी नजरों से कुछ भी छिपा नहीं है। मैं तो आपके बच्चों को भी ठीक तरह से नहीं जानता। मुझे नहीं पता कि वह काली है या गोरी, अच्छी है या बुरी, जो भी हो वह मेरी माँ के समान , मेरे लिए आदरणीय है। मैं दूसरी महिलाओं को भी अपनी मां , बहनों की तरह ही मानता हूँ। पर अवश्य आपका बेटा मेरा दोस्त है।

राजा की पत्नी, गुरु की पत्नी, मित्र की पत्नी, स्त्री की माता और अपनी माता - ये पाँच माताएँ कहलाती हैं । इस वजह से मैं बाकी सभी महिलाओं को अपनी मां के समान मानता हूँ और सम्मान करता हूँ । क्योंकि जो पराई स्त्री को माता नहीं समझता, वह बड़ा अभागा है। उसके पाप का कोई प्रायश्चित नहीं है। लेकिन

जो व्यक्ति किसी स्त्री के साथ बुरा व्यवहार करता है , उसको नरकों की अपार यातनाएं सहनी पड़ती है।

फिर राजकुमार विक्रमादित्य सेठजी की ओर क्रोध से देखते हुए कहने लगे - सेठजी ! धार्मिक न्याय से डरो; न्याय के अतिरिक्त कोई सच्चा मित्र नहीं है। और जब हम जीवित होते हैं तो हर कोई हमारे साथ होता है, लेकिन जब हम मरते हैं तो कोई भी हमारे साथ नहीं होता है। अगर तुम मुझे दोष देकर अपनी राह चल दोगे तो क्या होगा ?

मरते समय धन-दौलत, पैसा, मकान, जायदाद आदि आपके साथ नहीं जायेंगे। धन वैभव की महिमा क्या है ? आज है, कल नष्ट हो जायेगी । शरीर अनित्य है, धन अनित्य है, मृत्यु सदैव निकट है, इसलिए न्याय के पक्ष में रहो, इसलिए झूठ मत बोलो और धोखा मत दो, सेठजी।

राजकुमार विक्रमादित्य के ये वचन सुनकर महाराज भर्तहरि ने पीली आँखें करके कहा- “अरे कुलघातक ! नीच ! हीन पापी ! मेरे सामने ज्यादा बात मत करो। मैं तुम्हारी सारी परिस्थितियाँ जानता हूँ। अब तुम्हारी धूर्तता और कपट नहीं चलेगा। यदि तुम अपनी जान बचाना चाहते हो; तो इसी वक्त मेरे शहर से निकल जाओ ! जल्दी से वापस मुड़ो! मुझे तुम्हारा यह कलंकित मुख और देखना अच्छा नहीं लगता।

जल्दी से मेरी नज़रों से दूर हो जाओ, नहीं तो अभी बेइज़ती से निकलवा दिए जावोगे। राजा पिता है; प्रजा पुत्र समान है। यदि राजा ही ऐसा अन्याय करे तो प्रजा किसके पास जाये ? मैं प्रजा के सुख से प्रसन्न और प्रजा के दुःख से दुःखी होता हूँ। मुझ से दूर हो जाओ ! दूर जाओ।

भाई के ये वचन सुनकर राजकुमार विक्रम दुखी होकर बोले- भाई ! मैं इसी क्षण चला जाऊँगा। आपके राज में मैं पानी की एक बूँद भी नहीं पिऊँगा। लेकिन आप गुस्से में क्या कर रहे हैं ? इसका आप को कुछ पता नहीं है।आपको कम से कम इस मामले की जांच तो करनी ही चाहिए थी। ऐसा एकतरफा निर्णय देना किसी भी राजा या विचारक को न्यायोचित नहीं हो सकता। शोभा नहीं देता।

यदि आप इस प्रकार न्याय करोगे तो हमारी प्रिय प्रजा नष्ट हो जायेगी, वे आपसे अप्रसन्न होकर दूसरे राज्यों में चले जायेंगे। यह सारा खेल किसका है और कौन इसके पीछे खेल खिला रहा है , यह सब मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। समय आने पर आप भी जान जाएंगे। वह आप के साथ चालाकी कर रही है।

उसके मन में ही काँटा है; इसलिए वह मामलों को रफा-दफा करने के लिए यह जाल रच रही है। खैर, मैं जा रहा हूँ।

आपको एक दिन इसका पछतावा होगा। आपका दिल मुझे याद करके रोयेगा। भगवान आपका ख्याल रखें, आपकी आँखें गीली न हों। इतना कहकर राजकुमार तुरंत महाराज महल से बाहर बैठक कक्ष से बाहर चला गया। महाराज ने सिर पर हाथ रखा और कुछ सोचने लगे। इसके बाद कई साल यूं ही बीत गये. कोई नई घटना नहीं घटी।

. . . .

(कुछ समय बाद)

एक गरीब ब्राह्मण अपनी इच्छा पूरी करने के लिए जंगल में जाकर किसी देवता की कठोर तपस्या करने लगा । इसे तप करते कई साल बीत गए। तपस्या के कारण जब उसका शरीर बिल्कुल क्षीण हो गया; तभी देवता की नजरें घूम गयी। देवता सशरीर ब्राह्मण के सामने आये और उससे बोले - “ब्राह्मण ! मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यंत संतुष्ट हूं, इसीलिए तुम्हें यह "फल" देता हूं।

यह फल कोई साधारण फल नहीं है. इसका नाम है "अमर फल"। इसे खाने वाले पर काल का कोई असर नहीं होता- उसका बाल भी बांका नहीं हो पाता। वह अमर हो जाता है , यानी बहुत काल तक सुख पूर्वक जीता है। तुम इसे खाकर पृथ्वी पर अमर रहो और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करो!” इतना कहकर और फल देकर देवता अंतर्धान हो गये।

ब्राह्मण उस “अमरफल” को पाकर अपने घर आया और उस फल की पूरी कहानी अपनी पत्नी को सुनाई। ब्राह्मणी को उस फल की बात से संतुष्टि नहीं हुई, बल्कि वह असंतुष्ट हो गई। उसने कहा--"तात्!" भगवान ने आपको "अमर फल" का आशीर्वाद दिया है! जो तुम्हें दिया है ; लेकिन इससे आपकी तकलीफ कम होने की बजाय और बढ़ जाएगी।

यदि देवता ने हमें धन दिया होता तो हम संतुष्ट होते। हम जन्म से ही गरीब हैं। हमारे घर में हर चीज़ की कमी है। आजकल पैसे के बिना ख़ुशी कहाँ ? धन के बिना समाज में प्रतिष्ठा कहाँ ? जिसके पास पैसा है वह खुश है। गरीबों को इस संसार में कोई सुख नहीं है।

गरीब भाई से भाई बिछड़ जाते हैं; उन्हें अपना कहने में भी शर्म आती है; इसलिए वे अपने रिश्ते को छिपाते हैं। गरीबी मुसीबतों का घर है. यह मृत्यु का दूसरा पर्यायवाची है। ईश्वर ! शुष्क शरीर ही दुःख और अपमान का सबसे बड़ा कारण है। बेचारे के परिजन उसे मरा हुआ समझते हैं।

सूखे के कारण जो मिट्टी बच जाती है उसका मूल्य होता है, पर सूखे शरीर का कोई मूल्य नहीं होता। लेकिन एक गरीब व्यक्ति उस सूखे मिट्टी से भी मूल्यहीन होता है। इस प्रकार हम गरीबी के कारण अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं; अब तो तुम्हारा कष्ट और भी बढ़ जायेगा।

- (इस सन्दर्भ यहाँ एक सत्य घटना का उल्लेख किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के किसी प्रान्त में एक व्यक्ति संसद का सदस्य / MP बना और भाग्य उदय होने पर फिर मंत्री / Central minister बन गया। जब उसके गाँव से उसके पिता उससे मिलने उसके बंगले में आने लगे तो चौकीदार ने धक्के मार कर उन्हें गेट के बाहर कर दिया। क्योंकि वह मंत्री अपने ही पिता को पहचानने से इंकार कर दिया, पद , संपत्ति वैभव के अहंकार में । इसलिए गरीब भले ही धनवान का पिता ही क्यों न हो , वह तिरस्कार का पात्र हो जाता है।) अस्तु !

अब तक यही आशा थी कि किसी दिन मृत्यु आयेगी और हमारे कष्टों का अन्त कर देगी; लेकिन जब इस फल को खाया जाता है तो अनंत काल तक घोर गरीबी का कष्ट भोगना पड़ता है। सारा जीवन, जिसका कोई अंत नहीं, गरीबी में व्यतीत करना पड़ेगा। यह फल उन लोगों के लिए अच्छा है जिन्हें भगवान ने धन, रत्न, राजसत्ता आदि सभी सांसारिक सुख दिए हैं।

यदि आप मेरी सलाह मानें तो इसे महाराज भर्तृहरि को दे दें और बदले में उनसे कुछ धन-संपत्ति ले लें और जिससे हम ज़िन्दगी भर सुखी रह सकते हैं। काफ़ी बहस और विचार-विमर्श के बाद वह ब्राह्मण भी इस बात पर सहमत हो गया। उसे अपनी पत्नी के विचार और सलाह पसंद आये। इसलिए वह कपड़े

पहनकर, हाथ में फल लेकर महाराज की बैठक में पहुंच गया. छड़ीदार ने खबर दी। राजा ने उस ब्राह्मण को सभा में आने की आज्ञा दी , फिर वह सभा में गया।

महाराज ने उस ब्राह्मण को अपने पास बुलाया और पूछा – "ब्राह्मण देवता ! आप क्या चाहते हैं ? कृपया अपनी इच्छा प्रकट कीजिये। इसी क्षण आपकी आज्ञा का पालन होगा [" ब्राह्मण ने महाराज को उस अमर फल की पूरी कहानी बतायी। ऐसा करने के बाद उसने फल राजा को सौंप दिया। राजा ने भी उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और ब्राह्मण को कई मोती और सोने के सिक्के देने का आदेश दिया। ब्राह्मण हँसता हुआ और सोने के सिक्कों की अशर्फियाँ लेकर अपने घर ख़ुशी से लौट आया।

अब महाराज मन में सोचने लगे – "वास्तव में भगवान ने ही दया करके यह फल मेरे पास भेजा है। परंतु अब मैं यह निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि इस फल को मैं स्वयं खाऊं या फिर अपनी प्रिय, प्रिय, प्रिय रानी पिंगला को खिलाऊं !

यदि मैं इसे खाऊं तो एक शताब्दी तक अमर रहूँ; मेरा सौन्दर्य और यौवन सदैव स्थिर रहेगा; दुखद बुढ़ापा समाप्त होगा, लेकिन मेरी प्रिय परम सुंदरी - पिंगला, मेरी खुशी की प्रियतमा, कुछ दिनों के बाद बूढ़ी हो जाएगी - सुंदर पिंगला का यह रूप और सौंदर्य नष्ट हो जाएगा।मेरा जीवन तो उसके रूप - सौंदर्य माधुर्य का निशदिन पान करने में ही सार्थक है। यदि कालांतर में पिंगला ही बूढी और निस्तेज हो जाए , तो फिर मेरा जीना किस काम का ?

ऐसे में मैं किसके साथ सुख भोगूंगा ? इसलिये मैं इस अमरफल को पिंगला को ही खिलाऊंगा। यदि वह अमर रहे, यदि वह बूढ़ी न हो, यदि उसका सौन्दर्य ज्यों का त्यों बना रहे; मैं उसके साथ सुख का आनंद लेता रहूंगा । इसलिए इस अमरफल को मुझे पिंगला को ही खिलाना चाहिए।

यह सोचकर और इस विचार पर दृढ़ रहकर महाराज ने फल हाथ में लिया और रनिवास की ओर प्रस्थान किया। जैसे ही महाराज रानी पिंगला महल के दरवाजे पर पहुंचे, दासियों ने जाकर रानी को महाराज के आगमन की सूचना दी। जल्द ही पिंगला प्रेम से महाराज को अंदर ले गई। उन्हें एक ऊँचे आसन पर बैठाया गया और पिंगला भी उनके बगल में बैठ गयी। पिंगला , महाराज को मुस्कुराते हुए , प्रसन्नचित मुख से महारज के आँखों में ऑखें गड़ाकर मतवाली निगाहों से निहारने लगी।

पिंगला ने मुस्कुराते हुए पूछा, "महाराज! आज इस असमय पर आपने इस दासी पर कैसे दया कर दी ?" महाराज आनंदित होते हुए कहा – "प्रिये! आज मुझे एक

अनोखा फल मिला है। मैं वह फल लेकर आपके पास आया हूं। पिंगला ने कहा – "महाराज ? मुझे वह फल दिखाओ और यह भी बताओ कि उसमें ऐसा क्या गुण है जो आप उस फल को लेकर , आप इतने प्रसन्नचित नज़र आ रहे हैं और ख़ुशी से लहरा रहें हैं ?

राजा ने कहा, "मेरी प्रिय रानी, पिंगला! ये फल जो तुम मेरे हाथ में देख रही हो , यह कोई साधारण सा फल नहीं है। इसे "अमरफल" कहते हैं। भगवान ने एक ब्राह्मण की तपस्या से संतुष्ट होकर इसे उस ब्राह्मण को दे दिया था। उस ब्राह्मण ने इसे मुझे दे दिया।

इसमें यह गुण है कि इसे खाने वाला कभी बूढ़ा नहीं होता और न कभी मरता है; हमेशा जवान रहता है. मैं चाहता हूं कि तुम यह अमरफल खाओ। ताकि तुम हमेशा जवान रहो मदमस्त रहो ! तुम्हारी खूबसूरती हमेशा वैसी ही बनी रहे, जैसे संगे मर मर की सुन्दर मूर्ति ! क्योंकि मैं तुमसे और तुम्हारे खूबसूरत शरीर से हमेशा प्यार करता हूं। यह कहकर राजा ने अमर फल रानी को सौंप दिया।

पिंगला ने मुस्कुराते हुए महाराज से कहा - भगवान आपको हमेशा अमर रखें, आप ही मेरा जीवन , मेरी असली खुशी और मेरा परम सौभाग्य आप ही हैं। लेकिन, ये सब पिंगला के हाव - भाव और चिकनी चोपड़ी बातें केवल दिखावा मात्र थीं। बातें कृत्रिम थीं। उनके बीच चाकू वाली बात थी, "मुख में राम और बगल में छुरी". उसके पेट में धोखे की टीस उठ रही थी।

राजा उसके जाल में पूरी तरह फंस गए थे, तो वह उसके धोखे को कैसे समझ पाते ? उन्होंने पिंगला से फिर कहा - "नहीं, यह फल केवल तुम्हारे लिए है, मेरी प्रियतमा! तुम्हें ही खाना होगा। यदि तुम यह फल खाओगे तो ही मैं तृप्त हो जाऊँगा।" रानी को निश्चित था कि फल राजा न खाये और उसके हाथ में ही रहे। अत: वह बाकी बातों से सहमत हो गई और बोली- "मैं आपके निर्देशों का उल्लंघन नहीं कर सकती। मैं आपके चरणों की एक तुच्छ दासी हूँ। जिसमें आप सहमत हो..., आपकी ख़ुशी मेरी ख़ुशी है। आपकी आज्ञा मेरे सर आंखों पर, मेरे प्रिय महाराज।

कुछ रुकर फिर पिंगला ने महाराज से कहा - मैं इससे खुश हूँ। आपकी संतुष्टि में ही मेरी बड़ी संतुष्टि है। चूंकि यह आपकी आज्ञा है,मैं कैसे आपकी आज्ञा टाल सकती हूँ ? इसलिये यह फल मैं ही खाऊँगी। परंतु यह ईश्वर प्रदत्त अमरफल है, अतः: इसे मुझे अपवित्र अवस्था में नहीं खाना चाहिए । स्नान, ध्यान और पूजा के बाद फल खाऊँगी। राजा अति प्रसन्न होकर उस पिंगला - जादूगरनी की बात मान ली और उसे फल देकर सभा में आ गये।

तब फिर पिंगला ने अपनी नौकरानी को भेजकर अपने अवैध प्रेमी घोड़े / अस्तबल के दरोगा को बुलाया। दरोगा ने पूछा, "रानी साहिबा!" आज इस गुलाम को विषम समय में ही क्यों याद किया गया है? क्या बात है?" आपका सेवक , आपके चरणों का दास , आपकी सेवा में हाज़िर है। हुकुम दीजिए महारानी साहिबा !

रानी पिंगला ने उस दरोगा से कहा--प्रिये। आज महाराज ने मुझे एक फल दिया है। उसे खाने से मनुष्य अमर रहता है, यौवन स्थिर रहता है और बुढ़ापा कभी नहीं आता। राजा साहब ने मुझसे वह फल खाने को कहा है। और मैंने वचन दे दिया। लेकिन, तुम ही मेरे जीवन और प्यार का सच्चा सहारा हो !

तुझसे प्यारा मेरे लिए इस दुनिया में और कोई नहीं, मेरी ख़ुशी की वजह तू है, तुझसे ही खुश हूँ मैं; इसलिये मैं यह चाहती हूँ कि तू इस अमरफल को खाले। क्योंकि तू ही मेरे परम आनंद , देहसंतृप्ति और बेशुमार ख़ुशी का खज़ाना है। तू इसे खाकर सदा जवान और बूढ़ा ना हो , मैं यही चाहती हूँ।

दरोगा ने कहा--ठीक है प्रिये ! आपकी आज्ञा पालन होगा। मैं इसे ही खाऊंगा; परंतु यह ईश्वर प्रदत्त वस्तु है इसलिए इसे शुद्ध ही ग्रहण करना चाहिए। मैं अभी जाकर क्षिप्रा नदी में स्नान करूंगा और इसे खाऊंगा । रानी ने वह अमरफल उस दरोगा को दे दिया। वह दरोगा पिंगला रानी को झूठे वचन दे कर , मन में बुरे विचार भर कर वहां से निकल गया। रानी मुस्कुराते हुए उसे छोड़ने द्वारा तक आयी।

दरोगा ने रानी पिंगला को चकमा दे गया और वह अमर फल लेकर सीधे , उसकी प्रेमिका - नगरवधू , वैश्या के घर पहुँच गया । उस समय वेश्या तकिये के सहारे बैठी हुई थी। उसके प्रेमी उसकी सेवा में बैठे थे।वेश्या ने बड़ी नम्रता से दरोगा को सामने बैठाया और आने का कारण पूछा। दरोगा ने कहा, “प्रिये! आज मुझे एक अद्भुत फल मिला। इसका सेवन करने वाला व्यक्ति बूढ़ा नहीं होता और उसके आयु का बाल भी बांका नहीं हो सकता। मैं चाहता हूँ कि तुम यह फल खाओ।

उस नगरवधू / वैश्या का नाम था - रूपलेखा। दरोगा वह फल उस वैश्या - रूपलेखा के हाथ में रखते हुए हुए फिर से कहने लगा - यह एक अद्भुत अमर फल है। इसे जो कोई भी खायेगा , अमर हो जायेगा , सदा जवान और सुन्दर बना रहेगा,बुढ़ापा उसके पास तक नहीं पहुँच सकता।

यदि यह फल मैं खाऊंगा तो क्या लाभ होगा ! मैं सदा जवान बना रहकर क्या लाभ होगा जब की तुम बूढ़ी हो जाओ ? इसलिए हे मेरी प्राणप्रिये ! मैं यह फल तुमको अर्पित कर रहा हूँ , ताकि तुम इसे खाकर सदा जवान और सुंदर बनी रहूँ। जिससे मैं तुम्हारे सुन्दर यौवन को आजीवन भोगता रहूँ। इसे खाने से मेरी प्रिया, रूपलेखा , तुम सदैव वैसी ही धनवान और समृद्ध युवती बनी रहोगी , ठीक वैसे ही जैसी आज हो।

फिर दरोगा रूपलेखा की ओर प्रेमभरी नज़रों से देखते हुए कहने लगा - यदि तुम यह फल खाओगी, तो मेरा जीवन खुशियों से भर जाएगा। तुम आज की तरह एक जवान लड़की बनी रहोगी। तब वेश्या रूपलेखा ने कहा -- ठीक है प्रिये ! तुम्हें संदेह में नहीं डाल सकती। मैं स्नान करके यह फल खाऊंगी। दरोगा ने वेश्या के हाथ में वह फल रखकर वापस अपने डेरे पर लौट आया।

उस दरोगा प्रेमी के जाते ही वेश्या सोचने लगती है- 'मैं तो जीवन भर पाप ही कमाती रही हूं।' जब जिंदगी गुजर गयी. कौन जानता है कि मुझे इतने पापों का क्या दंड भुगतना पड़ेगा? यदि मैं यह फल खाऊँगी तो अंत तक इसी प्रकार पाप रूपी पत्थरों के गट्ठर इकट्ठा करती रहूंगी। इसलिए इस फल को मैं खा लेना बिल्कुल ही उचित नहीं है।

बस, मेरे प्रिय महाराज इसके पात्र हैं। यदि वह यह फल खाएं तो बहुत अच्छा होगा। यदि वे सदैव रहेंगे तो मेरी आत्मा तृप्त होगी। ऐसे राजा के राज्य में प्रजा सदैव सुखी रहेगी। 'हमारे राजा एक आदर्श और एक महान राजा हैं। ऐसे बहुत कम राजा हुआ करते हैं , इस धरती पर।

यह सोचकर कि फल के खाने के उत्तम अधिकारी तो केवल हमारे महाराज जी ही है,वह उस अमरफल को को कपड़े से ढक दी। फिर स्नान आदि से निवृत्त होकर , अपने मन में महाराज के प्रति श्रद्धा भाव और आदर भाव से परिपूर्ण होकर , वह फल एक कपडे में छिपाकर सीधे राज दरबार की ओर चल दी।

जैसे ही वह महल में पहुँची, छड़ीदार / सुरक्षा ने महाराज को सूचित किया कि एक बाईजी आपसे मिलना चाहती हैं। महाराज - राजा भर्तहरि ने वेश्या को बुलाया और उसे बैठने के लिए कहा। उसके आने का कारण पूछा।

वेश्या ने विनम्र भाव से महाराजा से कहा – "महाराज जी , आज मुझे एक अद्भुत फल मिला है. इस फल की तासीर अजीब होती है. इसे खाने वाला सदैव अमर रहता है। यदि मैं यह अमर फल खाऊँगी , तो सदा पाप करूंगी ; इसलिए

यह फल सिर्फ आपके खाने के लिए ही उपयुक्त है। यदि आप सदा अमर रहोगे तो यह हमारी धरती भी सुखी रहेगी। चूँकि आप एक महान राजा हैं।

वेश्या के हाथ में फल देखकर और उसकी बातें सुनकर राजा के चेहरे का रंग उड़ गया। वे अचम्भे में आ गये। ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई। वह असमंजस में पड़ गए और सोचने लगे कि उसके भाग्य ने उसके साथ कितना बुरा खेल खेला है! होश आने पर उन्हें अपार दुःख हुआ कि कैसे वह फल घूमता-घूमता फिर वापस राजा के पास पहुंच गया ? खोजबीन से राजा को सारा रहस्य पता चल गया।

महाराज को रानी पिंगला के कपटपूर्ण छल से अत्यंत घृणा हुई। वह अपनी सबसे प्रिय रानी पिंगला के विश्वासघात से बहुत दुखी हुए । उनके हृदय पर गहरा आघात हुआ। उन्हें यह दुख हो गया कि स्त्रियों में कोई सार नहीं है। महिलाओं के अवैध प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। वे संसार से विरक्त हो गए। उन्हें संसार से और सांसारिक सुखों से भी पूरी तरह नफरत हो गयी ।

पहले वे यह समझते थे कि सच्चे प्रेमी के समान दुनिया में और कोई भी प्रिय नहीं है। फिर महाराज यह कि मेरी मूर्खता थी कि जो मैंने उसे, पिंगला को ठीक से परखे बिना उससे ईमानदारी से प्यार किया। यह प्यार नामक बड़ा विषय , सभी तरह के मासूम और निर्दोष लोगों को बेवकूफ बनाने का एक झूठा जाल है। इसमें फंसकर लोग अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर लेते हैं। ठीक ऐसे ही जैसे कांटे में छिपा मछली का आहार , धोखे से मछली के प्राण हर लेती है।

महाराजा दुखमय विचारों में डूबते हुए सोंचने लगते हैं ; ये मेरे जीवन की कैसी विचित्र विडम्बना है ? मैं जिससे सदैव प्रेम करता हूँ, वह (मेरी रानी पिंगला) मुझे बिल्कुल नहीं चाहती; वह एक और आदमी को चाहती है। वह आदमी (दारोगा) रानी को नहीं चाहता; वह उस वेश्या, रूपलेखा को चाहता है। मेरी रानी दरोगा से प्यार करती है, और वह एक वेश्या है जो मुझसे प्यार करती है, मुझे सम्मान देती है ! अत: रानी को धिक्कार है।

लानत है उस दरोगा पर ! वह वेश्या मुझसे प्यार करती है ! लानत है उस वैश्या को , जो अपना अमूल्य जीवन चमड़ी के व्यापारियों के हाथ बेचा करती है, व्यभिचारमय जीवन यापन करती है। और लानत है स्वयं मुझ को , जो कामवासना के वशीभूत होकर , मैंने अपना विवेक - ज्ञान तक खो बैठा।

लानत हैं मुझ जैसे राजा को , जो अपने महाराज पद को कलंकित किया। रक्त , मांस और मज्जा आदि से लिपटी हुई , एक कामी नारी के सम्मुख , उसे परम

सुंदरी की पदवी देकर , उस दुष्ट -पापिष्ट धोकेबाज़ स्त्री के पीछे अपना अमूल्य जीवन नष्ट कर डाला, और अपने पावन चरित्र को कलंकित किया। ।

मुझे शर्म आनी चाहिए और मेरी कामवासना को शर्म आनी चाहिए, जो इन सभी घटनाओं का मूल कारण बनी है।, देखो तो अब वही कामवासना दूरखड़ी मुझ पर व्यगात्मक हंसी हंस रही है। तो भी मेरी तृष्णा को , अपूर्ण इच्छाओं का समाधान नहीं होता। कामवासना स्वरूपा निर्लज पिशचिनी को अब भी तनिक भी शर्म नहीं आ रही है।

इस घटना से महाराज को संसार बहुत बुरा लगने लगा। उन्होंने प्रधानमंत्री को सामने बुलाया, उन्हें राज्य का सारा कामकाज संभालने दिया, अपनी शाही पगड़ी उतारकर उन्हें दे दी।

महाराज ने महसूस किया कि वस्तुओं का आनंद लेने में रोग का भय, परिवार में दोष का भय, धन में राजा का भय, मौन रहने में द्वंद्व का भय, शक्ति में शत्रु का भय, जवानी में बुढ़ापे का, धन में हानि का, शरीर में मृत्यु का भय होता है।

मनुष्य को दुनिया में हर चीज में सफलता केवल "वैराग्य" से मिलती है और भगवान के पवित्र नाम का सदैव स्मरण करते हुए वैराग्य के मार्ग पर चलने से कोई भय नहीं रहता है। किसी पवित्र वन में 'शिव-शिव' का स्मरण करते हुए मेरे दिन व्यतीत होने चाहिए। मेरी दृष्टि फूल और रेत, प्रबल शत्रु और मित्र, कोमल फूलों की क्यारी और पत्थर, मणि और पत्थर, स्त्री और माँ के बीच समान रूप से एकाकार हो - यही मेरी कामना है।

इतना कहकर महाराज ने एक क्षण में सारा राजपाट और धन-संपत्ति त्याग दी और जंगल की राह ले ली। चलते-चलते उन्होंने मुख्यमंत्री से यह भी कहा-मैंने अपने धर्मात्मा और सच्चे भाई विक्रम के साथ बड़ा अन्याय किया है। उस समय मेरी बुद्धि धूमिल हो गयी थी। मुझे अनौचित्य का तनिक भी ज्ञान न था। उस कुतिया ने मुझ पर जादू कर दिया था।

अब मैं दुनिया के लोगों को सलाह देता हूं कि अगर वे सुखी जीवन जीना चाहते हैं तो वीरों का अपमान न करें और जो सर्वोच्च पुरस्कार के अधिकारी हैं और आकांक्षा रखते हैं, उनका अपमान न करें। विक्रम या किसी से भी उस धोखेबाज पिंगला का नाम तक मत लेना । मंत्री जी! तुम विक्रम का पता लगाओ। यदि वह मिल जाए तो उसे गद्दी पर बैठा दो।

महाराज भर्तृहरि चाहते तो रानी पिंगला को उसके जीते जी ताबूत में रखकर दफना देते, उस पिशाचिनी को तोप के मुँह पर बाँधकर उड़ा देते और किसी अन्य पतिव्रता स्त्री से विवाह कर लेते; परन्तु उसने शुद्ध ज्ञान प्राप्त कर लिया था, उसने संसार की वास्तविकता को समझ लिया था, इन बातों से उसे घृणा हो गयी। उन्होंने समस्त नैवेद्य, पुष्प, चंदन, फूल, रत्न और राजप्रासादों को तिनके की भाँति एक क्षण में त्याग दिया।

. . . किसी किसी ग्रन्थ में ऐसा भी कहा गया कि महाराज भर्तृहरि की प्रथम महारानी थी - पिंगला , जो सुन्दर , शील और सात्विक स्वभाव वाली , सदा पूजा पाठ और कल्याण के कार्यों में रत रहने वाली , पतिव्रता शुद्ध - पवित्र चरित्र की एक महान महिला थी। चूँकि वह सदा पूजा पाठ आदि सात्विक कर्मों में लिप्त रहती थी , इसलिए राजा भर्तृहरि उसके प्रति उदासीन रहने लगे और काम - विलासिता के वशीभूत होकर उन्होंने और एक , अति सुन्दर , मनमोहिनी , लुभावनी राजकुमारी से ब्याह किया , जिसका नाम था - अनंत सेना।

उपरोक्त जो जो घटना घटी , वह सेनापति और , राजा की दूसरी रानी - अनंत सेना के बीच घटी। महाराज को जब अनंत सेना और सेनापति के अवैद्य सम्बन्ध के विषय में पता चला , तब महाराज को बहुत क्रोध आया और उन्होंने ने म्यान से तलवार निकल ली और हाथ में नंगी तलवार लिए , अनंत सेना के रनिवास की ओर दौड़ने लगे।

अनंत सेना को पता चल गया और वह समझ गयी की अब राजा मुझे अवश्य मार देंगे। इसलिए उसने अपने आपको आग लगा लिया और आग की लपटों में झुलस गयी। ऐसे अनंत सेना , राजा की दूसरी रानी की मृत्यु हो गयी। फिर महाराज के क्रोध का दूसरा निशाना - सेनापति बना , जिसको महाराज ने तत्काल मृत्यु दंड दिया। सेनापति का गला भी , जल्लाद द्वारा एक ही झटके मैं धड़ से अलग कर दिया गया। अस्तु !

(और एक संभावित घटना)

जब महाराज भर्तहरि को रानी पिंगला के काले करतूतों के बारे में महल के सभा में जब पता चला , वे क्रोध में अपना आपा खो बैठे और तुरंत म्यान में से नंगी तलवार निकाल लिया। वे अति क्रोध के आवेश में रनिवास की ओर तेज़ रफ़्तार से दौड़ पड़े ।

इधर जैसे ही रानी पिंगला को पता चला की महाराज को उसकी सारी काली करतूतों के बारे में पता चल गया है। तब वह समझ गयी की , अब मेरी खैर नहीं और महाराज मुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेगे। फिर वह स्वयं को आग लगा ली। पिंगला का सारा शरीर आग की लपटों में जल गया। और इस प्रकार उस रानी पिंगला की मृत्यु हो गयी।

(उपरोक्त ; पिंगला और अनंत सेना - दोनों घटनाओं में से कौन सी घटना सही है। यह तो भगवान ही जाने। इतना सत्य अवश्य है कि उपरोक्त घटना से महाराज के जीवन में एक महा वैराग्य शाली परिस्थिति ने जन्म ले लिया।)

फिर महाराज ने उस दरोगा को भी नहीं छोड़ा। उसको महाराज ने मृत्यु दंड दिया। इस बड़ी दर्घटना के बाद , महाराज सर्वथा , सुभह शाम उदास रहने लगे। फिर भी वह पिंगला को किसी भी तरह भूला नहीं पा रहे थे। इस घटना के बाद महाराज के जीवन में घोर वैराग्य का पदार्पण हुआ ।

ये सब हर किसी के साथ नहीं हो सकता। ऐसा उन्हीं के साथ होता है जिन पर ईश्वर की कृपा होती है या पूर्व संचित पुण्य उभर कर सामने आते हैं। कोई व्यक्ति टूटे-फूटे बर्तन-भांडे नहीं छोड़ता, अपनी मात्र इच्छाएं भी नहीं छोड़ता, फिर राज्य और राजपाट छोड़ना बहुत बड़ी बात है।

महाराज! भर्तहरि समस्त भूपालेश्वरों में सर्वश्रेष्ठ भूपाल हो गये। उन्होंने जो कुछ किया, शायद उनके बाद कोई भूपति नहीं कर सका होगा। जब तक सूर्य और चंद्रमा रहेंगे, जब तक यह संसार रहेगा, महाराज का पवित्र नाम इस भूमंडल पर और 'पुण्यलोक' में अमर रहेगा, लोगों की जिह्वा पर सदैव बना रहेगा।

....

वैराग्य शतकम्

वैराग्य शतकम् - ००१ .

जो दसों दिशाओं और तीनों कालों में परिपूर्ण हैं, जो अनंत है, जो चैतन्य स्वरूप हैं, जिन्हें स्वयं के अनुभव से जाना जा सकता है, जो शांतिपूर्ण और उज्ज्वल हैं, ऐसे सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च शक्ति भगवान के महान रूप को मैं नमस्कार करता हूं।

जो ईश्वर पूर्व, पश्चिम तथा भूत, भविष्य और वर्तमान दसों दिशाओं तक सीमित नहीं है, अर्थात् जो सभी दिशाओं और तीनों कालों में विद्यमान है तथा किसी भी दिशा या काल में सीमित नहीं है, जो सर्वत्र तीनों लोकों में विद्यमान है। उनके चरणों में मेरा प्रणाम है।

और वह चौदह भुवनों में विद्यमान है, वह पहले भी था, अब भी है और आने वाले समय में भी रहेगा, इसलिए वह शाश्वत है, उसका कोई विनाश नहीं है, वह

चैतन्य स्वरूप है, वह महतत्त्व केवल हमारे अपने अनुभव से जाना जाता है, वह परम शांतिपूर्ण है। और मैं तेज के रूप में उनकी पूजा करता हूं।

वैराग्य शतकम् - ००२ .

जो विद्वान हैं वे आस्था से परिपूर्ण हैं; वे अमीर हैं, उन्हें अपनी दौलत पर घमंड है। इनके अतिरिक्त और भी हैं, वे अज्ञानी हैं; इसलिए विद्वत्तापूर्ण विचार, सुन्दर रचित निबन्ध या उत्कृष्ट काव्य आदि पद्य - गद्य से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है।

जो विद्वान, पंडित होते हैं, जिनके पास अच्छे और बुरे ज्ञान या अच्छे संस्कार होते हैं, वे अपनी विद्वता के घमंड में चूर रहते हैं, दूसरों के अच्छे-अच्छे कामों में छेद करने की कोशिश करते हैं।वे अक्सर दूसरों की रचनाओं में त्रुटि छेद ढूंढा करते हैं।

और यह भी स्पष्ट है कि इस संसार में अहंकारी लोगों की संख्या बहुत अधिक है। उनमें से कई लोग शिक्षा के सुख में खोये हुए हैं और कुछ लोग लक्ष्मी के नशे में मदमस्त हो रहे हैं। यदि कोई विद्वान या कारीगर अपनी विद्या का प्रदर्शन करना चाहता है , तो सबसे पहले वे उस गरीब विद्वान को वे घमंडी पंडित लोग अपने पास नहीं आने देते और यदि कोई उनके चरणों तक पहुँच भी जाता है, तो उसके काम के सर्वोत्तम बातों पर ध्यान ही नहीं देते हैं।उल्टा उसको हीन दिखाने पर उतारू हो जाते हैं।

वे उसमें बुरी बातें ही खोजते रहते हैं और तरह-तरह के दोष निकालकर उसका दिल दुखाते हैं। इसलिए ऐसे विद्यापति के पास जाकर अपना कार्य करने की अनुमति माँगना भूल है। अब आइए खजानों के मालिकों पर नजर डालें, जो पैसे

के नशे में चूर हैं उनके बारे में तो पूछो ही मत। सबसे पहले तो उन तक पहुंचना एक मुश्किल का काम है।

अगर वे वहां पहुंच भी जाएं तो उन्हें उनसे मिलने की फुर्सत नहीं मिलती। सैकड़ों बार उनके घर की धूल चाटने के बाद कभी-कभी अपना नंबर आता है । तब वहां अजनबी लोगों की कौन सुने ! वहां तो दुष्टों और चुगलखोरों की हवा चलती है। सरल और सज्जन लोगों को उन घमंडी धनवानों के यहां कौन पूछे ? इसलिए वहां भी सफलता नहीं मिलती। जैसे कहावत है - गाय कसाई को पतियाती है।

इन दो प्रकार के लोगों के अलावा तीसरे प्रकार के लोग पूर्ण मूर्ख होते हैं - अज्ञानी या अज्ञानी बाबाजी। उसे किसी भी प्रकार का द्वैत ज्ञान नहीं है, वह सुखी और दुःखी, सुशिक्षा और कुशिक्षा, काव्य और व्यभिचार को नहीं समझता। ऐसे में सराहना या प्रशंसा न मिलने पर मन में दुख या पीड़ा होने लगती है।

मन दुःखी हो जाता है और कहता है – “हाय ! रसिकों और कवियों के हृदय स्वच्छ नहीं हैं, उनके मन वासना से दूषित हो रहे हैं। अमीर लोग पैसे के नशे में कुछ भी नहीं समझते, किसी से बात नहीं करते। अज्ञानी की पहुंच में कुछ भी नहीं आ सकता. अब हम अपनी पांडित्य या कुशलता किसे दिखाएं ?

वैराग्य शतकम् - ००३ .

मुझे; सांसारिक कार्यों में कोई सुख नहीं है। मेरी राय में ओह, अच्छे कर्मों का फल ही फलदायी होता है। इसके अलावा बहुत से अच्छे इन्द्रिय सुखों की वस्तुओं को ध्यान में रखकर जो बहुत समय तक प्राप्त किये गये और भोगे गये हैं, वे भी अन्त समय में इन्द्रिय सुखों को चाहने वाले ही दु:ख के कारण बनते हैं।

इस जीवन में सुख का लेश भी नहीं है। जिनके पास अक्षय लक्ष्मी, धन-संपत्ति, गाड़ियाँ-घोड़े, मोटर गाड़ियाँ, नौकर-चाकर, रथ और पालकियाँ, सभी सुख-सुविधाएँ हैं, जिनकी बातें राजा भी नहीं टाल सकता, जिनके हाव-भाव लोगों को अच्छा या बुरा बना सकते हैं, ऐसे सभी सुख हैं। अमीर लोग भी ऊपरी तौर पर खुश दिख सकते हैं, लेकिन हकीकत में खुश नहीं होते।

अंदर ही अंदर उन्हें घुन भी खाये जाती हैं। वे किसी न किसी दुःख से निराश हो जाते हैं। इस अवसर की दो कहानियाँ हमें याद आती हैं। हम उनका उल्लेख यहां उदाहरण के तौर पर कर रहे हैं।

लिखते हैं:-- एक महात्मा अपने शिष्य के साथ किसी नगर में गये। वहां उसने देखा कि एक साहूकार इंद्र महाराज बनकर बैठा हुआ है। सैकड़ों नौकर-चाकर उसकी आज्ञा मानने को तैयार थे, दो-दो गाड़ियाँ दरवाजे पर खड़ी रही थीं। सोने,

चाँदी और पन्ने के ढेर उसके सामने पड़े थे। महात्मा को देखकर मकान मालिक ने अपने एक कर्मचारी को उन्हें खाना खिलाने का आदेश दिया।

जब गुरु और शिष्य भोजन करने बैठे तो शिष्य ने कहा---"गुरु-हाँ! आप तो कहते थे कि इस संसार में कोई भी सुखी नहीं है ! देखो यह सेठ कितना सुखी है ! इसे क्या कमी है ? लक्ष्मी उसकी दासी बन रही है।" गुरु ने कहा - "कृपया प्रतीक्षा करें, सबर करें। हम पता लगा सकते हैं और कुछ कह सकते हैं।" महात्मा ने भोजन समाप्त करने के बाद सेठ जी से कहा – "सेठजी ! भगवान ने आप को सब कुछ दिया है , आप खुश तो हो ना ? "

सेठजी थोड़ा चिल्लाये--"महाराज! इस संसार में मेरे समान दुखी कोई नहीं है। मुझे भगवान का आशीर्वाद मिला है. कुछ दिया, पर बेटा एक भी नहीं। पुत्र के बिना ये सुख नमक के बिना पदार्थ के समान बेस्वाद हैं। मेरा हृदय दिन-रात जलता रहता है, मुझे कभी अच्छी नींद नहीं आती। मेरी इतनी बड़ी सम्पत्ति को कौन खायेगा ? यह चिंता मुझे सदा सताया करती है।

मुझे यह सोचकर ईर्ष्या होती है कि पुत्र के बिना इस संपत्ति का उपभोग कौन करेगा?" सेठ जी की बात सुनकर शिष्यों ने कहा, "हाँ गुरुजी, आप जो कह रहे हैं वह सार्थक है। इस संसार में कोई सुखी नहीं है। कोई किसी दुःख से दुःखी है तो कोई किसी दुःख से दुःखी है। एक से बढ़कर एक दुखी पाए जाते हैं।

<u>और एक और सच्ची कहानी सुनो</u>;

किसी नगर में एक साहूकार था। उनके यहां धन-संपदा की कोई कमी नहीं थी। उनका धन का भण्डार कुबेर के समान अक्षय था। जिसके पास अपार धन हो उसे किसी भी सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, वह सहायक हर प्रकार से इंद्र के समान सुख भोग रहा था। इसी बीच देवयोग के कारण उनकी पत्नी बीमार हो गयीं। तमाम बेहतरीन इलाज के बावजूद उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। सेठ रोने लगा। स्त्री ने कहा, "तुम क्यों रोते हो ? आप अमीर हैं, आपकी सैकड़ों शादियां हो सकती हैं।

मेरे मरते ही तुरंत तुम्हारी दूसरी शादी हो जायेगी. मुझे दुःख है कि मैंने इस संसार में कुछ भी सुख नहीं देखा।" सेठ ने कहा, "अगर तुम मर जाओगी तो मैं दोबारा शादी नहीं करूंगा।" सेठानी ने कहा – "क्या बोलते हो ?" जैसे ही मैं मर

जाऊँगी तुम ये सब बातें भूल जाओगे और दूसरा ब्याह कर लोगे !" उत्तेजना में आकर सेठ ने अपना लिंग काटकर फेंक दिया।

देवयोग के प्रभाव से सेठानी ने चिंता करना छोड़ दिया और उसी क्षण आश्चर्यजनक रूप से सेठानी स्वस्थ हो गई। और कुछ ही दिनों में वह तंदुरुस्त हो गई। जब उसका शरीर हृष्ट - पुष्ट गया तो उसे एक मर्द की जरूरत पड़ने लगी। वह सेठ को निकम्मा देखकर नौकरों से छेड़छाड़ करने लगी । यह हालत देखकर सेठ को दिन-रात गुस्सा और जलन होने लगी।

इसी बीच एक दिन गुरु नानक भाई मरदान के साथ उस नगर में पहुंचे। भाई, उस व्यापारी की ख़ुशी देखकर मरदान ने कहा – "गुरुजी ! आप कहते हैं कि इस संसार में कोई सुखी नहीं है।बताओ, इन सेठजी को क्या दुःख है?" गुरु नानक ने कहा – "मरदान ! ये सज्जन बाहर से तो खुश दिखते हैं, लेकिन अंदर से किसी न किसी दुख से दुखी रहते होंगे। चलो, हम उससे पूछते हैं । गुरुजी ने सेठ से बात की तो सेठ ने कहा-- सांसारिक लोग धनवान को सुखी समझते हैं, परन्तु धन बुराई की जड़ है। धन का संचय बड़े दुर्भाग्य से होता है और संचय होने पर भी वह दुखों का कारण बनता है।

इसे कमाना कठिन है और इसे बनाये रखना भी कठिन है। इसका मतलब यह है कि इसमें हर तरह का दुख है। चोर धन के लालच में हत्या करते हैं। यदि वे हत्या न भी करें और धन भी छीन लें तो प्रजा को बहुत कष्ट होता है। बूढ़े अमीर आदमी के बेटे, पोते या अन्य रिश्तेदार बूढ़े अमीर आदमी की मृत्यु की कामना करते रहते हैं। अमीर आदमी को हजारों चिंताएं घेरे रहती हैं।

अमुक आदमी के जीवन में धन नष्ट हो जायेगा; वह किसी विशेष रूप में हानि के भय आदि चिंताओं से जलता रहता है। राजाओं को बहुत से लोग प्रसन्न दिखाई देते हैं, परंतु राजा बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं होते। राज्य बड़ी-बड़ी विपत्तियों का कारण है। राजा को हमेशा डर रहता था कि कहीं पड़ोसी राजा उस पर हमला न कर दे। चोरों का डर बना रहता है कि कहीं वे राजलक्ष्मी पर हमला न कर दें।

अपने सम्बन्धियों को यह भय सदैव बना रहता है कि कहीं वे छल या राज्य के लोभ में किसी की हत्या न कर दें। क्योंकि अनेक घटनायें घटी हैं। जहां पुत्रों अथवा बन्धुओं ने राज्य के लोभ से राजाओं की हत्या कर दी है। दुर्योधन ने राज्य हड़पने के लिए भीम को जहर दे दिया था; वह पांचों पांडवों को लाक्षागृह में जिंदा जला देना चाहता था। कैकेयी अपने पुत्र को राज्य देने की इच्छा |रामचन्द्र जी को वनवास जाने का आदेश दिलाया था ।

राज्य के लिए कंस ने अपनी सगी बहन देवकी के नवजात पुत्रों को मार डाला था। औरंगजेब ने अपने भाइयों को मार डाला और अपने पूज्य पिता को कैद कर लिया। इससे स्पष्ट है कि राजा भी सुखी नहीं हैं। राजा भय के कारण कभी चबूतरे पर नहीं सोते। मखमली बिस्तर होने के बाद भी उन्हें सुख की नींद नहीं आती। जो व्यक्ति अपनी संपत्ति का अधिकार अपनी पत्नी को देता है, वह अपनी पत्नी के व्यभिचारिणी होने या पुत्र के न होने अथवा पिता के आज्ञाकारी पुत्र न होने के कारण दुखी रहता है।

जिसकी पत्नी और पुत्र प्यारे होते हैं, वह उनकी मृत्यु या वियोग से दुखी होता है। जवानी खत्म होने वाली है. बुढ़ापा आने से दुःख होता है। कोई मृत्यु के विचार से दुखी होता है। संक्षेप में, इस संसार में कोई सुख नहीं है। इस जीवन में कोई खुशी नहीं है।

सांसारिक सुख अनित्य हैं

सांसारिक सुख निरर्थक, अनित्य और नाशवान हैं। भाग्य स्थिर रहने वाला नहीं है। आज का करोड़पति, कल भिखारी बनते देखा गया। जो आज जवान और पढ़ा-लिखा है और अधेड़ उम्र का आदमी भी अकड़कर चलता है, कल बुढ़ापे के कारण लाठी के सहारे चलेगा। जिन्हें पहले सभी एक-दूसरे को प्यार से गले लगाते थे। अब तो उसके पास खड़ा भी नहीं होना चाहते। इसका मतलब यह है कि इच्छा, जीवन, मन, धन, शरीर, और सांसारिक सुख आदि सभी छाया की भांति अनित्य और क्षणभंगुर हैं; अतः दुःख के कारण हैं ।

शरीर में मृत्यु, लाभ में हानि, विजय में पराजय, रूप में कुरूपता, भोग में रोग, संयोग में वियोग ये सभी दुःख के कारण हैं। यदि असत्य के बिना जीवन, सुख के बिना दुःख , बुढ़ापे के बिना युवावस्था, दुःख के बिना सुख, वियोग के बिना

संयोग और चंचल लक्ष्मी न होकर स्थिर रहने वाला धन होता, तो मनुष्य को इस जीवन में अवश्य ही सुख मिलता।परन्तु ऐसा होना सम्भव नहीं है।

भोगों में सुख नहीं है। वे केले के पत्तों या प्याज के छिलकों की तरह ही अभौतिक हैं। फिर भी ; मोहग्रस्त व्यक्ति विषयों में फंसा रहता है। लेकिन एक ना एक दिन इंसान को खुद को इन कामुक सुखों से अलग हो जाना ही पड़ता है। वियोग के समय लोगों को बड़ा दुःख होता है। इसके परिणाम कष्टकारी ही होते हैं।

इसके अलावा विभिन्न प्रकार के पुण्य कर्म, यज्ञ आदि करने या दान करने से लोगों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। वहां वह अमृत और सोमरस का सेवन और पान करता हुआ बहुत काल तक विलासमय दिव्य जीवन व्यतीत करता है। उसे इच्छित वस्तु स्वर्ग में केवल संकल्प मात्र से ही मिल जाती है. लेकिन जब उसके अच्छे कर्म नष्ट हो जाते हैं या वह उनका फल भोग चुका होता है, तो उसे स्वर्ग से नीचे फेंक दिया जाता है। उसे फिर से इस भौतिक संसार में वापस आना पड़ता है और फिर से इस दुःखदायी जन्म - मरण के चक्कर में पड़ना पड़ता है ।

वह अपने अच्छे और बुरे समय को मन ही मन याद करके रोता है और दुखी होता है। इसलिये अच्छे कर्मों का फल भी मुझे भयावह लगता है। क्योंकि परिणाम वे भी दु:ख का कारण होते हैं। इसका अर्थ है कि संसार मिथ्या और अस्वाद है। इसके सुख न तो शाश्वत हैं, न ही चिरस्थायी, यही दुःख का कारण है।इस अनित्य और सारहीन संसार से सुख जी आशा करना ऐसे ही व्यर्थ है , जैसे बंध्या से पुत्र की आशा करना या रेत के कणों से तेल प्राप्त करने की आशा करना।

स्वर्ग अथवा पृथ्वी पर कहीं भी प्राणियों को सुख नहीं है।केवल सुख का आभास मात्र है।जैसे मरू -मरीचिका के समान , कहीं दूर जल दिखलाई पड़ता है परंतु समीप पहुंचने पर लेशमात्र का भी जल नहीं होता।

सलाह: यदि मनुष्य सदैव दुःखों से दूर रहकर सुखों का उपभोग करना चाहता है तो उसे अनित्य तथा नाशवान पदार्थों से दूर रहना चाहिए। उनसे मोह नहीं रखना चाहिए. धन, पुत्र, पत्नी, संपत्ति, यौवन और स्वामित्व उन्नति आदि ये सभी नाशवान हैं। ये आज हैं और संभव है कि कल न रहें।

पुत्र, पत्नी, पारिवारिक संपत्ति, घर, संपत्ति आदि अनित्य हैं, संभवतः किसी भी परिवर्तन पर वापस ली जा सकती हैं। आज हम एक दूसरे से ऐसे मिले हैं जैसे किसी सराय में मुसाफिर हों, लेकिन उम्मीद नहीं है कि हम दोबारा कभी मिल सकेंगे। यदि कोई अनर्थ हो गया तो कल उनसे वियोग अवश्यम्भावी हो जायेगा।

यह क्या है - जिस शरीर को हम सबसे अधिक प्यार करते हैं, रगड़ते हैं, धोते हैं, सजाते हैं वह भी एक दिन हमसे अलग हो जाएगा।धरती पर ऐसे ही निर्जीव पड़े रहेगा। जैसे किसी पेड़ से झडा हुआ सूखा पत्ता।

एक क्षण में प्राणी जन्म लेता है, दूसरे ही क्षण उसका विनाश हो जाता है। जो अज्ञानी लोग ऐसी भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति रखते हैं वे दुःख के गहरे गड्ढे में गिर जाते हैं। इसलिये बुद्धिमानों को इस लोक और परलोक की तुच्छता तथा संयोग और वियोग पर विचार करना चाहिये।

कभी किसी को अनित्य वस्तुओं से प्रेम नहीं करना चाहिए। उसे सदैव अमर आत्मा या ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। संसार नाशवान है, पुत्र, धन आदि भी नष्ट हो जाते हैं, लेकिन ईश्वर कभी भी, किसी भी समय नष्ट नहीं होता। यदि संसार मिथ्या, नाशवान, जड़ और दुःख से युक्त है तो यह आत्मा अनादि, नित्य और सुन्दर है। इस शरीर के रूप में. अरे भगवान के मंदिर में तो आत्मा ही भगवान है। संसार के सभी प्राणियों की आत्मा उसी एक परम पिता परमात्मा की आत्मा का अंश है।

इस आत्मा के बारे में सोचोगे, नित्य चिंतन , मनन करोगे तो खुश हो जाओगे। तुम्हें सच्ची खुशी मिलेगी। लेकिन आत्मनिरीक्षण कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए मन को वश में करना होगा, उसे विषयों से हटाना होगा, उसे इच्छाओं से अलग करके एकाग्र करना होगा। मन एकाग्र होने पर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

वैराग्य शतकम् - ००४ .

धन पाने की आशा में मैंने धरती की तह तक खुदाई की; अनेक प्रकार की पर्वतीय धातुएँ ढाली गईं, समुद्र की गहराई तक पहुँचा , ताकि कुछ हीरे मोती हाथ लगे। राजाओं को राजी और खुशामद करने का कोई मतलब नहीं था, फिर भी हृदय के बहते आँसुओं को छुपा कर , अपने आप को नीचे गिरा के , राजाओं और धनपतियों की खुशामदी और तुच्छ सेवा किया।

आशा और तृष्णा के वशीभूत हो कर किये गए विविध सब कर्म निष्फल हुए। पर क्या प्राप्त हुआ , एक फूटी कौड़ी भी हाथ न लगी। हे तृष्णे ! तू कब तक मुझे और ऐसे ही नचाएगी ? अब तो मेरा पीछा छोड़।

मंत्र को पूरा करने के लिए पूरी रात श्मशान , जलती हुई चिताओं की दुर्गन्ध में ध्यान केंद्रित करते तप किया । बैठे-बैठे भी जप करते रहे; लेकिन इतना दुर्भाग्यपूर्ण काल आया है. बहुत प्रयत्न करने पर भी एक पैसा न मिला। हे ! लोभ की माता, अब तो तू मुझे छोड़ दे।

यह जानकर कि भूमि में धन है, मैंने भूमि को नीचे तक खोदा, परन्तु कुछ न मिला। रसायन (सोना) को सिद्ध करने के लिए, सोना और चाँदी बनाने के लिए मैंने अनेक प्रकार के मंत्रों का प्रयोग किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तब मुझे एहसास हुआ कि समुद्र लहरों की खान है - यह मोतियों से भरा है; मैं भी समुद्र में खो गया और उसकी थाह न पा सका, और कुछ भी न पा सका।

तब मैंने सोचा कि मैं राजाओं की सेवा करके धन कमा सकता हूँ; मैंने राजाओं और अमीरों को संतुष्ट करने की पूरी कोशिश की; उन्हें हर संभव तरीके से खुश किया, लेकिन फिर भी पैसा नहीं मिला। तब मुझे ध्यान करने की इच्छा हुई, इसलिए मैं पूरी रात अकेले श्मशान प्रांगण में बीजाक्षर मंत्र का जाप करता रहा, शव साधना किया ताकि वशीकरण मंत्र सिद्ध हो जाए और मैं राजाओं को वश में करके धन प्राप्त कर सकूं।

लेकिन यहां भी मुझे निराशा का सामना करना पड़ा. तमाम कोशिशों के बाद भी एक पैसा भी नहीं मिला। इसकी तृष्णा जो है , और उलटे प्रतिपल बढ़ते ही जा रही है। ! अब मैं निराश हो गया हूं। इतना जरूर है कि हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा नजर आ रहा है। आशा की एक छोटी किरण भी कहीं नज़र नहीं आ रही है। हे ! पापिनी तृष्णा ! तू कब तक और मुझे ऐसे ही दर दर भटकाएगी ? अब तो मुझे मुक्त कर दे !

ओह, दर्दनाक लालसा ! अब कृपया मुझे पीछे छोड़ दे ! हजारों बार भी ढूंढने पर भी मुझे किसी प्रकार का छिपा हुआ खजाना नहीं मिलेगा। अमृत की खोज में अँधेरी दुनिया में गया सिकंदर; लेकिन अमृत कुंड तक पहुंचने के बाद भी वह अमृत का स्वाद नहीं ले सका; क्योंकि उसकी किस्मत में ऐसा कुछ लिखा ही नहीं था। मनुष्य अपने भाग्य से संतुष्ट नहीं होता; वह पैसों की तलाश में घूमता रहता है। जब कोई चीज़ हाथ नहीं लगती तो रोता और असन्तोष होता है।

इसका मतलब यह है कि किसी के भाग्य के विरुद्ध प्रयास करना व्यर्थ है। आपके भाग्य में जो भी धन लिखा है, वह आपको बिना प्रयास किये, बिना किसी को खुश किये, बिना देश-विदेश घूमे, घर बैठे ही मिल जायेगा, अपने भाग्यानुसार । महर्षि वशिष्ठ ने कहा है कि - किसी को भी अपने भाग्य से एक पैसा भी अधिक या एक पैसा भी कम नहीं मिल सकता।उसे उतना ही प्राप्त होगा जितना उसके भाग्य में है।पूर्व जन्म के कर्मों से इस जन्म का भाग्य बना है और अब जो आप वर्तमान कर्म कर रहे हैं , इन कर्मों से आप का भविष्य जन्म का प्रारब्ध बन रहा है।

ठीक ऐसे ही जैसे , आप जब नौकरी कर रहे हैं तो इस महीने में जो आपको वेतन मिला है , वह आप के पूर्व महीने में किये गए नौकरी का फल है , पूर्व महीने के कर्म का वेतन है। और अब आप जो इस महीने में नौकरी कर रहे हैं , कर्म कर रहे हैं , इस महीने का वेतन आप को आने वाले भविष्य के महीने में प्राप्त होगा , इसमें कोई संशय नहीं है।

सलाह: ओ मेरे मित्रो ! यदि आप सुखी और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं तो लालच के राक्षस के जाल से बाहर निकलें और दिए गए भोजन से संतुष्ट रहें। सुख-शान्ति पाने का सबसे बड़ा उपाय 'सन्तोष' है , इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। यदि मनुष्य तृप्त नहीं हुआ तो सारा जीवन अतृप्त प्यास , तृष्णा , झूठी आशा के कारण दर दर भटकते हुए अपने अमूल्य जीवन यूं ही व्यतीत कर देगा और भीतर कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएगा।

वैराग्य शतकम् - ००५ .

मैं अनेक दुर्गम एवं दूरस्थ स्थानों में घूमता रहा। नतीजा भी कुछ नहीं निकला। मैंने अपनी जाति और कुल का भी अभिमान त्याग कर दूसरे का काम किया। लेकिन उससे भी कुछ नहीं मिला। बाकी समय मैं कौए की तरह दूसरों के घरों के टुकड़े खाता फिरता, डरता और अपमान सहता रहा । हे पाप कर्म करने वाले तथा कुमति तृष्णा के दाता ! क्या तुम इससे भी संतुष्ट नहीं हुए हैं ? मुझसे और क्या क्या दुष्कर्म करवाओगे , हे ! विनाशकारी तृष्णा ?

धन के लोभ से मैं अपना देश और घर छोड़कर ऐसे स्थानों पर चला गया, जहाँ लोग बड़ी कठिनाई से पहुँच पाते हैं; लेकिन वहां जाकर भी मुझे एक पैसा भी नहीं मिला। मैं द्वैतवाद या ऊंची जाति के अहंकार को छोड़कर दूसरे की नौकरी पर चला गया और मेरे स्वामी ने मुझे जो भी काम करने का आदेश दिया, वह किया।

लेकिन इससे भी मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। लेकिन कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकला। हे ! परम मायामयी तृष्णा ! बाकी मैं अपनी इज्जत और बेइज्जती को छत पर रख कर शूद्र और नीच प्रवृत्ति के लोगों के घरों में सेवा किया। कौए की तरह डर कर खाना खाता रहा। इन सब बातों से मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने अनेक प्रकार के कष्ट सहे, अपना सम्मान खोया, दूसरों की निन्दा सहन की, परन्तु फिर भी मेरी इच्छा पूरी न हुई।

इसलिए इतनी भयानक चाहना को गले लगाए फिरता रहा है. मैं कभी कभी अपने आप से पूछता हूं कि इतने दुष्कर्म करने के बाद तुम्हें (मुझे) संतुष्टि हुई या नहीं ? हे पापिणी तृष्णा ! तू अब और कितनी मेरी बेइज़्ज़ती करवाएगी ? क्या तुझे अब भी संतुष्टि नहीं मिली ? क्या अब भी तेरा पेट नहीं भरा ?

वैराग्य शतकम् - ००६ .

दुष्टों की सेवा करते-करते मैंने उनके ताने - बाने सह लिये, और अपने आन्तरिक दुःख से निकलने वाले आँसुओं पर काबू पा लिया। उत्साहित मन से उनके सामने कृत्रिम हंसी हँसता रहा। हँसने वालों के सामने मन स्थिर रखना पड़ा । ऐसा करने के बाद दुखी मन से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि ओह, झूठी आशा ! तृष्णा की बहन ! क्या इससे भी तुम को संतुष्टि नहीं हुई ? तुम मुझे और कितना नचाओगी ?

मैं नौकरी करता था और नीच लोगों की सेवा करता था। उनकी सेवा करते हुए मैंने उन दुष्टों की सारी भद्दी आवाजें, गालियाँ और दुलार सहन कर लिये। उनकी बातें मेरे हृदय में छेद कर जातीं और मेरा हृदय रोने लगता। उससे जो

आँसू आते थे, उन्हें मैं रोक लेता था। अंदर से मेरा दिल टूट गया था, लेकिन फिर भी मैं उनके सामने बनावटी हंसी हंसता था।

क्रोध को दबाकर और चित्त को स्थिर तथा शान्त करके मैंने भी उन विदूषकों से हाथ मिला लिया। लेकिन फिर भी मुझे उनसे कुछ नहीं मिला। ओह, बेशर्म तृष्णा ! निष्फल आशा ! तुमने मुझे इतना नचाया है, आगे के लिए तुम्हारे दिल में और क्या है ? क्या मुझे छोड़ोगी नहीं ?

वैराग्य शतकम् - ००७ .

सूर्य के उदय और अस्त होने के साथ-साथ मनुष्य की आयु घटती जाती है। समय तो उड़ जाता है, लेकिन दैनिक जीवन के व्यवहार में व्यस्त होने के कारण समय भागता हुआ नहीं लगता। लोगों को जन्म लेते, बूढ़े होते, विपत्तियों का सामना करते और मरते हुए देखकर मेरे हृदय में वेदना होती है , कोई खुशी नहीं है। इससे पता चलता है कि दुनिया माया या भ्रम नामक नशीली शराब में डूबी हुई है।

चलो देखते हैं, हर दिन सूरज उगता है और चाँद निकलता है। ..हर दिन सुबह होती है और हर दिन शाम होती है। सूर्य के उत्तरायण के साथ-साथ मनुष्य की आयु धीरे-धीरे कम होती जाती है; यानी उम्र घटते जा रही है।

प्रतिदिन सुबह और शाम होती है, इस प्रकार हमारी आयु प्रतिदिन घटती जा रही है। जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो आप यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि दिन और रात कैसे गुजरते हैं ? जिनके पास कोई काम नहीं है या दुखी हैं, उन्हें ये बहुत भारी लगते हैं, इन्हें काटा नहीं जा सकता- एक-एक पल साल के समान बीतता है।

लेकिन जो लोग व्यापार या रोजगार में व्यस्त रहते हैं उनका समय हवा से भी तेज उड़ जाता है यानी उन्हें इसका एहसास ही नहीं होता क्योंकि वे व्यापार या पेशे में व्यस्त होते हैं। वे अपने काम में भूले रहते हैं और मृत्यु का समय तेजी से नजदीक आ जाता है।

जैसे डाक रेलगाड़ी में बैठा कोई यात्री अकेला और उदास रहता है तो उसकी यात्रा का समय बड़ी कठिनाई से कटता है; परन्तु यदि उसके साथ दो-चार मित्र या पत्नी-पुत्र भी हों और वे उस गाड़ी में बातें करना, खाना-पीना या मौज-मस्ती करना, आपस में रोचक कहानियाँ सुनाना शुरू कर दें तो हर कोई आनंद में डूबा रहता है। , और गाड़ी अपनी पूरी स्पीड से चलती है, उन्हें पता भी नहीं चलता कि कितनी दूरी तय कर ली है।

जब वे सुनते हैं कि उनकी मंज़िल , उनका स्टेशन आ गया है , तो वे चकित हो जाते हैं। इसी प्रकार जो लोग व्यापार से जुड़े होते हैं उन्हें इसका पता ही नहीं चलता और समय हवा से भी तेज गति से उड़ जाता है और अंततः उनका अंत आ जाता है। मनुष्य प्रतिदिन अपनी आंखों से देखता है कि कल फलां आदमी मर गया; आज एक आदमी बूढ़ा हो गया है, जो जवानी में ऐश-ओ-आराम करता था, घोड़ों और बग्घियों पर घूमता था।आज कंगाल हो गया।

एक नौजवान तंदुरुस्त आदमी की आज अचानक मृत्यु हो गयी। एक बूढ़े को हॉस्पिटल ले जाय गया , बीमार है। वह बूढ़ा ठीक हो कर वापस घर आ गया। जब की उस बूढ़े के घरवाले सोंचते हैं की सदा रोगी बूढ़ा यदि मर जाता तो कितना अच्छा होता ! कई बार हॉस्पिटल जा रहा है और फिर वापस लौट आ रहा हैं। क्योंकि वास्तव में , यमराज के खाते में और उसकी आयु शेष है।

अरे मनुष्यो ! न जाने युवावस्था और यौवन कहाँ लुप्त हो जायेगा, कहाँ और कब चला गया , कुछ पता भी नहीं चलेगा ? एक आदमी, जो करोड़पति था, जिसके घर में सैकड़ों गुलाम थे, जिसके सामने हीरे, पन्ने और सोने-चाँदी के ढेर लगे थे, वह एक आत्मकेंद्रित व्यक्ति बन गया है; राजा ने उसकी संपत्ति हड़पने के लिए उसे कैद कर लिया है। उसके बेटे-बेटियों को उसके बारे में पता भी नहीं चला।

ये सृष्टि का कैसा आश्चर्य है ? प्रतिदिन मृत्यु, जीवन, बुढ़ापा और विपत्तियों को देखकर भी मनुष्य के मन में कोई भय नहीं होता है, वह चेत नहीं होता। । वह

दूसरों को बूढ़ा होते देखता है, लेकिन सोचता है कि वह धन्य है कि वह सदैव जवान रहेगा। वो सोंचता है कि - मरे मेरे दुश्मन , मैं क्यों मरूंगा ?

अपने मित्रों और संबंधियों को सब कुछ छोड़कर मरते हुए देखता है, परंतु उसका मानना है कि वे मरें तो मरें, मैं नहीं मरूंगा। क्योंकि हर प्राणी अपने "मै" को बचाये रखना चाहता है। वह दूसरों पर विपत्तियां को आते हुए देखता है, परन्तु यह नहीं समझ पाता कि किसी दिन वैसी ही विपत्ति उस पर भी आ सकती है।

बहुत से लोग श्मशान में जाकर वैराग्य का अनुभव करते हैं, लेकिन वह क्षण भर के लिए ही रहता है। स्नान करने के बाद घर में प्रवेश करते ही व्यक्ति यादें भूलने लगता है, और स्त्री के प्रेम में तो सब दुःख दर्द ही भूल जाता है। परन्तु वह क्षणिक राहत होती है।

जैसे शराबी को शराब पीने पर उसके सब दुःख दर्द पक्षी की तरह उड़ जाते हैं, और एक विचित्र प्रकार के सुख की अनुभूति होती है। । परन्तु शराब के नशे के उतरते ही , फिर जहाँ - तहाँ विपत्तियां वापस आ धमकती हैं। जैसे चोर पुलिस कर्मचारियों को देखते ही भाग जाते हैं , और पुलिस के चले जाते ही फिर स्वतंत्रता से घूमने लगते हैं। और अपने काम-धंधे में व्यस्त होने के बाद व्यक्ति पूरी तरह से भूल जाता है। ..आदमी इतनी लापरवाही क्यों करता है? ये उलझन और बेहोशी !

इसका कारण माया की मदिरा है, जिसे पीकर संसार मतवाला हो रहा है; क्योंकि मनुष्य दूसरों को बूढ़ा और मरता हुआ देखकर भी सचेत नहीं होता। इतना ही नहीं, व्यक्ति के शरीर में रोग और बुढ़ापा देखने के बाद भी जीने और सुख भोगने की आशा बनी रहती है। उस आशा के सहारे वह अपने जीवन को नष्ट कर देता है। दूसरी ओर समय अपनी कैंची से उसके जीवन की डोर को प्रशिक्षण काटते जा रहा है।

वैराग्य शतकम् - ००८ .

इस संसार में प्रतिदिन बच्चे माँ के , स्त्री के फटे कपड़े खींचते हैं, घर के अन्य लोग भूख के कारण उसके सामने रोते हैं - इससे स्त्री को बहुत दुःख होता है। यदि घर में ऐसी दुखी स्त्री न होती, तो ऐसा धैर्यवान पुरुष कौन होता, जो राजा और धनिकों के क्रोध और तिरस्कार को असहाय होकर सहन कर लेता और भारी मन से उनके सामने असहाय होकर हाथ फैला देता। और शर्म तथा इज़्ज़त को खूंटी पर टांग देता ?

और वह जाता है भीख मांगने लोगों से। , अस्पष्ट भाषा में या टूटे-फूटे शब्दों में, अपने पेट की जलन को शांत करने और अपने गरीब परिवार के जीवन यापन के लिए "मुझे कुछ दो" शब्द कहते हुए विनती करता है।

जिसके घर में प्रतिदिन बच्चे माँ के फटे कपड़े खींचते हों और जो भोजन के लिए घर में बच्चों और परिवार के लोगों के रोने से दुखी होता हो। उसके घर में ऐसी दुखद परिस्थिति में कभी सुखदायी नींद नहीं आती है।   तो कौन है वह आदमी जो भीख मांगने के लिए मजबूर न हो जाए !

अपना और परिवार का पेट भरने के लिए टूटे-फूटे शब्दों में गिड़गिड़ाता है और लोगों से "कुछ दो" शब्द कहने पर आंसू बहते हुए , मन से ना चाहकर भी मजबूर हो जाता है, दूसरों के सामने हाथ पसारने के लिए।

इसका मतलब यह है कि स्त्री/पत्नी के कारण ही पुरुष को विभिन्न प्रकार की परेशानियां और अपमान सहना पड़ता है; इसलिए निज पुत्र का जन्म ही दुःख का कारण है। गरीबी में जब खाने को कुछ नहीं होता, तो बच्चे अपनी माँ के कपड़े खींचकर रोटी माँगते हैं, तो वह बहुत दुखी हो जाती है।

उसका गंदा मटमैला - उदासी चेहरा देखकर पुरुष मान-मर्यादा भूलकर भोजन तक के लिए भीख मांगने पर उतारू हो जाता है। उस समय इस डर से आदमी की नाक में दम हो जाता है कि कहीं कोई उसे भिक्षा देने से मना न कर दे; लेकिन बेचारा लड़खड़ाती ज़ुबान से "मुझे कुछ दो" शब्द कहता रहता है। यदि स्त्री न होती तो कौन पुरुष अपने पेट की आग बुझाने के लिए ऐसा करता ?

इस संसार में किसी दूसरे से भीख माँगने के समान ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो किसी व्यक्ति की गरिमा को नष्ट कर सके। मांगना और मरना एक ही बात है। कुछ लोगों का मानना है कि भूख से मरना भीख मांगने से बेहतर है। यहाँ तक कि भगवान त्रिलोकीनाथ को भी अनुनय-विनय के कारण छोटा बनना पड़ा, वामन अवतार लेना पड़ा। फिर दूसरे साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या ? औरों के बारे में क्या आश्चर्य ?

हाथ के ऊपर हाथ रखो, परन्तु हाथ के नीचे हाथ न रखो, जिस दिन हाथ के नीचे हाथ रखोगे, उस दिन मर जाना उचित है। अर्थात दूसरों को दो, लेकिन दूसरों के सामने हाथ मत फैलाओ। कबीरदास जी कहते हैं कि जिस दिन दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़े उस दिन मर जाओ तो बेहतर होगा।

“मान गया , सम्मान गया , ज्योंही कहा कछु देय !’

गरीबी में भीख मांगने का ख्याल आता है; फिर किसी तरह बड़ी मुसीबतों से होकर बात जुबान पर आती है; लेकिन जुबान पर ताला लग जाता है। इसलिए यह वहां से आगे नहीं बढ़ता. अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी महापुरुषों के मुँह से 'कुछ दो' शब्द नहीं निकलते; लेकिन एक महिला के लिए बड़ों को भी हेय दृष्टि से देखना पड़ता है। यदि स्त्रियाँ न होती तो महापुरुष अपने पापी पेट के लिए कभी किसी से भीख न माँगते।

इसलिए सारी परेशानियों की जड़ औरत ही है. इस महिला के लिए एक पुरुष को क्या-क्या कष्ट नहीं सहना पड़ता ! उनका सारा जीवन पत्नी तथा पुत्रों के पालन-पोषण की चिंता में व्यतीत हो जाता है; लेकिन भगवान के गुण गाने में उसका मन नहीं लगता। मन तभी लग सकता है जब वह शुद्ध हो। नमक, तेल, लकड़ी और दालों की उन्हें सदैव चिंता रहती है। ईश्वर में ध्यान न लगाने और शेष दिन आने के कारण उसे पुनः जन्म-मरण के झंझटों में फंसना पड़ता है।

इसलिए जो लोग इस संसार में सुखी और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं और मरने के बाद इस संसार में वापस नहीं आना चाहते, वे स्त्री रूपी माया की कैद में नहीं पड़ते। यह स्त्री भ्रम संसार वृक्ष का बीज है। इसके पत्ते ; शब्द, स्पर्श, तरल, रूप और गंध; काम और क्रोध , लोभ, मोह आदि उसकी शाखाएं हैं और बेटे-बेटियाँ उसके फल हैं।

यह संसार वृक्ष तृष्णा के जल से उत्पन्न होता है। स्पष्ट है कि स्त्री ही सांसारिक बंधन का कारण है। जो स्त्री से संबंध नहीं रखता या जिसने संबंध छोड़ दिया है, वह सच्चा है। उसने संसार का त्याग कर दिया है। वह कहाँ उदास है ? उसे अवश्य ही मोक्ष की प्राप्ति होगी।

लेकिन जो इस पिशाचिनी के जाल में फँस गया उसके लिए सुख कैसा ? उसे इस जीवन में सुख नहीं मिल पाता। जन्म मरण के चक्र से और संसार के बंधन से मुक्त होने में कनक और कामिनी ही दो बाधाएँ हैं। मेरे जैसे आदमी का मुक्त होना संभव नहीं है।

एक बार व्यास जी ने सुखदेव जी से विवाह करने के लिए कहा। लेकिन सुखदेव जी नहीं माने। शुकदेव जी ने कहा - "पिताजी ! फिर भी यह संभव हो सकता है कि लोहे की जंजीर के मजबूत बंधन से कोई भी कभी भी मुक्त हो सकता है; लेकिन मनुष्य पत्नी, पुत्र आदि के बंधन से मुक्त नहीं हो सकता है । पिता जी - गृहस्थ आश्रम एक कारागार है ;इसमें कोई ख़ुशी नहीं है।

इंसान को जीविकोपार्जन के लिए दुनिया में छोटे-मोटे काम करने पड़ते हैं। उन गृहिणियों को उन स्त्रियों को बधाई देनी होगी जिनके चेहरे पर घर का बोझ सहते हुए भी पाप का आरोप नहीं लगता। मैं किसी कारण से भी स्त्री के बंधन में नहीं पड़ना चाहता। इसलिए मेरे जैसे व्यक्ति के लिए सांसारिक मामलों से जुड़ना संभव नहीं है।

वैराग्य शतकम् - ००९ .

बुढ़ापे के कारण अब मेरी मांगने की इच्छा न रही; मेरी कोई कदर भी नहीं करते हैं। हमारे बराबर वाले मर गये; जो घनिष्ठ मित्र बचे थे वे भी बेकार थे, हम जैसे थे वे भी चले गए हैं। अब तो हम लकड़ी के बिना उठ भी नहीं सकते और हमारी आंखों के सामने अंधेरा छा गया है। इतना सब कुछ होते हुए भी हमारा शरीर इतना बेशर्म है कि और जीना ही चाहता है। बल्कि अपनी मौत एक दिन आएगी ऐसा सुनकर होश ही उड़ जाते हैं ! मौत के नाम से अज्ञानी मनुष्य सूखे पत्ते की तरह , थर थर कांपने लगता है। ऐसे ही कांपते हैं , जैसे किसी शेर के सामने बकरी का बच्चा।

रहस्योद्‌घाटन यह है कि हमारी जवानी चली गयी है; वह जोश खरोश और साहस अब नहीं रहा; बुढ़ापा आ गया है, गालों में गड्‌ढे पड़ गए हैं: शरीर पर झुर्रियां पड़ गई हैं। सिरके के बाल सफेद हो गये हैं; दांत गिरने लगे हैं, ये हो गई है हमारी हालत! लोगों के बीच हमारा जो सम्मान था वह भी अब कम होता जा रहा है।

अब लोग हमें निकम्मा बूढ़ा समझते हैं और घृणा की दृष्टि से देखते हैं। "हमारी उम्र के लोग हमारी आँखों के सामने मर गए। जो बचे हैं वे भी हम जैसे ही बेकार हैं। अब हम इतने कमजोर हो गये हैं कि रस्सियों का सहारा लिये बिना चल भी नहीं सकते। आंखों से दिखाई नहीं देता. इतना सब कुछ होते हुए भी मौत के नाम से हमारा शरीर कांपने लगता है!

जीवन एक अजीब मुग्धता की स्थिति है. ये दुनिया की अजीब चाल है! इस जीवन में कोई खुशी नहीं है. मनुष्य के मित्र-बन्धु मर जाते हैं, वह बेकार हो जाता है, उसकी आँखें, कान और इन्द्रियाँ बेकार हो जाती हैं।लेकिन उसकी तृष्णा सदा बहार युवती की तरह , जवान ही रहती है , मनुष्य की तृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती है।

यहां तक बत्तर हालात हो जाते हैं कि बूढ़े मनुष्यों का बुढ़ापा भी वह चला जाता है। आँखें कुछ देख नहीं सकतीं और कान उसे कुछ सुनाई नहीं पड़ता। घर में और घर के बाहर लोग उसका तिरस्कार करते हैं। बुढ़ापे के कारण वह चलना नहीं जानता, भोजन भी मिलना कठिन हो जाता है; फिर भी इंसान मरना नहीं चाहता, बल्कि मौत की खबर सुनकर चौंक जाता है। इसे मोह न कहें तो क्या कहें ?

लकडहारा और मौत

एक बूढ़ा बहुत गरीब था। उसके सभी बेटे और पोते मर चुके थे। केवल एक बूढ़ी औरत बची थी। हाथ-पैर फैलाकर सभी जवाब दें दिए थे । आंखों से दिखाई नहीं देता था. फिर भी ; अपना और बुढ़िया का पेट भरने के लिए वह कई जगहों से लकड़ियां काट कर लाता था और बेचता था ।

एक दिन उसने अपने जीवन से अत्यंत दुखी होकर मृत्यु की दुहाई दी। जैसे ही उसने पुकारा तो मृत्यु शिशु के रूप में उसके सामने आ गयी। बूढ़े ने पूछा – "तुम

कौन हो?" मौत ने कहा मैं मौत हूं. , तुमने मुझे याद किया और मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

मौत का नाम सुनते ही लकड़हारा चौंक गया और बोला, मैंने तुम्हें यह भारी बोझ उठाने के लिए बुलाया था। मृत्यु ने उसका बोझ उठाया और सिर पर रखकर चली गयी।

बूढ़ा लकड़हारा हर प्रकार से दुखी था, उसे जीवन में तनिक भी सुख नहीं था; फिर भी वह मरना नहीं चाहता था; दरअसल, मौत को देखकर वह सदमे में आ गया। इस दुनिया में ऐसे और भी लोग हैं, जो मृत्यु के नाम मात्र से भयभीत हो जाते हैं। क्योंकि अपनी अज्ञानता के कारण। रस्सी के पड़े हुए टुकड़े को सर्प समझ बैठते हैं , यह अज्ञानता नहीं तो और क्या है ?

महर्षि नारद जी ने अपनी माँ की मृत्यु पर कहते हैं ; - जब उनकी माँ दूध दुहने शाम के समय गौशाला गयी , तो उसे एक काले नाग सर्प ने डस लिया और वहीँ पर उनकी माँ की मृत्यु हो गयी थी। तब वे कहते हैं - किसी के भी जीवन में मृत्यु एक निमित्त का आश्रय लिए आती है। जब मनुष्य के मृत्यु का काल समीप आ जाता है तभी उस व्यक्ति को मृत्यु मार कर अपने साथ ले जाती है। असमय में कभी किसी प्राणी को भी मृत्यु को मारने का अधिकार नहीं है।

बिना समय के पूर्ण हुए , मृत्यु जीव - जंतु प्राणी - मनुष्य को , किसी को भी , ना एक पल पहले आती है और न हीं एक पल बाद आ सकती है। सदा मृत्यु प्राणी के निश्चित समय पर ही आती है। और मृत्यु से आज तक ना कोई बच पाया है और नहीं भविष्य में बच पा सकता है। गीता में भगवान ने स्पष्ट शब्दों कहा है , जो जन्म लेगा उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी।

क्या जब तुमने बालकपन छोड़ के यौवनवास्थ्य में पदार्पण किया था , तब रोया था ? क्या तुमने अपने कपडे बदलकर दूसरे कपडे धारण किये , तब रोये थे ? मृत्यु भी कुछ इस तरीके की है। फिर हे मनुष्यो ! क्यों व्यर्थ में मृत्यु जैसे अनिवार्य प्रक्रिया से अपने जीवन में डरते हो ? क्या तुम्हारे डर जाने से मृत्यु नहीं आएगी ?

मृत्यु अवश्य आएगी , इसलिए मृत्यु के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त करो और निर्भय हो जाओ , निश्चिन्त हो जाओ , निशंक हो जाओ। जीवन के रहते रहते ही जीवन मुक्ति प्राप्त कर लो , फिर कोई भय या मृत्यु तुम्हारा बाल भी बांका कर नहीं सकेगी। तुम अमरत्व को प्राप्त हो जाओगे , अमरत्व का सच्चा ज्ञान हो जायेगा। एक पड़ी हुई रस्सी को सर्प समझ कर कबतक डरते रहोगे ? प्रकृति

की एक सामान्य मृत्यु रूपी प्रक्रिया को देख कर कब तक भय से आक्रांत होते रहोगे !याद रखो ! मृत्यु कल्याणकारी , ना ही विध्वन्सक।

<u>एक उदास बूढ़ा आदमी</u>

एक वैश्य ने जीवन भर कड़ी मेहनत की और बहुत सारा धन इकट्ठा किया। बुढ़ापे में बेटों ने पूरे घर पर कब्ज़ा कर लिया, बूढ़े को एक छोटी सी खाट और गद्दा दे दिया और कुते को पीटने के लिए उसके हाथ में एक छड़ी दे दी। रोज सुबह-शाम परिवार का कोई व्यक्ति उसे बचा हुआ बासी खाना खाने को देता था।

जो सेठ कभी सौवों कर्मचारी का अधिपति था , करोड़ों में खेला करता था , आज उसके सगे संबंधी पुत्र - पौत्र उसे दाने - दाने का मोहताज बना दिए।

सेठ ने अपना वृद्ध जीवन बड़े दुःख के साथ व्यतीत किया। बेटे-बहुएँ दिन भर कहते रहते- "वह मरता नहीं। मरना तो सबको है। बूढ़ा आदमी मिट्टी पर थूक कर उसे प्रदूषित करता है।" एक दिन एक पोता उसे पीट रहा था।

इतने में नारद जी वहां आये। उन्होंने सारी स्थिति देखकर कहा – “सेठजी ! आप बहुत दुखी हैं। वैसे भी स्वर्ग में कुछ और आदमियों की जरूरत है। अगर तुम स्वर्ग आना चाहोगे तो हम तुम्हें मुफ्त में ले जायेंगे।” यह सुनकर सेठ ने कहा – “जाओ नारदजी, आज सुबह सुबह तुम्हें कोई मूर्ख तो नहीं मिला ?” किसी और को ढूंढो।

मेरे बेटे और पोते मुझे मारते हैं या मुझे थप्पड़ मारते हैं, तो इसमें आप को क्यों दर्द हो रहा है ? मुझे आपकी क्या परवाह है ? क्या आप हमारे मध्यस्थ हैं? क्या हमने आपको पंचायती के लिए बुलाया है ? मैं इन्हीं में खुश हूं। मुझे स्वर्ग की आवश्यकता नहीं है।"बड़े आये मुझे स्वर्ग ले जाने वाले। जाइये महाराज , जाइये , किसी और मूर्ख को ढूंढिए।

सेठ की बात सुनकर नारदजी को बड़ा व्यंग हुआ , हंसी आयी और आश्चर्य भी। नारद जी मन ही मन मुस्कुराने लगे और सोचने लगे - “ओह. सचमुच संसार

माया में किस हद तक , बुरी तरह से फँसा हुआ है। मानव किस तरह मोहक शराब के नशे में धुत्त होकर अपना होश खो बैठता है। मनुष्य की कमर में सदा समय की नंगी तलवार लटकी हुई है। फिर भी उसका मन विषयों में ही लगा रहता है। ऊंठ के मुख से खून बह रहा है , फिर भी वह कंटीली झाडी खाना नहीं छोड़ता।

हाय बदकिस्मत गोंच ! गाय का अमृतमय स्वादिष्ट दूध का पान करने के बजाय , गाय के थन पर बैठ कर , गाय का खून चूस रही है ? मनुष्य मंदिर में जाकर अनंत वैभवशाली और अपूर्व ऐश्वर्यशाली भगवान् से स्वयं उनको मांगना छोड़ कर सांसारिक हिन् और शूद्र , नाशवान वस्तुओं की मांग करता है।अरब - खरबपति के पास जाकर , बहुमूल्य वस्तुएं , सोना - चांदी आदि मांगने के बजाय , तुच्छ मदिरा की बोतलें और भोग सामग्री मांगता है। तू ही देख हे मनुष्य ! तू कितना बुद्धिमान और चतुर है ! अस्तु !

यथार्थ में ! युवतियों के हृदय को आनंदित करने वाली वह जवानी चली गई, मेरे दांत गिर गये, मैं छड़ी के सहारे चलता हूँ, आँखों की ज्योति लुप्त होती जा रही है। मैं दोनों कानों से नहीं सुन सकता, इतने पर भी , मेरा बेशर्म - निर्लज मन भोग -सामग्री आदि चीज़ों के लिए ऐसे ही तरसता है, जैसे व्यसन से लिप्त हुआ व्यक्ति मदिरा आदि नशीली पदार्थों के ना मिलने पर उनको पाने के लिए लिए बेचैन हो जाता हो ।

कसाई को दूर से आते देखकर भी बकरिया , मज़े से हरी - हरी घांस चर रही हैं। उन बेचारी बकरियों को क्या मालूम ? कसाई उन्हें पकड़ ले जाएगा और उनका वध कर डालेगा , और चमड़ी उतार लेगा ?

परन्तु हे विवेक शाली मानव ! तुम तो बुद्धिमान हो। सारे वेद , पुराण , उपनिषद , गीता आदि सत ग्रन्थ पुकार पुकार कर चेतावनी दे रहे हैं। यह अमूल्य मानव देह बार - बार नहीं मिलने वाला। अपना कल्याण कर लो , मुक्ति पा लो , भगवत धाम का मार्ग खोज लो। नहीं तो बहुत बड़ी हानि होने वाली है। रहते , अपना मार्ग खोज लो , फिर घने - घोर जंगल में कौन सहायक होगा ? नहीं तो फिर वही जन्म - मरण और ८४ लाख योनियों के फेरे में पड़ना होगा।

" उठ जाग मुसाफिर भोर भई, क्यों सोवत है !
जो सोवत है सो खोवत है , जो जागत है सो पावत है।"

वैराग्य शतकम् - ०१० .

विधाता ने बिना हिंसा और बिना उद्योग के वायु का भोजन सांपों की जीविका के रूप में उपलब्ध कराया। पशुओं को घास खाने और भूमि पर सोने की व्यवस्था की गयी। ; परन्तु जो लोग अपनी बुद्धि के बल से भवसागर को पार कर सकते थे, उन्होंने अपनी जीविका ऐसी बनाई कि जिसकी खोज में उसके सारे गुण समाप्त हो जाएं, परंतु वह मिले नहीं।

लेखक ने वायु को साँपों का भोजन बताया है, जो किसी भी प्रकार की हिंसा से प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्हें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है और वे इसे बिना किसी प्रयास या उद्योग के अपने स्थान पर प्राप्त कर सकते हैं।

जानवरों को चरने के लिए घास और सोने के लिए ज़मीन दी जाती है। इससे उन्हें भी अपना भोजन प्राप्त करने के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता; वे बगीचे में तैयार घास ढूंढते हैं और जब चाहें अपना पेट भर लेते हैं। उन्हें सोने के

लिए बिस्तर, गद्दे और तकिए की चिंता करने की जरूरत नहीं है, वे जहां चाहें जमीन पर सो सकते हैं।

भगवान ने साँपों और जानवरों के प्रति पक्षपात दिखाया और उन्हें निश्चित जीवन का आनंद लेने के तरीके बताए, लेकिन जानवरों को विवेक ज्ञान नहीं है, जो मनुष्य को है। । उन बेचारों को ऐसी बुद्धि नहीं दी गयी कि जिससे वे संसार सागर से पार हो सकते हैं अथवा दुर्लभ मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। पर उन्हें ऐसी आजीविका बताई जिसे खोजने में उनके सारे प्रयास सफल हो जाएं, लेकिन उन्हें जीवन मुक्ति के मार्ग का पता नहीं है, अज्ञानता के कारण। क्या ये जानवरों के लिए कम दुखद नहीं है ?

कितना अच्छा होता अगर विधाता ने इंसानों को भी साँपों और जानवरों की तरह ही जीवन जीने का तरीका बताया होता ? मनुष्य अपनी जीविका की चिंता न करके अपनी बुद्धि के बल से काम , क्रोध , लोभ आदि बलवान शत्रुओं से सहज में ही विजय और मोक्ष प्राप्त कर लेता !

बड़े-बड़े लोग भी अपना पूरा जीवन घी, रोटी, तेल, चावल, सब्जी और ईंधन की चिंता में बिता देते हैं, लेकिन इस चिंता का कोई अंत नहीं है। इससे मनुष्य को रोज़ी रोटी की चिंता में , ईश्वर की भक्ति और आराधना के लिए समय ही नहीं रहता। यदि मनुष्य इतनी विपत्तियों को सहकर भी इहलोक और परलोक बनाना चाहता है तो उसे अपने जीवन की आवश्यकताएँ कम कर देनी चाहिए।जैसे कहा गया - कम सामान , सुखी यात्रा।

क्योंकि मनुष्य की जितनी कम जरूरतें होंगी , वह उतना अधिक खुश रहता है। इसलिए महात्मा लोग महलों में न रहकर जंगल के वातावरण में , जंगल के कंद मूल फल आदि खा कर अपना जीवन काट देते थे। हम वैरागी लोगों को जंगलों में पाए जाने वाले फल-फूल खाकर और नदियों का ठंडा पानी पीकर अपना पेट भर लेना चाहिए। गृहस्थी के लिए भी ज़रूरतें कम करना ही शांति और ख़ुशी का सच्चा और संतोषजनक उत्तम मार्ग है।

वैराग्य शतकम् - ०११ .

संसार के बंधन को काटने के लिए हमने भगवान के चरणों का ध्यान आवश्यकतानुसार नहीं किया; हमने वह धन भी नहीं जमा किया है जो स्वर्ग के द्वार खोलता है; और हमने सपने में भी किसी औरत के कठोर स्तनों को गले नहीं लगाया। हम अपनी माँ के युवा रूप बन गए। माँ के यौवन के काटने के लिए केवल कुल्हाड़ी मात्र बन गए। याने , व्यर्थ का जीवन ग्रहण किया , उलटे माँ को तकलीफ ही दिया। शास्त्रों में कहा गया है कि वही माँ भाग्यवान है , जिसका पुत्र भगवत भक्त हो।

संतों की भी बड़ी विलक्षण वाणी होती है। किसी संत ने कहा है -

उसी गली में पूत है , उसी गली में मूत ;
जो भक्त कहावे पूत है, बाकी मूत के मूत।

हमने इहलोक और परलोक की प्राप्ति के लिए, जन्म-मरण के पाश को काटने के लिए या परम पद की प्राप्ति के लिए शास्त्रों में लिखी विधि के अनुसार भगवान के चरण कमलों का ध्यान नहीं किया। उसकी पूजा कभी नहीं की ,पेट की चिंता में जिंदगी गुजार दी। हमने अपने पूर्व जन्म या वर्तमान जन्म के पापों को समूल नष्ट करने के लिए प्रायश्चित नहीं किया, ना प्राणियों की सेवा की , न दान-पुण्य किया; तो फिर स्वर्ग का द्वार हमारे लिए कैसे खुल सकता है?

क्योंकि धर्म की साधना से ही स्वर्ग का द्वार खुलता है। न ही हमने भगवान के शास्त्रानुसार आज्ञा का पालन किया। ना ही आज्ञा चक्र उत्पीड़न की चेष्टा की और ना ही गुरुदेव, भगवान के चरणों का ध्यान ही किया। धर्म में विश्वास नहीं किया, इसलिए धर्म का आचरण भी नहीं किया। और ना ही महिलाओं के शबाब और शराब का सेवन किया।

तात्पर्य यह है कि हमने न तो नश्वर संसार के झूठे सुख भोगे को ही पूरी तरह भोगा और न ही मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति के लिए कोई उचित , संभव उपाय ही किया ।हमने तो वही कहावत चरितार्थ की - धोबी का कुत्ता न घर का रहा , न घाट का।

सारांश यह कि हमने ना तो पूरे सांसारिक भोग वैभव ही पूरी तरह से भोगे , और ना ही ईश्वर प्राप्ति , दिव्यानंद के प्राप्ति के लिए कोई भरसक प्रयत्न ही किये।

दोनों दुविधा में थे, माया मिली न राम " या "ना यहाँ के रहे या ना वहाँ के रहे, भगवन् मुझे मेरा प्रियतम न मिला।" इस संसार में जन्म लेकर हमने अपनी माँ के यौवन को नष्ट कर दिया है ! अगर हम इतने निकम्मे पैदा नहीं हुए होते, तो हम को युवा और वृद्धावस्था में इतना नुकसान उठाना नहीं पड़ता।

वैराग्य शतकम् - ०१२ .

हमने विषयों का उपभोग नहीं किया; परन्तु विषयों ने ही हमें भोगा है । हमने तप नहीं सहा, बल्कि तप ने हमें तपा है। समय समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि काल ने हमें समाप्त किया है । तृष्णा और वासना का बुढ़ापा नहीं आया है, हमारा अपना बुढ़ापा आ गया है।

गुरु नानक जी ने क्या खूब कहा है - "दूर खड़ी माया , लपट - लपट पटकाये।"

हमने बहुत सुख भोगे, परन्तु सुखों का अन्त न हुआ; हाँ, हमारा अंत आ गया है। काल या समय का अंत नहीं आया है, बल्कि हमारा अंत आ गया है - हमारी उम्र समाप्त हो गई है। हम जो धार्मिक कार्य करना था वह हम नहीं कर सके। हमने तपस्या नहीं की, लेकिन संसार की गर्मी ने हमें तपा दिया।

संसार के जाल में फँसकर हम स्वयं दुःख के ताप से झुलस गये। हमारा अंत आ पहुँचा है, हम असहाय और बूढ़े हो गए हैं; लेकिन चाहत पुरानी और कमज़ोर नहीं हुई - हम दुनिया से अलग नहीं हुए।जैसे सर्प का भक्षण करने के लिए फुदकियाँ भरते हुए तीव्र गति से मोर उसकी ओर बढे आ रहा है। फिर भी वह मूर्ख सर्प मुँह में एक मेंढक दबोचे , उसे निगलने , अपना आहार बनाने के प्रयत्न में तत्पर है।

और देखिये आश्चर्य ! सर्प के मुख में फंसा हुआ मेंढक अपनी मृत्यु भय छोड़कर जिव्हा बाहर निकाले , अति लालसा से वायु में उड़ते हुए कीड़ियों को निगलने का प्रयन्त कर रहा है। उसको यह नहीं मालूम कि वह स्वयं मृत्यु के चंगुल में फंसा हुआ है। यह परिस्थिति है आजकल संसार के लालची प्राणियों की।

इसका मतलब यह है कि लोग संसार की अनेक दुःख दर्द मई ठोकरें खा कर भी संसार को नहीं छोड़ते, छोड़ना भी नहीं चाहते ।तब संसार उन्हें बेकार बनाकर छोड़ देता है। संतों ने कहा है कि - यदि आप संसारो स्वतः आनंद से ज्ञानवत त्याग दो तो वह आप की मुक्ति का कारण बनेगी और यदि संसार स्वयं जब आप को छोड़ देगा , यानि संसार से आकृष्ट हुए , संसार में ही लिप्त हुए जब आपकी मृत्यु हो जायेगी , फिर वही सदा का जन्म - मरण के दुखदायी चक्कर में पढ़ना पड़ेगा।

कौन कहता है की “माया “ पापिनी और निर्दयी है ? माया तो हमारी जगत जननी है , माया हमें माँ की तरह कड़वी दवा पिलाकर स्वस्थ बनाना चाहती है। माया हमपर चिंतित हो कर एक माँ की तरह हमसे कहती है - देख संसार में तू तो धोका खा गया ना , संसार में हज़ार जूते खाकर भी तुझे होश क्यों नहीं आता अब तो संसार से अपना मुख मोड़ ले और अपने सनातन परम पिता परमात्मा , भगवान् की ओर मुख कर के उनके चरणों में आश्रय लेले।

कब तक इस नाशवान संसार को अपना समझता रहेगा , अरे मूर्ख ! यह नाशवान संसार आज तक किसका हुआ है , जो तेरा हो जाएगा ! कहाँ गए वे राजा , महाराजा , विश्व सुन्दरियाँ और विख्यात परम सुंदरी अपसरायें ? कहा गया उन नामी राजाओं , सम्राटों का राज - पाठ अखंड राज्य , वैभव , प्रतिष्ठा ? सब काल के गाल में चले गए। फिर तू क्या उनसे भिन्न है ?

जिस घर से तू इस दुनिया में आया था , फिर से तेरे उस सनातन ईश्वर के घर को वापस लौट जा। वे ईश्वर ही तेरे शुभचिंतक , तेरे अपने सच्चे सखा और सम्बन्धी हैं। इसी में तेरी भलाई है। नहीं तो अनंत युग बीतने पर भी तेरी मुक्ति

नहीं हो पाएगी। बार बार इस जन्म मरण के चक्कर में पढ़कर अनेक दारुण दुःख झेलने पड़ेंगे । आगे तेरी मर्ज़ी ।

वैराग्य शतकम् - ०१३ .

हमने घर की सुख-शांति को छोड़ा , लेकिन संतोष से नहीं छोड़ा । हमने असहनीय सर्दी, गर्मी और हवा सहन की है; परन्तु ये सब दुःख हमने तपस्या के कारण नहीं, मजबूरी से बल्कि गरीबी के कारण सहे। हम दिन-रात ध्यान में लगे रहते थे, लेकिन हम पैसे के बारे में सोचने में व्यस्त रहते थे- हमने प्राणायाम-क्रिया तो की, लेकिन शम्मू के चरणों का ध्यान नहीं किया। हमने सभी काम बड़ी कुशलता से किए, लेकिन हमें उनके जैसा परिणाम नहीं मिला, जैसे तपस्वी , ऋषि मुनियों को मिलता है।

हमने माफ कर दिया, लेकिन करुणावश नहीं; हमारी क्षमा हमारी असमर्थता के कारण थी। हमारे पास ताकत नहीं थी। और इससे हम शांत हो गए। हमने अच्छा खाना-पीना और विलासिता छोड़ दी, लेकिन मजबूरी में हमने छोड़ दी; अपनी आंतरिक इच्छा के कारण स्वाभाविक नहीं छोड़े । हमने बीमारी या किसी

अन्य घटना के कारण उसे छोड़ दिया, लेकिन हमने उसे संतुष्टि के कारण नहीं छोड़ा। हमने हवा और गर्मी को झेला; हमने ठंड और गर्मी का अनुभव किया। हम तूफान से पीड़ित हुए; लेकिन घर में पैसे की कमी होने के कारण।

"हम सोते-जागते आठों चौसठ घंटे ध्यान करते रहे, परंतु हमने धन, पत्नी, संतान या अन्य सांसारिक झगड़ों का ध्यान करते रहे। अपनी निर्बल ध्यान शक्ति के कारण । लेकिन हमने भोलानाथ के चरण कमलों का ध्यान कभी नहीं किया। संक्षेप में, ऋषियों की तरह हमने इन्द्रिय सुखों को त्याग दिया है, उन्हीं की तरह हमने शीत और ताप के कठोर कष्ट सहे हैं, उन्हीं की तरह हमने ध्यान किया है - लेकिन वह शक्तिशाली होते हुए भी शांत थे। संतोष से केवल शिव का ही ध्यान नहीं किया। हमने जैसे ध्यान करना चाहिए था ,वैसे ध्यान नहीं किया, हमारी मजबूरी के कारण किया। इस कारण उन लोगों को मिलने वाले फल से हम वंचित हो गये हैं।

जो ताकत में , सत्ता में रहते हुए भी प्रजा को छोड़ देते हैं उनकी ही महिमा होती है। जो लोग शक्ति की कमी या धातुओं के क्षीण होने के कारण विषयों को छोड़ देते हैं, वे मन से ऐसा नहीं करते। इसलिए स्वेछा से विषय छोड़ने वालों की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। संसार में रहते हुए सर्दी, गर्मी, दुःख आदि कष्ट भोगने पड़ते हैं; तो फिर तपस्या क्यों न करें ? , क्योंकि परिजनों के शोक और मोह से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि तपस्या से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। धन का ध्यान करने से सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

धन से जो सुख मिलता है वह क्षणिक और झूठा होता है। इसलिए धन के ध्यान को छोड़कर भगवान शिव, आशुतोष के चरणों में ध्यान करना अच्छा है, जिससे सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। अंततः जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्ति मिलती है और परम मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह बहुत ही मूर्ख व्यक्ति है, जो कष्ट सहता है, परंतु नश्वर संसार के तुच्छ भोग्य पदार्थों के लिए कष्ट सहता है। ऐसा कष्ट नहीं सहता जिससे दोनों लोकों में कल्याण हो जाए। और शाश्वत मुक्ति प्राप्त हो जाये।
याने फिर कभी इस नाशवान, अनित्य संसार में , बार बार जन्म मृत्यु के चक्कर में पढ़कर आना ना पड़े।

वैराग्य शतकम् - ०१४ .

चेहरे पर क्रोध था, बुढ़ापे के कारण बाल सफेद हो गये थे, शरीर के सभी अंग शिथिल हो गये थे। शरीर का यौवन चला गया, और शापित बुढ़ापे ने शरीर पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन कामनाओं की लालसा पीछा नहीं छोड़ी । क्या आश्चर्य है ! हमारा शरीर तो बूढ़ा हो गया, परन्तु फिर भी प्यासे दिल में जवान अरमान की लहरें , लहरा रही हैं। तृष्णा रूपी पिशाचिनी , कभी बूढ़ी नहीं होती। हम उसे इच्छाओं का रक्तपान जो करा रहे हैं।

महात्मा सुंदरदास जी कहते हैं--

आज पूरा विश्व प्यास , अतृप्त वासनाओं की चपेट में है। अमीर और गरीब सभी इससे बंधे हैं। गरीबों की भूख गरीबी से भी बड़ी है. अमीर हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं। आशावादी व्यक्ति 99 वर्ष पूरे करने के बाद 100 वर्ष पूरे करने की चिंता में लगा रहता है।

जब हजारों होते हैं तो दस हज़ार रुपयों की प्यास होती है। जब दस हजार होते हैं तो लाखों की प्यास होती है, जब लाखों होते हैं तो करोड़ की प्यास होती है। और जब करोड़ होते हैं तो, अरबों-खरबों की प्यास बढ़ती जाती है। इस प्रक्रिया में मनुष्य बीमार और बूढ़ा हो जाता है, लेकिन प्यास न तो बीमार होती है और न ही बूढ़ी।

बुढ़ापे से जवानी, बीमारियों से स्वास्थ्य और मृत्यु से जीवन पीड़ित होता है; लेकिन तृष्णा किसी भी विघ्न से नहीं डरती। बुढ़ापे से बाल बूढ़े हो जाते हैं, बुढ़ापे से दांत बूढ़े हो जाते हैं, दांत पुराने होने से आंखें और कान भी बूढ़े हो जाते हैं, लेकिन एक प्यास जवान होने का पता चलती है।

संक्षेप में ; यह बड़े आश्चर्य की बात है कि मनुष्य सर्वथा निकम्मा और जर्जर शरीर पाकर भी अपनी इच्छाएँ नहीं छोड़ता।बुढ़ापे के कारण हाथ-पैर कमजोर हो गए हैं और सिर सुन्न हो गया है। हमारे दांत नहीं हैं, हमारा शरीर हमारे हाथों में छड़ी की तरह कांपता है; फिर भी मनुष्य आशा के पात्र नहीं छोड़ता !

दुनिया आशा और इच्छा के बंधन में फंसी हुई है। यदि प्यास न होती तो मनुष्य को स्वर्ग अथवा मोक्ष की प्राप्ति बहुत कठिन नहीं होती; क्योंकि तृष्णा का नाश ही मोक्ष या स्वर्ग है।

हृदय में जो कामनाएँ निवास करती हैं उन्हें "संसार" कहते हैं और उनका सब प्रकार से नष्ट हो जाना "मोक्ष" कहलाता है।बार-बार इस दुनिया में आना और यहां से सीखना; अर्थात जन्म लेना और मरना अत्यन्त दुःखदायी है; इसलिए, जो लोग खुद को जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त करना चाहते हैं, उन्हें गलती भी राक्षसी इच्छाओं के जाल में नहीं फंसना चाहिए।

क्योंकि कामनाओं और इच्छाओं के जाल में फंसने से ही मनुष्य इस संसार में सबसे बुरे कर्म करने लगता है। तब भी मन को शांति नहीं मिलेगी। जो लोग निस्वार्थ हैं, जिनकी कोई इच्छा या लालसा नहीं है, जिसने अपने मन और इन्द्रियों को अनिच्छा पद पर आरूढ़ कर लिया है। वास्तव में वे मानव रूप में देवता ही हैं। मरने के बाद वे स्वर्ग या मोक्ष के अधिकारी होंगे, उनका मृत्यु पर्यन्त भविष्य का जीवन सुवर्णमय होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है।

वैराग्य शतकम् - ०१५ .

जिस आकाश में चंद्रमा रात बिताता है उसी बादल में सूरज दिन गुजारता है। ये दोनों महा गृह किस प्रकार के कष्ट का सामना कर रहे हैं ! सूर्य और चन्द्रमा , ये दोनों प्रकृति अनुसार निरंतर अपने अपने कार्य में लगे हुए हैं। रात के दौरान चंद्रमा आकाश के जिन हिस्सों को अपना मानता है, दिन के दौरान सूर्य उन्हीं हिस्सों अपने मानते हुए प्रकाशित करता है।

कहने का तात्पर्य यह है की ज्योतिषियों में सूर्य और चन्द्रमा सर्वश्रेष्ठ एवं महान गृह माने गए हैं। जब ऐसे महान ग्रहों की ही ऐसी दुर्दशा होती है, की रात में

चन्द्रमा जिसको अपना मानता था , सुबह होते ही वह पृथ्वी उसके हाथ से खिसक जाती है। इसी तरह रात होते ही , वही पृथ्वी सूर्य के हाथ से भी खिसक जाती है।

तब हे मूर्ख मन ! इन ग्रहों से तू शिक्षा प्राप्त कर। क्यों झूठे भूमि पर के क्षणिक अधिकार पर तू अभिमान करता है ? इस सृष्टि पर किसी का किसी पर कुछ अधिकार नहीं होता है। सब झूठा व्यवहार है। दुनिया दो दिनों का मेला है। फिर हाट - बात सब उठ फटेंगे। यहाँ किसी का कोई ठिकाना नहीं है। कुछ शाश्वत नहीं हैं। केवल भगवान ही शाश्वत और सनातन धर्मी हैं, सबके आश्रय दाता है। । बाकी सब का अस्थाई और झूठा व्यवहार है।

होता ये है कि गरीबों को दिन-रात एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ता है और नतीजा ये होता है कि वहां कोई फल नहीं मिलता। फिर हम और आप में से कितने लोग हैं, जो पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं, उन्हें तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है, वे अपनी इच्छा अनुसार आराम भी नहीं कर सकते।

एक दिन या एक क्षण तो क्या, सारा जीवन बीत जाता है , पर कुछ नहीं लगता , सिवाय निराशा के। फिर दूसरों की क्या बात ? वे छोटे जीव ? वे बेचारे कर्मानुसार अपने अपने कर्मों को भोग कर , फिर उचित प्राप्त योनि को चले जाते हैं।

सलाह: बड़ों की दुर्दशा देखकर छोटों को रोना चाहिए और उनकी दुर्दशा की कल्पना करनी चाहिए। नहीं, बल्कि हमें संतुष्ट होना नहीं चाहिए. दुनिया में कोई भी खुश नहीं है।

वैराग्य शतकम् - ०१६ .

चाहे हम कितने भी दिनों तक चीजों का आनंद लें, एक दिन वह हमसे अलग जरूर हो जाती हैं। इच्छा ; फिर मनुष्य अपनी इच्छा से उन्हें क्यों ना छोड़े ? इस

अलगाव में क्या फर्क है ! जब वे स्वयं किसी मनुष्य को छोड़ देते हैं तो उसे बड़ा दुःख और मानसिक कष्ट होता है। यदि मनुष्य स्वयं इन्हें त्याग दे तो उसे शाश्वत सुख एवं शांति प्राप्त हो जाएगी।

जिन कामुक सुखों का हम लंबे समय से आनंद ले रहे हैं वे हमेशा हमारे साथ नहीं रहेंगे; आश्वस्त रहें कि एक दिन वे हमें छोड़ देंगे। इससे यदि हम उन्हें पहले ही छोड़ दें तो हमें बहुत सुख और शांति मिलेगी। यदि हम नहीं जाते और वे हमें छोड़ देते हैं, तो हमें बहुत दुख होगा और हृदय टूटेगा।

जो लोग पहले ही विषयों का त्याग कर देते हैं, उन्हें विषयों के घटित होने पर दुःख नहीं होता, परन्तु जो विषयों को नहीं छोड़ते, उन्हें उनके अभाव में बड़ा दुःख होता है। जो बुद्धिमान लोग धन, स्त्री, पुत्र आदि का मोह पहले ही दूर कर चुके हैं, उन्हें मृत्यु के समय कष्ट नहीं होता। जो लोग अपने मन को अपने पास रखते हैं, वे मृत्यु के समय रोते हैं, लेकिन जीभ बंद होने के कारण वे अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

इसलिए जो लोग सुख से मरना चाहते हैं उन्हें पहले ही चीजों से मुंह मोड़ लेना चाहिए। इसी प्रकार जो मनुष्य नाना प्रकार के सुखों का उपभोग कर रहा है, यदि उसे कल सुख न मिले तो वह बहुत दुःखी होता है, परन्तु जो विषय-भोगों का भोग तो करता है, परन्तु उनमें आसक्ति नहीं रखता, उन्हें तनिक भी दुःख नहीं होता। कामुक सुखों को न प्राप्त करें और उनसे अलग हो जाएं।

सलाह - जिन विषयों को एक दिन छोड़ना निश्चित है उन्हें आप स्वयं क्यों नहीं छोड़ देते ? आपके जाने से आपको असीम सुख की प्राप्ति होगी और उनके चले जाने से आपको अत्यधिक हृदय वेदना और मानसिक पीड़ा का अनुभव होगा।

वैराग्य शतकम् - ०१७ .

जब नश्वर संसार के वास्तविकता का ज्ञान उत्पन्न होता है तो मन को शांति प्राप्त होती है। शांति मिलने से वृथा तृष्णा , कामनाओं की प्यास बुझती है!

वस्तुओं के संपर्क के कारण ही अत्यधिक अशांति उत्पन्न होती है। इसका मतलब यह है कि वस्तुओं की प्यास कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकती। भर्तहरि महाराज कहते हैं कि किसी सुंदर स्त्री के कठोर स्तनों को छूने से यौन इच्छा बढ़ती है, घटती नहीं।

फिर तनिक ज्ञान की दृष्टि डालें और सोंचे - हे मूर्ख मन ! तू जो इतना नारी के नाशवान यौवनिक स्तनों पर इतना आकृष्ट हो रहा है , ज़रा सोंच , वास्तव में वे क्या हैं ? मुझे तो उसमें रक्त , मांस , मज्जा , त्वचा में लपटी हुई मांस पिण्ड के अलावा और कुछ भी नज़र नहीं आता है ।

आज देख कर तू जिस पर इतना मोहित हो रहा है , एक पल में मृत्यु होने के बाद उसी सुन्दर , मन मोहिनी स्तनों को कल शमशान में जल कर राख होते हुए देखेगा। या फिर चील, कव्वे , सियार और कुत्ते खाते हुए नज़र आएंगे। इसलिए तू ऐसे क्षणभंगुर सुख को देने वाली वस्तुओं से वैराग्य को प्राप्त हो जा। इसमें तेरी भलाई है। अस्तु !

देवराज इंद्र भी जीर्ण-शीर्ण धन का त्याग नहीं कर सकते। फिर तो साधारण मनुष्य की बात ही क्या ? केवल ज्ञान के माध्यम से ही व्यक्ति प्यास को नष्ट कर सकता है और शांति प्राप्त कर सकता है। इन्द्रिय सुख भोगने से तृष्णा कम नहीं होती बल्कि तृष्णा बढ़ती है। तृष्णा छोड़ो, तृष्णा से घृणा करो, उसे आने मत दो, तृष्णा भी उससे दूर भागती है।

जब हम किसी से प्यार करते हैं, उसकी इज्जत करते हैं तो वो हमें डाँटते है, हमें नाज़ - नखरे दीखते है। लेकिन जब हम उससे मुंह मोड़ लेते हैं। उसका आदर नहीं करते, उससे प्रेम नहीं करते, उसे दया की दृष्टि से नहीं देखते; फिर वह भी हमसे अछूती रहती है - हमारे पास आने की उसकी हिम्मत नहीं होती। अत: जो लोग तृष्णा से छुटकारा पाना चाहते हैं उन्हें विषयों से विमुख हो जाना चाहिए।

देखो, भले ही हमें स्वर्ग का राज्य भोगते हुए लाखों-करोड़ों वर्ष बीत गए हों, इंद्र उस स्वर्ग का राज्य नहीं छोड़ सकते। जब लाखों-करोड़ों वर्षों तक राज्य भोगने से भी इन्द्र की प्यास नहीं बुझती, तो बेचारे मनुष्य किस खेत के मूली हैं? उम्र बढ़ने के साथ लालसा बढ़ती है, घटती नहीं। जितना अधिक हम वस्तुओं का आनंद लेते हैं, उतनी ही वे पुरानी होती जाती हैं और हमारी लालसा बढ़ती जाती है। जब वे बूढ़े हो जाते हैं तो उन्हें छोड़ने में हमें बड़ा कष्ट होता है।

सलाह: अपनी लालसा शीघ्र त्यागें। जैसे-जैसे वह बड़ी होगी, वह और अधिक पापी और अधिक शक्तिशाली हो जायेगी; तब उसे त्यागना आपकी शक्ति से

बाहर होगा। इसके विनाश के लिए "ज्ञान " का जन्म होना आवश्यक है क्योंकि "ज्ञान" ही विपरीत ऊर्जा का अंतिम विनाशक है।

वैराग्य शतकम् - ०१८ .

एक दुबला और लंगड़ा कुत्ता, जिसके न कान हैं और न पूँछ, जिसके घावों से खून बह रहा है, जिसके शरीर में कीड़े रेंग रहे हैं, वह भूखा और बूढ़ा है, उसकी गर्दन पर घाव है। वह कीड़ों से घिरा हुआ है और फिर भी कामवश होकर कुतिया के पीछे दौड़ता है। कामदेव तो मुर्दे को भी मार देते हैं।

जिस कुत्ते को इतनी बुरी भूख होती है वह भी संभोग के लिए कुतिया के पीछे दौड़ता है। फिर जो लोग गाड़ी ताज़ी रबड़ी मलाई और मिठाइयाँ खाते हैं वे अपनी वासना की तृप्ति को कैसे रोक सकते हैं ? साधारण मनुष्य इसे कैसे रोक सकते हैं?

इससे बचने के लिए, बुद्धिमान लोग अपने शरीर को त्याग देते हैं, विभिन्न प्रकार के व्रत और उपवास करते हैं, खुद को गर्मी में उजागर करते हैं और सर्दी और गर्मी को सहन करते हैं। कामदेव बहुत मजबूत है. जो लोग उसके नियंत्रण में नहीं आते वे सबसे मजबूत और सच्चे योद्धा होते हैं। वे भीष्म और अर्जुन हैं।

देखो तो ! घोर जंगल में रखकर कड़ी तपस्या करते हुए ऋषि - मुनि ; पत्ते , जल और वायु पर अपना जीवन यापन करने वाले , और तो और महर्षि विश्वामित्र जैसे महा तपस्वी , जिन्होंने स्वयं की शक्ति से एक नए ही स्वर्ग की सृष्टि कर डाली , उनको भी काम वासना नहीं छोड़ी। वे एक स्वर्ग की अप्सरा मेनका पर मोहित हो गये , तो फिर जनसाधारण की बात ही क्या है !

वैराग्य शतकम् - ०१९ .

जो मनुष्य भिक्षा मांगता है और दिन में केवल एक बार नीरस भोजन करता है, जो भूमि पर सोता है, जिसका शरीर ही उसका परिवार है, जो सैकड़ों वस्त्रों के टुकड़ों से कम्बल बनाकर अपने को ढकता है। आश्चर्य है कि वे ऐसे वैरागी संत - महात्मा को भी काम वासन , विषय - भोग नहीं छोड़ते। इसलिए शास्त्रों में - काम वासना को ही मनीषी का सबसे बड़ा शत्रु घोषित किया है।

काम , क्रोध , लोभ , मद , मात्सर्य , अहंकार , ईर्ष्या , राग , द्वेष आदि ये सभी भगवान की उस अपरा शक्ति की ही संताने है। जहां माया रहेगी वहां ये सभी

उसके बेटा - बेटी, या यूं कहो माया की पूरी फौज उसी के साथ रहा करती हैं और अपनी माँ , माया के इशारे पर नाचा करते हैं।

जो लोग दिन में एक बार कच्चा भोजन करते हैं, वह भी मांग कर; जिनके पास सोने के लिए बिस्तर, गद्दे या तकिए नहीं हैं, वे गरीब लोग पेड़ों के नीचे या खुले मैदान में घास और पत्तियों पर सोते हैं। जिनका कोई रिश्तेदार नहीं, उनका अपना शरीर ही उनका रिश्तेदार है; जिनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं होते, वे बेचारे ऐसे कम्बल ओढ़ते हैं जिनमें सैकड़ों चिथड़े लटके होते हैं - ऐसे लोग भी काम रूपी संकटों से नहीं बचते।

फिर वे अमीर लोग काम वासना , काम भोग के प्रचंड इच्छाओं से कैसे बच सकते हैं ? जहाँ उन्हें हर तरह की चीज़ें मिलती हैं व्यवसायों और सुख-सुविधाओं की कोई कमी ना हो। यहाँ तक कि वायु, जल और पत्ते खाने वाले ऋषि विश्वामित्र और पराशर प्रशस्ति भी उस स्त्री के मुख कमल को देखकर मोहित हो गये। फिर स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन करने वालों की , दही और घी मिश्रित भोजन करने वालों की इन्द्रियाँ यदि वश में हो तो विन्ध्याचल पर्वत भी जीत लिया जा सकता है।

तात्पर्य यह है कि जब पत्ते और जल का सेवन करने वाले ऋषि-मुनि भी स्त्रियों पर मोहित हो गये तो फिर घी और दूध का सेवन करने वालों गृहस्थी मनुष्य की बात ही क्या ? कामदेव को वश में करना बहुत कठिन है। पराशर ऋषि ने दिन को रात बना दिया और नदी को रेत में बदल दिया, लेकिन वे भी काम पर नियंत्रण नहीं रख सके। इतना ही नहीं; बड़े-बड़े देवता भी कामवासना पर नियंत्रण नहीं रख सके। स्वयं ब्रहमा, विष्णु और महेश की भी काम वासनों को उद्विक्त होते हुए देखा गया।

कामदेव ने ब्रहमा, विष्णु, शिव और इंद्र के प्राण ले लिये। क्योंकि किसी भी प्रकार से पराई स्त्री द्वारा वशीभूत होना , अपने अपमान के समान है, प्राण जाने के समान है। । 'पद्म पुराण' में लिखा है,---ऋषि की पत्नी शान्तनु का नाम अमोघा था। वह बेहद खूबसूरत और प्यार करने वाली पत्नी थीं। एक दिन ब्रहमाजी ऋषि से मिलने गये। ऋषि उस समय कहीं बाहर गए हुए थे. उन्होंने ब्रहमा जी का आसन बिछाया और उन्हें बैठाया।

उसका अपूर्व सौंदर्य देखकर ब्रहमाजी मोहित हो गये। उनका वीर्य निकल गया; तो वे शर्मिंदा हो गये. इतने में वे साधु आ गये। वीर्य देखकर उन्होंने हँसते हुए पूछा- “यह क्या है?” उन्होंने कहा, “स्वामीन. ब्रहमाजी आये थे।” ऋषि ने काँपते हुए कहा, “नारी की दृष्टि ऐसी होती है कि देवता भी अपना धैर्य खो देते हैं।”

एक बार महादेव जी समाधि में थे। वहाँ वन में सुन्दर एवं नवयौवना स्त्रियाँ क्रीड़ा कर रही थीं। शिवजी की मति मारी गयी। उन्होंने अपनी तपस्या के बल से उसे आकाश में पहुंचा दिया उसके साथ संभोग किया। अंत में पार्वती ने अपना शरीर त्याग दिया और भगवान शिव को समाधि दे दी।

एक बूढ़ा साधु एक मंदिर में अकेला रहता था। वे पूर्णतः जितेन्द्रिय थे। एक बार उस मंदिर के सामने से एक सुन्दर युवती निकली । तपस्वी उस सुंदरी पर मोहित हो गया, और उसके पीछे पीछे चल दिया। जब वह अपने घर पहुंची तो ऋषि भी दरवाजे पर जाकर उससे प्रार्थना करने लगे।

वह सुन्दर युवती , बूढ़े साधू को देख कर दरवाज़ा बंद करने लगी।परन्तु उस बूढ़े साधू ने ज़िद्द कर के उसके के घर के अंदर ज़बरदस्ती घुसना चाहा। उस युवती ने क्रोध में आकर जोर से दरवाजा बंद कर दिया। जिससे उस वृद्ध साधू का सिर दरवाज़े में अटक कर उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

ऐसे बूढ़े साधू और अभ्यासी जितेन्द्रिय पुरुष जब फिसलते हैं-किसी सुन्दर युवती को देखकर पागल हो जाते हैं, फिर दूसरों के बारे में क्या कहें? युवा पीड़ी काम वासना में लिप्त हो जाए तो कौन से आश्चर्य की बात हो गयी ?

यद्यपि इच्छाओं पर , विशेषकर काम वासनाओं पर नियंत्रण पाना बहुत कठिन है; फिर भी धैर्यवान पुरुष को बड़े संयम से काम लेना चाहिए और इन हीन , दुष्ट विषय शक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करना ही पड़ेगा । नहीं तो फिर कामदेव के शिकार बनकर , फिर हर समय की तरह जन्म - मृत्यु के चक्कर में पड़ते रहना पड़ेगा।

मुक्ति का एक ही उपाय है , समस्त इच्छाओं का त्याग और काम वासनाओं का समूल नाश कर देना चाहिए। इसके सिवा और कोई गति नहीं है। इच्छाओं और विषय वासनाओं का और सांसारिक बंधन का मूल कारण यही है। और जन्म और मृत्यु का भी यही कारण है। नारी मुक्ति और सुख-शांति का कारण बन सकती है और विनाश का कारण भी बन सकती है।

कुछ महिलायें खुद को ईश्वर की पूजा में समर्पित नहीं करतीं क्योंकि उन्हें सांसारिक चीजों से फुर्सत नहीं मिलती। तो सभी विषय जहर के समान घातक हैं, लेकिन महिलाएं उनसे भी उत्तम स्थान पर हैं। जहां नारी है. सब विषय वहाँ हैं। विषय दुःख और ताप का कारण बनते हैं इसलिए ज्ञानियों के विषयों से बचना

चाहिए, जो लोग मोक्ष चाहते हैं। सन्यासियों को स्त्री का दर्शन भी नहीं करना चाहिए।

किसी स्त्री से न तो बात करनी चाहिए, न पहले देखी कहानी याद रखनी चाहिए, न ही उसकी चर्चा करनी चाहिए। यहां तक कि उनकी तस्वीर भी नहीं देखनी चाहिए, वर्जित है। ऐसा विशेषकर ब्रह्मचारियों को हमारे शास्त्रों में चेतावनी दी गयी है। क्योंकि स्त्री को देखने के बाद मन को शांत रखना बहुत मुश्किल है। सभी भीष्म और अर्जुन नहीं हो सकते।

सांसारिक लोगों को भी सभी दुःख , गर्मी और कष्ट झेलना चाहिए। परन्तु उनका मन ऊँट के समान है, जिसे कंटीले वृक्ष खाना अच्छा लगता है; कांटेदार पेड़ खाने से उसके मुँह से खून बहने लगता है, लेकिन वह उन्हें खाना बंद नहीं करता; इसी प्रकार, जो लोग सांसारिक वस्तुओं में आसक्त हो गए हैं, अनेक प्रकार के कष्ट सहने पर भी उनका त्याग नहीं करते; परंतु जब उनमें विवेक उत्पन्न हो जाता है, उनमें यथार्थ और अमूर्त का विचार करने की शक्ति आ जाती है, तब वे उनसे अलग हो जाते हैं।

सलाह: विषय जहर हैं. उनका त्याग ही सुख का मूल है। सर्प के विष के प्रभाव से व्यक्ति एक जन्म में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। परन्तु , विषयों में लिप्त हुआ व्यक्ति अनेक कल्पों तक , अनेक जन्म - जन्मान्तरों तक भी मृत्यु को प्राप्त होते ही रहता है। जो लोग कामुक हैं उन्हें कहीं भी सुख नहीं मिलता। इसलिए अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करें। जिसने काम पर विजय पा ली, उसने सब पर विजय पा ली।जैसे कोई विद्यार्थी गणित और विज्ञान जैसे जटिल विषयों में उत्तीर्ण हो जाएँ तो , वे अन्य विषयों में भी आसानी से उत्तीर्ण हो जाते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०२० .

महिलाओं के स्तन मांस के लोथड़े हैं, लेकिन कवियों ने उनकी तुलना सोने के कलश से की है। नारी का का मुंह कफ का घर है, लेकिन कवि ने इसे चंद्रमा की तरह वर्णित किया है और उसकी जांघें, जिनसे मूत्र स्त्राव होते रहता है, हाथी की

सूंड की तरह हैं, ऐसे प्रशंसा की है। । स्त्रियों का रूप सन्यासियों के लिए घृणित है, परन्तु कवियों ने उसका क्या-क्या गुणगान नहीं किया है।

फिर महाराज स्वयं से कहते हैं - रे मूरख मन ! ज़रा सोंच तो , जैसे तेरा अस्थिपंजर पर ढला हुआ हाड़ - मांस का शरीर , वैसे ही दूसरे अस्थिपंजर पर ढला हुआ नारी का भी हाड़ मांस का शरीर है। बता तो , तेरे और नारी के अस्थिपंजर में क्या भेद है ? कोई भेद नहीं। क्यों तू व्यर्थ में ही विषय के वशीभूत होकर नारी के शरीर पर आकृष्ट हो जाता है।नारी का और तेरा निराकार रूप एक समान है , कोई अंतर नहीं है। केवल विचारों की दुष्टता है।

स्त्रियों के स्तन - जिन पर नश्वर अवशेष मिले हुए हैं, जिनकी कवियों ने बहुत प्रशंसा की है, जिनका वर्णन वे सोने के गुच्छों या अनारों के समान करते हैं - वास्तव में, स्त्रियाँ उतनी सुन्दर नहीं हैं जितनी कवियों ने लिखी हैं। कवियों ने गुंबद पर सोना - धातु लगी है, और ना जाने कैसी कैसी नारी के रूप - लावण्य की प्रशंसा की है। वास्तव में औरत नर्क का कुआँ है; यह मल, मूत्र, थूक और बलगम से भरा होता है। लेकिन लोग चमक-दमक से भरे हुए हैं। ऐसा भर्तहरि महाराज ने झूठे कवित्व का खंडन किया है।

ऐसा नहीं की पृथ्वी की सारी की सारी   स्त्रियाँ स्वार्थ परायण, कठोर ह्रदया जल्लाद और उदासीन प्रवृति की होती हैं। भूमण्डल पर ऐसी महान प्रवृत्ति की भी स्त्रियां हुई हैं   - जैसी ; सावित्री, अनुसूया , सीता , राधा , मीरा आदि; किसी पुण्यात्मा को ही मिलती है , जो अपने प्रेमी - पति को पूरे दिल से प्यार करती है। एक महिला ऐसी भी होती है कि वह किसी को देखती है, किसी से बात करती है और किसी को चाहती है।

स्त्री का प्रेमालाप

एक व्यापारी का पुत्र प्रतिदिन किसी महात्मा के पास सत्संग के लिए जाता था। उनके माता-पिता को उनका महात्मा के पास जाना पसंद नहीं था। उन्हें डर था

कि उनका बेटा वैरागियों की संगति में बैरागी बन सकता है, इसलिए उन्होंने जल्द ही उसकी शादी कर दी। घर में बहू आ गई।

फिर भी उस लडके का महात्मा से मिलना बंद नहीं हुआ। तब सेठ सेठानी ने उस लडके की पत्नी , यानी अपनी बहु से कहा - तुम्हें इसका ऐसा ख्याल रखना चाहिए कि यह महात्मा के पास जाना बंद कर दे। नहीं तो यह तुम्हें छोड़कर वैरागी बन जाएगा।

बहू ने अपनी सेवाओं और नखरों से अपने पति को लुभाया। लड़के का मन महात्मा के सत्संग से धीरे धीरे हटने लगा। पहले तो वह हर दिन जाता था, बाद में हर दूसरे-तीसरे दिन जाने लगा। एक दिन स्त्री ने पति को आकृष्ट करते हुए कहा – "रात को जब तुम चले जाते हो तो मैं अकेली पड़ी रहती हूं. स्त्री का का रात को अकेले रहना अच्छा नहीं; इसके बाद मुझे रात में भी डर लगता है. यह सुनकर लड़के ने महात्मा के पास जाना बिल्कुल छोड़ दिया।

एक दिन महात्मा कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें वही लड़का मिला। उन्होंने उससे न आने का कारण पूछा। लडके ने कहा - "महाराज. मेरी पत्नी बहुत गुणी हैं. वह हर तरह से मेरा ख्याल रखती हैं। वह मेरे बिना एक क्षण भी अकेली नहीं रह सकती। वह मेरे लिए अपने प्राण तक त्यागने को तैयार रहती है। उसकी असली हालत देखकर मैं उसके वश में हो गया हूँ और इसलिए मैं आपकी सेवा में नहीं आ सकता ।

महात्मा ने कहा--भाई ! हर कोई अपने-अपने कारणों से , अपने ही स्वार्थ हर किसी को प्यार करता है। आपकी पत्नी भी आपसे उसके स्वयं की ख़ुशी के लिए , अपनी खुशी के लिए तुमसे प्यार करती है, आपकी खुशी के लिए नहीं। यदि विश्वास न हो तो आजमाकर देख लो , परीक्षा करके देख लो । तब तुझ को विश्वास हो जाएगा कि जो मैं कह रहा हूं , यह अक्षरांश सत्य है।

लड़का इस पर सहमत हो गया। महात्मा ने उसे सांस रोकने की विधि , प्राणायाम की क्रिया विधि समझाई। फिर महात्मा उस लडके से बोले - एक दिन तुम अपनी पत्नी से कहो कि आज हम खीर-पूरी खायेंगे।और मैं तुमसे जैसा करने को कहता हूँ , ठीक वैसे ही करना।

फिर अंत में मैं जब तुम्हारे घर आऊंगा , तब तुमसे , मृत्यु के नाटक को समाप्त कर , उठकर बैठने कहूंगा , तब तुम मृत्यु का झूठा नाटक छोड़कर उठ बैठ जाना , ठीक है ? तब लडके ने सिर हिलाते हुए कहा महात्मा से - ठीक है , जैसी आपकी आज्ञा , गुरूजी !

जब वह खीर - पूरी बनाने लगी तो लडके ने प्राणायाम की क्रिया द्वारा अपनी साँसे रोक ली और ज़मीन पर लेट गया और अपने शरीर को मृत - तुल्य बना लिया। स्त्री खीर - पूरी बनाने लगी और इधर लड़का बेदम हो कर ज़मीन पर लेट गया।

जैसे ही खीर - पूरी तैयार हो गयी , स्त्री ने पति को आवाज़ दी , खाने आइये , खीर -पूरी तैयार हो गयी है। दूसरी बार आवाज़ दी , फिर तीसरी बार भी पति को आवाज़ दी।पर पति की ओर से कोई प्रक्रिया नहीं हुई। स्त्री को कुछ संदेह हुआ और वह पति के कमरे में जाकर जब देखती है तो , घबरा जाती है। उसका पति ज़मीन पर एक मृतदेह की तरह , निष्क्रिय पड़ा हुआ है।

स्त्री ने समझा कि उसका पति अब मर चुका है। सोंचने लगी कि यदि अब मैं लोगों को बुला लूं, तो ना जाने कितने समय तक स्वादिष्ट खीर - पूरी खाये बिना मुझे भूके ही रहना पड़ेगा। और जो मैं इतनी मेहनत , कष्ट उठाकर ऐसी खीर - पूरी तैयार किया है , उसे तो मैं मरे मुर्दे के घर में ना मैं खा सकूंगी। नहीं घर के कोई और ही सदस्य खा सकते हैं , उसे व्यर्थ ही बाहर फेंक दिया जाएगा।

इसलिए पहले खीर -पूरी को मुझे खा लेना चाहिए , फिर हो हल्ला कर के घर और पास पड़ोसी को इकट्ठा करना चाहिए। ऐसे विचार कर उसकी स्त्री ने पहले स्वयं उस खीर -पूरी को खा लिया , फिर रोते हुए हो - हल्ला करके लोगों को पति के मरने की सूचना देने लगी।

स्त्री ने चीखकर घर के सारे लोगों को बुलाया। और पास - पड़ोसी भी एकत्र हो गए।कुछ वृद्धों ने उस लडके को देख कर कह दिया ,कि यह तो मर चुका है। हृदय गति के बंद होने से इसकी मृत्यु हो गयी है। । उसकी चीख सुनकर घर के सभी लोग इकट्ठे हो गये और पूछने लगे, “यह कैसे मर गया?” पत्नी ने कहा, "उन्हें पेट दर्द की शिकायत है, शायद इसी से उनकी मौत हो गई है."

लोगों ने कहा – “अब इन्तज़ार करना बेकार है। इसे जल्दी श्मशान ले चलो।” लेकिन उस लड़के के पैर दो खंभों में फंस गए और वह बाहर नहीं निकल सका। तब लोगों ने कहा कि खंभों को काट देना चाहिए और लडके के शरीर को बाहर निकालना चाहिए। जैसे ही महिला यह सुनी तो वह बोली, “ऐसे नहीं, खम्बों को क्यों काटते हो ?

यदि खंभे काटे गए तो बाद में कौन खम्बों को फिर से बनाएगा , कौन इतना पैसा लगाएगा ? इसलिए इस मृतदेह के ही पाओं को काटकर , शरीर को बाहर

निकाला जाए। कैसे भी इसे जलाना ही है। जैसे ही लोगों ने कुल्हाड़ी उठाई, लड़का उठ बैठा और उसने कहा, "मेरा दर्द दूर हो गया।" यह देखकर लोग आश्चर्यचकित हो गए और सब लोग अपने-अपने स्थान पर चले गये।

वह लड़का महात्मा के पास गया और कहा . – "महात्मा! आप जो कहते हैं वह बिल्कुल सत्य है. अब इसमें मुझे कोई शक नहीं. निःसन्देह पत्नी अपने ख़ुशी के लिये ही पति से प्रेम करती है।पति की ख़ुशी के लिए , पति से प्रेम नहीं करती ।

क्या यह सबका प्यार मजबूत है ? नहीं नहीं , मेरे पत्नी का प्यार मेरे प्रति सच्चा नहीं है , सब बनावटी है। अब मैं गृहस्थाश्रम में नहीं रहूंगा । इसलिए, उसी दिन, उसने अपना परिवार छोड़ दिया और संन्यास ले लिया। संसार के लोगों की सच्चाई अब समझ गया।

औरत ही मुसीबतों की जड़ है

महिलाएं कई आपदाओं की जड़ हैं। कई खूबसूरत महिलाओं ने अपने पतियों की जान गंवाई है। नूरजहाँ के कारण ही शेरशाह सूरी नामक व्यक्ति की हत्या हुई थी। महिलाओं के पीछे शुंभ और निशुंभ नामक दो राक्षसों बीच आपस में लड़ाई

हो गई और उनकी मृत्यु हो गई। स्त्री के पीछे राजा नहुष को अपने रथ से गिरना पड़ा। स्त्री चाहत में शिशुपाल मारा गया। नारी के कारण ही भारत का विनाश करने वाला महाभारत हुआ। एक आदमी सांप के काटने से मर जाता है, लेकिन एक आदमी सिर्फ एक महिला की सुंदरता के कारण मर जाता है।

विष खाने से मनुष्य एक ही बार मरता है, परन्तु स्त्री के विष के कारण मनुष्य को बार-बार जन्म लेना और मरना पड़ता है; क्योंकि मृत्यु के समय मनुष्य का मन उसकी रगों में अवश्य चला जाता है। जिसे सही समय पर भोजन की इच्छा होती है उसे भोजन अवश्य मिलता है। स्त्री को घूरकर नहीं देखना चाहिए और घूरकर देखने के बाद पीछे भी नहीं रहना चाहिए।

क्योंकि सांप के काटने से विष चढ़ाता है। परन्तु ,स्त्री को तो देखने मात्र से ही अज्ञात विष शरीर में प्रवेश कर जाता है और बुरा प्रभाव दिखाना शुरू कर देता है । एक खूबसूरत औरत सोने से बनी और सुखद सुगंध वाली मूर्ति के समान है। किसी भी मनुष्य को एकांत में किसी स्त्री का संघ नहीं करना चाहिए और ना ही एकांत में अपरिचित स्त्री से बातचीत ही करनी चाहिए। भले ही वह स्वयं की माँ - बहन ही क्यों ना हों । मनुष्य को मर्यादा का पालन करना चाहिए।

जैसे मदिरा पीने पर , बिना किसी प्रयन्त के स्वतः ही मदिरा अपनी मद्द नशा मस्तक तक चढ़ा देती है। वैसे ही मनुष्य पर भी काम वासना स्त्री को निम्मित्त मात्र बनाकर स्वयं , बिना किसी प्रयन्त के , मस्तक पर चढ़ बैठ जाती है और धीरे धीरे अपना गुप्त प्रभाव दिखाना शुरू कर देती है।

जैसे मूर्ख अनजाने लोग बिना किसी के आमंत्रित किये ही किसी के घर पहुँच जाते हैं। वैसे ही यह निर्लज कामवासना भी बिना बुलाये ही किसी भी मनुष्य के सर चढ़ बैठ जाती है। पास में , किसी भी नारी को निमित्त बनाकर पहुँच जाती है और उसे अपार कष्ट देती है। औरत काली नागिन है। जो केवल जप करते हैं भगवान का नाम लिया करते हैं , अनावश्यक स्त्री संगति से बचें रहते हैं।

जहां नारी है वहां राम नहीं और जहां राम है वहां नारी है नहीं। नारी और राम दोनों एक जगह नहीं रह सकते।अमर परमात्मा और जीव के बीच तीन खाइयां हैं:---(1) कुल, (2) कंचन, और (3) कामिनी। जो इन तीनों में से जो बचता है, वह पार हो जाता है और मुक्ति, आत्म मुक्ति या महर्लोक या बैकुंठ लोक में स्वतंत्र रूप से प्रवेश कर जाता है।

यहां विशेषकर किसी को यह बात याद रखना चाहिए कि एक ईमानदार पत्नी की स्थिति एक आम महिला से काफी अलग होती है। आम तौर पर भगवान, अपनी

पत्नी के साथ किसी को भी उच्च आध्यात्मिक निवासों में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं। जहां पति / पत्नी दोनों पहले से ही भगवान के गुण नाम कीर्तन में डूबे रहते हैं । उनकी प्रशंसा में तो कुछ कहना ही क्या ? वे भगवान की दृष्टि में भी आदरणीय होते हैं। वे महा भाग्यवान दंपत्ति हैं। जो इस संसार में बिरले ही पाए जाते हैं।

क्या स्त्री में आनंद है?

स्त्री में कोई आनंद नहीं है। हर तरह के दुखों से जूझने वाली महिला दूसरे के आनंद का कारण कैसे बन सकती है ? स्त्री प्रसंग से जो आनंद पुरुष को मिलता वह , पुरुष के स्वयं द्वारा उत्पन्न आनंद है ,पुरुष जो आनंद महसूस करते हैं वह उनका अपना आनंद है, महिला का नहीं।

कुत्ता कहीं से कोई एक हड्डी पा लिया है और बड़े आनंद से उसे मुँह दबाये चबाते जा रहा है।कुत्ते के मुँह में उस सूखी हड्डी के चुभ जाने से रक्त निकल रहा है। मूर्खता से उस खून को हड्डी का खून समझ कर, वह कुत्ता आनंद लेते हुए हड्डी

चबा रहा है। वास्तव में मुँह में निकला हुआ खून स्वयं उसका ही है। पर वह उस हड्डी का खून समझ रहा है। ऐसे विकट परिस्थिति संसारी कामी पुरुषों की है।

कामुक पुरुष भी कुत्तों की तरह होते हैं. विषय जड़ हैं। विषयों में आनन्द कहाँ ? आनंद आत्मा में है। आत्मा प्रतिबिंबित होती है। बस, उससे आदमी को खुशी मिलती है.लेकिन अज्ञानतावश, कुत्ते की तरह, वह औरत के चक्कर में पड़ गया। यह संभव है. असल में पता चला कि स्त्री में कोई आनंद नहीं है, आनंद तो स्वयं के आत्मा में है।

पंडित वही है जिसने स्त्री का त्याग कर दिया हो।इंसानों और जानवरों में क्या अंतर है ? मनुष्य खाते हैं, सोते हैं, डरते हैं और स्त्रियों से समागम करते हैं तथा जानवर भी ये चारों काम करते हैं। लेकिन इन दोनों में अंतर यह है कि, किसी भी मानव धर्म में ज्ञान होता है लेकिन जानवर में नहीं। यदि मनुष्य पशुओं के समान अज्ञानी है तो वह भी पशु ही है।मनुष्य विवेक प्रधान प्राणी है पर , जानवर नहीं।

अंतर इतना है की भगवान ने मनुष्य को विवेक बुद्धि दी है। जबकि पशु - जानवरों को खान - पान भोग मैथुन के अल्प ज्ञान से सिवाय , मनुष्य की तरह , निर्णयात्मक विवेक बुद्धि का अभाव होता है। मनुष्य की कर्म योनि होती है और जीव - जंतुओं की भोग योनि , उनमें उनके द्वारा नए शुभा -शुभ कर्म करने की क्षमता नहीं होती है।

उन मनुष्यों से अधिक मूर्ख कौन है जो वेद-शास्त्र पढ़ने के बाद भी संसार की असारता जानने के बाद भी , माता - पिता , पति - पत्नी , पुत्र पौत्र आदि के अनित्य बंधनों में बंधे जाते हैं ! यदि मनुष्य दुर्लभ मनुष्य जीवन पाकर और वेद-शास्त्र पढ़कर भी संसार में फँसा रहे तो संसार के बन्धन से कौन मुक्त होगा?

कबीर दास जी कहते हैं:--

काम, क्रोध, लोभ , मोह आदि सब मनुष्य के आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति के अवरोध हैं , व्यवधान हैं। रुकावट हैं। कहाँ मूर्ख और कहाँ विद्वान, दोनों एक ही हैं। जब तक मन में काम, क्रोध, नशा और लालच है, तब तक बुद्धिमान और मूर्ख दोनों एक समान हैं। जिसके पास काम, क्रोध, धन का नशा और वासना नहीं है वह विद्वान है और जिसके पास ये सब अवगुण है वह अज्ञानी है। दुनिया

में सबसे महान योद्धा कौन है? जो स्त्री का शिकार नहीं बनता, स्त्री का गुलाम नहीं बनता।

महात्मा तुलसीदास का स्त्री के प्रति वैराग्य

एक बार महात्मा तुलसीदास जी (श्री राम चरित मानस/रामायण के रचयिता) अपनी पत्नी के घर, आधी रात को एक दूर गाँव में गये, जहाँ उन के पत्नी का मायका हुआ करता था। क्योंकि उन्हें असहनीय काम वासना पीड़ित करने लगी थी। उनके ससुराल और इस गांव के बीच एक नदी थी। वह तुरंत घर छोड़कर ससुराल की ओर चल पड़े।

वह निडर होकर रात में तेज बहाव वाली नदी पार कर अपनी सास के घर पहुंच गये । लेकिन जब वह घर के दरवाजे पर पहुंचे तो दरवाजा बंद पाया। अब वह घर में चढ़ने का उपाय सोचने में व्यस्त हो गए । इसी बीच उन्हें रस्सी जैसी कोई चीज लटकते हुए दिखाई पड़ी। उन्होंने उसे पकड़ लिया और ऊपर चढ़कर अपनी पत्नी के कमरे में पहुंच गये । उनकी पत्नी , जिसका नाम था रत्ना , तुलसीदास जी को देखते ही आश्चर्य चकित हो गई और घबरा गयी।

तुलसीदास जी, अपनी पत्नी रत्ना से कहने लगे - "प्रियतम. इस बार मैं तुम्हारे लिए बहुत कष्ट सहकर यहाँ आया हूँ। मेरी इच्छा पूरी करो।" स्त्री ने जैसे ही उन्हें देखा तो बैठ गयी और बोली - - अरे मेरे पतिदेव ! देखो, रात डरावनी हो रही हैं। बिजली की गड़गड़ाहट से मनुष्य का हृदय कांप उठता है। वहां नदी बढ़ रही है। आप अपने शरीर की परवाह न कर के और मुझे दर्शन देने आये हैं ; इसलिये मैं तुमसे प्रसन्न हूं। लेकिन प्रिय ! मुझे बताओ, तुम घर में कैसे आये, क्योंकि दरवाज़ा तो बंद है?"

तुलसीदास जी कहा-- "एक रस्सी लटक रही थी, मैं उसके सहारे ऊपर चढ़ गया।" जब रत्ना ने जाकर देखा तो उसके पैरों के पास रस्सी नहीं बल्कि एक बड़ा सा

काला सांप था। जैसे ही महिला ने देखा तो उसे चक्कर आ गयी। उसके मुँह से बस एक ही बात निकली, “पागल ! मेरे नाशवान रक्त और मांसल शरीर के प्रति आपके हृदय में इतना प्रेम है, यदि इतना प्रेम भगवान के श्रीचरणों में होता तो निश्चित ही आपका बहुत बड़ा उपकार होता। आपका जीवन एक महान वरदान होता, है न? नहीं ! मेरे प्रिय ?

“जितना प्रेम हमार से, वही हरि से जो होय |
चला जाय वैकुण्ठ को , पल्ला न पकड़े कोय। ”

पत्नी की इतनी हृदयविदारक बात सुनते ही तुलसीदास जी को ऐसे लगा जैसे काटो तो खून नहीं। कहा जाता है कि तब उनकी पत्नी उन्हें एक मृतदेह के अस्थिपंजर के समान दिखने लगी। वे तुरंत अपनी पत्नी को तत्काल उसी बरसात की रात में त्याग दिया और घर छोड़ दिया। भगवान का नाम जपते हुए जंगल की ओर निकल पड़े । जैसे किसी अबोध बालक कोई ज़ोर से तमाचा मार दें दो फिर वह अति दुखित होते हुए अपनी प्यारी माँ की ओर दौड़ता है और उसके शीतल प्रेममयी अंचल में शरण पा लेता है। उसी प्रकार तुलसीदास जी जीवन मुक्त हो कर श्रीहरि के चरण में सदा के लिए चले गए।

. . . .

'एक पुरुष अपनी स्त्री की 24 घंटे सेवा करता है, उसे हर तरह से खुश रखने की कोशिश करता है, उसके आदेशों का पालन करने के लिए तैयार रहता है और विभिन्न प्रकार की परेशानियों को सहन करता है।फिर भी अंत में निराशा ही हाथ लगी। उसकी पत्नी का देहांत हो गया और उसके कर्मानुसार उसका जन्म हिरण योनि में हुआ।

यमराज कहते हैं कि जा तू जीवन भर जिसकी सेवा करता रहा , हर समय जिसकी ही याद करता रहा ,, जो तेरी परम इच्छा की कारण थी ,आज वह हिरन बनी है , तुझे भी स्वेच्छा से उसी मृग योनि में जन्म लेना पड़ेगा। कभी तूने परमेश्वर को याद भी नहीं किया। यदि भगवान को याद किया होता तो आज तुझे परमगति प्राप्त हुई होती ।

इसलिए तेरा भी उसी योनि में जन्म होगा - जहां तेरा मन सदा लगा रहा है। क्योंकि तू सदा उसी के साथ ही रहना चाहता है। तेरे कर्मानुसार, तेरी प्रबल इच्छा

अनुसार ही तेरा भविष्य का भी जन्म होगा। यही विधाता का नियम है और यही प्रकृति का कानून है। गीता में भगवान ने स्पष्ट कहा है , जो जो जिसको सदा चाहते हैं , मरने के बाद वो वो उसी के लोक में प्रवेश कर जाते हैं। उसी प्रबल इच्छा की पूर्ति के लिए जन्म ग्रहण करता है। इसमें कोई संशय नहीं है।

राजा को महल से उठा ले गया ,फ़क़ीर को , गरीब को झोंपड़ी में से ले गया , उसी का नाम है - काल। 'ओह, महाबली काल तुम्हारे ऊपर घात लगाए बैठा है। आप भी इससे किसी तरह बच नहीं सकते।

यह संसार अपरिमेय है, मानव शरीर के आयु की कोई सीमा नहीं है, कोई भरोसा नहीं। पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात , उगते ही ढल जात है , ज्यों तारा परभात। फिर मनुष्य के अहंकार की कोई सीमा नहीं रहती। वह एक छोटी औरत की यौन संपत्ति पर इतना गर्व करता है। फिर भी सर्वश्रेष्ठ भगवान के विषय में कुछ भी नहीं सोंचता। अपने सात्विक भविष्य के बारे में कुछ भी चिंता नहीं करता ।

अपनी मृत्यु के बाद क्या भविष्य है ? इसकी मनुष्य को लेश मात्र भी चिंता नहीं है। जैसे नादान विद्यार्थी खेल कूद में अपना मूल्यवान समय व्यर्थ गमा देते है , और फिर जब परीक्षा के पश्चात , परीक्षा का परिणाम सामने आता हैं , तब दुखी होते हैं और रोने लगते हैं।

सलाह: अपना भला चाहते हो तो अहंकार त्याग दो; यह बहुत भारी बोझ है। जिन्होंने इसकी उपेक्षा की वे नष्ट हो गये। अहंकार के कारण लंका का शासक रावण नष्ट हो गया, जिसने त्रिलोकी को अपने अधीन कर रखा था और जो देवताओं से स्वयं की सेवा करवाता था। घमंड के कारण दोपहर की गर्मी की तरह दिल्ली के मुगल राजा औरंगजेब की सल्तनत की जड़ें हिल गईं और मुगल वंश को अपनी बादशाहत खोनी पड़ी। बन्धुओ, इन वीरों को स्मरण में रखकर अपने शक्तिशाली शत्रु-गर्व को सदा के लिए नष्ट कर दो।

वैराग्य शतकम् - ०२६ .

वैसे तो यह पृथ्वी स्वयं मिट्टी की एक बड़ी गेंद के समान है, जो चारों ओर से जल से घिरी हुई है। अन्य ; हजारों राजाओं ने आपस में अनेक युद्ध करके इस भूमि पर कब्ज़ा कर लिया है। ऐसे क्षुद्र और संकीर्ण सोच वाले राजा ! दान देने वाले सोचते हैं और मुंह की ओर देखते हैं कि हम कुछ देंगे, ऐसे नीच लोगों पर लांछन लगता है! ऐसे तुच्छ और दरिद्र मनुष्यों से धन की आशा करना व्यर्थ है।

अरे। वे विनम्र हैं. क्या उनकी इच्छाएं पूरी हो गयीं ? अमीर और गरीब सभी की जरूरतें होती हैं। इसलिए दोनों विनम्र हैं. अमीरों की जरूरतें गरीबों से ज़्यादा हैं, क्योंकि ये दीन के दीन हैं। अगर मांगना ही है तो राजाओं के राजा, सर्वशक्तिमान ईश्वर से मांगो।

राम जैसा गुरु आपके सिर पर खड़ा है मार्गदर्शन के लिए। फिर आपमें क्या कमी है ? रिद्धि-सिद्धि अपनी ओर से आपकी सेवा करेंगी और मुक्ति आपके पीछे-पीछे चलेगी। यदि सेवक दुखी रहता है तो भगवान भी तीनों कालों में दुखी रहते हैं। दास को कष्ट में देखकर क्षण भर में प्रकट होकर उसे सुखी कर देते हैं। ..जिसकी गांठ में राम है, उसके पास सारी सिद्धियां हैं। अष्ट सिद्धि और नव निधि हाथ जोड़कर आगे खड़ी हैं।

भगवान जिस पर दया दृष्टि रखते हैं, उसके लिए विष अमृत बन जाता है, शत्रु मित्र बन जाते हैं, गाय के पैर समुद्र में डूब जाते हैं, वह जल बन जाता है, अग्नि शीतल हो जाती है और भारी सुमेरु-पर्वत सूक्ष्म धूल के समान हो जाता है। इसलिए, बुद्धिमान लोग उस परम पिता परमात्मा , भगवान पर भरोसा करते हैं और तुच्छ लोगों का एहसान नहीं लेते।

जैसे सोने का एक छोटा सा टुकड़ बहुमूल्य है और लादने में आसान है। परन्तु पित्तल धातु का बड़ा घड़ा बहुत वजनदार होता है और लादने में भी कष्टकारी अनुभव होता है। फिर भी उस सोने के छोटे टुकड़े के मूल्य के सामने , शून्य है , कुछ भी मूल्यवान नहीं है। इसलिए मनुष्य को भगवान की शरण लेनी चाहिए , हलकट , नीच धनवानों की शरण कभी नहीं लेनी चाहिए।

मूर्ख , कामलम्पट व्यक्ति ! सर्दी -गर्मी सहन करता है, सबको प्रसन्न करता है, गर्मजोशी और स्नेह को सहन करता है, लेकिन स्त्री के लिए कुछ लेकर ही घर में प्रवेश करता है; दिन और रात उसका अंदर-बाहर ख्याल रखता है और उसके लिए काम करता है। जान की भी परवाह नहीं. बदले में महिला से क्या मिलता है? कामवासना के पूर्ति का स्त्रोत, अनित्य ख़ुशी का आभास !. दिन-रात चिंता और अशांति।

यहाँ नरक और वहां नरक. यदि मनुष्य भगवान के प्रति उतनी ही या उससे भी कम भक्ति करता तो निःसंदेह वह निहाल हो जाता, उसे शांति और संतोष का अपार खज़ाना प्राप्त होता। इहलोक और परलोक दोनों सरलता से सफल हो जाते।

जब हम मरते हैं और शरीर छोड़ते हैं, तो हमें स्वर्ग या परम पद मिलता है।काम, क्रोध, मद और मोह को छोड़कर आत्मा के भीतर देखो।मैं कौन हूँ ? जो आत्मज्ञानी नहीं हैं, जो अपने स्वरूप को नहीं पहचानते हैं अथवा आत्मा के सम्बन्धों को नहीं जानते, वे शुष्क नरकों में जाते हैं।

जहाँ भी स्त्री होगी वहाँ काम, क्रोध, कामना और मोह अवश्य होंगे; और जहां ये होंगे वहां भगवान नहीं होंगे. इसका मतलब यह है. अर्थात जब मनुष्य के हृदय में काम, क्रोध आदि नहीं रहते, तब उसका हृदय पवित्र रहता है। निर्मल हृदय में आत्मा का दर्शन स्वच्छ रूप में , निराकार रूप में होता है। जिस प्रकार स्वच्छ दर्पण में चेहरा स्पष्ट दिखाई देता है, जी हां, उसी प्रकार शुद्ध, स्पष्ट और पवित्र मन में भगवान भी स्पष्ट दिखाई देते हैं।

सलाह- जो लोग भगवान के दर्शन करना चाहते हैं; जो सदैव सुख और आनंद से रहना चाहते है, जो भव-बंधन से मुक्ति चाहते हैं , वे सदा कामिनी और कंचन से दूर रहें। जो लोग इन चीजों पर ध्यान केंद्रित रखते हैं उन्हें सफलता मिलती है। भगवान उनसे प्रसन्न रहते हैं और सदा उनके हृदय मंदिर विराजमान हुए रहते हैं। भगवान की विशेष कृपा यह है कि , एक बार जब वे भक्त का हाथ थाम

लेते हैं तो कभी भक्त से अलग नहीं होते, ना भक्त को अलग होने देते है। भक्त की हर परिस्थिति में रक्षा करते रहते हैं।

अज्ञानता के कारण पतंगा दीपक की लौ पर गिरकर अपनी पूंछ जला लेता है; क्योंकि वह इसके परिणाम नहीं जानता; इसी तरह मछली भी कटे हुए मांस पर मुंह चलाकर अपनी जान दे देती है, क्योंकि उसे नहीं पता होता कि यह जानलेवा है। परंतु हम भली भांति जानते हुए भी अनर्थजन्य विषयों की इच्छा नहीं छोड़ते। मोह की महिमा कितनी अद्भुत है!

दीपक के रूप पर पतंगा मर जाता है, उसके प्रेम में डूबा रहता है; इसलिए, उसे गले लगाने के लिए, वह उस पर झपटता है और उसे सह लेता है। पतंगा यह नहीं जानता कि उसके गिरने से मेरी मृत्यु हो जायेगी। इसी प्रकार, मछली मछुआरे के डूबे हुए काँटे के मांस पर झपटती है और काँटा उसके गले में फंसने से मर जाती है; क्योंकि वह नहीं जानती कि मेरे पास मौत का सामान है।

अज्ञानता के कारण पतंगे और मछलियाँ अपना जीवन खो देती हैं; परन्तु आश्चर्य तो यह है कि मनुष्य, जिसे ईश्वर ने समझ दी है, विशेष विवेक ज्ञान दिए हैं। कुछ विद्वान पुरुष यह जानते भी हैं कि विषयों की चाह ही क्लेश का मूल है, विषयों में सुख नहीं, घोर अनर्थ है; विषय विष से भी अधिक दुःखदायी है - व्यक्ति को विषयों की इच्छा होती है। इससे हमें यह एहसास होता है कि प्रलोभन का भ्रम बहुत कठिन है।

शंकर ही से   सबल है, यह माया संसार।
अपने बल छूटे नहीं, छुड़ावे सिरजनहार॥

खाने के लिए फल, पीने के लिए मीठा पानी और पहनने के लिए वृक्षों की छालें बहुत हैं; तो फिर हम धन के नशे में धुत दुष्ट लोगों की बातें क्यों सहन करें ?

मनुष्य तृप्त नहीं होता, प्यास उसका पीछा नहीं छोड़ती; इसके कारण, वह वस्तुओं का आनंद लेने की इच्छा से अमीरों की चापलूसी करता है। उन्हें चिढ़ाता है, अपनी प्रतिष्ठा खो देता है, अनादर और अपमान सहता है। यदि आप संतुष्ट हैं तो आपको ऐसे दुष्ट और धन के नशे में चूर घमंडी लोगों को खुश करने की क्या आवश्यकता है ?

तुम्हें अपनी बदनामी क्यों करानी है ? भगवान हमें इन शैतानों से बचाए ! एक तो संकीर्ण सोच वाले लोग शैतान होते हैं, लेकिन जब वे बुराई के नशे में चूर होते हैं तो उनकी शैतानी का अंत नहीं रहता।

जिस क्षण बिना जुनून और हृदय वाला व्यक्ति धन के नशे में चूर हो गया, मानो शैतान के सिर पर एक और शैतान आ गया हो। जिसे किसी चीज की जरूरत नहीं, वह किसी की खुशामद क्यों करेगा? वह अपना सम्मान क्यों खोएगा? निःस्वार्थी के लिए संसार तिनके के समान है। इसलिए यदि सुख चाहते हो तो इच्छाओं का त्याग कर दो।

यदि तू आशा, अभिलाषा और अभिलाषा को न त्याग कर धनवानों के पीछे हो ले, तो अपकीर्ति और अपमान के सिवा तुझे कुछ न मिलेगा; परंतु यदि आप किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखते और किसी के मोह में नहीं पड़ते तो संसार आपकी प्रशंसा करेगा, आपकी पूजा करेगा और देवी लक्ष्मी आपकी दासी बनकर आपके चरणों में रहेगी।

भागती फिरती थी दुनिया , जब तलब करते थे हम |
अब जो नफ़रत हमने की, तो बेकरार है आने को ॥..

प्राचीन काल में कुछ बड़े दिल वाले लोग थे; इस दुनिया को बनाया; कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इस दुनिया को अपनी बाहों में पकड़ रखा था; कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने सारी पृथ्वी जीत ली और फिर उसे तुच्छ समझकर दूसरों को दान कर दिया; और कुछ ऐसे भी हैं जो चौदह भुवनों का पालन करते हैं। हम उन लोगों के बारे में क्या कहें जो एक छोटे से गाँव के मालिक बनकर घमंड के बुखार में मतवाले हो जाते हैं।

इस संसार में ऐसे भी लोग थे जिन्होंने संसार को बनाया। किया, लेकिन उसे जरा भी गर्व महसूस नहीं हुआ. कुछ इस तरह। ऐसे लोग भी थे, जो इसे बांहों में तो रखते थे, लेकिन घमंड नहीं करते थे। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने पूरी दुनिया जीत ली। उन्होंने इसे ले लिया और फिर थोड़े अफसोस के साथ इसे दान में दे दिया, लेकिन उन्हें गर्व महसूस नहीं हुआ।

कुछ ऐसे हैं जो इस संसार का अनुसरण करते हैं और इस पर प्रभुत्व रखते हैं, परन्तु उनमें थोड़ा सा भी अभिमान नहीं है। फिर वे लोग, जो कुछ गांवों के मालिक बन जाते हैं, अहंकार क्यों महसूस करने लगते हैं? अच्छे लोग धन और शक्ति पाकर झिझकते नहीं। वे नीचों में भी नीच हैं जो थोड़ी सी भौतिक संपत्ति पाकर ही घमंडी हो जाते हैं।

कोयल उत्तम रसाल का जल पीकर गर्व नहीं करती, परंतु मेंढक कीचड़ मिश्रित जल पीकर ही कर्कश कर्कश ध्वनि निकालता है। गहरे पानी में रहने वाली रोहित मछली हिलती-डुलती नहीं है, लेकिन अंगूठे जितनी छोटी मछली पानी में मजे से नाचती है।

छोटी और बड़ी, पूर्ण और नगण्य चीजों के बीच यही अंतर है। जो जितना छोटा है, वह उतना ही अधिक अहंकारी और उछल-कूद करने वाला है और जो जितना बड़ा और पूर्ण है, वह उतना ही अधिक गंभीर और निस्वार्थ है।

अहंकारी से ईश्वर कोसों दूर है। जिससे ईश्वर दूर रहता है उसके दुःख का अंत कहाँ ? आज रोटी के टुकड़ों की जरूरत है, कल उसे सिंहासन की जरूरत नजर आती है। और आज ये भी संभव है कि किसी के सिर पर राजमुकुट हो। कल वह गली-गली घूमता रहा। यही दुनिया का दस्तूर है। अतः अभिमान व्यर्थ है। ईश्वर ने प्रत्येक को दूसरे से महान बनाया है।

एक-एक से एक-एक को, बढ़ा कर बना दिया।
दारा किसी को, किसी को सिकंदर बना दिया |॥

किस बात का गर्व है तुम्हें ? क्या यह राज्य और धन सदैव तुम्हारे पास रहेगा या तुम्हारे साथ चला जायेगा? रावण जो लंकेश्वर था, जिसने यक्ष, किन्नर, गंधर्व और सभी देवताओं को अपने अधीन कर लिया था, वह आज कहां है? क्या उसका धन और वैभव उसके साथ चला गया? जिस राम ने...समुद्र पर पुल बनाया और वानर सेना सहित रावण का विनाश किया, वही राम आज कहाँ हैं?

जिस कुण्डल ने रावण जैसे त्रिलोक विजेता को उसके पुत्र के पालने में बाँधा था, वह कुण्डल आज कहाँ है? वह सहस्त्रबाहु जिसने रावण के सिर पर दीपक रखकर जलाया था, आज कहाँ है? चारों दिशाएँ अपनी भुजाओं के बल पर विजय प्राप्त करने वाले भीम अर्जुन आज कहाँ हैं? हरिश्चंद्र, कर्ण और. बाली जैसे दानदाता आज कहां हैं ? इस धरती पर कई वीर राजा और योद्धा हुए, लेकिन यह धरती किसी के साथ नहीं गई।

क्या आपका धन, वैभव, विरासत या शासन भी स्थिर है ? क्या वह तुम्हारे साथ जायेगी ? बिल्कुल नहीं जैसे आप खाली हाथ आये थे वैसे ही खाली हाथ जायेंगे।

हे मनुष्य! दबाव में आकर , गर्व में आकर इतना उत्साह मत दिखा; इस संसार में बहुत सी नदियाँ उठीं और गिरीं, परन्तु वे बागों को छूकर सूख गईं। यदि आप राजा हैं तो हमें भी गुरु की सेवा से प्राप्त ज्ञान पर गर्व है। यदि आप अपनी गहराई और वैभव के लिए प्रसिद्ध हैं तो कवियों ने भी हमारे ज्ञान को चारों ओर फैलाया है। हे घमंडी, तुझमें और मुझमें ज़्यादा फर्क नहीं। अगर तुम हमारी तरफ गर्व से देखना नहीं चाहते ,तो हमें भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं।

कबहुक मन नहीं गगन चढ़े , कबहुक गिरे पता।

अगर आपको अपनी ताकत और धन पर गर्व है तो हमें भी अपने ज्ञान पर गर्व है। आप में और हममें कोई बड़ा अंतर नहीं है. अगर तुम्हें हमारी जरूरत नहीं, तो तुम्हारी भी जरूरत हमें नहीं, क्योंकि हमें तुमसे कोई लेना-देना नहीं।

सैकड़ों-हजारों राजा इस पृथ्वी को अपना बताकर चले गए, परंतु यह किसी की नहीं रही; तो फिर राजा अपने स्वामी होने पर झूठा घमंड क्यों करता है! दुःख की बात है कि छोटे-छोटे राजा ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों के भी स्वाभिमानी स्वामी नहीं बन कर झूठे अभिमान में अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा बैठे।

मूर्ख अंततः उन चीज़ों से खुश होते हैं जिनसे उन्हें दुःख होना चाहिए। बताओ तो सही , आज वह खिले , वह राज पात , पृथ्वी का राज्य , शानो - शौकत कहाँ चली गयी ?.

इस धरती पर रावण और सहस्त्रबाहु एक-एक करके राजा हुए, जिन्होंने तीनों लोकों को अपनी उंगलियों पर नचाया। वे कहते थे कि दुनिया में हमारे बराबर कोई नहीं है। यह धरती सदैव हमारे साथ रहेगी। परन्तु एक दिन वे सब इसे छोड़कर चल बसे; उनके साथ ऐसा नहीं हुआ; वे इसका आनन्द सदैव नहीं ले सके।

फिर आज के छोटे राजा, जो स्वयं को 'पृथ्वी का स्वामी' मानते हैं और अहंकार के नशे में चूर हैं, इसके लिए लड़ते हैं, खून-खराबा करते हैं, दया करते हैं, यह उनकी अज्ञानता नहीं है! उनकी यह छोटी-सी संप्रभुता सदैव नहीं रहेगी; यह

बिजली की चमक और बादल की छाया के समान है। इस पर गर्व करना बहुत बड़ी गलती है।

अरे दोस्त ! मृत्यु से डरो, अभिमान त्यागो। किसी राजा की संपत्ति के चारों ओर पक्की दीवारें थीं, उसका महल नगर के मध्य में था, प्रत्येक द्वार की खिड़की पर पहरेदार थे, राज दरबार में एक हाथी बंधा हुआ था, चारों ओर अस्त्र-शस्त्रधारी सैनिक थे।' खड़े हुए थे। पास खड़े योद्धा हंसते रहे और कहते रहे- उस शक्तिशाली काल ने इतनी व्यवस्था के बावजूद भी किसी राजा-महाराजा को मरने से नहीं छोड़ा, वह काल सभी लोगों को निगल गया, चाहे वे अमीर हों या गरीब।

वैराग्य शतकम् - ०२७ .

न तो हम कलाबाज़ या बाजीगर हैं, ना हम नाचने-गाने वाली हैं, न हम गपशप करना जानते हैं, न हम दूसरों की बर्बादी पर रोक लगाना जानते हैं, न हम भारी स्तनों वाली मन मोहिनी औरतें हैं; तो आइए हम पूछें कि राजाओं द्वारा हमारा आदर क्यों किया जाएगा ?

राजाओं के दरबार में नाचने वाली, बाजीगर, नाचने वाली, दूसरों के विनाश की भविष्यवाणी करने वाली, चुगली करने वाली, इधर-उधर चिढ़ाने वाली या ऐसी सुंदरियों की मांग होती है, जो सुंदर हों और जिनकी कमर लचीली और नाज़ुक हो। उनके स्तनों का भार - राजा को आकृष्ट कर सके। हमारे अंदर यदि इनमें से कुछ भी हमारे पास नहीं है, तो हम राज्यसभा में कैसे जा सकते हैं? वहां केवल उन्हीं की तलाश की जाती है - केवल उन्हीं का सम्मान किया जाता है - जो अपनी यौन इच्छाओं को पूरा करते हैं।

जहां भा गयी मेंढकी , तो पद्मिनी क्या चीज़ ?

जिस राजा के पास दरबार में , नाचने वाली , गाने वाली , लोभी , लम्पट कामी , झूठी तारीफ करने वाले , भाट और अहीरों कहारों आदि का मान सम्मान किया जाता है , वहां पंडित , विद्वानों और भद्र पुरुषों को कौन पूछे ? जहां कौवों की कांव - कॉव की आवाज़ के आदि लोगों को , भला कोयल की मधुर ध्वनि क्यों कर पसंद आये ?

वैराग्य शतकम् **- 028 .**

पहले के समय में शिक्षा केवल उन लोगों के लिए थी जो मानसिक परेशानियों से छुटकारा पाकर मानसिक शांति चाहते थे। इसके बाद, विषय आनंद चाहने वालों के लिए उपयोगी थे। अब राजा लोग शास्त्र सुनना नहीं चाहते; राजा और प्रजा शास्त्रों से विमुख हो गये हैं। चले गए हैं; इसलिए महाविद्या दिन-ब-दिन रसातल में धंसती चली जाती है। बहुत दुख की बात है!

पहले के समय में जो ज्ञान शांतिप्रिय लोगों के अशांत मन को शांत करने, उनकी मानसिक पीड़ा को दूर करने और उन्हें दुःख की आग में जलने से बचाने के लिए उपयोग किया जाता था, वह धीरे-धीरे कामुक सुखों का आनंद लेने का साधन बन गया। लोग तरह-तरह की विद्याएँ सीखकर राजाओं और दरबारियों को प्रसन्न करते थे और उनसे धन प्राप्त करके स्वयं विषय-वासनाओं का सुख भोगते थे।

अब तक तो ठीक था; परन्तु अब राजा ऐसे हो गये हैं कि वे विद्या और विद्वानों की ओर ध्यान ही नहीं देते, विद्वानों से धर्मग्रन्थ नहीं सुनते, इसलिये अब कोई विद्या नहीं पढ़ता। कद्रदानों की कमी के कारण अब शिक्षा का पतन हो रहा है। क्या ये दुःख की बात नहीं है?

विद्या दुःखनाशक हती, फेरी विषय -सुख दीन |
चली रसातल को गयी , देखी नृपति मतिहीन।

वैराग्य शतकम् - ०२९ .

प्राचीन काल में, ऐसे लोग थे जो भगवान शिव के श्रृंगार के लिए खोपड़ियों की माला बनाते थे और उन्हें अपने गले में पहनते थे। अब ऐसे ऐसे लोग हैं, जो अपनी जीविका के लिये नमस्कार करने वालों से प्रतिष्ठा पाकर अभिमान के ज्वर से तपते जा रहे हैं। अपनी प्रसन्नता के लिए शिव को पूजते है , अपने स्वार्थ के लिए। परन्तु शिव की प्रसन्नता के लिए नहीं।

चेले - चेलियों से खुद की पाद पूजा करवालेते है , खुद आरती उतरवा लेते हैं। पर भगवान को नहीं पुजवाते। खुद की पूजा करवाना , खुद की आरती करवाना , शास्त्रों में निषिद्ध कर्म हैं और निंदनीय है।आज कल के ये चेले - चेलियां ना संत महापुरुषों के उपदेश मानते हैं . ना ही शास्त्रों का आदर करते हैं।ऐसे धन के गुलाम गुरु , अपने शिष्यों की नैया को बीच मझधार में डूबा देते हैं, नरक के द्वार पहुँचा देते हैं। । ऐसे गुरुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है।

एक अनुभवी संत ने कहा है -

“गुरु स्वार्थी चेला लालची , दोहु चढ़े पाथर की नाव।”

वैराग्य शतकम् - ०३० .

यदि आप धन के स्वामी हैं, तो हम वाणी के स्वामी हैं। यदि आप लड़ने में बहादुर हैं, तो हम अपने विरोधियों से बहस करके उनका बुखार उतारने में कुशल हैं। यदि आपकी सेवा ऐसे लोगों द्वारा की जाती है जो धन के लालची हैं या जो धन के प्रति अंधे हैं, तो हमारी सेवा अज्ञान और अंधकार को नष्ट कर देगी। जो लोग ऐसा करना चाहते हैं वे धर्मग्रंथों को सुनने के लिए ऐसा करते हैं। अगर तुम्हें हमारी ज़रा भी ज़रूरत नहीं, तो हमें भी तुम्हारी ज़रा भी ज़रूरत नहीं। लो हम भी चलते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०३१ .

जब मैं बहुत कम जानता था, तो मैं हाथी की तरह मद में अंधा होता जा रहा था; मैंने सोचा कि मैं सर्वज्ञ हूं. जब बुद्धिमान लोगों की संगति से मुझे कुछ पता चला; तब मुझे एहसास हुआ कि मैं कुछ नहीं जानता. मेरा झूठा उल्लास ज्वर की भाँति उतर गया।

जिन लोगों के पास बहुत कम ज्ञान है वे सोचते हैं कि हम सब जानते हैं - दुनिया की सारी बुद्धिमत्ता हमारे भीतर है, हमारे अलावा केवल जानवर हैं। अज्ञान के

कारण उन्हें बहुत अभिमान हो गया है , लेकिन जब वे बुद्धिमान और विद्वान लोगों की संगति में आते हैं और कुछ सीखते हैं, तो वे समझते हैं कि हम कुछ नहीं जानते, हमारा घमंड झूठा था। उस समय उनका अभिमान नष्ट हो जाता है।

हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना, कि न जाना कुछ भी।

अधिक से अधिक पढ़ने, कुरेदने और सोचने से यही कहना पड़ता है कि हम कुछ नहीं जानते। किसी ने ठीक ही कहा है – अल्प ज्ञान वाला व्यक्ति बहुत अहंकारी होता है। परन्तु जब वह सोचता है कि मैं विद्वानों की संगति से सीख रहा हूँ, तो उसका नशा टूट जाता है और उसे स्वीकार करना पड़ता है कि, मैं बिल्कुल मूर्ख हूँ - मैं अभी तक कुछ भी नहीं जानता।

वैराग्य शतकम् - ०३२ .

आभूषणों से सजी-धजी स्त्रियाँ जिस यौवन का आनन्द ले सकती थीं, वह चला गया है; और 'हम लंबे समय तक वस्तुओं के पीछे भागते-भागते थक गए। अब हम जाहन्वी के पवित्र तट पर शिव-शिव का जाप करेंगे और (प्रलोभित) स्त्रियों की निंदा करेंगे। अथवा स्त्रियों के व्यवहार एवं संघ से बचेंगे , दूर रहेंगे।

जिस पुरुष को दुष्टा स्त्रियों की असलियत जानने के बाद उनसे घृणा हो गई हो; वह कहते हैं---अब हमारी महिलाओं से आनंद लेने लायक अवस्था चली गई है। अब न जवानी लौटेगी और न यह बुढ़ापा जायेगा। यह नारी प्रलोभन रोग युवावस्था में ही अच्छा लगता है - युवावस्था में ही यह रोग प्रबल भी होता है।और बुढ़ापे में दूर जा बैठता है , जैसे मालिक से लाठी की मार खाया हुआ कुत्ता , फिर मालिक को देखते ही , किसी कोने में जा दुबक जाता है , उसी प्रकार से।

अब हम बुढ़ापे का दर्द झेल रहे हैं, इस उम्र में हम सुंदरियों की संगति का आनंद भी नहीं ले सकते। इसके अलावा अब हम सतर्क भी हो गए हैं. हमने मूर्खता छोड़ दी है. हम बहुत दिनों एक विषय - वासनाओं में डूबे रहे और बहुत-से सुख भोगे; अब हम उनसे थक चुके हैं, हम उनसे तंग आ चुके हैं।' उनसे हमें कोई खुशी नहीं मिली।

अत: अब हम गंगा के तट पर बैठेंगे, सांसारिक बंधनों और स्वर्ग की मादक सुंदरता का मोह त्याग कर भगवान शिव से प्रेम करेंगे और दिन-रात उनके पवित्र और लाभकारी नाम का जप करेंगे, जिससे हमारा अंत समय सुधर जाएगा।

वैराग्य शतकम् - ०३३ .

जब लोगों के बीच सम्मान न हो; धन का नाश हो गया है । अब हम पुरे भिखारी बन गए हैं। भाई, पत्नी, पुत्र और सम्बन्धी मर सकते हैं; तब बुद्धिमान व्यक्ति को एक पर्वत की गुफा के कोने में निवास करना चाहिए जिसके पत्थर गंगा के पानी से शुद्ध हो रहे हों।

जब लोग अपना सम्मान नहीं करते, लोग उन्हें घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं, वे अपना धन खो देते हैं; जो भिखारी पहले कुछ न कुछ पा लेते थे, अब गरीबी के कारण मुँह मोड़कर वापस लौट जाते हैं; भाई-बन्धु, पत्नी-पुत्र के सम्बन्धी परलोक में। “यदि वे चले गए, तो बुद्धिमान व्यक्ति को संसार छोड़ देना चाहिए; इससे मोह मत रखो और ऐसे पर्वत की किसी गुफा में चले जाओ। जिनके पत्थरों को पवित्र गंगा जल स्वयं धोकर शुद्ध किया करती है।

ऐसी स्थिति में इस संसार में रहना समय बर्बाद करना है। कम से कम उस समय तो बुद्धिमानों को एकान्त में बैठकर सारी आशाएँ और अभिलाषाएँ छोड़कर भगवान के चरणों में ध्यान लगाना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०३५ .

अरे नीच विचार वाले मन ! आप किसी और के दिल को खुश करने की कोशिश क्यों कर रहे हैं ? चलते रहो! यदि आप अपनी तृष्णा को संतुष्ट करते हैं और स्वयं से संतुष्ट रहते हैं, तो आप स्वयं एक वरदान बन जाते हो । तो फिर आपकी कौन सी इच्छा पूरी नहीं होती ? क्या कभी कोई वर्षा से भरे हुए खुले जंगलों में प्रवेश कर के भी , जल से अछूता रह सकता है ?

मन ही सभी कार्यों का कर्ता है। सभी इन्द्रियाँ मन के अधीन हैं और मन की अनुयायी हैं। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन के माध्यम से ही मनुष्य पाप, पुण्य और दुख-सुख का भागी बनता है। मन ही व्यक्ति को अच्छा या बुरा, पापात्मा या पुण्यात्मा बनाता है। मन की वृत्ति को सुधारकर, वासना से मुक्त होकर, सब कुछ त्याग कर ही कोई व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार के योग्य बन पाता है।

संत कबीरदास जी कितना बढ़िया कहा है -

“मन के हारे हार है , मन के जीते जीत “

इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति मन को संबोधित करते हुए कहता है,“अरे मन ! तुम स्वयं गंदगी और दुःख के बोझ से दबे हुए हो; फिर तुम दूसरों को प्रसन्न करने के लिए इतने प्रयत्न क्यों करते हो, क्यों कष्ट सहते हो, क्यों सम्मान खोते हो और क्यों अपमान सहते हो? इससे आपको क्या लाभ मिलेगा? यदि तू मेरी बात माने तो इच्छा छोड़ दे, किसी वस्तु की इच्छा न करे; तब तुम्हें शांति-आनंद मिलेगा।

जब तुम चिन्तामणि के समान निर्मल हो जाओगे, जब तुम अपने स्वभाव को पहचान लोगे; तब तुम्हें आत्म-साक्षात्कार हो जायेगा, तुम संसार के अनित्य बंधन से मुक्त हो जाओगे, तुम सनातन नित्य ब्रह्म के प्रेम में लीन हो जाओगे। सुख, दुःख और दुःख तुम्हारे पास नहीं आएंगे, अष्ट सिद्धि और नवनिधि तुम्हारे सामने हाथ बांधे खड़ी रहेंगी।

उस समय आपकी कोई भी इच्छा अधूरी नहीं रहेगी। सच पूछो तो आपके मन में किसी प्रकार की भी कोई उत्पन्न ही महीन हो पायेगी। स्वयं सफलता , आपके बिना बुलाये आपके पीछे पीछे आएगी , एक आज्ञाकारी सेवक की तरह।

माया ऐसी चंचला , धरपाये न कोय।
सन्तन के पीछे लगे , सम्मुख भागे सोय।।

इसीलिए मैं कहता हूं कि आपको दूसरों को खुश करने की बजाय सिर्फ खुद को खुश करना चाहिए। इससे आपको आत्मविश्वास मिलेगा। तभी वह प्राप्त होगा, जिसके समान संसार में कोई जड़ - चेतन वास्तु ही नहीं है। जिस क्षण उसकी अनोखी छवि तुम्हारी आँखों में समा जायेगी, तुम्हें कुछ और अच्छा न लगेगा; वही अच्छा लगेगा।कहने का तात्पर्य यह है कि उस अपूर्व निधि को प्राप्त कर आप धनपति नहीं , बल्कि सारे धनियों के भी पति हो जाओगे।

जब प्रियतम कृष्ण की सुन्दर एवं मनोरम छवि आँखों में समा जाती है तो किसी अन्य की छवि उनमें समा नहीं पाती। जब तक मुरली मनोहर की छवि आँखों में नहीं आती, तब तक आँखें उनकी छवि से खाली रहती हैं, जब तक मसुली (स्त्री पुत्र धन संपत्ति आदि संसार की नाशवान वस्तुएं) की छवि उनमें समाई रहती है।

जैसे यात्री किसी सराय को भरा हुआ देखकर चले जाते हैं, परन्तु उसमें कमरा खाली नहीं पाते; उसी तरह आंखों में मनमोहन की बांकी छवि को देखकर भूल से भी संसार की झूठी खूबसूरती की तस्वीरें भी नहीं आती।

जब हृदय में परमप्रिय भगवान श्रीकृष्ण का वास होता है तो सुन्दर स्त्रियाँ किसी को अच्छी नहीं लगतीं और न ही देवी लक्ष्मी को स्थान मिलता है। अर्थात् संसार की सर्वोत्तम वस्तुएँ - पत्नी, पुत्र और धन - उसकी तुलना में हृदय को तुच्छ लगती हैं।

इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अज्ञानता के कारण भटकता है और अन्य सांसारिक सुखों को प्राप्त करने के लिए निम्न वर्गों की चापलूसी करता है। जिस

ख़ुशी के लिए वह इतना कष्ट सहता है उसका सच्चा स्रोत उसके अपने हृदय में ही मौजूद है।

हृदय के भीतर एक सच्चा सूखा झरना विद्यमान है। जो इसे अन्यत्र खोजता है वह मूर्ख है। निश्चय ही प्रसन्नता मन में है और वह मन पर नियंत्रण करने से ही प्राप्त होती है। जिसका मन साफ़ है वह हमेशा खुश रहता है; जिसका मन स्थिर नहीं है, उसे कोई सुख नहीं मिलता; इसलिए मनुष्य भटकना बंद करो और संतोष का आश्रय लो; निश्चय ही तुम्हें अपने भीतर परम शांति मिलेगी।

वैराग्य शतकम् - ०३५ .

इन्द्रिय सुख भोगने में रोग का भय, परिवार में हानि का भय, धन में शासन का भय, मौन रहने में नम्रता का भय, बल में शत्रु का भय, सौन्दर्य में बुढ़ापे का भय होता है। आयु में वृद्धावस्था का भय , शस्त्रों से शत्रुओं का भय बताया गया है। गुणों में अशुभ का भय है, शरीर में मृत्यु का भय है; दुनिया की हर चीज़ में इंसानों का डर है. केवल "वैराग्य" में ही किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

जैसे एक धन को त्यागा हुआ धनि सेठ , चोरों , लुटेरों और दुष्टों की बस्ती में निडर हो कर सहज ही प्रवेश कर जाता है। यदि मनुष्य इन्द्रिय सुख भोगता है तो उसे रोगों का भय रहता है। चंदन आदि ठंडे पदार्थ लगाने से वह ठंडा हो जाता है। यदि स्त्री के साथ संभोग किया जाए तो ताकत कम हो जाती है और अधिक किया जाए तो क्षय रोग हो जाता है।

यदि किसी का जन्म ऊँचे कुल में हुआ हो तो उसके पतन या उसमें कोई दोष आने का भय सदैव छिपा रहता है, क्योंकि कुल में किसी दुर्व्यवहार के कारण किसी का नाम बदनाम हो जाता है अथवा व्यभिचार के कारण कुल का नाम ख़राब हो जाता है, डूब जाता है।

इसी प्रकार बहुत सारा धन होने के कारण राजा का डर रहता है कि कहीं राजा सारा धन छीन न ले। चुप चुप रहने में बदनामी और नम्रता का डर होता है क्योंकि चुप रहने वाले को सभी लोग गरीब समझते हैं। युद्ध में शत्रुओं का भय रहता है। जवानी के ढलते , बुढ़ापे के अवगुणों का भय संसार के सभी सुंदरियों

लगा रहता है। हालत ख़राब होने का डर है; बुढ़ापे में रूप और सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

शास्त्रों को जानने वाला व्यक्ति अपने विरोधियों से डरता है, क्योंकि उनके विरोधी हमेशा उसे नीचा दिखाना और उसका अपमान करना चाहते हैं। सभी सद्गुणों से संपन्न व्यक्तियों को या सद्गुणों में बुराई का भय रहता है। दुष्ट लोग अच्छे से अच्छे काम में भी दोष निकाल लेते हैं और उसका विपरीत अर्थ गाने लगते हैं; वे आलोचना या अपवाद करके सद्गुणों के गुणों के मूल्य को कम करने की पूरी कोशिश करते हैं।

शरीर मृत्यु से डरता है, क्योंकि शरीर का विनाश अपरिहार्य है। देह में कौन आया है, इस देह के वस्त्र किसने पहने हैं; उसे अपना शरीर अवश्य ही छोड़ना होगा - उसे अपने कपड़े बदलने होंगे और नये कपड़े पहनने होंगे।

लड़का होगा या कन्या होगी , इसमें संशय हो सकता है , गुणवान निकलेगा या अवगुणों की खान , इसमें संशय हो सकता है , पढ़ेगा की नहीं पढ़ेगा इसमें संशय हो सकता है , ब्याह करेगा की नहीं करेगा , इसमें संशय हो सकता है , परन्तु - मरेगा की नहीं मरेगा ; इसमें कोई संशय की बात नहीं है , अवश्य मरेगा।

ऐसा सोचने से सिद्ध होता है कि मनुष्य सभी सांसारिक वस्तुओं नष्ट होने के भय से से डरता है। फिर डर किसे नहीं होता ? केवल "वैराग्य या महावैराग्य या सर्वोच्चवैराग्य" ही है जिसमें किसी भी चीज़ का कोई डर नहीं है। वस्तुतः संसार में सुख है ही नहीं; सर्वत्र भय है।

लेकिन दूसरी ओर, निचले लोगों का जो स्वयं का नाश स्वयं ही कर डाल रहे हैं उन अज्ञानी - मूर्खों से , सबसे भारी भय होता है , क्योंकि वह भारी संक्रामक रोग उनके द्वारा कहीं हमें भी ग्रसित ना कर लें !

संसार में बिल्कुल भी सुख नहीं है, सर्वत्र भय ही भय है। एक-एक करके खाने के लिए दौड़ता है। जिसे देखो वही जलकर मर जाता है। यहां ईर्ष्या और द्वेष का बाजार बहुत गर्म है, इस कारण हमें ऐसी जगह जाकर रहना चाहिए, जहां कोई न

हो, हमारी बात कोई न समझे और हम किसी की बात न समझें। घर भी ऐसा हो, जिसमें न हों दरवाजे-दीवारें; यानी साफ-सुथरा जंगल होना चाहिए।

हमारा न तो कोई मित्र हो, न पड़ोसी; यदि हम बीमार हो गये तो कोई समाचार लेने वाला, हमारी देखभाल करने वाला या हमारी सेवा करने वाला कोई नहीं होगा। यदि भाग्यवश आपकी मृत्यु हो जाये तो शोक करने वाला कोई न होगा।

सुंदर दास जी कहते हैं, यदि तुम्हें साँप काट ले, बिच्छू काट ले, हाथी मार डाले तो इसे समस्या मत समझो। आग में जलने, पानी में डूबने, पहाड़ से गिरने में कोई हानि न समझो, ये सब अच्छे हैं - इनमें कोई हानि नहीं है; दुष्टों की संगति से हानि और खतरा रहता है, इसलिए दुष्टों की संगति न करो। उसकी संगति अच्छी नहीं है।

परन्तु आजकल तो दुष्टों की बहुतायत हो गई है; पग-पग पर दुष्ट नजर आते हैं। इसीलिए दुःखी और संसार से उदासीन मनुष्य के लिए वन में जाकर रहने में ही शांति है। इन पंक्तियों के लेखक की तरह, जो कई बार ऐसी कामना करने लगता है, इस दुनिया से जुड़ना अच्छा नहीं लगता - इसमें रहना, दुनिया से जुड़ना अच्छा नहीं है, लेकिन क्या करें, एक संसार से जुड़े बिना नहीं रहा जा सकता।

सारांश यह है कि यदि आप सच्चा सुख-शान्ति चाहते हैं; अत: पत्नी, पुत्र, धन-संपत्ति का मोह त्याग कर संन्यास ले लो; अर्थात यह सब छोड़ कर अंतरात्मा में निवास करो और एकमात्र ईश्वर में ही ध्यान लगाओ। संसार को त्यागने के अतिरिक्त सुख का कोई मार्ग नहीं है। कई बार हमने त्याग करने का इरादा किया

दुनिया, लेकिन हमारे अज्ञानी दिमाग ने हमें बार-बार ऐसा करने से रोका। हम मन की बातों को विचार के कांटे पर तोलते रहे। अब हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि दिमाग की सलाह सही नहीं है. हमारा गंदा दिमाग शैतान की तरह हमें गुमराह कर रहा है। हमने खुशी की तलाश में ५० - ६० साल यूँही बर्बाद कर दिए, लेकिन हमें उस खुशी का लेशमात्र भी नहीं मिला।

इस संसार में हमें सदैव दुःख के ताप से जलना पड़ता है।इन्द्रियों से ऊपर मन है और मन का भी नियंत्रणकर्ता - बुद्धि है। जैसे देश का राजा / प्रधानमंत्री बड़ी - बड़ी योजनाएं बनाता है , पर उन योजनाओं को क्रियान्वित - प्रमुख सचिव (बुद्धि विशेष्ज्ञ) ही करता है। ठीक वैसे ही हमारी बुद्धि हमें बता रही है कि

शैतान के बहकावे में न आएं। जो भी महत्वपूर्ण कार्य करना हो, उसे यथाशीघ्र निपटा लो।

राज -पाट सब कुछ छोड़कर जंगल में चले जाओ और मन को शुद्ध करके भगवान में ध्यान लगाओ। देर मत करो; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपना काम पूरा करते-करते रह जाओ और समय आ जाय। और आपके दिमाग में सदा यह कायम रखो। अपने मन के रास्ते पर मत चलो, बल्कि अपने मन को अपने रास्ते पर चलाओ। "सच्चा सुख त्याग में है" इस महान कथन को एक पल के लिए भी मत भूलना।

वैराग्य शतकम् - ०३६ .

जब की हमारा जीवन कमल के पत्ते पर पानी की बूंदों की तरह क्षणभंगुर है। हमने शुभ-अशुभ कर्मों का कुछ भी विचार किये बिना कौन से कार्य नहीं किये ? हमने तो दौलत के नशे में धुत्त नीच और दुष्ट प्रकृति के लोगों के सामने भी बेशर्म बनकर अपने गुणों का बखान करने का पाप भी कर लिया।

उस जीविका के लिए , जिनका जीवन कमल के पत्ते पर खड़ी पानी की बूंद की तरह क्षणभंगुर हैं; धन , संपत्ति , पैसे आदि पाने के लोभ में बिना किसी संदेह के अमीर लोगों के सामने मूर्खतापूर्ण और बेशर्मी से अपनी प्रशंसा करके हमने कौन सा पाप नहीं किया है? क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि , किसी को भी स्वयं का गान , स्वयं की प्रशंसा , स्वयं के मुख से किसी के सामने कभी भी नहीं करनी चाहिए , यह बड़ा पाप कर्म है।

वक्ता कहता है कि इस जीवन के लिए, जो अत्यंत क्षणभंगुर है, जिसमें कोई स्थिरता नहीं है, मैंने कोई उपाय या कोई उद्यम नहीं किया है। एक तरफ और दूसरी तरफ; मैंने भी इस छोटी सी जिंदगी के लिए अपनी प्रशंसा करने की गंभीर गलती की; और वह भी ऐसे लोगों के सामने, जो दौलत के नशे में चूर हो रहे थे और जो किसी की तरफ देखते भी नहीं थे। इतना बुरा कर्म करने के बाद भी मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई!

संसार में अपने गुणों का बखान करना बहुत बड़ा पाप माना जाता है। आत्मनिरीक्षण या आत्मप्रशंसा वास्तव में बहुत बुरी बात है। इसलिए कोई बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा नहीं करता; लेकिन आवश्यकता भी इस पाप की ओर ले जाती है। जब कोई काम आशा के अनुरूप नहीं होता तो प्रशंसा करने वाला कोई और नहीं मिलता; फिर मनुष्य क्षणिक जीवन की खातिर ये निंदनीय कर्म भी करता है।

जीवन क्षणभंगुर है

यह जीवन कमल के पत्ते पर पानी की बूंदों की तरह गतिशील है। यह जीवन बादल की छाया, बिजली की चमक और पानी के बुलबुले जैसा है।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।
देखत ही छिपजात है , ज्यों तारा परभात ॥

कबीरा गर्व न कीजिये , दो दिन का मेहमान।
सार सार सब बीज गये , पढ़ी रहेगी धान।।

मनुष्य जल के सोते के समान है। जैसे पानी का बुलबुला उठता है और क्षण भर में लुप्त हो जाता है; :इसी प्रकार मनुष्य जन्म लेता है और क्षण भर में ही मर जाता है। यह मनुष्य उसी प्रकार अदृश्य हो जाएगा जैसे कोई तारा देखते ही देखते गायब हो जाता है।

देखिये कबीरदास जी स्वयं से कहते है - ऐ मेरे मूर्ख मन ! तू व्यर्थ ही क्यों इस नाशवान शरीर पर गर्व किया करता है ? इस मृत्युलोक में तू कुछ ही दिनों का मेहमान बनकर आया है। धीरे धीरे सभी बीज धान में से निकल गए , सिर्फ खाली धान ही पढ़ी हुई है। केवल तेरा मृत देह ही इस धरती पर पढ़ा हुआ है , तू

मर गया है , सार रूपी तेरी जीवात्मा तो निकल गयी। किस लिए तू किस शरीर पर इतना गर्व किया करता था ?

यह जीवन कमल के पत्ते पर पानी की तरह चंचल , अस्थिर रहता है। ऐसी जीवंत जिंदगी जीने के लिए एक अज्ञानी व्यक्ति खुद को निम्न स्तर तक गिराने से नहीं हिचकिचाता नहीं। वह सदा सर्वदा मृत्यु रूपी अटल सत्य से भय खाता रहता है और फिर भी जीने की पूरी चेष्टा करते रहता है। संतों के महान उपदेश मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की कभी तनिक भी चेष्टा नहीं करता।

किसी भी प्राणी मात्र को मृत्यु के नाम से भय उत्पन्न हो जाता है. जबकि , वास्तव में मृत्यु से अधिक इस संसार में हमारी हित्तेशी और कोई नहीं। यह मृत्यु ही है , जो जीव को इस नाशवान संसार से उत्तीर्ण कर उच्च महा लोकों में प्रयाण करने का एक उच्च साधन है , वास्तव में मृत्यु जीव के लिए बहुत ही कल्याणकारी “माँ” स्वरूपा है।

जैसे की प्रायः यह देखा गया है , कुछ कर्मचारी , स्थानांतरण (transfer) के नाम से डरते है। यहां तक की अपनी पदोन्नति का भी त्याग कर देना चाहते हैं , पर दूर देश , किसी अन्य स्थान को जाकर कार्यरत नहीं होना चाहते। ऐसे लोगों को महामूर्ख नहीं तो और क्या कहा जाय ? जो इतने स्वार्थ परायण हो जाते हैं की अपना स्वयं का कल्याण भी नहीं चाहते।

आध्यात्मिक निम्नतम स्तर के मनुष्यों की सोंच बहुत ही घटिया होती है। - यह बहुत शर्म की बात है. यदि मनुष्य हजारों-लाखों वर्ष तक जीवित रह सकता। , अथवा यदि सभी काकभुशुण्डि जी होते तो मनुष्य न जाने क्या-क्या पाप नहीं करता? वे बड़े ही नीच हैं, जो जीवन के इस चंद दिनों की खातिर तरह-तरह के पापों की गठरी बाँधकर अपना लोक और परलोक त्याग देते हैं।

हे ज्ञानवान मनुष्यो ! मूर्खों सा आचरण मत करो। चलो इसे घटिया सोंच - विचार बर्बाद कर दें। मनुष्य अपनी आँखें खोलकर देखो और अपने कानों से सुनो! मिट्टी, पत्थर या लकड़ी आदि से बनी वस्तुओं की कुछ आयु होती है; लेकिन क्या आपकी निर्धारित आयु नहीं है ? इस बारे में आपका उत्तर कुछ भी नहीं है, क्योंकि आप कामिनी - कांचन के चंगुल में बुरी तरह से फंस चुके हो। पर यहाँ आपको ही आपका कल्याण कर लेना चाहिए।

कुछ अहंकारी , घमंडी , धन के लोभी मूर्ख गुरु , अपने शिष्यों का जीवन बर्बाद कर रहे हैं। शिष्यों को गुमराह कर रहे हैं। यह कहते हुए की वे (गुरु) उनके शिष्यों परमगति दिलाने के ठेकेदार है। और शिष्यों को मूर्ख बनाते हुए कहते हैं - " जो जो शिष्य स्वर्गलोक जाने के इच्छुक हैं , मेरे ऑफिस में फॉर्म भरें और स्वर्ग लोक प्रवेश शुल्क जमा करा दें। और ये भी लिख दें कि उन्हें किस दर्जे का स्वर्ग चाहिए। मैं उन उन शिष्यों का स्वर्ग लोक में रिजर्वेशन करा दूंगा।"

हे बुद्धिजीवी ! ज़रा सोंचिये तो सही , यह हमारे लिए कितने शर्म और शोचनीय बात है। खुल्लेआम शिष्यों को मूर्ख बनाया जा रहा है। और मूर्ख गुरु कहते हैं कि भगवान से सीधा संपर्क स्थापित करने का उन्हें ही अधिकार है , शिष्यों को नहीं। सीधे भगवान , शिष्यों को परमगति नहीं दिया करते। यह एजेंसी बिज़नेस है। गुरु द्वारा ही मुक्ति और स्वर्ग दिया जाता है। ताकि (पाखंडी) गुरु भी तो जीएं।

जबकि भगवान ने स्पष्ट शब्दों में कहा है -

"सब मम प्रिय सब मम उपजाए"

"सर्व धर्माणी परित्यज्य माम् एकम शरणम ब्रज"

हे अर्जुन ! तू सब धर्मों के आश्रय का परित्याग कर दे और सीधे मेरे शरण में आ जा। मैं तुझे , तेरे सब पापों से मुक्त कर तुझे परम गति दूंगा। जो सब धर्मों का आश्रय छोड़कर मेरी सीधे मेरी शरणागत हो जाता है , उसके योग क्षेम ज़िम्मेदारी भी पूरी तरह से मैं ही वहन करता हूँ, और उसे मैं मुक्ति तो अनायास ही प्रदान कर देता हूँ। ।" पर यहां भगवान् ने यह नहीं कहा की , कोई भी किसी गुरु द्वारा ही मेरी शरण में आये , direct contact मुझसे ना करें , क्योंकि गुरुओं की भी तो दूकान चलनी चाहिए। ऐसा भगवान ने कहीं नहीं कहा।

और एक बात स्पष्ट है कि जो आदरणीय निष्काम , निर्लोभी गुरु महात्मा जन होते हैं , वे कभी शिष्य नहीं बनाते , फिर जो स्वयं उनके शिष्य बन जाते हैं , उनका परम कल्याण , वे आदरणीय सतगुरु देव , अनायास ही कर देते है। मानो वे स्वयं संसार में भगवान के ही स्वरूप में स्थित हुए हों। उनके शुभ कार्य ऐसे ही महान होते हैं जैसे -

कबीर दास जी ने एक रहस्यात्मक बात कही है -

" ब्रह्म का भांडा फोड़कर, खड़े निराला होय।

वे महान निर्लोभी सतगुरु ; चुपके से शिष्य को महाज्ञानी , महा भक्त बना देते हैं। सतगुरु अपने शिष्य को सोना नहीं बना देते , बल्कि सोना बनाने वाला , पारसमणि ही बना देते हैं। पर कभी अपने ज्ञान - भक्ति का बखान , विज्ञापन नहीं करते।और शिष्य से मधुर शब्दों में कहते हैं , बेटा ! मैंने कुछ नहीं किया। मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ , सब कुछ करने - धरने वाले तो वे एक , स्वर्वांतर यामी , परम पिता परमात्मा , ईश्वर , भगवान हैं। मैं तो उनका एक तुच्छ सेवक हूँ। जाओ , सदा भगवान में ध्यान लगाये रहना , तुम्हारा कल्याण हो बेटा !

सतगुरु कभी शिष्यों की जमात नहीं लगाया करते। वे सदा एकांत में रमन करते हैं। यह नहीं कहते कि तुम मेरी पूजा करो , मेरा birthday धूम धाम से मनाओ। केक काटो और बहुत सारे शिष्यों को एकत्रित करो।। और यदि शिष्य अपनी ख़ुशी से भी यह सब करना चाहते हैं , तो सतगुरु उन्हें टोक देते है , नहीं करने देते , वे कभी अपनी पूजा नहीं करवाते।

सच्चे गुरु अपने शिष्यों को सदा भगवान की पूजा करने के लिए आदेश देते हैं और अपने पैर शिष्यों से कभी नहीं पुजवाते। ।पाखंडी , धूर्त गुरु ही अपने पैर पुजवाते हैं , अपनी आरती उतरवाते हैं , निछावर की आशा रखते हैं। और ना जाने क्या क्या अनर्थ करवाते हैं , अपने मासूम शिष्यों से। वे पैसों के गुलाम होते है।

झूठे गुरु खुद के जीवन का नाश कर ही लेते हैं , पर साथ ही साथ अपने शिष्यों का भी जीवन बर्बाद कर देते हैं। इसलिए लोगों को ऐसे पाखंडी , लोभी , स्वार्थी ; तथाकथित धूर्त गुरुओं से सावधान रहना चाहिए। आजकल ये प्रायः सभी जगह बहुसंख्या में, जहाँ - तहाँ भरपूर संख्या में पाए जाते हैं।आजकल गुरु गिरि एक profession , एक पेशा बन गया है। पैसे कमाने का एक सुलभ और आसान मार्ग बन गया है।

मेहनत - मज़दूरी करके पैसा कौन कमाएं ? गुरु बनकर , लच्छेदार प्रवचन दे कर , लोगों को मुर्ख बनाकर , आसानी से पैसा कमा लें और समाज में साथ ही साथ इज़्ज़त भी पा लें। और तो और कुछ ऐसे भी गुरु बन गए हैं , जो अपना पैसा लगाकर , TV मीडिया में , गुरु गिरी का धूम धाम विज्ञापन भी कर लेते है , ताकि धनवान शिष्यों को आकृष्ट कर लें , शिष्यों को जमा करलें।हमें ऐसे धूर्त , लम्पट गुरुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है।

पित्तल सब जगह आसानी से उपलब्ध होता है , परन्तु - "सोना" बड़े प्रयन्त से खोजा जाता है। इसलिए सद्गुरु की खोज करनी चाहिए। वैसे तो परम पिता परमात्मा , भगवान , ईश्वर से बढ़ कर और कौन इस जगत में सद्गुरु हो सकता है ? बेहतर तो यही होगा की हमें भगवान् को ही सद्गुरु मान कर , उन्हीं की शरण में आश्रय लेनी चाहिए। तब हमारा कल्याण तो अवश्य ही हो जाएगा।

निस्सन्देह ! वे परम पिता परमेश्वर - सद्गुरु तो सदा से ही हमें बड़े प्रेम से आश्रय में लिए हुए हैं। हमें सिर्फ उनके आश्रय को स्वीकार मात्र करने की ही आवश्यकता है।हमें उस स्वीकार प्रमाण पत्र पर , हमारे व्यक्तिगत प्रभुत्व राज्य सरकार की मुद्रा देने मात्र का विलम्ब है। फिर तो सब काम आसानी से बन जाएंगे , बिना किसी व्यवधान के।

सच्चे शिष्य को , जो अपना कल्याण चाहता है , सदा ऐसे , पाखंडी , धूर्त और कामी तथाकथित गुरुओं से दूर ही रहना चाहिए। उनकी छांव के समीप भी नहीं जाना चाहिए। कुछ गुरु कहते हैं - गुरु ब्रह्मा , गुरु विष्णु , गुरु देवो महेश्वरा। .. आदि महा मंत्रों का दृष्टांत देते है , उन मूर्ख गुरुओं को यह पता नहीं कि वास्तव में गुरु क्या होता है ?

गुरु वह होता जो शिष्य का अज्ञान दूर कर , इस संसार के भव बंधन से सदा के लिए मुक्त हो जाने का ज्ञान प्रदान करें। उस लोभी गुरु का ही अज्ञान नष्ट नहीं हुआ , फिर वह शिष्य का अज्ञान क्या दूर कर सकेगा ? वह लालची , लोभी स्वयं संसार के भव बंधन में बंधा हुआ है , वह औरों क्या मुक्त कर सकता है ?

वास्तव में गुरु वह होता है जो शिष्य के अज्ञान का आवरण हटा कर ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित कर दें। पर वह खुद ही अज्ञान की खान है , वह शिष्यों का अज्ञान क्या मिटा सकता , उसे तो केवल शिष्यों द्वारा अपने पैसों की झोली भर लेने से मतलब है। इसलिए ऐसे गुरु , अपने नादान शिष्यों को रिझाते रहते हैं. शिष्यों की चापलूसी किया करते हैं , उन्हें व्यंग द्वारा हसाया करते हैं।

उन् अज्ञानी गुरुओं से तनिक पूछिए तो सही , क्या , गुरु के भोजन करने से , शिष्य का पेट भर जायेगा ? या शिष्य के भोजन करलेने से गुरु का पेट भर

जाएगा। फिर वह किस बलबूते पर शिष्य की नैया, इस भव भय संसार सागर से पार लगा देने का दावा करता है ? अस्तु !

इसलिए इस अल्पकाल के जीवन में पाप कर्म नहीं करना है। सात्विक जीवन यापन करना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०३७ .

अरे भैया ! अफ़सोस की बात है ! पहले यहाँ किस प्रकार का राजा राज्य करता था, उसकी सेना किस प्रकार की थी, उसके राजपुत्रों का समूह किस प्रकार का था, उसकी राज्यसभा किस प्रकार की थी, उसके पास कैसी चन्द्रवदना स्त्रियाँ थीं, कैसी अच्छी थीं उसके पास चारण और कहानीकार थे, वे सभी अब कहाँ हैं ? अथवा , काल के गाल में चल बसे , वे सभी मृत्यु को प्राप्त हो गए । । मैं समय के वश में हो गया हूं, मैं उस समय को ही प्रणाम करता हूं।

कोई व्यक्ति किसी महान राजा के नगरों को उजाड़ देखकर शोक मनाता है और कहता है कि यहाँ का राजा बड़ा शक्तिशाली था। उसके पास असंख्य सेना थी, उसके पास अच्छे योद्धा थे, उसके पास महान बहादुर पुत्र थे, उसके पास चंद्रमा को भी शर्मिंदा करने वाली स्त्रियाँ थीं, उसके राजदरबार ने उसके दरबार में इंद्र के दरबार को भी हरा दिया था। वहाँ बहुत से बुद्धिमान मंत्री, भाट, भाट और विदूषक थे। एक दिन ये सब थे।

परन्तु आज वह न राजा है, न राजनगर है, न राज्यसभा है, न चतुर्दशी सेना है, न राज शासक है, न वे चंद्रवदनी मनमोहक और मनोहर स्त्रियाँ ही हैं! वे सब कहां चले गए ? मौत ने उन सबको खा लिया ! आज दुनिया में उनका नामोनिशान तक नहीं ! ओह ! समय जो इतना बलशाली है कि उसने सबको सपने में बदल दिया, मैं उस समय को सलाम करता हूँ।

जिन घरों में पहले तरह-तरह के वाद्य यंत्र बजाए जाते थे और गीत गाए जाते थे, वे आज खाली पड़े हैं। अब उन पर कौवे बैठते हैं। - जो महिला पहले पर्दे के पीछे रहती थी और डर के मारे बाहर नहीं निकलती थी, उसने आजकल खेत में डेरा डाल लिया है यानी सबके सामने दलदल में पड़ी हुई है। निश्चय ही संसार अनित्य एवं नाशवान है। इस दुनिया में कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहेगा। एक दिन सभी अपनी बारी में नष्ट हो जायेंगे।

संसार में सभी वस्तुएँ अनित्य हैं, सभी नाशवान हैं।मनुष्य का जीवन एक दीपक की तरह है, जो हवा के सामने रखा जाता है और "कभी बुझता, कभी बुझता - अब बुझा की तब बुझा " , इसकी कोई ठिकाना नहीं है , जीवन अनित्य और अविश्वसनीय है। है; फिर हम दूसरों के बारे में क्या बात कर सकते हैं? यही इस संसार की स्थिति है।

ये अनन्त जल से भरे हुए समुद्र तथा सुमेरु तथा हिमालय प्रभृति पर्वत भी एक ही दिन में समा जायेंगे। देवता, सिद्ध, गन्धर्व, पृथ्वी, जल और वायु, इन सबको भी काल खा जायेगा। परम तेजस्वी देवता यम, कुबेर, वरुण और इन्द्रादिक का भी एक दिन पतन होगा। यहां तक कि एक स्थिर खंभा भी अस्थिर हो जाएगा। अमृतमय चन्द्रमा और अत्यंत चमकीला सूर्य दोनों भी नष्ट हो जायेंगे।

भगवान ब्रह्मा जगत के अधिष्ठाता देवता हैं। और महा भैरव के रूप में इंद्र भी गायब होंगे; तो फिर संसार के सामान्य प्राणी की बात कौन कहे ? एक दिन इस संसार का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, तब हमें और किस पर विश्वास करना चाहिए ? यह संसार स्वयं एक माया है। इस पर केवल अज्ञानियों को ही विश्वास है। वह सुख में लिपटे दुःख को ही बड़ा सुख मानकर , उसी में , जन्मता है और उसी में मरता है।

दुखों को सुख स्वरूप मानना। वह उनके लिए तरसता है और उनके बंधन में फंस जाता है। बुद्धिमान मनुष्य इस संसार को मिथ्या, सारहीन और दुःखालय मानकर इसको त्याग देता हैं।

वैराग्य शतकम् - ०३८ .

जिनसे हम पैदा हुए, उन्हें इस दुनिया को छोड़े काफी समय हो गया है। जिनके साथ हम बड़े हुए वो भी इस दुनिया को छोड़कर जा चुके हैं। जो हमारे साथ मित्र - मित्रा पढ़े लिखे , साथ खेले कूदे , वे एक एक करके इस दुनिया से चलबसे। और अब हमारी बारी ना जाने कब आये ? अब हमारी हालत भी रेतीले नदी तट के पेड़ों जैसी हो गयी है। जो दिन-ब-दिन जड़ें छोड़ती जा रही है और ख़राब होती जा रही है, बद से बत्तर होती जा रही हैं।

जिन लोगों के साथ हमारा जन्म हुआ, वे इस संसार से चले गये और जिनके साथ हमारा जन्म हुआ या जो हमारी उम्र के थे, वे भी इस संसार से चले गये; जिनके साथ हम रहते थे, जिनके साथ खेलते थे, जिनके साथ व्यापार करते थे, वे सब भी नष्ट हो गये। अब समझ लीजिए हमारा भी नंबर आने ही वाला है। अब हम भी निकलने वाले हैं. हमारा शरीर दिन प्रतिदिन कमजोर होता जाता है।

हमारी हालत अब नदी किनारे रेत में लगे पेड़ों की तरह है, जिसके गिरने की संभावना हर पल बनी रहती है। हमारा तो ऐसा ही है. यह स्थिति है, फिर भी आश्चर्य है कि हमारी माया से आसक्ति नहीं छूटती ! अब भी हमारा मन नहीं समझता और न ही सांसारिक उलझनों से अलग होना चाहता है।एक-एक करके

सभी प्रियजन और मित्र चल बसे। हे प्राणी ! अब तो हर दिन आपका नंबर करीब आता जा है।

इस सन्दर्भ में कबीर दास जी कितना बेहतरीन कहा है -

माली आवत देखकर , कलियन करे पुकार।
फूली फूली चुनि लिये , कलही हमारी बार।।

पुष्प वाटिका के माली को आता देख कलियाँ बोलीं, "आज जिनफूलों का खिलना हो गया , समय होगया , उनको माली तोड़कर ले जा रहा है। आज मैं का कलि , सो कल पूर्ण फूल सी खिल जाऊंगी , तो कल मेरी भी बारी निश्चित ही आने वाली है , कल मेरी मृत्यु अवश्यम्भी है।

लीजिए', अब हमारी भी बारी है. हमारे दोस्त जा रहे हैं, अब हम भी जाने ही वाले हैं। यमराज के कागज में यानी खाते में कुछ सांसे बाकी हैं, इससे इसमें देरी हो रही है यानी सांसें ले लीजिए। हम इसे पूरा करने का इंतजार कर रहे हैं. सारे संसार का भी यही हाल है। ये नजारा तो हम रोज देखते हैं। लेकिन फिर भी हमें एहसास नहीं होता।

वैराग्य शतकम् - ०३९ .

जिस घर में पहले बहुत सारे लोग हुआ करते थे, वहां अब सिर्फ एक ही बचा है। जिस घर में एक था, वहां अनेक लोग हो गए ,बहुत हो गए। परन्तु अन्त में एक भी न रहा। इससे पता चलता है कि काल देवता अपनी पत्नी काली के साथ मिलकर संसार रूपी चतुर्भुजा खेल में दिन-रात रूपी पासों को घुमा कर इस संसार के प्राणियों के टुकड़े बनाकर खेल रहा है।

जिस घर में पहले बेटा, पोता, दादा ,दामाद, पोता-दामाद, बेटी, बहू, देवरानी, जेठानी जैसे कई लोग होते थे। बहू, बेटा बेटी, जेठानी - देवरानी आदि हुआ करते थे , अब वह हरा भरा घर वीरान हो गया है। मृत्यु ने सभी को समयांतर में निगल गयी है। आज इसमें केवल एक ही व्यक्ति नजर आता है।

जिस घर में पहले एक ही व्यक्ति रहता था, उसका परिवार आज इतना बढ़ गया कि सैकड़ों की संख्या में हो गया। लेकिन कल हम देखते हैं कि उसमें एक भी व्यक्ति जीवित नहीं नहीं है। घर पर ताला लगा हुआ है। अन्दर लम्बी-लम्बी घास उग आई है, दीवारें गिर रही हैं, छतें छू रही हैं और ईंटें दाँत दिखा रही हैं। अब उस घर में चमगादड़, उल्लू, साँप और बिच्छू रहते हैं।

जिन राजा - रजवाड़ों ने और अरबपति - खरबपति और करोड़पतियों ने ऊँचे-ऊँचे महल बनवाये थे और उनमें सोने का काम करवाया था, आज वह श्मशान के

समान हो गये हैं। और उनके बनाये महल खंडहर का रूप ले लिए हैं, अब गिरे की जब गिरे , ऐसी शोचनीय स्थिति है , उन पुराने घरों और महलों की।

खास मसाला -पान चबाने वाले, टेढ़े-मेढ़े चाल से चलने वाले, अहंकार के नशे में धुत और शरीर पर इत्र, गुलाब और सुगंध लगाकर महलों में सोने वाले महान हस्ती अब किस दुनिया में हैं , पता नहीं। उन्हें स्वप्न में भी नहीं देखा जाता था। उन लोगों को अब बचे हुए उनके नाती - पोते ही कभी याद नहीं फरमाते , औरों की तो बात ही क्या ? वे लोग न जाने कहाँ गायब हो गये !

वैराग्य शतकम् - ०४० .

हमें यह समझ नहीं आता कि इस छोटे से जीवन में हमें क्या करना चाहिए अर्थात गंगा तट पर रहकर तपस्या करनी चाहिए या अपनी शक्ति के अनुसार पतिव्रता स्त्रियों/ पत्नी की प्रेम पूर्वक सेवा करनी चाहिए या वेदांत ग्रंथों का अमृत पीना चाहिए या सत शास्त्रों के विद्यारुपी पवित्र रस का पान करना चाहिए ?

कहने वाला यही कहता है और ठीक भी कहता है- यह जीवन क्षणभंगुर है। इस दैनिक जीवन में हमें क्या करना चाहिए? काम तो बहुत हैं, पर समय कम। गंगा तट पर जाकर शिव-शिव का जाप करना भी अच्छा है; गुणवान सुंदरियों से मीठी-मीठी बातें करना, उनकी संगति में रहना और उनके साथ साथ प्रेममय जीवन बिताना चाहिए।

मौज-मस्ती करना भी अच्छा है. वेदांत ग्रंथों के सार को समझना और उसका अमृत या काव्य रस पीना भी अच्छा है। सभी अच्छे हैं और सभी करने में सक्षम हैं, लेकिन हमें समझ नहीं आता कि जीवन के एक एक अमूल्य पल में हमें क्या करना चाहिए। इसका मतलब यह है कि मानव जीवन बहुत छोटा है।

इसलिए जब तक शक्ति है तब तक मनुष्य को सब कुछ त्याग कर एकमात्र ईश्वर की आराधना करनी चाहिए।यही निर्णय उचित जान पड़ता है। यह मानव शरीर मिट्टी के घड़े के समान है। इसके भीतर आत्मा का वास है। कबीरदास जी कहते हैं, मैंने अपनी आँखों से देखा, एक क्षण भी आशा नहीं रही। रहस्योद्घाटन

यह है कि जिस शरीर में आत्मा निवास करती है वह मिट्टी के घड़े के समान क्षणभंगुर है।

जैसे घड़े को फूटने में देर नहीं लगती; उसी प्रकार यह कच्चा घड़ा रूपी शरीर शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। कौन जानता है कि किस क्षण यह शरीर का घड़ा फूट जाएगा और आत्मा उसमें से बाहर आ जाएगी ? इसकी आशा इतनी नहीं कर सकते है, जितनी देर पलकें हिलने में लगती है।

कबीरदास जी कहते हैं, जो दिन आज है वह कल नहीं रहेगा, हे प्राणी! यदि आप सतर्क हो सकते हैं तो सावधान रहें ! मौत सिर पर सवार है. वे बुद्धिमान लोग जो वर्षों का प्रबंधन करते हैं और कई वर्षों तक जीने की आशा रखते हैं, उन्हें इस श्लोक से सीखना चाहिए।

कबीर दास जी सौ वर्षों तो क्या, दो-चार दिन भी जीने की आशा नहीं रखते। वे कहते हैं, आज हो, कल हो या न हो। आज: आप हंस रहे हैं, आज आपका शरीर स्वस्थ है; इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अगले पल आप बीमार हो जाएँ और मृत्यु शय्या पर पड़े रहें। या बस मर जाओ. इसलिए सतर्क रहें, होश बनाए रखें और अपनी आगे की यात्रा की व्यवस्था करें।

यदि आप संसार के जाल में उलझे हुए हैं, जीवन की लम्बी आशाएँ पाले हुए हैं, तो जल्दी करें, आज ही दुराचारी आशा का परित्याग कर दें। यदि आप अभी, इसी क्षण से अगली यात्रा की व्यवस्था नहीं करेंगे: वहाँ मिलने के लिए - यहीं दिव्य बैंक के माध्यम से - पैसा, पैसा, धन, कार. -तुम घोड़ों, महलों, घरों और बगीचों की देखभाल नहीं करोगे।

तुम इस दुनिया में अन्य लोगों के दुखों को दूर नहीं करोगे और तुम भगवान का नाम नहीं जपोगे; तो उस लंबे सफर में आपको काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा. यदि तुम यहां बोओगे, तो तुम वहां काटोगे। यदि तुम यहां अच्छा करोगे, तो तुम्हें वहां अच्छा मिलेगा। यदि तुम यहां गरीबों और जरूरतमंदों को दोगे, तो तुम्हें वहां मिलेगा।

कबीरदास जी कहते हैं, यह जीवन स्वप्न के समान है। रात्रि को सोते समय मैंने देखा कि वह प्राणी विभिन्न प्रकार के सुख-सुविधाओं का उपभोग करते हुए लूटपाट करने में लगा हुआ है; लेकिन जैसे ही मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि वहां कुछ भी नहीं है।

जिस प्रकार स्वप्न देखने वाला मनुष्य हृदय को आनंद देने वाले उद्यानों में घूमता है, अपनी प्रेमिका के गले में हाथ डालकर घूमता है और उसके साथ समागम करता है; या वह राजा बन जाता है और शासन करता है, चंद्रवदनी सुंदरी अप्सरा वह नृत्य और गीत देखता है और अपने दिल में बहुत ख़ुशी महसूस करता है; लेकिन आँख खुलते ही न बाग़ है , ना सुंदरी अप्सरा है , ना राजा है , ना प्रजा है।

या राज्य दिखाई दे रहे हैं. वैसे, यह बिल्कुल वही स्थिति है जिसमें आप जाग रहे हैं, यह जाग्रत स्वप्न अवस्था है। । सारा त्रिलोकी संसार ही भ्रमात्मक है। जिस प्रकार रात के सपने झूठे माने जाते हैं, वैसे ही ये हमारे मृत्युलोक का जीवन भी स्थूल स्वप्न स्वरूप ही है। ।

हां, इसी तरह उस दिन के नजारे भी झूठे ही समझो. वह स्वप्न सुप्त अवस्था में देखा जाता है और यह संसार जागते हुए देखा जाता है। देखते हैं, आज एक आदमी राजा है, हजारों सुख भोग रहा है; लेकिन कल वह सड़क का भिखारी बन जाता है। ऐसी सच्चाई कई लोगों के साथ घट चुकी है। आज किसी के घर में सुन्दर स्त्री है, प्रेम करने वाली पत्नी है, आज्ञाकारी बेटे-बेटियाँ हैं, सुशील बहु-बेटियाँ हैं, सैकड़ों नौकर-चाकर हैं, दरवाजे पर बंधा हाथी है, दरवाजे पर हर वक्त खड़ी मोटर गाड़ी है।

ऐसी ज़िंदगियाँ; कुछ दिन बाद हम देखते हैं कि वही आदमी दुपट्टा पहनकर सड़क पर भीख मांग रहा है। पूछते हैं तुम ऐसे क्यों बने ? आपके रिश्तेदारों और पैसों का क्या हुआ ? वह भाई उत्तर देता है- भाई ! प्लेग में पूरा परिवार मर गया। कोई पानी देने वाला या नाम लेने वाला तक नहीं रहा।

विशाल धन का कुछ भाग चोर ले गये और शेष लुटेरे ले गये। जब भोजन नहीं मिलता तो जीवित रहने के लिए भीख मांगने की प्रथा का अनुसरण करना ही पड़ता है। बताओ, ऐसे जीवन को और सुख - दुखों को स्वप्न का भ्रम न कहें तो क्या कहें ?

कल ही तो हमारी एक आंख की पुतली जैसी प्यारी बेटी हमें छोड़कर चली गई। वह इतनी खूबसूरत थी कि हम उसे देखकर कहते थे, " विधाता ने हमें बड़ी खूबसूरती से सजाई गयी बेटी दी है। ।"इसे फुर्सत में बनाया गया है। उन्हें देखकर हमारी शोक संतप्त आत्माओं को शांति मिली। जब हम गहरे दुःख में

होते थे तब भी हम उन्हें देखकर फूट-फूटकर रोने लगते थे। हमारे दिनभर के दुख-दर्द दूर हो जाते थे।

उनके दर्शन से हमारे हृदय को शांति मिलती थी, इसलिये हम उन्हें 'दिलाराम' कहते थे। उसका नाम 'दिलाराम' नहीं था - सूर्यकांता था। जब हम घर पर बैठकर सबूत - ज्योतिष देखते थे तो वो मासूम चेहरा बड़ी मुश्किल से हमारे सामने आता था। कभी हमारी दवात की स्याही पलट देती, कभी कलम उठा लेती, कभी कागज मुँह में ले लेती।

जब भी हम खुशी में डूबे होते थे तो कलम गिरा देते थे और उठा लेते थे। _ -उसे चूमा, प्यार किया और उसके दिल को तसल्ली दी। आज तीन दिन से वह नहीं है। कहीं नजर नहीं आता. ऐसा लगता है कि शायद हमने उसे सपने में देखा था। “वह सूर्यकांता सपने में ही हमारे पास आई थी। नींद में ही उसने अपने बचपन के खेल से हमें खुश कर दिया था और नींद में ही हमने उसे प्यार किया था, दुलार किया था।

पाठक स्वयं सोचें. क्या ये सब धोखा नहीं था? अब क्या हमें अपने प्रियजनों को, जो हमारे साथ हैं, हमारे सामने घूम रहे हैं, व्यापार कर रहे हैं, स्वप्न की माया के समान नहीं समझना चाहिए? क्या उन डेढ़ साल के बच्चों की तरह हम भी सबको छोड़कर यम सदन/परलोक नहीं जायेंगे? उन सभी लोगों को जो हमारा अनुसरण करते हैं, क्या हम ऐसे प्रतीत नहीं होंगे मानो हम एक साथ मिल गए हों ?

हालाँकि हमने अभी तक अपना घर-परिवार नहीं छोड़ा है. अभी हम 'सांसारिक उलझनों में उलझे हुए हैं'; फिर भी हम अपने सबसे प्रिय की मृत्यु के बाद भी अपनी आँखों से आँसू नहीं बहाते? हमारी हालत देखकर कई लोग हैरान हो जाते हैं. कोई कुछ और कोई कुछ कहता है। लेकिन हमारे न रोने का कारण यह है।

हमने इस दुनिया में ऐसे कई दुख देखे हैं। हम अपने अनेक प्रियजनों के वियोग की राख में जल गये हैं। इसलिये अब हमें यह समझ में आ गया है कि सब कुछ स्वप्न है। एक न एक दिन हम सब भी इसे छोड़ देंगे या जो हमारी आंखों के सामने मौजूद हैं वे सब हमारी आंखों के सामने से गायब हो जाएंगे, जैसे सपनों में देखे गए लोग।

कबीरदास जी कहते हैं, अरे भाई ! चेत करो ! आज या कल या पाँच दिन बाद तुम्हारा निवास वन/श्मशान में होगा। तुम्हारे ऊपर हल चलेंगे या तुम्हारे ऊपर

उगी घास को गाय, भैंस आदि जानवर खा जायेंगे। रहस्योद्घाटन यह है कि आप आज मर सकते हैं; मेरा मतलब है कि आज ही मृत्यु क्या नहीं आ सकती है ? ,

जानिए ये सच्चाई. यदि आप आज जीवित बचे हैं, तो कल अवश्य मरेंगे। यदि आपकी सांसें पूरी नहीं हुई हैं - तो चित्रगुप्त के खाते में आपकी कुछ सांसें शेष रह जाएंगी, तो उनके पूरा होने के पांच या दस दिन बाद निश्चित ही आपकी मृत्यु हो जाएगी। तुम इस शरीर में सदैव नहीं रहोगे।

जैसे ही आप अपना शरीर छोड़ेंगे, लोग आपके शरीर से नफरत करने लगेंगे। विशेषकर आपकी प्रिय पत्नी हृदयेश्वरी तो आपका मुख देखकर भयभीत हो जायेगी। अगर आपके शरीर पर चांदी की अंगूठी भी है तो लोग उसे भी उतार लेंगे । लोग तुम्हें ले जायेंगे और जला देंगे या दफना देंगे।

किसान उस स्थान को जोतेंगे जहां तुम्हें जलाया जाएगा या दफनाया जाएगा - जहां तुम्हारे शरीर की राख पड़ी होगी। यदि घास तुम्हारी धरती पर उगता है, मवेशी उसे चर जायेंगे। तो होशियार बनो! भूल नींद का त्याग करें और अपनी अपरिहार्य यात्रा की व्यवस्था करें ताकि रास्ते में आपको किसी समस्या या परेशानी का सामना न करना पड़े।

इस दुनिया में काम बहुत है और उम्र का आलम ये है कि पलक झपकने का भी भरोसा नहीं. इस क्षणिक जीवन में ऐसा कौन सा कार्य करना चाहिए जिससे आगे की यात्रा में सुख प्राप्त हो सके? - यह ऊपर उठाया गया प्रश्न है।

इस प्रश्न का समाधान ईश्वर तक पहुंच चुके और ईश्वर के सच्चे और प्रथम श्रेणी के भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने बहुत सुंदर ढंग से किया है। उन्होंने मनुष्य के लिए केवल दो कार्य चुने हैं - "भगवान को सब कर्म , निष्काम भाव से अर्पित कर देना और लोगों से भगवत नाम जप महिमा का बखान करना। नाम जप देना ["* जो लोग इन दो चीजों का पालन करते हैं, वे निश्चित रूप से खुश होंगे।

उन्हें नरक की भयानक यातनाएँ नहीं सहनी पड़ेगी। वे स्वर्ग में जायें या और कोई उत्तरोक्त लोक में जायें। वे लोग नाना प्रकार के सुख भोगेंगे तथा अमृतपान करेंगे, कल्पतरु उनकी अभिलाषा पूर्ण करेंगे। यदि वे दूसरों का भला

करते हैं और संकटग्रस्त लोगों की पीड़ा दूर करते हैं, तो वे बदले में मुआवजा प्राप्त करना नहीं चाहते हैं।

यदि वे निस्वार्थ कर्म करते हैं और कृष्ण के अलावा किसी भी भौतिक वस्तु की इच्छा किए बिना, उनके प्रेम में तल्लीन हो जाते हैं, तो उन्हें कुछ ऐसा मिलेगा जो हजारों और लाखों स्वर्गों से भी बड़ा होगा; फिर उन्हें कभी दुःख का नाम नहीं सुनना पड़ेगा।

यही बात महात्मा तुलसीदास जी ने अपने दोहों में कही है। इन्हें सिर्फ पढ़ें ही नहीं, इनके बारे में सोचें भी। विचार करने से उनकी बातें एक औषधि के समान प्रतीत होंगी जो आपके दुखों और परेशानियों को दूर कर देगी। यदि तुम उनकी बताई दवा पी लोगे तो अमर हो जाओगे।

तुलसीदास जी कहते हैं: संसार में आओ और दो काम करो: 1) भूखे को भोजन दो और भगवान का नाम जपो। तुलसीदास जी कहते हैं:--काम, ज्ञान, पूजा और उपचार त्याग कर भगवान का भजन करो; क्योंकि कामुक लोग भी भक्ति से मुक्ति पा सकते हैं; परन्तु कर्म, ज्ञान और पूजा आदि से नहीं। कर्म आदि के ज्ञान में वासना का मूल नहीं है और जब तक वासना रहेगी तब तक मुक्ति नहीं हो सकती।

बस वासना. यह जन्म और मृत्यु का मूल है; वासना के कारण जन्म लेना पड़ता है; जैसे ही वासना मिट जाती है, मुक्ति हो जाती है; परन्तु कामुक लोगों की वासना नहीं मिटती। कर्म-ज्ञान और उपासना आदि उपाय करने पर भी वासना बनी रहती है।

इसका अर्थ यह है कि "भक्ति" मुक्ति पाने का एक सरल और सीधा रास्ता है। नारद, वाल्मिकी और शबरी भक्ति के प्रभाव से ही ऊंचे उठे हैं - कर्म, ज्ञान और पूजा से नहीं।

वैराग्य शतकम् - ०४१ .

अहा ! वे सुखद दिन कब आयेंगे, जब हम गंगा के तट पर, हिमालय की चट्टानों पर, पद्मासन में, नियमानुसार आँखें बंद करके, ब्रह्म का ध्यान करते हुए बितायें। योग-निद्रा में लीन हो जायें और वृद्ध हिरण निर्भय होकर हमारे शरीर से उसके शरीर को रगड़कर, शरीर की खुजली मिटाने लगें !

सांसारिक माया में कोई सुख नहीं है। संसार में जो लोग सुखी दिखाई देते हैं वे भी वास्तव में दुखी हैं। उनकी ख़ुशी सतही ख़ुशी है, सच्ची ख़ुशी नहीं। हम उन्हें बग्घियों और कारों में घूमते, सुंदर महलों में आनंद लेते, उनके यहां प्रचुर धन-संपदा देखकर प्रसन्न होते हैं। लेकिन हकीकत में वे खुश नहीं हैं. असली बात तो यह है कि संसार में कोई सुख है ही नहीं।

संसार के त्याग में ही सुख है अथवा "अलगाव" में सुख है। । इसीलिए वक्ता कहते हैं, वे दिन कब आएंगे जब हम गंगा के तट पर, हिमालय की चट्टान पर, पद्मासन में बैठेंगे और ब्रह्म के ध्यान में लीन रहेंगे ? जब हम उस ध्यान में होश खो बैठेंगे, उस समय बूढ़ा हिरण हमें जीवित मनुष्य न समझकर कोई निर्जीव वस्तु समझेगा और बिना डरे अपने शरीर को हमारे शरीर से रगड़ कर अपनी खुजली मिटा लेगा। शरीर। केवल वे ही मनुष्य वास्तव में सुखी हैं जिनके पास यह सुख है - उनका जीवन सार्थक है!

मज़ा तो अपने प्रेमी के प्यार में डूब जाने में है. जब कोई पूरी तरह से शरीर पर ध्यान केंद्रित करता है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई पक्षी या जानवर शरीर पर बैठता है, खुजली करता है या कुछ भी करता है। ऐसे साधकों को ही सफलता मिलती है।

कबीर साहब कहते हैं, - साधारण प्रेम को प्रेम कहते हैं; लेकिन प्यार के बारे में कोई नहीं जानता। जो आठ पहर तक रहे वही प्रेम है। जब आपको सच्चे प्यार की चाहत महसूस हो तो इसे तभी समझें जब प्यार की डोर न छूटे। प्यार का सच्चा जुनून जिंदगी भर नहीं मिटता। आप अपने प्रेम में स्थिर रहें और जब आपकी मृत्यु हो तो आप अपने प्रियतम में विलीन हो जाएंगे।

मन का स्वभाव है कि वह अगली और पिछली बातों को याद रखता है। इंद्रियों का स्वभाव है कि वे अपने-अपने विषयों की ओर झुकी रहती हैं। कान ध्वनि सुनना चाहता है। आंखें नई चीजें देखना चाहती हैं, लेकिन भगवान की इस तरह पूजा करने से इंद्रियों को उनके कार्यों से मुक्त कर अपने वश में करना चाहिए। मन को एक ओर रखे बिना तथा उसे अपनी गतिविधियों से रोके बिना ध्यान नहीं किया जा सकता।

ध्यान करने वाला व्यक्ति अपने शरीर को न तो हिलाता है और न ही किसी ओर घुमाता है। देखना। यदि कहीं कोई डरावना शब्द सुनाई दे या कोई जीव काट ले तो भी ध्यान करने वाले का ध्यान नहीं भटकना चाहिए। आजकल अधिकतर कर्मकांडी अपने हाथों को सूती थैले में रखकर चलते हैं और मन में कई तरह की मनगढ़ंत बातें बनाते रहते हैं। कोई कुछ कहता है तो हम भी सुनते हैं. ईश्वर की ऐसी आराधना कैसे लाभकारी हो सकती है?

एक गोपी का कृष्ण के प्रति आदर्श प्रेम

एक बार एक गोपी यशोदा के घर दीपक जलाने आई। कृष्ण वहाँ खेल रहे थे। वह कृष्ण के प्रेम में इतनी पागल हो गई कि उसने रोशनी के बजाय दीपक पर अपनी उंगली रख दी। इतना कि उसकी पूरी उंगली जल गई, लेकिन उसे इसका एहसास तब तक नहीं हुआ जब तक किसी और ने उसे सचेत नहीं किया और वह होश में नहीं आई।

सच है, प्यार का दिखावा करने से कोई फायदा नहीं; अगर प्यार है तो ऐसा हो कि आठों प्रहर बौर चौबीस घंटे उसका ध्यान अपने प्रेमी पर ही रहे और वह उसमें इतना खो जाए कि उसे अपने शरीर का भी होश न रहे। वैसे तो जगदीश सच्चे प्यार से ही मिलता है।

वैराग्य शतकम् - ०४२ .

वह समय कब आएगा जब हम चाँद की रोशनी से जगमगाती पवित्र गंगा के किनारे एक स्थान पर सुख से बैठे होंगे और रात के समय जब सभी प्रकार के शोर बंद हो जायेंगे, हम आँसुओं से भरी आँखों से सर्वशक्तिमान शिव का नाम जपेंगे सांसारिक मामलों और दुखों को त्याग कर, आनंद की अनुभूति करेंगे !

धन्य हैं वे लोग जिन्हें मिथ्या सांसारिक सुखों से घृणा हो गई है, जो इस संसार के बंधनों से थक गए हैं, जिन्होंने मोह के जाल को तोड़ दिया है और गंगा के पवित्र तट पर और मौन चांदनी में निवास कर लिया है। रात को निराशा की स्थिति में शिव-शिव का जाप करें! और जो लोग सांसारिक प्रपंच में फंसे हुए हैं वे अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत करते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०४३ .

महादेव ही हमारे एकमात्र देवता हैं, जाह्नवी ही हमारी नदी है, गुफा ही हमारा घर है, दिशा ही हमारे वस्त्र हैं, समय ही हमारा मित्र है, किसी के सामने विनम्र न होना ही हमारा मित्र है, और क्या कहें, वट वृक्ष ही हमारा सबसे अच्छा दोस्त/जीवन साथी है।

वह जो अपने भगवान के सामने दिन-रात उसी के ध्यान में लीन रहता है। जो गंगा के तट पर रहता है, गंगा में स्नान करता है, गंगा जल ही पीता है; जिसे कपड़ों की भी जरूरत नहीं, वह दिशाओं को अपना कपड़ा समझता है; वक़्त ही दोस्त माना जाता है; किसी के सामने दीन नहीं होता, किसी से कुछ नहीं माँगता; वह मनुष्य धन्य है जो वट वृक्ष के आश्रय में रहकर भगवान की पूजा करता है और वट वृक्ष को अपने जीवन और आनंद का साथी मानता है।

संसार में उसका आना ही सफल है। ऐसी बुद्धि ईश्वर की दया या पूर्व जन्म के पुण्यों से ही प्राप्त होती है। ऐसे ज्ञान के प्रभाव से वह दुःखों से मुक्त होकर शाश्वत आनंद में लीन रहता है।

वैराग्य शतकम् - ०४४ .

देखिए, स्वर्ग से गंगा भगवान शिव के सिर पर गिरीं; उनके सिर से लेकर हिमालय पर्वत तक; हिमालय पर्वत से पृथ्वी तक; और पृथ्वी पर से समुद्र में गिर पड़ी । इससे पता चलता है कि विवेकहीन और संसार में डूबे हुए कामी लोग हर स्तर पर सैकड़ों प्रकार से गिरते हैं।

जो लोग सोच-समझकर काम नहीं करते, जो समझदारी से काम नहीं लेते, उन्हें तरह-तरह से हेय दृष्टि से देखना पड़ता है। कवि ने यहाँ गंगा का उदाहरण दिया है और उसकी प्रचुरता बताई है।

उपदेश - जो लोग विवेक से रहित हैं, जो अहंकारी हैं, वे बार-बार गिरते हैं। इसलिए व्यक्ति को भूलकर भी घमंड नहीं करना चाहिए और सोच-समझकर काम करना चाहिए। गंगा को बहुत अभिमान हो गया था , तब उनका अभिमान नष्ट करने के लिए ब्रहमा ने उन्हें अपनी मुट्ठी में भर लिया। गंगा का सिर झुक गया. फिर भी ; जब उसने अपना अभिमान नहीं छोड़ा तो भगवान शिव ने उसे अपनी जटाओं में पकड़ लिया।

यहां यह दृष्टांत देकर यह बताया गया है , कि कुछ युवती , नारी और महिलाओं को , ना जाने अपने किस गुण का अभिमान सर चढ़ जाता है, जिस कारण से वे इतनी अहंकारी बन जाती हैं। । उसे गंगा की तरह दर दर की ठोकरें खाना पड़ता है। गंगा पवित्र है तो भगवान की असीम कृपा से पवित्र और पूज्यनीय है। गंगा स्वयं के किसी महत्त्व से गुणवती नहीं है। इसमें भगवान की अनुकम्पा का ही महत्व है। वर्ना , गंगा एक सामान्य जल के अतिरिक्त कुछ महत्व की नहीं।

जैसे अग्नि में जलने की शक्ति और प्रकाश करने की शक्ति का मूल स्त्रोत - स्वयं भगवान की ही क्रिया शक्ति है , न हीं अग्नि की स्वयं की कोई शक्ति। ठीक इसी प्रकार , गंगा के पवित्र जल होने का मूल कारण , भगवत अनुकम्पा है , न ही गंगा का कोई सामर्थ्य , स्वयं की कोई शक्ति।
(देखिये : सन्दर्भ : केनोपनिषद -चतुर्थ खंड - पहला मंत्र).

महाराजा भागीरथी ने कठोर तपस्या की और भगवान शिव ने उन्हें मुक्त कर दिया। शिव के सिर से यह हिमालय पर गिरी और वहां से समुद्र में प्रवाहित हो गयी । अहंकार करने वालों का शत्रु बन जाता है जगदीश। जगदीश उन्हीं को प्राप्त होता है जो अहंकार से दूर भागते हैं और अपना विवेक नहीं खोते। जो अहंकार के कारण अपना सिर ऊंचा रखता है उसका पतन अवश्य होता है।

वैराग्य शतकम् - ०४५ .

आशा एक नदी है, इसमें चाहत रूपी पानी है; तृष्णाएँ उस नदी की लहरें हैं, प्रेम उसके मगरमच्छ हैं, तर्क उसके पक्षी हैं, मोह उसके भँवर हैं; चिंताएँ ही उसका एकमात्र किनारा हैं; आशा की वह नदी सब्र के पेड़ को गिराने वाली है; इस कारण इसे पार करना बहुत कठिन है। पर शुद्ध चित्त योगीश्वर इससे अनायास ही परे चला जाता है; वे खूब आनंद से रहते हैं और एन्जॉय करते हैं।

नदी का नाम क्या है ? आशा-नदी में पानी क्यों है? चाहत.इसमें भयानक मगरमच्छ कैसे हैं? प्यारे मगरमच्छ हैं. इसमें किस तरह के पक्षी हैं? तरह-तरह के तर्क-वितर्क उसके पंछी हैं। नदी के किनारे कौन से पेड़ गिरते हैं? 'धैर्य के रूप

में वृक्षों की कटाई होती है। इसमें भंवर कैसे हैं? वे चलते-फिरते भँवर हैं। किनारे क्यों हैं? चिंता के कगार पर हैं. क्रॉसिंग चिन्ह क्या हैं? केवल वही इसे पार कर सकते हैं जिनका मन शुद्ध है, जिनके मन से ये सभी बुराइयाँ दूर हो गई हैं। और जिसका मन केवल ब्रह्म में लीन हो गया है।

सारांश: यदि आप सुख चाहते हैं तो आशा, इच्छा, प्रेम, मोह और चिंता की समस्याओं को पूरी तरह से त्याग दें और शुद्ध मन बन जाएं और अपनी आत्मा या ब्रह्म पर ध्यान केंद्रित करें।तल्लीन हो जाओ।

वैराग्य शतकम् - ०४६ .

अरे भाई! मैंने सारे जगत में और तीनों लोकों में खोजा; परंतु मैंने ऐसा कोई व्यक्ति न तो देखा है और न ही सुना है जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हाथी के पीछे दौड़ने वाले मदमस्त हाथी की तरह अपने मन को वश में कर सके।

भाई ! मैंने पूरी दुनिया में खोजा, लेकिन एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो दिमाग के हाथियों को दुनिया के हाथियों का पीछा करने से रोक सके। इसका तात्पर्य यह है कि विषयों में उलझे हुए मन को नियंत्रित करना या विषयों से हटाना असंभव के समान है ।

मन बहुत शक्तिशाली है. इसके पंख नहीं हैं, लेकिन यह पक्षी की तरह उड़ सकता है; कभी वह आकाश में चला जाता है तो कभी पाताल में। मन शरीर को जहां ले जाता है, शरीर वहीं चला जाता है। यह मन ही है जो मनुष्य को ईश्वर से अलग करता है। , यह मन ही है जो उसे एक साथ लाता है। मन की चंचलता अच्छी नहीं है. इसकी चंचलता ही साधना में बाधक है।

यदि मैं उन मनों को तोड़ सकता हूं जो विनाश में लगे हुए हैं, तो मैं केवल इस चाल को ही तोड़ सकता हूं जो धोखे और बुराई का कारण बन रही है। संसार के पाश में बंधे मन को तोड़ना कठिन है। असंभव नहीं।

मन का पक्षी मन की इच्छाओं में तब तक उड़ता रहता है जब तक वह ज्ञान के बाज़ के चंगुल में नहीं फंस जाता। इसका अर्थ यह है कि मन तब तक विषयों में उलझा रहता है जब तक उसे ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जब आपके पास ज्ञान होता है तो मन विषयों के जाल से बाहर आ जाता है।मोतियों के कई रंग होते हैं, जो समय-समय पर बदलते रहते हैं। जो एक ही रंग में रंगा रहता है, वह विरला ही होता है।

मन की उतनी ही दौड़ें हैं जितनी समुद्र में लहरें हैं। अगर मन एक जगह रुक जाए तो हीरा आसानी से पैदा हो जाएगा। तात्पर्य यह है कि मन को एक स्थान पर रोक कर या स्थिर करके ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है और जगदीश के दर्शन किये जा सकते हैं। सिद्धि चंचल मन से दूर भागती है। जगदीश से मिलने के लिए स्थिर मन की आवश्यकता है।

मन की राय नहीं माननी चाहिए, क्योंकि मन की कई राय होती हैं। मन को वश में करके मन को वश में रखने वाले महात्मा बहुत ही दुर्लभ होते हैं। संक्षेप में, किसी को अपने मन की इच्छा का पालन नहीं करना चाहिए, उसकी परवाह किए बिना ही कार्य करना चाहिए।

सलाह : मनुष्य को मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और उसे अपनी इच्छा अनुसार चलना चाहिए। जो लोग मन के मार्ग पर नहीं चलते, मन के अधीन नहीं होते, मन को स्थिर रखते हैं, उसे चंचल नहीं होने देते, उसकी लगाम अपने हाथ में रखते हैं और उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलाते हैं - उनका अनुसरण न करें अपनी इच्छा से वे दुनिया जीत सकते हैं। . वे विभिन्न प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं और जगदीश से मिलकर अक्षय सूत्र की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

शायद इसके लायक हो. जो लोग सांसारिक मोह-माया से मुक्त होना चाहते हैं, जन्म-मृत्यु का कष्ट न भोगना चाहते हैं, शाश्वत एवं अविनाशी सुख का उपभोग

करना चाहते हैं, परम पद का लाभ उठाना चाहते हैं; क्या वे मन को नियंत्रित कर सकते हैं और उसे डरने से रोक सकते हैं! और इसे भगवान पर केंद्रित करें।

अपने हृदय को मार डालो, अपने अभिमान को मार डालो; ये आपके फायदे के लिए है. सबसे खतरनाक जानवरों को भी मारने में कोई बहादुरी नहीं है। लेकिन अहंकार से रहित होना बहुत कठिन है।) लहसुन या प्याज की गंध जिस कटोरे में रखी जाती है, उससे बड़ी कठिनाई से निकलती है; इसी प्रकार अभिमान भी बड़ी कठिनाई से दूर होता है।

इसके नाश का उपाय बुद्धि या ज्ञान है। जब ज्ञान उत्पन्न होता है तो जैसे पका हुआ आम अपने आप गिर जाता है; इसी तरह आपका अभिमान भी दूर हो जाता है। कामनाओं के नष्ट हो जाने पर मन शुद्ध हो जाता है। मन की शुद्धि से भगवान के दर्शन का मार्ग प्रशस्त होता है।

मनुष्य [अभ्यास; अभ्यास से सभी कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं। जो भी हो, अपने मन को वासना-मुक्त बनाओ। वासना-हीन,; पवित्र मन वाले व्यक्ति पर उपदेश का प्रभाव शीघ्र पड़ता है और उसमें शीघ्र ही ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

वैराग्य शतकम् - ०४७ .

वे दिन जो पैसे की खातिर अमीरों को खुश करने की पीड़ा के कारण बड़े लगते थे और वे दिन जो कामुक सुखों की दृष्टि से छोटे लगते थे; दोनों प्रकार के दिनों में हम पहाड़ की एकांत गुफा में, पत्थर की बनी चट्टान पर बैठे, आत्म-ध्यान में लीन, दिल में हँसते हुए याद करेंगे कि क्या हुआ था।

जो लोग नाना प्रकार के सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हैं, जिनके पास सांसारिक सुखों के लिए किसी भी सामग्री की कमी नहीं है, जिनके पास सेवा करने के लिए सुंदर मृगनयनी और सुकुमारी कामिनी हैं, जिनके पास दास-दासियाँ हैं, जिनके

पास बाग-बगीचे हैं, जिनके पास गाड़ियाँ, घोड़े और ऐसे मोटर चालक होते हैं, जिनके पीछे अनेक प्रकार के चापलूस लगे होते हैं।

जिनके हाथ में पैसा होता है या जिन पर सरकार की कृपा होती है - ऐसे लोगों के दिन बहुत जल्दी बीत जाते हैं। उन्हें दिन और रात के बीतने का भी पता नहीं चलता, यहाँ तक कि लंबे दिन भी छोटे लगने लगते हैं;लेकिन वे लोग जिनके पास हर चीज की कमी है, जिन्हें हर चीज की जरूरत है, जो अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अमीरों से पैसे मांगते हैं। वे उनकी चापलूसी करते हैं, उन्हें डांटते हैं, उनका अपमान करते हैं, वे दिन उन्हें बड़े भारी मालूम होते हैं-कुछ दिन भी नहीं कटते।

परन्तु जो लोग धन होते हुए भी विषय-भोगों का सुख नहीं भोगते और वस्तुओं के अभाव में भी कामना नहीं रखते, इसलिए वे धन का बोझ नहीं उठाते, धनवानों की चापलूसी नहीं करते, जो धन में ही डूबे रहते हैं। उनकी अपनी आत्मा का आनंद वे स्वयं हैं। वे खुश हैं; उन्हें दिन लंबे या छोटे नहीं लगते।

जिसने दोनों प्रकार के दिन देखे हों, परन्तु निराश होकर उसे ऐसे लोगों से घृणा हो गई हो, वह कहता है - एकांत गुफा में - मैं पवित्र शिला पर बैठकर अपनी आत्मा का ध्यान करूँगा और उन दिनों को स्मरण करके उन पर घृणा से हँसूँगा।

वैराग्य शतकम् - ०४८ .

न हमने निष्कलंक विद्या पढ़ी, न धन कमाया; न तो हमने शान्त मन से अपने माता-पिता की सेवा की और न ही चिर-विच्छिन्न कामातुर स्त्रियों को आलिंगन करने का स्वप्न भी देखा। इस दुनिया में आकर हमने और क्या किया है सिवाय किसी और की रोटी के टुकड़ों को घूरने के।

जो मनुष्य दूसरों की चापलूसी करके या दूसरों की प्रशंसा करके अपना पेट भरता था, जो सदैव परायों की ओर टुकुर-टुकुर देखता रहता था, वही मनुष्य दुःखी होकर कहता है - हाय, मैंने तो कुछ पढ़ा ही नहीं, धन भी नहीं कमाया सुगनयनी

सुन्दर कामातुर स्त्रियों का आलिंगन किया ? अरे ! वह भी पूर्ण संतृप्ति से नहीं किया ?

ना ही सुन्दर मृगनयनी कामिनी को पराजित किया और न ही अपने माता-पिता की प्रेम पूर्वक सेवा ही की - मेरा जन्म व्यर्थ ही हुआ और मैंने अपना जीवन व्यर्थ ही बर्बाद किया।चित्रगुप्त के खाते में , जीवन में आ कर फिर क्या किया ? तो , कुछ नहीं किया , व्यर्थ का जीवन गवांया , ऐसे लिखा जाएगा।

जो लोग इस संसार में आकर न ईश्वर की आराधना करते हैं, न विज्ञान का अध्ययन करते हैं, न धन कमाते हैं, न सुख भोगते हैं, न संसार के दुःखी लोगों के दुःख दूर करते हैं, उनका इस संसार में आना व्यर्थ है।जैसे गंगा जल के समक्ष , सागर का जल किसी काम का नहीं , ना नहाने के उपयोग का और ना ही पीने के उपभोग का। वे कितने ही बड़े धनवान हो , उनका जीवन यर्थ ही है।

न इधर के रहे, न उधर के रहे।
न खुदा ही मिला, न विसाले सनम।।

कहा कियो हम आइके, कहा जायेंगे ?
इतके भये न उतके, चले जनम गवाये ।।

अध्ययन करना, ज्ञान प्राप्त करना, धन प्राप्त करना, सुख भोगना और माता-पिता की सेवा करना अच्छा है; लेकिन खाली पेट भरने के लिए कौए की तरह किसी और का मुंह देखना अच्छा नहीं है। अगर चेहरा देखना है तो उस भगवान का चेहरा देखो, जो वह अभावों से रहित और सबका दाता है। उससे ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी. अगर आप उस पर भरोसा करेंगे तो वह आपकी सारी कमियां दूर कर देगा, आपके दुख में दुखी और आपके सुख में खुश हो जाएगा। उसके बिना आपकी भूख नहीं मिटेगी।

हाड़ -मांस की नश्वर पुतली को कितना हृदय आलिंगन कर भी क्या हासिल होगा? कुछ भी हासिल नहीं होगा। यदि वह कामिनी नरक का द्वार पकड़ेगी तो कामना वश , तुझे भी बरबस उसी नरक का वासी बनना पड़ेगा।

इसलिए हे ! मूर्ख मन ! उस परम कल्याणकारी , प्रभु में मन लगा , उनकी चरण होने पर ही तेरा इहलोक और परलोक , दोनों लोकों में कल्याण है , नहीं तो अंधकार में जीवन व्यतीत होगा। उस बर्बादी से तुझे कोई बचा नहीं पायेगा।

इसलिए संतों ने कहा है - राम नाम रटते रहो , जब तक मन में प्राण।

कभी न कभी तो दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान।।

भगवान के चरण कमलों से परिचित हुए बिना और उनके साथियों के प्रेम में पड़े बिना मनुष्य के मन की दौड़ दूर नहीं होती, मन की अशांति दूर नहीं होती और स्थिरता नहीं आती। स्थिर मन के बिना कोई भी व्यक्ति भगवान की पूजा में ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता है।

जो लोग भगवा वस्त्र पहनते हैं वे संत बन जाते हैं। और वे भगवान पर ध्यान नहीं देते - वे अपने पेट के लिए एक के बाद एक चिल्लाते हुए अपने दुर्लभ बच्चे के जन्म को व्यर्थ में बर्बाद कर देते हैं। वे मूर्ख यह नहीं समझते कि यह मनुष्य जन्म बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ है। ऐसा मौका हमें जल्दी दोबारा नहीं मिलेगा।

अगर यह जन्म पेट की चिंता में कट जाए; फिर चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने के बाद कहीं मनुष्य जन्म मिलेगा। बेहतर होता कि वे संसार त्यागने का दिखावा करने के बजाय सांसारिक या गृहस्थ ही बने रहते। वे सांसारिक रहकर इस संसार के झूठे सुखों का आनंद लेते। ऐसे पाखंडी दोनों तरफ से चलते हैं।

काम, क्रोध, मद और लोभ - जब तक ये मन में रहते हैं। तब तक बुद्धिमान और मूर्ख में कोई अंतर नहीं है - दोनों समान हैं।जब तक दूर से देखते हैं तो गधे और घोड़े में कुछ भी अंतर दिखाई नहीं देता।

जो लोग केवल पूजा करने के लिए अपना घर छोड़ देते हैं और साधु बन जाते हैं: यदि वे जाते हैं, यदि वे घर पर रहते हैं, तो वे घरेलू कार्य जैसे माता-पिता की सेवा, आतिथ्य, पिंडदान, ब्राह्मणों को भोजन कराना, बच्चों का जन्म और लड़कियों का विवाह आदि कर सकते हैं।

लेकिन साधु का वेश धारण करके कोई ये काम नहीं कर सकता. दूसरी ओर, साधु होने के नाते मनुष्य को सदैव भजन करना चाहिए, लेकिन चूँकि वे सच्चे साधु नहीं हैं - काम, क्रोध, मद, मोह और लोभ उनसे भिन्न नहीं हैं - इसलिए उनका मन स्थिर नहीं है।मन की स्थिरता न होने के कारण उनका मन भगवान में भी नहीं लगता। वे अपना पेट भरने के लिए दर-दर भटकते हैं। इस प्रकार से वे न घर के रहते हैं न घाट के।

तुलसीदास जी कहते हैं, इनकी गति बवंडर या बगुले के पत्ते के समान है, जो न आकाश में जाती है, न भूमि पर रहती है-बीच में ही उड़ती रहती है। इस तरह अपना जन्म खोना मूर्खता नहीं तो क्या है ? जो लोग मेहनत करके नहीं कमा

पाते और जीवनयापन करके पैसा नहीं कमाते, वे अपने परिवार का पालन-पोषण न कर पाने के कारण संत बन जाते हैं।

फिर वे घर-घर जाकर रोटी के टुकड़े माँगते हैं। और वे लोगों द्वारा अपमानित होते रहते हैं। उन्हें भगवान पर भी भरोसा नहीं है। यदि उन्हें ईश्वर पर विश्वास होता तो वे उनका ध्यान और जप करते और उन्हें भी उनकी चिन्ता रहती। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह ईश्वर ही है जो उन लोगों को भोजन देता है जो उस पर भरोसा करके निर्जन और खतरनाक जंगलों में जाकर बैठते हैं।

वह उन लोगों को भी भोजन प्रदान करता है जो उसका नाम नहीं जपते; तो फिर जो लोग उस पर निर्भर हैं वे प्रभावित कैसे नहीं होते? , और वह उन लोगों को कैसे भूल सकता है जो उसके नाम की माला जपते हैं?

भगवान संसार के प्राणियों को सुबह से शाम तक भोजन प्रदान करते हैं और संसार का पालन-पोषण करते हैं, इसीलिए उन्हें विश्वम्भर कहा जाता है। वे हाथी टोकरियाँ भरकर रखते हैं और वह कीड़ों को तक अन्न पहुंचाते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तुलसीदास जी कहते हैं, भगवान के दरबार में किसी चीज की कमी नहीं है। उनके दरबार में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों चीजें विद्यमान हैं। उनके भक्त ज्ञान चाहते हैं, उन्हें वही मिलता है। , उनके भक्तों की मनोकामना पूरी होते ही रिद्धि सिद्धि उनके चरणों में उपस्थित हो जाती हैं, लेकिन शर्त यह है कि उनके भक्तों का मन बेचैन नहीं होना चाहिए, उनका मन किसी अन्य दिशा में नहीं जाना चाहिए। जो लोग भगवान की सेवा में असफल होते हैं और स्थिर मन से उनकी पूजा नहीं करते, उनका मन जगह-जगह भटकता रहता है, बिना काम के कष्ट झेलते हैं और उन्हें इच्छित वस्तुएँ नहीं मिलतीं।

सुखदाता को भूलकर कोई भूखा कैसे हो सकता है ? भगवान दीनबंधु और दीनदयाल हैं। वह गरीबों के दुख दूर करने वाले और गरीबों की गरीबी दूर करने वाले हैं। वे सभी को अपना मानते हैं और उन्हें इस लोक और परलोक में पूर्ण सुख-समृद्धि देते हैं।

इस लोक में वे ध्यान, धर्म और कर्म देते हैं और मरने के बाद उस लोक में स्वर्ग या मोक्ष देते हैं। इसका मतलब यह है कि जो लोग खुद को भगवान के सामने समर्पित कर देते हैं, भगवान उनकी इच्छाओं को उनके दिल की इच्छा के अनुसार पूरा करते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि मन अपनी भटकने की आदत नहीं छोड़ता, यानी मन सांसारिक चीजों की ओर गए बिना नहीं रहता।

यदि मन सांसारिक वस्तुओं में जाना बंद कर दे तो गरीबी क्यों रहेगी? सारी कमियां दूर हो जायें।

वैराग्य शतकम् - ०४९ .

सब कुछ त्याग कर (या जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है), करुणा से भरे हृदय से, संसार और उसके भौतिक पदार्थों को सारहीन मानकर, केवल शिव के चरणों को अपना रक्षक मानकर, हम कब पवित्र उपवन में बैठकर रातें बताएंगे शरद ऋतु की चांदनी ?

वे दिन कब आयेंगे जब हम सब कुछ त्याग देंगे, संसार को निरर्थक मान लेंगे, संसार के सुखों को अनित्य मान लेंगे, संसार के सुख-विलास को दुःख का कारण मान लेंगे और संसार को विष समझकर खर्च कर देंगे शरद ऋतु की चांदनी रातें

किसी पवित्र वन में बैठकर शिव-शिव का जप कर रही हैं, अर्थात् हमारे जो दिन सांसारिक उलझनों में व्यतीत हो रहे हैं वे व्यर्थ ही नष्ट हो रहे हैं।

जब हम सब कुछ छोड़कर भगवान की भक्ति करेंगे, तभी हमारे दिन ठीक से हटेंगे। हम उन्हीं दिनों को सार्थक मानेंगे। हमारा मन सांसारिक सुखों से भरा हुआ है। ख़ुशियाँ बस कुछ ही दिनों की लगती हैं, पानी के बुलबुले की तरह पल भर में फूट जाती हैं। हे मन ! अब मेरा मन भगवान पर केन्द्रित है; अब सांसारिक सुखों में, हम कुछ भी नहीं चाहते हैं; हमने उनकी सच्चाई देखी है।

वैराग्य शतकम् - ०५० .

हम पेड़ों की छाल पहनने से संतुष्ट हैं; आप लक्ष्मी से संतुष्ट हैं. हमारी संतुष्टि आपके जैसी ही है, कोई अंतर नहीं है। वही गरीब है जिसके दिल में भूख है। जब मन में संतुष्टि हो तो कौन अमीर और कौन गरीब? यानी अमीर और गरीब खुश हैं, गरीब और अमीर दोनों बराबर हैं।

जो संतुष्ट है, जो आसानी से संतुष्ट हो जाता है, वह हमेशा खुश रहता है। जिसकी इच्छाएँ बड़ी होती हैं उसे सुख नहीं मिलता। जो संतुष्ट नहीं है; वह सदैव

दुःखी रहता है। संतोष बड़े से बड़े धन से भी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति खुश रहना चाहता है उसे अपनी इच्छाओं को त्याग देना चाहिए और भगवान उसे जो कुछ भी दे उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। संतुष्ट व्यक्ति को कोई रोग नहीं होता।

संतुष्ट व्यक्ति का मन, हृदय और शरीर सदैव प्रसन्न रहता है। , संतुष्ट व्यक्ति किसी को खुश नहीं करता। जो लोग संतुष्ट रहते हैं और भाग्य पर भरोसा रखते हैं, वे कम होते हैं। अधिकतर सभी लोग लोभी और आशावादी होते हैं। उन्हें जो कुछ भी मिलता है, उससे वे खुश नहीं होये , परन्तु और अधिक पाने की दुराशा में अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं।

हे संतोष मन ! मुझे ज्ञान भक्ति के धनवान बनाओ - क्योंकि संसार में कोई भी धन तुमसे बढ़कर नहीं है। मनुष्य को सूखी रोटी और चीथड़ों की गठरी में सुख से रहना चाहिए। मनुष्य के उपकारों का बोझ उठाते समय अपने दुःखों के बोझ को हल्का मत समझो। जो लोग लालची होते हैं उन्हें मरने के बाद भी संतुष्टि से सुख नहीं मिलता है। संतोष की भी बड़ी प्रशंसा महात्मा कबीरदास जी की है -

गो-धन गज-धन बाजिधन, और रतनधन-खानि।
जब आए संतोष-धन, सब धन गौण -समान॥

संसार में कई प्रकार के धन हैं जैसे पशुधन, पशुधन, रत्न धन आदि। कोई गायक को धन मानता है, कोई हाथी को धन, कोई घोड़े को और कोई हीरे, पन्ना, नीलम और पुखराज को धन मानता है। सांसारिक लोग इन सबको धन समझते हैं, परंतु यह धन किसी की प्यास नहीं बुझाता, तृप्ति या शांति नहीं देता। जब संतोष रूपी धन मनुष्य के हाथ में आ जाता है; तब वे गाय, बैल, घोड़े, हाथी आदि मिट्टी के समान प्रतीत होते हैं।

जब मनुष्य इस संसार के लोगों पर अपनी निर्भरता छोड़कर भगवान के पास जाता है तो वह संतुष्ट हो जाता है। ईश्वर और संतुष्टि में कोई अंतर नहीं है। जहां संतोष है, वहां टूटे हुए हैं और जहां भगवान है, वहां संतोष है। तुलसीदास जी कहते हैं - हमने अपनी आंखों से देखा है कि जिसने भी भगवान की शरण ली और उसे संतुष्टि मिली, वह निश्चित ही सुखी हुआ।

इसके विपरीत ; जो लोग इस संसार के लोगों और सांसारिक वस्तुओं में आसक्त हैं, जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, वे विभिन्न प्रकार के दुःख भोगते हैं। बचपन में उन्हें अपनी माँ की मृत्यु या उन पर आश्रित होने का दुःख रहता था। है। युवावस्था में , पुत्र पत्नी आदि की आसक्ति छोड़कर , लोगों पर अपनी निर्भरता छोड़कर भगवान के पास जाता है, तब वह संतुष्ट हो जाता है।

ईश्वर और संतुष्टि में कोई अंतर नहीं है। जहां संतोष है, वहां टूटे हुए हैं और जहां भगवान है, वहां संतोष है। तुलसीदास जी कहते हैं - हमने अपनी आंखों से देखा है कि जिसने भी भगवान की शरण ली और उसे संतुष्टि मिली, वह निश्चित ही सुखी हुआ। इसके विपरीत ; जो लोग इस संसार के लोगों और सांसारिक वस्तुओं से कोई आशा नहीं रखते, जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, वे विभिन्न प्रकार के दुःख भोगते हैं।

बचपन में उन्हें अपनी माँ की मृत्यु या उन पर आश्रित होने का दुःख रहता था। है'। जब इन्सान इस दुनिया के लोगों पर अपनी निर्भरता छोड़ देता है और भगवान के पास जाता है तो संतुष्ट हो जाता है। ईश्वर और संतुष्टि में कोई अंतर नहीं है। जहां संतोष है, वहां टूटे हुए हैं और जहां भगवान है, वहां संतोष है।

तुलसीदास जी कहते हैं - हमने अपनी आंखों से देखा है कि जिसने भी भगवान की शरण ली और उसे संतुष्टि मिली, वह निश्चित ही सुखी हुआ। इसके विपरीत ; जो लोग इस संसार के लोगों और सांसारिक वस्तुओं से आशा रखते हैं , जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, वे विभिन्न प्रकार के दुःख भोगते हैं। बचपन में उन्हें अपनी माँ की मृत्यु या उन पर आश्रित होने का दुःख रहता था। है'। स्त्री को युवावस्था में, पत्नी या सुंदर स्त्री न पाकर लोग वासना से ग्रस्त रहते हैं।

उसे देखकर और न पाकर मैं वासना से भस्म हो गया हूं; अथवा पुत्र, पुत्री और पत्नी अपने प्रियजन की मृत्यु से दुःखी होकर उनके वियोग के आंसुओं से जलते हैं; अथवा इनका कारण धन का नाश माना जाता है। संभोग क्रिया में आंख, कान आदि इंद्रियां बेकार हो जाती हैं।

शरीर में शक्ति की कमी होने तथा सबके द्वारा अपमानित होने के कारण अत्यधिक कष्ट होता है। जब तरह-तरह की बीमारियाँ आकर हमें घेर लेती हैं तो जीवन बोझ लगने लगता है। ऐसी परेशानियों में लोग अपनी इच्छाएं भी साथ लेकर मर जाते हैं; फिर हम चौरासी लाख योनियों में जन्मते और मरते हैं। , इस प्रकार हजारों-लाखों वर्षों के बाद--कौन जानता है कि कब?--फिर से किसी प्राणी का जन्म होता है।

मानव शरीर प्राप्त करके ही मनुष्य अपनी मुक्ति का उपाय पा सकता है; क्योंकि इसी जन्म में अच्छे-बुरे का विचार करने की शक्ति होती है; और सब योनियों में बहुत से पाप हैं; अतः मनुष्य जन्म को तुच्छ वस्तु समझकर मनुष्य को भोग-विलास में नहीं खोना चाहिए। सांसारिक सुख न तो इस लोक में और न ही परलोक में सुख और शांति लाते हैं।

इस संसार में जो लोग सुख भोगते हैं उन्हें लाखों वर्षों तक अत्यंत दुःख भोगना पड़ता है। हाँ, जो लोग इस इंसान को अनमोल समझते हैं; वे सभी सांसारिक सुखों को त्यागकर ईश्वर की शरण में जाकर संतुष्ट भाव रखेंगे तो वे इस लोक और परलोक में सदैव सुखी रहेंगे। वे कष्ट भोगते हैं और अंत में ब्रह्मलोक में प्रवेश पाकर वहां आनंदमय जीवन व्यतीत करते हैं, उन्हें दोबारा इस मृत्युलोक में नहीं आना पड़ता।

वैराग्य शतकम् - ०५१ .

आज़ादी से भरा जीवन जीना, बिना पूछे खाना, विपरीत परिस्थितियों में साहस रखने वाले दोस्तों की संगति करना, मन को वश में करने के उपाय बताने वाले शास्त्रों को पढ़ना और सुनना और बेचैन मन को स्थिर करना - न जाने किस तपस्या का परिणाम है इन्हें हासिल किया जाता है !

पराधीन मनुष्य कभी सुखी नहीं रह सकता। स्त्री लोलुप मनुष्य को सदा स्त्री के अधिकार में रहना पड़ता है। रात को दिन और दिन को रात कहते रहना पड़ेगा। यह गुलामी बंधन का मुख्य कारण प्रसिद्ध है। उसे हर कदम पर अपमानित

और दुखी होना पड़ता है। जो लोग स्वतंत्र हैं और किसी के नियंत्रण में नहीं हैं, वे ही वास्तव में सुखी लोग हैं।

जिन्हें अपने भोजन के लिए किसी के सामने भीख नहीं मांगनी पड़ती - किसी के सामने घटिया बातें नहीं कहनी पड़ती; जिनके ऐसे दोस्त होते हैं जो मुश्किल वक्त में मदद करते हैं, जिनके मित्र सम्बन्धी , प्राणों की बाज़ी लगाकर भी मित्र की आपात काल में सहायता करते हैं , और बिना कुछ कहे उनकी परेशानियां दूर कर देते हैं।

जो मन को शांत करने वाले और उसके कष्टों को दूर करने वाले धर्मग्रंथ पढ़ते हैं - वे भाग्यशाली हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि पूर्व जन्म की किस कठोर तपस्या से उसे ये उत्तम फल प्राप्त हुए हैं।

वैराग्य शतकम् - ०५२ .

वे ही लोग संत - महापुरुष हैं, जिनकी स्तुति की जाती है, वे ही धन्य हैं, वे ही हैं जिन्होंने कर्म की जड़ें काट दी हैं - जिन्हें अपने हाथों के अलावा किसी अन्य उपकरण की आवश्यकता नहीं है। जो भोजन मांगते फिरते हैं, जो अपने कपड़े फैलाते हैं सभी दिशाएँ. सहमत हैं, जो. जो लोग अकेले रहना पसंद करते हैं,

जिन्हें विनम्रता से प्रेम करते है और जो आत्मा से ही संतुष्ट हैं, वे पूरी पृथ्वी को ही अपनी पवित्र शय्या मानते हैं।

जिसने अपना मन सब ओर से हटा कर एक भगवान के चरणों में अर्पित कर दिया है। सभी प्रकार के विषयों का त्याग कर दिया है, सांसारिक मोह-माया को काट लिया है और केवल अपनी आत्मा में संतुष्ट हो गया है; जो किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं रखते, पीने के पानी के लिये बर्तन भी नहीं रखते, अपने ही हाथों से बर्तन बनाते हैं; वे घर में खाने के लिए सामान नहीं रखते, उन्हें कल के भोजन की चिंता नहीं रहती, आज वे यहाँ भीख माँगकर अपना पेट भरते हैं, कल उन्हें दूसरे गाँव जाना पड़ेगा।

जो वैरागी किसी एक जगह सदा के लिए नहीं रह जाते। एक गाँव में दो रातें नहीं बिताते, जिन्हें तन ढाँकने के लिए वस्त्रों की भी आवश्यकता नहीं, वे दसों दिशाओं को अपना वस्त्र समझते हैं; जो लोग बिस्तर और तकिये की आवश्यकता नहीं समझते, वे थोड़े से फर्श को भी साफ़ बिस्तर समझते हैं; जब उन्हें नींद आती है तो वे अपने हाथ का तकिया लेकर सोते हैं।

जो किसी के साथ नहीं जुड़ते, अकेले रहते हैं, वैराग्य में ही आनंद पाते हैं; जो मनुष्य किसी के सामने दीन नहीं होते अथवा कर्जदार होने की लत से घृणा करते हैं और अपने स्वरूप में ही प्रसन्न रहते हैं, वे ही वास्तव में महान पुरुष हैं। धन्य हैं ऐसे पुरुष! उसने सचमुच कर्म का बंधन काट दिया है। वे सच्चे त्यागी और रहस्यवादी हैं।

जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और वासना के विकार नहीं हैं; सुख-दुःख तथा पाप-पुण्य को नहीं जानता, अर्थात इनसे निर्लिप्त हैं ; जो न किसी को सुख देता है न दुःख; जो अपने शरीर से भिन्न हैं ; जो न तो किसी की प्रशंसा करता है और न ही किसी की बुराई करता है; जो न किसी से प्यार करता है, न किसी से नफरत करता है।

जिसे न तो किसी से कुछ लेना है, न किसी को कुछ देना है, न ही किसी अन्य प्रकार का व्यवहार करना है। जो न किसी की मृत्यु पर सुन्दरदास जी कहते हैं - वे बड़े भाग्यशाली हैं, ऐसे व्यक्ति की गति अपरिमेय और अथाह होती है। इसकी गहराई का पता नहीं चलता. ऐसा महान व्यक्ति भगवान को प्रिय होता है।

वैराग्य शतकम् - ०५३ .

बॉस को मोड़ना मुश्किल होता है। राजाओं का हृदय घोड़ों के समान चंचल होता है। यहाँ हमारी इच्छाएँ बहुत भारी हैं; दूसरी ओर, हम एक महान मोक्ष की आशा करते हैं। बुढ़ापा शरीर को बेकार बना देता है और मृत्यु जीवन को नष्ट कर देती है। इसलिये मित्र ! बुद्धिमान व्यक्ति के लिए इस संसार में तपस्या से बढ़कर कल्याण का कोई मार्ग नहीं है।

सेवा कार्य बहुत कठिन है. हजारों प्रकार की सेवाएँ करके, अनेक प्रकार की 'हाँ-में-हाँ' करके, दिन-रात पुकारकर और 'रात-दिन' कहकर तथा नाना प्रकार की

खुशियाँ देकर:मालिक कभी संतुष्ट नहीं होता। राजाओं का हृदय अप्रशिक्षित घोड़ों के समान चंचल होता है। उनका मन स्थिर नहीं रहता, वे थोड़ी देर में प्रसन्न और थोड़ी देर में दुखी हो जाते हैं; वे एक क्षण में सब गांव दे देते हैं, और एक ही क्षण में सूली पर चढ़ जाते हैं।

इसलिये राजसेवा में बड़ा खतरा है। इसमें तनिक भी सुख नहीं है, यहाँ तक कि जान की भी कोई सुरक्षा नहीं है। एक ओर, हमारी इच्छाओं और अभिलाषाओं की कोई सीमा नहीं है; दूसरी ओर, हम सर्वोच्च पद की आकांक्षा करते हैं;इसलिए यहां भी कोई मुकाबला नहीं है. बुढ़ापा हमारे शरीर को दुर्बल और कुरूप बना देता है, हमारी शक्ति और शक्ति को नष्ट कर देता है और मृत्यु हमारे ऊपर मंडराने लगती है।

ऐसे में दोस्त ! कहीं कोई ख़ुशी नहीं है. यदि सच्चा सुख चाहते हो तो भगवान की आराधना करो। इससे आपका लोक और परलोक दोनों ही मुक्त हो जायेंगे, जन्म-मरण के कष्टों से मुक्ति मिल जायेगी और मोक्ष पद की प्राप्ति होगी।

सारांश यह है कि सच्चा एवं शाश्वत सुख त्याग एवं ईश्वर भक्ति में ही निहित है।मनुष्य चाहे कल्पवृक्ष के नीचे ही क्यों न चला जाये, जब तक सीतापति की कृपा न हो, उसके दुःख नष्ट नहीं हो सकते; इसलिए शत्रुता और मित्रता त्याग दो, संसार से विरक्त हो जाओ और ईश्वर से प्रेम करो।

खुलासा यह है ; कहा जाता है कि इंद्र की वाटिका में एक पेड़ है, जिसकी छाया में इंसान हो या देवता, जो चाहे कर सकते हैं। उस वृक्ष को "कल्पवृक्ष" कहा जाता है।

तुलसीदास जी कहते हैं, जब तक जानकीनाथ रामचन्द्रजी कृपा करके प्रसन्न नहीं होते, तब तक कल्पवृक्ष की छाया में रहकर भी मनुष्य की कल्पना मिट नहीं सकती।जप, तप, तीर्थ, व्रत, शम, प्रलय, दया, सत्य, शौच और दान आदि: यदि मन में काम रखकर काम किया जाए; अर्थात यदि कर्ता अपना प्रतिफल या प्रतिफल चाहता है। यदि ऐसा है, तो उसे स्वर्ग आदि की प्राप्ति होती है।

स्वर्ग जाने से मनुष्य की गति - इस संसार में आना और यहाँ से चले जाना - जन्म लेना और मरना नहीं रुक सकता। क्योंकि कहा जाता है- पुण्य समाप्त होने पर ही स्वर्ग से मृत्युलोक में आना पड़ता है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, जप, तप आदि से स्वर्ग की प्राप्ति तो हो जाती है, परन्तु मनुष्य का वास्तविक प्रयोजन पूरा नहीं होता; अर्थात उसे परम पद या मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।इसलिए मनुष्य को निःस्वार्थ कर्म करते रहना चाहिए या अपने सभी कार्य ईश्वर प्रेम के लिए करने चाहिए।

यही बात भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में भी कही है। ईश्वर की भक्ति सर्वोच्च है. जो कार्य ईश्वर की भक्ति से हो सकता है वह कठिन से कठिन तपस्या से भी नहीं हो सकता। चाहे तुम सारे वेद-शास्त्र पढ़ो, चाहे यम-नियम आदि का पालन करो, यदि तुम्हारे हृदय में राम नहीं है तो यह सब व्यर्थ है।

इसीलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि मित्र से मित्रता और शत्रुओं से बैर छोड़ कर संसार से उदासीन हो जाओ और ईश्वर से प्रेम करो। इसका मतलब यह है कि आपके मन में न तो किसी के प्रति क्रोध होना चाहिए और न ही किसी के प्रति घृणा; हर किसी को उदासीनता से देखें. तभी तुम्हारा हृदय एक ईश्वर पर स्थिर होगा।

अरे दोस्त ! तुम इतने गरीब क्यों हो और दर-दर भटकते हो, एक तोला आटे से ही तुम्हारा पेट भर जाता है। हम सुनते हैं कि समुद्र में चार सौ मील लंबे और चौड़े शरीर वाले व्यक्ति को भी भगवान भोजन देते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। दुनिया में कोई भूखा नहीं रहता।जगदीश, हे भगवान्, चींटी-हाथी सबको खिलाते हैं।

अरे मूर्ख मन ! तुम्हें विश्वास क्यों नहीं है ? सुन्दरदास जी कहते हैं भाई ये बात मैंने तुमसे कितनी बार कही है ? ओह ओ! तुम अलग-अलग दिशाओं में क्यों भागते हो ? आप परमेश्वर द्वारा किये गये कार्य के बारे में सोचें। देखो, जब तुम मुंह बन्द करके माँ के गर्भ में छिपे हुए थे, तब मैं तुम्हारे लिये भोजन की व्यवस्था की।

और जब आपके दाँत आये तब भी मुंह खोलते ही आपको भोजन के टुकड़े दिये जाते थे। वही प्रश्न जो आपकी गर्भावस्था के बाद से आपका पीछा कर रहे हैं, जब आप निष्क्रिय और चुप थे, क्या वही प्रश्न अब आपके जीवन का पीछा नहीं करेंगे? सुंदरदासजी कहते हैं तुम चिल्लाते क्यों हो? भगवान पर भरोसा रखो; वही ईश्वर अब भी आपकी देखभाल करेगा।

सारांश यह है कि बुद्धिमान लोगों को संसार के अहंकारी लोगों की संतुष्टि छोड़ देनी चाहिए और केवल उसी की संतुष्टि और सेवा करनी चाहिए जिसके दिल में न तो अहंकार हो और न ही क्रूरता। जो भी उनकी शरण में जाता है, वे उसकी रक्षा अवश्य करते हैं और उसके दुखों को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

आदमी ! आपकी जिंदगी ढाई मिनट की है। जीवन के इस ढाई मिनट को बर्बाद मत करो। इसे खत्म होने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा. राजाओं तथा धनिकों की सेवा में यह शीघ्र ही पूरी हो जायेगी और आपकी इच्छा भी उनसे पूरी नहीं होगी।

यदि तुम सबका साथ छोड़ कर केवल जगदीश, भगवान की ही सेवा करो; तब निश्चय ही तुम्हारा कल्याण होगा-तुम्हारे दुःख दूर हो जायेंगे; दोबारा जन्म लेकर तुम्हें घोर कष्ट नहीं सहना पड़ेगा; आपको शाश्वत और स्थायी शांति मिलेगी। ओह ओ! तू सारी चतुराई और चालें छोड़कर यह एक चतुर काम कर; क्योंकि यह चतुराई ही सच्ची चतुराई है।

जो ईश्वर को प्रसन्न करता है वही वास्तव में बुद्धिमान है। मेघाच्छादन से रहित तथा पूर्णिमा के चंद्रमा से सुशोभित वह रात्रि निश्चय ही रात्रि है। जो रूपवती, लावण्यमयी तथा पति के प्रति समर्पित हो वही कामिनी है। कृष्ण की बांसुरी ध्वनि की मिठास आनंद ही सुखद मिठास है। जो चतुराई दोनों लोकों में प्राणियों की सहायता करती है वही वास्तव में सही चतुराई है।

वैराग्य शतकम् - ०५४ .

भौतिक प्राणियों के सुख और आनंद घने बादलों में चमकने वाली बिजली की तरह क्षणभंगुर हैं; मनुष्य की आयु या जीवनकाल हवा से बिखरे हुए बादलों के पानी के समान क्षणभंगुर या नाशवान है और युवावस्था का उत्साह भी स्थिर

नहीं है। इसलिए बुद्धिमान! धैर्यपूर्वक अपने मन को एकाग्र करें और उसे योगाभ्यास में लगाएं।

यहां जो दिख रहा है. वह स्थिर नहीं रहेगा. यह समुद्र जो अथाह जल से भरा हुआ प्रतीत होता है, किसी दिन मरुस्थल बन जायेगा; पानी की एक बूंद भी नहीं मिलेगी। यह: वह उद्यान, जिसकी तुलना आज इन्द्र के उद्यान से की जा सकती है।

हजारों प्रकार के पतझड़ के पेड़ उगे हुए हैं, छोटी-छोटी नहरें काटी गई हैं, संगमरमर और संगे मूसा के चबूतरे बने हैं, बीच में इंद्र भवन जैसा महल खड़ा है। किसी दिन यह उजाड़ हो जाएगा; सियार और छोटे जानवर इसमें आश्रय लेंगे। सामने दिखाई दे रहा महलों का यह शहर, जिसमें हजारों दो मंजिला और तीन मंजिला इमारतें हैं: चार मंजिला और सात मंजिला आलीशान मकान आसमान चूमते खड़े हैं, जहां लाखों लोगों के आने-जाने और काम करने से सबकी पीठ खुजलाती है।

किसी दिन यहां भयानक जंगल होगा। इंसानों की जगह शेर, बाघ, -हाथी, घोड़े, हिरण और सियार प्राकृतिक जानवर होंगे। इसलिए। क्या- अपने तेज से तीनों लोकों में प्रकाश फैलाने वाला यह सूर्य अन्धकार में बदल जायेगा। अमृत से भरा यह सुधाकर--। चंद्रमा भी शून्य हो जाएगा। न जाने शीतल चाँदनी कहां विलीन होगी? हिमालय और सुमेरु जैसे पर्वत एक दिन रसातल में समा जायेंगे। ये ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र भी शून्य हो जायेंगे।

सारी दुनिया नष्ट हो जायेगी. कौन जानता है कि ये स्त्रियाँ, पुत्र और सम्बन्धी कहाँ छिप जायेंगे? युगों के सहस्त्र चोकादि के ब्रह्मा का एक दिन होता है। वह दिन समाप्त होते ही विनाश हो जाता है। तब इस संसार के रचयिता ब्रह्मा का भी विनाश हो जाता है। आज तक असंख्य ब्रह्मा हो चुके हैं। उसने दुनिया बनाई और अंततः खुद को नष्ट कर लिया। जब हमारे रचयिता का यह हाल है तो हमारी औकात क्या है ? यह शरीर, जिसे मनुष्य अपना सब कुछ मानता है, जिसे वह हर मल-मूत्र से धोता है, इत्र से सुवासित करता है, विभिन्न प्रकार के रक्त से जड़े सुंदर आभूषण पहनता है, दर्द से बचने और आनंद देने के लिए और अपने पैरों की रक्षा के लिए नरम मखमली गद्दे पर सोता है। दर्द से बचने के लिए वह घोड़े, गाड़ी या मोटर वाहन पर चलता है; एक दिन यह नष्ट हो जायेगा।

पंचतत्व से बना शरीर पंचतत्व में ही लीन हो जायेगा। जिस प्रकार पत्ते पर पड़ी हुई पानी की बूँद क्षणभंगुर है, उसी प्रकार यह शरीर भी अनित्य है। दीपक और बिजली की रोशनी आती-जाती दिखाई देती है, परंतु इस शरीर का आदि और अंत

दिखाई नहीं देता। , यह शरीर कहाँ से आता है और कहाँ जाता है? जैसे समुद्र में बुलबुले उठते हैं और लुप्त हो जाते हैं; उसी प्रकार शरीर क्षण भर में बनते और नष्ट हो जाते हैं।

सच तो यह है कि यह शरीर बिजली की चमक और बादल की छाया के समान चंचल और अस्थिर है। जिस दिन उसका जन्म हुआ, उसी दिन मृत्यु ने उसे पकड़ लिया; अब वह अपना समय देखती है और समय पूरा होते ही उस जीव को नष्ट कर देती है।

जिस प्रकार जल की लहरें उठती हैं, गिरती हैं और नष्ट हो जाती हैं; इसी प्रकार लक्ष्मी आती है और क्षण भर में गायब हो जाती है। जैसे बिजली चमककर लुप्त हो जाती है; इसी प्रकार लक्ष्मी दर्शन देकर अदृश्य हो जाती है। हवा और हवा को रोकना बहुत मुश्किल है, लेकिन शायद कोई इन्हें रोक सके; बहुत मुश्किल है आसमान को कुचलना, पर शायद कोई आसमान को भी कुचल पायेगा; समुद्र में हथियारों के साथ तैरना बहुत मुश्किल है।

है तो, पर शायद कोई उसे पार भी कर सके; ऐसे असंभव कार्यों को शायद कोई समर्थ व्यक्ति ही पूरा कर सकता है, परंतु चंचल लक्ष्मी को कोई स्थिर नहीं कर सकता। जैसे अंजलि में जल नहीं रुकता; इसी तरह लक्ष्मी भी किसी के पास नहीं टिकती. जिस प्रकार वेश्या एक पुरुष से संतुष्ट नहीं होती, वह नित नये पुरुष चाहती है; इसी प्रकार लक्ष्मी भी किसी एक व्यक्ति के पास नहीं रहती, वह हर दिन नए पुरुषों की पूजा करती है। इसीलिए लक्ष्मी और वेश्या दोनों को चंचला कहा जाता है।

जिस प्रकार देवी लक्ष्मी जैसी सांसारिक वस्तुएँ और कामुक सुख और उम्र क्षणभंगुर और क्षणभंगुर हैं; इसी प्रकार युवावस्था भी अस्थायी होती है। जवानी आती हुई दिखती है, लेकिन जाती हुई नहीं दिखती. दिन और रात वायु से भी तेज गति से गुजरते हैं और उसी गति से युवावस्था समाप्त होती है और बुढ़ापा आता है। उस समय मनुष्य को आश्चर्य होने लगता है।

यह शरीर बुढ़ापा आने तक ही सुंदर और आकर्षक दिखता है। बुढ़ापा आते ही वह प्रफुल्लता, वह तेज, वह चमक, वह खुशी, वह स्तनों का उभार, वह आँखों का रस कहीं गायब हो जाता है। वास्तव में बुढ़ापा युवावस्था के लिए अभिशाप है। चंद्रमा की तरह:- जब तक राहु अस्त नहीं होता, तब तक रोशनी रहती है; इसी प्रकार

शरीर की सुंदरता और लावण्य बुढ़ापा आने तक बरकरार रहती है। - बचपन के बाद जवानी और जवानी के बाद बुढ़ापा जरूर आता है; जवानी हमेशा के लिए नहीं रहती; गहराई से सोचने पर यौवन क्षणभंगुर प्रतीत होता है।

संसार में जितनी भी प्रकार की अच्छी और सुखद वस्तुएँ देखी जाती हैं वे सब नाशवान हैं। यह सब वास्तव में कुछ भी नहीं है; इनका निर्माण केवल मन की कल्पना से हुआ है। उन पर केवल मूर्खों को ही विश्वास होता है, बुद्धिमानों को नहीं।

इस संसार में ज्ञानी का जीवन सार्थक है और अज्ञानी का जीवन निरर्थक है। अज्ञानी बनकर जीने से कोई लाभ नहीं है। , इसे जीने से कोई आर्थिक उपलब्धि नहीं होती। वह अवसर गँवा देता है । मूर्ख यह नहीं समझता कि ऐसा अवसर बड़ी कठिनाई से आया है। इस बार हम खत्म कर दें तो ठीक है। अज्ञानी व्यक्ति अपने अज्ञान या भ्रम के कारण विनाश और दुःख की ओर भागता है; उम्र, जवानी और विषयों पर-क्षणिक पर ध्यान नहीं देता। यह भ्रम नहीं है: तो क्या हुआ !

विभूति चंचल है, यौवन क्षणभंगुर है, जीवन काल के दाँतों में है। फिर भी लोग परलोक के लाभों की परवाह नहीं करते। इंसान की ये कोशिश हैरान करने वाली है! फिरदौसी ने 'शाहनामे' में कहा है: मनुष्य को इस अथाह संसार से प्रेम क्यों हो जाता है ? जबकि दरवाजे पर मौत का ढोल बज रहा है?”

मनुष्य ! होश में आओ, लापरवाही की नींद त्यागो। उस ओर देखो! मौत आपके दरवाजे पर दस्तक दे रही है. अब मिथ्या संसार का मोह त्याग दो। ये पत्नी, बेटा, भाई, बहन, माता-पिता आदि के प्रियजन और रिश्तेदार दिखाई देते हैं, यह तभी तक है जब तक शरीर नष्ट न हो जाए। जैसे ही शरीर नष्ट हो जाएगा, वे फिर दिखाई नहीं देंगे।

आप समझ भी नहीं पाएंगे कि कहां गए और कहां से आए. दोस्तों और रिश्तेदारों का यह मिलन उन यात्रियों या बहरूपियों की तरह है, जो अलग-अलग जगहों से यात्रा करते समय किसी पेड़ के नीचे रुकते हैं और वे एक पल के लिए रुकते हैं और फिर अपने-अपने रास्ते पर चले जाते हैं। अथवा उन यात्रियों की तरह जो अनेक स्थानों से आकर किसी सराय या धर्मशाला में रुकते हैं और फिर कोई दो दिन, कोई चार दिन रुक कर अपने-अपने स्थान पर चले जाते हैं।

क्या यह उन लोगों के लिए अनुचित है जो कुछ मिनटों के लिए पेड़ों के नीचे रहते हैं या सराय के मालिक एक-दूसरे के प्यार में पड़ जाते हैं? दर्द होता है उन लोगों में दिल फंसने का जो एक पल के लिए भी आपके साथ होते हैं।ले जाना है। उनके अलग होते ही मन में भयंकर पीड़ा होगी, अत: उनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहिए। ये दुनिया दो जगहों के बीच की जगह है. यात्री यहां आकर कुछ पल आराम करते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं।

ऐसे यात्रियों के लिए एक-दूसरे के संपर्क में आना और एक-दूसरे के प्यार के जाल में फंसना वाकई दर्दनाक होता है। समझदार लोग यात्रियों से प्यार नहीं करते - वे उनसे प्यार नहीं करते - वे उन्हें अपना या पराया नहीं मानते। उन्हें किसी से या देश से कोई शिकायत नहीं है.

वे सभी को समदृष्टि से या दृष्टि से देखकर सहायता करते हैं और उनके कष्ट दूर करते हैं, परंतु उन पर दया नहीं करते; परन्तु मूर्ख लोग अपनी पत्नी, पुत्र और माता-पिता को तो अपना प्रिय समझते हैं और दूसरों को पराया समझते हैं। इस दुनिया में न कोई अपना है न पराया. यह संसार एक वृक्ष है। यहां हजारों-लाखों पक्षी अलग-अलग जगहों से आते हैं, रात को आश्रय लेते हैं और सुबह अपने-अपने स्थानों पर चले जाते हैं।

वे उड़ जाते हैं. क्या विभिन्न स्थानों से आने वाले पक्षियों को रात भर साहचर्य के लिए एक-दूसरे से जुड़े रहना चाहिए? कभी भी, किसी से रिश्ता मत जोड़ो, किसी को अपना बेटा, किसी को पत्नी और किसी को अपनी मां या बहन की तरह प्यार करो।तो यह मूर्खता है. अपने शरीर से भी स्नेह नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह भी क्षणभंगुर है, सदैव आपके साथ नहीं रहेगा।

अरे मूर्ख मन ! तुम इस शरीर से प्यार करना नहीं छोड़ा , यही तुम्हारी बहुत बड़ी गलती है। तुम रेत के घर को स्थाई समझते हो; लेकिन यह दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। हम केवल इस शरीर का दैनिक क्षय ही देखते हैं। देखना, किसी दिन समय अचानक आएगा और तुम्हारा हाथ पकड़ लेगा और तुम्हें नीचे गिरा देगा और तुम्हारे शरीर को राख में मिला देगा। नारद सुन्दर दास जी को कहना पड़ता है--अरे मूर्ख ! आप मेरी बातों को, मेरी सलाह को ठीक से समझें, उसमें दोष न निकालें। यह एक अपरिवर्तनीय चीज़ है. बाकी चीजों में अंतर होने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

इसलिए इस शरीर, पत्नी, पुत्र और धन का मोह छोड़कर एकमात्र जगदीश, उस भगवान से प्रेम करो। यदि आप उनसे प्यार करते हैं, तो आप हमेशा खुश रहेंगे और यदि आप उनसे प्यार करते हैं, तो आपको अत्यधिक दर्द का अनुभव होगा।

महात्मा सुन्दरदास जी कहते हैं- हे अज्ञानी ! मुझे इस बात से बहुत आश्चर्य हो रहा है कि आप रेत से बने घर में चुपचाप और खुशी से बैठे हैं और आशा करते हैं कि आप और भी कई दिनों तक जीवित रहेंगे। यहां तुम्हारा रेत का घर हर पल डूब रहा है और हर मिनट घट रहा है। इसे नष्ट होने में कितना समय लगेगा?

मुझे इस पर एक पल के लिए भी भरोसा नहीं है. तुम इस रेत के घर में बैठे अनेक प्रकार के झूठे काम कर रहे हो - उद्योग, लेन-देन और खाना-पीना! तुम चूहे की तरह इधर-उधर घूमते रहते हो। क्या तुम नहीं जानते कि बिल्ली और चूहे की तरह "यह इंतजार करता रहता है, उसी तरह मौत तुम्हारे लिए घात लगाए बैठी है ?"

सारांश - थोड़ी सी भी समझ रखने वाले लोग यह समझ सकते हैं कि जीवित प्राणियों के शरीर के अंदर कुछ ऐसा है, जिसके कारण जीवित प्राणी स्वाद ले पाते हैं, घूम सकते हैं, काम कर पाते हैं और जीवित रह पाते हैं। जिस समय वह वस्तु शरीर से निकल जाती है तो व्यक्ति मृत हो जाता है, उस समय वह न तो चल सकता है, न देख, सुन सकता है और न ही कोई अन्य कार्य कर सकता है।

जिस वस्तु से इस शरीर में प्रकाश होता है, जिसकी शक्ति से यह कार्य करता है और बोलता है, उसे आत्मा या आत्मा कहते हैं। हमारा शरीर हमारी आत्मा का घर है। जैसे घर में नालियाँ, खिड़कियाँ और दरवाजे होते हैं; उस तरह । इस शरीर रूपी घर में भी कहाँ आत्मा का वास है, वहाँ खिड़कियाँ और नालियाँ लगी हुई हैं। आँख, कान, नाक और मुँह इस शरीर रूपी घर के द्वार हैं और गुदा - लिंग या योनि - में नालियाँ हैं।

शरीर के लाखों छेद इस घर की खिड़कियाँ हैं। “इसका मतलब यह है कि यह शरीर आत्मा का निवास स्थान है। यह घर पांच तत्वों से बना है: मिट्टी और पानी। -इस घर को बनाने वाला कारीगर भगवान है। खुद को बचाने के लिए उन्होंने मिट्टी या ईंटों से बने घर बनाए हैं।

हमारे द्वारा बनाए गए ईंट और पत्थरों से बने घर एक से दो सौ और पांच सौ साल तक चल सकते हैं। एक हजार साल से भी पहले बने घर आज भी खड़े हैं। लेकिन जिस घर में हमारी आत्मा निवास करती है और तत्वों से बनी होती है वह इतना मजबूत नहीं होता - वह एक पल में ढह जाता है।

इसीलिए महात्मा सुन्दरदास जी इस आत्मा-शरीर के घर को रेत का घर कहते हैं। क्योंकि रेत का घर यहां बनता है और वहां ढह जाता है. मानव शरीर की आयु एक क्षण भी नहीं होती। अज्ञान और मोह में अंधा हो जाने के कारण मनुष्य इस रेत के घर की नाजुकता का भी ध्यान नहीं करता। वह इस बच्चे के घर में सैकड़ों वर्षों तक रहने की आशा करता है!

पूर्ण ज्ञानी महात्मा सुन्दरदास जी मनुष्य की इस असावधानी और मूर्च्छा पर दुःखी और आश्चर्यचकित हैं। बड़ा-। पुरुष सदैव दूसरों का भला चाहते हैं; वे दूसरों को दुःख और कष्टों से बचाते हैं। इसलिए हम अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व को समझें।

अज्ञानता के अंधकार में डूबे लोगों को सावधान करने के लिए। वे कहते हैं--अरे मूर्ख! क्या रेत के इस घर में रहकर भी वह कई वर्षों तक जीवित रहने की आशा रखता है? अरे बेवकूफ [: होश में आओ! जागो! पलक झपकते ही ढह जायेगा तुम्हारा ये रेत का घर! जब से वह रेत के इस घर में आया है, इसकी नींव हिलने लगी है। एक मिनट या एक सेकंड में.

ऐसे क्षणभंगुर घर में रहने से, आपको एक घर चुना जाता है; बाग-बगीचे लगवाता है; वह किसी को अपनी पत्नी, किसी को अपना पुत्र और किसी को अपना पिता, भाई या मित्र मानता है; कोई उनके जाल में फंस जाता है; बेहोशी की हालत में वह लोगों पर अत्याचार और अत्याचार करता है और दूसरों का धन हड़प लेता है।

मैं तुम्हारे इन कृत्यों से अत्यंत आश्चर्यचकित और दुःखी हूँ! सच तो यह है, मुझे तुम्हारी मूर्खता पर दया आती है। खैर, जो हो गया सो हो गया, अब सचेत हो जाओ और धन, स्त्री, पुत्र, राजसत्ता और जमींदारी का मोह त्याग कर अपने रचयिता की शरण में जाओ। आपके इस रेत के घर में बार-बार आने और फिर एक पल में इसे छोड़ देने की भयानक पीड़ा को केवल वही दूर कर सकता है। यदि तुम संसार में फंसे रहोगे और मेरी बात पर ध्यान नहीं दोगे तो बाद में पछताओगे।

कि वह समय आयेगा जब तुम्हारा यह घर गिर जायेगा, तुम इसे छोड़ने पर विवश हो जाओगे; उस समय आप हजार बार चाहने और हजार बार रोने पर भी एक क्षण भी उसमें नहीं रह सकेंगे। जब तक तुम इस रेत के घर में रहोगे, तभी तक तुम्हारी पत्नी होगी, तभी तुम्हारे पास पुत्र और अपार धन-संपत्ति आदि

होगी। जहाँ भी तुमने यह घर छोड़ा था या तुम्हारा यह घर गिरा था; तब न तो तुझे स्त्री दिखाई देगी, न पुत्र, न धन। धन भी नजर नहीं आएगा।

तुम्हें एक पल के लिए रहने के लिए यह रेत का घर मिल गया है। फिर तुम्हें इसे छोड़ना होगा। तुम्हें यह घर इसलिये मिला है कि जब तक तुम इसमें रह सको तब तक रह सको। जगदीश, भगवान की पूजा करके, अपने कर्म बंधनों को काट दिया और खुद को जन्म और मृत्यु से मुक्त कर लिया, आप परेशानियों से बच सकते हैं, और अपने स्वामी से जुड़ सकते हैं; ताकि तुम्हें फिर कभी कष्ट न सहना पड़े - तुम सदैव - अनंत काल तक बने रहो। तब तक वह शाश्वत एवं अविनाशी सुख भोगता रहे।

धन क्षणभंगुर है. जिस प्रकार समुद्र में लहरें उठती हैं और लुप्त हो जाती हैं;इसी प्रकार धन के कारण ही विषयों की इच्छा उत्पन्न होती है और नष्ट हो जाती है। जिस प्रकार बिजली की चमक स्थिर नहीं रहती; इसी प्रकार भोग भी नहीं रहता स्थिर। विषयों का भोग करने से तृष्णा घटती नहीं, बल्कि बढ़ती है। तीव्र इच्छा। जिसके उदय से मनुष्य के सभी गुण नष्ट हो जाते हैं।

दूध की मिठास तभी तक रहती है जब तक उसे साँप न छू ले; मनुष्य के गुण भी तब तक बने रहते हैं जब तक उसे प्यास नहीं छूती। बहुत बुद्धिमान! दुःख की खान के समान अनित्य, नाशवान और विषैली वस्तुओं से दूर रहो; क्योंकि: इनमें सुख है ही नहीं। जब तक तुम्हारे पास विषय-सुख है, तब तक तुम सुखी नहीं रहोगे; लेकिन एक दिन तुम उनसे मिलोगे. अलगाव तो होगा ही. उस समय तू तृष्णा की आग में जलेगा, बार-बार जन्म लेगा और मरेगा।

इसलिए अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखें और एकाग्र मन से भगवान की पूजा करें; क्योंकि विषय-सुख भोगने से तू नरक में जायेगा और जन्म-मृत्यु का घोर कष्ट सहेगा; परंतु प्रतिदिन भगवान का भजन या योग करने से आप परमानंद के धाम में चले जायेंगे।

बहुत से लोग अपने मन को एकाग्र नहीं करते, बल्कि माला जपने, माला को तेजी से घुमाने, "गीता" और "विष्णु सहस्रनाम" का पाठ करने का दिखावा करते हैं और बीच-बीच में व्यवसाय के बारे में बात करते रहते हैं या महिलाओं और

बच्चों के बीच के विवादों को सुलझाते रहते हैं। हैं। ऐसे भजन करने और माला फेरने से

कोई लाभ नहीं है। इस प्रकार काल के दुःख और कष्ट नष्ट हो जाते हैं। मन स्थिर और शांत हुए बिना सब कुछ व्यर्थ है। सागर में जितनी लहरें हैं; मन में बहुत दौड़ चल रही है. यदि मन शांत हो जाए तो उसमें समुद्र की लहरें नहीं उठतीं। तो हीरा आसानी से नीचे हो जाता है; अर्थात ईश्वर को पाया जा सकता है।

माला घुमाते-घुमाते युग बीत गए, लेकिन मोतियों का घूमना बंद नहीं हुआ; इसलिए हाथों की माला छोड़कर मन की माला फेरो। हाथ की माला फेरने से कोई लाभ नहीं; छाया है. मन की माला:- फेरे में। भगवान को एक बार भी पूरे मन से याद करने से बहुत अच्छा फल मिलता है; लेकिन चंचल मन से दिन-रात माला फेरने से भी कुछ हासिल नहीं होता।

प्रयत्न करते हुए बहुत दिन बीत गये, परन्तु आज तक भगवान नहीं मिले। आप कैसे मिले? मन राम में एकाग्र होगा तो राम ही मिलेंगे। मन विषय वासनाओं में उलझा रहता है, फिर राम से मिलन कैसे हो सकता है ? जैसे रवि और रजनी - दिन और रात - एक साथ नहीं आते, वैसे ही राम और काम एक साथ नहीं आते। जहां काम है वहां राम नहीं और जहां राम है वहां काम नहीं।

शरीर का योगी तो हर कोई है, लेकिन मन का योगी बहुत कम होते हैं। यदि मन योगी हो जाए तो सफलता आसानी से मिल जाएगी। लोग भगवा वस्त्र पहनते हैं, बाल उलझाए रखते हैं, हाथ में कमंडल और बगल में मृगचर्म धारण करते हैं - इस प्रकार वे योगी तो बन जाते हैं, परन्तु उनका मन सांसारिक सुखों में ही लगा रहता है; इसीलिए उन्हें 'सिद्धि' नहीं मिलती - वे भगवान को नहीं देखते।

यदि वे गृहस्थों के वस्त्र पहनना चाहते हैं, तो उन्हें गृहस्थों की तरह खाना-पीना चाहिए;लेकिन यदि कोई अपना मन भगवान में एकाग्र करेगा तो उसे भगवान अवश्य मिलेंगे। जो व्यक्ति गृहस्थाश्रम में रहता है, परंतु उसमें आसक्ति नहीं

रखता अर्थात जल में कमल के समान रहता है, उसे निश्चित ही मुक्ति प्राप्त होती है।

राजा जनक गृहस्थ में रहते थे; वह सभी प्रकार के राजसी सुखों का उपभोग करता था, लेकिन उसके प्रति उसका कोई लगाव नहीं था, इसी बात ने उसे मुक्त कर दिया। सारांश - इन्द्रिय सुखों, उम्र और जवानी को अनित्य और क्षणभंगुर

समझकर उनमें आसक्त न हो और मन को एकाग्र करके हर पल ईश्वर की आराधना करो - तो जन्म और मृत्यु से मुक्ति मिल जायेगी और परमानन्द की प्राप्ति होगी।

इस शरीर का क्या भरोसा? वह क्षण भर में नष्ट हो जाय। ऐसे में सबसे अच्छी सलाह यही है कि हर सांस के साथ भगवान का नाम लें। उनके नाम के बिना कोई सांस न चले. इससे बढ़कर मोक्ष का कोई उपाय नहीं है।

\
वैराग्य शतकम् - ०७५ .

वह महापुरुष, जो अपने पेट का गड्ढा भरने के लिए हाथ में साफ-सुथरे कपड़े से ढका हुआ ठिका लेकर जंगल-जंगल और गांव-गांव घूमता रहता है, जिसकी चौखटें विद्वानों द्वारा किए गए हवन की राख से रंगी जाती हैं वह ब्राह्मण अच्छा है; परंतु वह अच्छा नहीं है, जो समान परिवार के लोगों के पास जाकर भीख मांगता है।

घर में भूखा पढ़ रहे , देस अकाल पड़ जाये ।
तुलसी -भाई बंधु के , कबहु ना माँगन जाय॥

तुलसीदास जी कहते हैं, जिस मनुष्य के पास भोजन न हो, वह यदि दस दिन तक उपवास कर ले, तो भोजन के बिना उसका जीवन नष्ट हो जाने की सम्भावना रहती है; फिर भी उसे अपनी या अपने परिवार की जान की सुरक्षा के लिए कभी कुछ पाने की आशा से अपने भाइयों के पास नहीं जाना चाहिए। क्योंकि ऐसे मौकों पर वे उनका अपमान करते हैं. उस अपमान का दुःख भोजन के बिना प्राण खोने के दुःख से भी अधिक कष्टकारी है।

मृत्यु की यातनाओं को सहना आसान है, लेकिन उस अपमान को सहना कठिन है। बाघों और हाथियों से भरे जंगल में रहना अच्छा है, छाती के नीचे रहना अच्छा है, पके फल खाना और पानी पीना अच्छा है, घास पर सोना और छाल से

बने कपड़े पहनना अच्छा है; परन्तु भाइयों के बीच बिना धन के रहना अच्छा नहीं है।

वैराग्य शतकम् - ०५६ .

वह चांडाल है या ब्राह्मण ? क्या वह शूद्र या सन्यासी है ? क्या ये दार्शनिक योगीश्वर हैं ? ऐसी अनेक संदेहास्पद एवं तार्किक बातें लोगों से सुनकर भी योगी न तो क्रोधित होते हैं और न ही प्रसन्न होते हैं; वह सचेत मन से अपने रास्ते चले जाते हैं। योगी लोगों की अच्छी और बुरी बातों की परवाह नहीं करते; कोई कुछ क्यों न बोले ? चाहे कोई उन्हें शूद्र कहे या ब्राह्मण, चाहे भंगी या तपस्वी; चाहे कोई निंदा करे या प्रशंसा; वे अच्छी चीजों से खुश नहीं होते और बुरी चीजों से दुखी होते हैं।

सच्चा महात्मा सुख-दुःख, दुख-सुख और अपमान सभी को समान समझता है। दुःख की घड़ी में कौन दुखी नहीं होता; जो मोह, भय और क्रोध से मुक्त है, वह "स्थितप्रज्ञ" ऋषि है।बुद्धिमान व्यक्ति को किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए। इंसान को हाथी की तरह रहना चाहिए. हाथी के पीछे हजारों कुत्ते भौंकते हैं, बाघों और हाथियों से भरे जंगल में रहना अच्छा है, पेड़ों के नीचे रहना अच्छा है, पके फल खाना और पानी पीना अच्छा है, घास पर सोना और कपड़े पहनना अच्छा है छाल से बने कपड़े; लेकिन। भाइयों के बीच धन के बिना रहना अच्छा नहीं है।

हमें ज्ञान के हाथी पर चढ़कर खुश होना चाहिए। , किसी की परवाह मत करो; जो बात करते हैं उन्हें बात करने दीजिए. ये दुनिया एक कुत्ते की तरह है. इसे भौंकने दो. आप थक जायेंगे और हार मान लेंगे. तुम देखते हो, जब एक हाथी निकलता है तो सैकड़ों कुत्ते उसके पीछे हो लेते हैं; लेकिन वह अपनी स्वाभाविक चतुराई, प्रसन्नता और गर्व के साथ चला जाता है - वह कुत्तों की ओर देखता भी नहीं है, वह चला जाता है, कुत्ते भी थक जाते हैं और चुप हो जाते हैं।

क्या इसका मतलब यह है कि आप अच्छे रास्ते पर चलें, दुनिया की बुरी और अच्छी बातों पर ध्यान न दें। हाथी का अनुसरण करें. कबीरदास जी कहते हैं, हे मनुष्य! तुम क्यों डरते हो, जब तुम्हारा रचयिता है अपने सिर पर प्रस्तुत करें! हजारों कुत्ते भी भौंकें तो भी हाथी पर सवार होकर भागना उचित नहीं है।

इसका मतलब यह है कि आपने जो श्रेष्ठ धर्म स्थापित किया है, उसे लोग इस कारण न छोड़ें कि लोग उसके बारे में बुरा-भला कहते हैं। सांखरी 'कुत्तों से मत डरो, भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे।

रहीम कवि कहते हैं, बड़ों को छोटा कहने से बड़े छोटे नहीं हो जाते- वे बड़े ही रहते हैं। जो गिरिराज या गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठा लेता है - आतुर पराक्रम लोग कृष्ण को गिरधर के बजाय मुरली दिखाने वाले को या बांसुरी धारण करने वाले को मुरलीधर कहते हैं, लेकिन उन्हें बुरा नहीं लगता। ...सज्जन लोग दुष्टों की कड़वी बातों या चुगली पर ध्यान नहीं देते। यदि लोग किसी पेड़ पर पत्थर फेंकते हैं, तो वह केवल बहुमूल्य फल ही देता है।

वैराग्य शतकम् - ०५७ .

हे मित्र, वे मनुष्य धन्य हैं, जो शरद् ऋतु की चाँदनी से श्वेत होकर सुन्दर वन में रात्रि बिताते हैं, जिन्होंने संसार के बन्धन काट दिये हैं, जिनका अन्तःकरण भयानक सर्पादि पदार्थों से दूर हो गया है और जो केवल अच्छे कर्मों के लिए ही हम अपने आप को अपना रक्षक मानते हैं।

केवल वे ही लोग सुखी हैं, केवल वे ही धन्य हैं, जो शरद् ऋतु की सुन्दर चाँदनी रात में वन में बैठकर भगवान की पूजा करते हैं, जिन्होंने संसार की विलासिताएँ काट ली हैं, जिन्होंने आशा, तृष्णा और राग, द्वेष की वृत्तियों का त्याग कर दिया है जिनके अन्तःकरण से विषयों का विषैला सर्प भाग गया है अर्थात् जिन्होंने विष के समान विषयों को निकाल दिया है, जिनका मन केवल पुण्य और दान में ही लगा रहता है।

संसार की प्रत्येक वस्तु से हमें परोपकार की शिक्षा मिलती है। पेड़ अपने आप फल नहीं लाते, नदियाँ अपने आप पानी नहीं पीतीं, सूर्य और चंद्रमा अपने लिए नहीं घूमते, बादल अपने लिए नहीं बरसते, ये सभी दूसरों के लिए कष्ट सहते हैं।

हातिम और विक्रम ने उस अजनबी के लिए तरह-तरह के कष्ट सहे, 'दधीचि और शिवि ने अपने शरीर भी दान में दे दिए, हरिश्चंद्र ने उस अजनबी के लिए बहुत दुख और परेशानी उठाई। जिनका जीवन परोपकार में व्यतीत होता है, उनका जीवन धन्य है।

यदि किसी व्यक्ति में दान करने की इच्छा नहीं है तो उसमें और दीवार पर बने चित्र में क्या अंतर है? , जो व्यक्ति प्रत्येक प्राणी का कल्याण करता है वह धन्य है। उसकी मां के लिए बेटे को जन्म देना सार्थक है। महान लोग, निराश्रित और गरीब, भूखे और संकटग्रस्त और वंचित। और हम भीतों यानी खोफ़जादों की बातें सुनते हैं, और उनकी दुःख भरी कहानियों पर ध्यान देते हैं।

फिर हम हृदय में दया भाव रखकर उन्हें कुछ न कुछ देकर उनका दुःख दूर कर देते हैं, बिना इस बात की परवाह किये कि वह व्यक्ति हमारा परिचित है या नहीं; क्या यह हमारा अपना आदमी या गेर है ?

देखिये, हाथी और भगवान एक जैसे नहीं थे। फिर भी जैसे ही देवता खबर आई कि मगरमच्छ ने हाथी का पैर पकड़ लिया है, अब हाथी अपनी जान बचाना चाहता है, उसने स्वतः से खुद को बचाने बहुत प्रयत्न कर डाला है, पर उसे अपनी सुरक्षा की कोई उम्मीद नहीं दिखाई दी , इसलिए अब वह भगवान को पुकार रहा है; जान-पहचान के अभाव में भी भगवान आनन-फानन में नंगे पैर गए और हाथी की जान बचा ली। हाथी और मगरमच्छ की कहानी मशहूर है।

वैराग्य शतकम् - ०७८ .

हे मन ! अब विश्राम करो, इन्द्रियों को तृप्त करने के लिये विषयों की खोज में परिश्रम मत करो; आंतरिक शांति प्राप्त करने का प्रयास करें, जो समृद्धि लाएगी और दुखों को दूर करेगी; लहर जैसी हलचल को छोड़ दो; सांसारिक चीजों में अब कोई खुशी नहीं है..मूल्य; क्योंकि वे बेकार और नाशवान हैं. बहुत कुछ कहना व्यर्थ है, अब आत्मा में ही सुख अनुभव करो।

हे हृदय ! अब कामुक सुखों की तलाश में मत जाओ, उनके लिए कष्ट मत उठाओ, शांत हो जाओ; उनमें कोई खुशी नहीं है, वे जहर से भी बदतर और काले सांप से भी ज्यादा खतरनाक हैं। ओह ओ ! अब कृपया मेरी बात मानें और अपनी चालें छोड़ दें। देखो, मौत तुम्हारे सिर पर मंडरा रही है। वह तुम्हें एक ही बार में निंगल जाएगा। अरे भाई, ये इंद्रियाँ बहुत खराब हैं, इनमें दया और दया नहीं होती, ये शैतान की तरह बुराई की ओर ले जाती हैं।

उनसे सावधान रहें और उनके जाल में न फंसें। अब शांत हो जाओ और दर्द सहना सीखो. अपनी शरारती चालें छोड़कर संसार को अभौतिक और निरपेक्ष समझो। इस भ्रम से अलग हो जाओ। एक ही चीज़ की बार-बार इच्छा न करें। अपनी आत्मा में लीन रहो। इस प्रकार अवश्य ही आपका कल्याण होगा।

कल्याण कैसा है ? जब तू आत्मा को प्रकाश रूप में देख लेगा, तब तू उससे संतुष्ट हो जायेगा, उससे कभी विचलित नहीं होगा, उसके आगे अन्य सभी लाभ तुझे व्यर्थ प्रतीत होंगे। ऐसी ही बात योगेश्वर कृष्ण ने गीता के छठे अध्याय में कही है. उस खुशी को हर कोई नहीं जान सकता, जो उसे अनुभव करता है वही जानता है।

इसे कोई भी कह कर नहीं बता सकता। जिस प्रकार एक नपुंसक व्यक्ति किसी पुरुष या स्त्री का सुख नहीं समझ सकता, उसी प्रकार एक अज्ञानी व्यक्ति किसी ज्ञानी व्यक्ति का सुख नहीं जान सकता।

वैराग्य शतकम् - ०५९ .

हे प्रिय बुद्धि, अब पवित्र फलों से अपनी भूख मिटाओ; तैयार मिट्टी के बिस्तरों और पेड़ की छाल के टुकड़ों पर निर्वाह करें। उठो, हम वन चलें। वहाँ उन मूर्ख और संकीर्ण सोच वाले धनवानों का नाम भी सुनने को नहीं मिलता, जिनकी जीभ धन के रोग के कारण उनके वश में नहीं रहती।

जो धनवान लोग अपनी जिह्वा पर नियंत्रण नहीं रखते, जो धन के रोग के कारण मुंह से कुछ भी बोल देते हैं, ऐसे मतवाले और नीच धनवान लोग वन में नहीं रहते, इसीलिए बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वहाँ जाएँ। किस चीज़ की कमी है ? खाने के लिए फल, पीने के लिए ठंडा पानी, रहने के लिए पेड़ों की ठंडी छाया, पहनने के लिए पेड़ों की छाल और सोने के लिए धरती है।

वहाँ न कोई दुःख है, न कोई अशान्ति; लेकिन बाकी सभी पदार्थ जीवन के लिए उपयोगी हैं ।उनके सामने ही इसे विलीन होना चाहिए.' तो फिर इतनी छोटी संपत्ति पर घमंड क्यों? अमीर और गरीब के बीच का अंतर तभी तक मौजूद है जब तक मनुष्य जीवित है; जब हम मरते हैं तो हर कोई समान हो जाता है।

सपने में भी अमीर होने का घमंड नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार बहता हुआ पानी चार दिन तक ठहरता है और फिर अपने स्थान से हट जाता है; उसी प्रकार पैसा भी चार दिन का मेहमान है, वह सदैव किसी के पास नहीं रहता। चंचल, अस्थिर और दिनों का दौलत का नशा है. व्यक्ति को अपनी जीभ बेलगाम नहीं रखनी चाहिए, सभी से मीठा बोलना चाहिए और सभी के प्रति शिष्टाचार और विनम्रता का परिचय देना चाहिए।

जब तक शरीर में प्राण है, जब तक प्राण है, तब तक यश कमाना चाहिए; मानहानि से बचना चाहिए। किसी को अपनी जीभ का उपयोग करके कोई भी कड़वी या बुरी बात नहीं कहनी चाहिए। जीभ का घाव तीर के घाव से भी बदतर होता है। तीर का घाव तो भर जाता है, परन्तु जीभ का घाव नहीं भरता।

इस संसार में वह जैसा कर्म करता है, वैसा ही पाता है। वह जैसा बोता है वैसा ही काटता है; और जो गेहूं बोता है, वह गेहूं काटता है; वह जो दुख देता है दूसरों का दिल, उसका भी दिल दुखेगा; वह जो कहेगा उसी तरह सुना जाएगा।

आसमान के नीचे किसी को बुरे शब्द नहीं बोलने चाहिए. यह मठ के अंदर की आवाज है, आप जो भी बोलेंगे वह आपको प्रतिध्वनि के रूप में सुनाई देगी। अभिमान त्यागकर ऐसी बात कहनी चाहिए जिससे दूसरों के हृदय को भी शीतलता मिले और स्वयं के हृदय को भी शीतलता मिले।

दैनिक जीवन के विचारों का ज्ञान, विचार और धन का अभिमान, अच्छे गुण, ईश्वर के प्रति शुद्ध प्रेम का धर्म, मधुर और कोमल वाणी, निर्लज्जता, शील, सत्य और संतोष का त्याग कभी नहीं करना चाहिए। अज्ञान, अभिमान, रजोगुण-तमोगुण, आधा-अधूरापन, कटु वचन, अभिमान, कुशलता, झूठ और असन्तोष - इनका त्याग कर देना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०६० .

हे मन, अब अपना मोह त्याग कर सिर पर अर्धचंद्र धारण करने वाले भगवान शिव से प्रेम करो और गंगा के तट पर वृक्षों के नीचे विश्राम करो। देखना ! पानी की लहर, पानी के बुलबुले, बिजली की चमक, आग की लपट, औरत, साँप और नदी के प्रवाह की शांति में कोई विश्वास नहीं है; क्योंकि ये सातों चंचल हैं।

मनुष्य तुम लोग माया की नींद में पड़े हुए अपने दुर्लभ मानव शरीर को क्यों बर्बाद कर रहे हो? तुम्हें यह शरीर इसलिये मिला है क्योंकि तुम इस मिथ्या संसार के प्रति आकर्षित हो, पत्नी, पुत्र और धन में भूल गये हो; बल्कि आइये हम मिलें ताकि हम इस शरीर से दुर्लभ मोक्ष प्राप्त कर सकें। लेकिन दुनिया का दस्तूर ही ऐसा है कि इंसान अच्छे काम छोड़कर बुरे काम करता है।

कारण यह है कि लोभी अज्ञानी मनुष्य यह नहीं जानते कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। जो स्त्री नरक के कुएं के समान गंदगी से भरी हुई है, जो हर तरह से अपवित्र और बेकार है, जिसमें प्यार का लेश भी नहीं है, जो केवल अपने स्वार्थ के लिए किसी पुरुष से प्यार करती है। उसका पति गरीब हो जाता है या उसका

कोई चचेरा भाई हो जाता है, वह उसके प्रति अपना प्यार कम कर देती है या उसे त्याग देती है, वह एक पल में पराई हो जाती है।

पुरुष उसी स्त्री को अपने जीवन की सुंदरता कहता है और उसके लिए वह अपना सारा सुख-चैन त्याग देता है और मरने को तैयार हो जाता है। क्या यह अज्ञानता नहीं है? कवियों ने मोहवश स्त्री के अंगों की भरपूर प्रशंसा की है। कुछ ने उसके दोनों स्तनों की तुलना अनार से की है, कुछ ने संतरे या दो सुनहरे फूलदानों से; लेकिन वास्तव में वे मांस के गोले । उसकी जांघों की तुलना केले के खंभे से की गई है, लेकिन वे बहुत गंदी हैं; उन पर मूत्र या सफेद पदार्थ स्त्रावित होते रहता है।

उसकी आँखों की तुलना हिरण के बछड़े की आँखों से की गई है, लेकिन वे साँप से भी अधिक भयानक हैं; क्योंकि सांप के काटने पर आदमी बेहोश हो जाता है और मर जाता है, लेकिन स्त्री के देखने मात्र से ही वह पागल हो जाता है और मर जाता है।

सच तो यह है कि औरत साँप से भी बदतर होती है। साँप के काटने से मनुष्य दो बार मरता है, परन्तु स्त्री के काटने से बार-बार मरती है और जन्म लेती है। जिस प्रकार जंगल का पालतू हाथी कागजी हाथी को देखकर इच्छा करता है और शिकारियों के जाल में फंसकर बंधन तथा नाना प्रकार के दुःख भोगता है; उसी प्रकार जो पुरुष स्त्री की इच्छा करता है वह बंधन में बंध जाता है और नष्ट हो जाता है।

स्त्री संसार वृक्ष का बीज है, इसलिए स्त्री-कामुक पुरुष इस संसार से बच नहीं सकता। इस संसार में आकर वह स्त्री के कारण नाना प्रकार के दुःख भोगता है, दिन-रात चिन्ता की अग्नि में जलता है और अन्त में मर जाता है तथा प्रेम और वासना के कारण पुनः जन्म लेता है और दुःख भोगता है।

स्त्री थोड़े से लालच से कामातुर पुरुष को अपना गुलाम बना लेती है। कामातुर पुरुष स्त्री के इशारे पर नाचता है, जैसे बंदर अपने मालिक के इशारे पर नाचता है। वह दिन-रात उसे खुश करने की कोशिश में लगा रहता है, सोते-जागते और घर से बाहर सोते समय उसे उसकी चिंता रहती है, उसकी खातिर वह अमीर लोगों की चापलूसी करता है, उसकी बातें सुनता है। अपने कपटपूर्ण शब्दों से वह

अपना आत्म-सम्मान खो देता है। इसके बावजूद महिला की मांग पूरी नहीं होती।

आज वह आभूषण मांगती है, कल वह कपड़े मांगती है और परसों अपने बेटे या बेटी की शादी के लिए पूछती है। कभी कहती है कि आज भोजन नहीं है, कभी कहती है आज घर में तेल नहीं है, इसलिये उसकी विनती का अन्त नहीं होता, परन्तु अन्त उस बेचारे का होता है। दासी होने के कारण उसे एक क्षण के लिए भी उस परमेश्वर की आराधना करने का समय नहीं मिलता जिसने उसे बनाया है।

अनेक प्रकार से सेवा करने पर भी यदि पुरुष से। अगर कोई फरमाइश पूरी न हो तो वह शेरनी की तरह पीछे पड़ जाती है। , यदि कोई पुरुष गरीब हो जाता है या कर्ज के बोझ में दब जाता है तो वही सात फेरे लेने वाली विवाहित स्त्री उसका अनादर करती है और उसकी मृत्यु की कामना करती है; क्योंकि इस दुनिया में सिर्फ पैसे की कीमत है इंसान की नहीं। ऐसा कहा जाता है कि एक वेश्या भी गरीब आदमी को छोड़ देती है।वेश्या का नाम तो प्रसिद्ध ही है।

लेकिन ऐसा देखा गया है कि एक विवाहित स्त्री भी स्वार्थवश अपने पति को त्याग देती है। माता, पिता, भाई, बहन, बहनोई, नौकर-चाकर तथा अन्य रिश्तेदार गरीब व्यक्ति को बुरी नजर से देखते हैं और उससे दूर रहते हैं। दुनिया पैसे के नियंत्रण में है। जिसके पास पैसा नहीं उसके पास कोई नहीं।

माता निर्धन पुत्र की निन्दा करती है, पिता उसका आदर नहीं करता, भाई बात नहीं करता, नौकर क्रोध करता है, पुत्र आज्ञा का पालन नहीं करता, स्त्री गले नहीं लगाती और मित्र धन माँगने के भय से बात नहीं करते। महिलाएं कामोत्तेजित होने पर भी गरीब पतियों को छूना पसंद नहीं करतीं; जिस प्रकार कीड़ों से दूषित शव को कोई छूना नहीं चाहता।

यह स्पष्ट हो गया कि कुछ महिलाएं ऊपरी तौर पर सुंदर होती हैं; अन्दर से उनका   बहुत गंदा भाव होता है और उनका हृदय पत्थर जैसा कठोर है। जिस समय वह क्रूर हो जाती है उस समय वह अपने दास की तरह सेवा करने वाले पति और अपनी कोख से जन्मे पुत्र को दोष देती है। कोई दया भी नहीं दिखाता. अपने स्वार्थ के लिए वह उन्हें भी मार डालती है और नर्क का रास्ता दिखा देती है।

अत: स्त्री के मोह में फँसना स्वयं को नष्ट करना है। जिस प्रकार पतंग दीपक की सुन्दरता से आकर्षित होकर स्वयं को नष्ट कर लेती है; इसी प्रकार कामातुर

व्यक्ति भी स्त्री के रूप पर मोहित होकर अपना लोक और परलोक खो देता है - इस जीवन में वह तीव्र चिंता की अग्नि में जलता है और मरने के बाद नरक में जलकर कष्ट भोगता है।

वास्तव में स्त्री, पुत्र आदि शत्रु हैं, परन्तु मनुष्य अज्ञानवश उन्हें अपना मित्र मानता है। महात्मा शंकराचार्य ने अपनी परीक्षा उत्तरमाला में लिखा है - "स्त्री और पुत्र मित्र प्रतीत होते हैं, परन्तु वास्तव में वे शत्रु हैं।"

एक व्यापारी और उसका बेटा

एक व्यापारी ने छह करोड़ रुपये कमाए और अपने बेटों को चार-चार लाख रुपये देकर अलग-अलग दुकानें दिलवाईं। , उसने बचे हुए पैसे को दीवारों में छिपा दिया। कुछ दिनों के बाद वह गंभीर रूप से बीमार हो गये। उसे प्रलाप हो गया और वह जोर-जोर से बोलने लगा। लोगों ने सोचा कि अब उसका अंत हो गया है और उनसे कहा – “सेठजी! आपने बहुत पैसा कमाया है, इस समय कुछ अच्छे कर्म करें, क्योंकि इस समय केवल अच्छे कर्म ही संभव हैं।

सेठ जी - मनुष्य मरता है पर उसके साथ धन संपत्ति और स्त्री-पुत्र आदि नहीं जाते। उस सेठजी का गला जम गया था, इसलिए वह कुछ बोल नहीं सके। वह बार-बार दीवारों की ओर इशारा करता था। उन्होंने इशारों में बताया कि इन दीवारों में दौलत दबी हुई है, उसे बाहर निकालो और नेकी करो।

सेठ के लडके ने अपने पिता की बात समझकर बोला-"पिताजी कहते हैं, जो कुछ धन-संपत्ति थी, वह तो इन दीवारों में ही रह गयी, अब कहाँ है?" लोग लड़के वालों की बात से सहमत हो गये. अपने पुत्रों की बेईमानी देखकर व्यापारी बहुत रोया, लेकिन बोल न सका, इसलिए छटपटाकर मर गया। लड़कों ने श्मशान में जाकर उसे जला दिया। व्यापारी मन ही मन रह गया। 'बेटों की इससे बड़ी दुश्मनी क्या हो सकती है?

जो लोग सैकड़ों प्रकार के अन्याय और बेईमानी से दूसरों का धन हड़प कर या अन्य प्रकार से संसार का गला काटकर लाखों-करोड़ों रुपये अपने बेटे-पोते-पोतियों के लिए छोड़ देते हैं, उन्हें इस कहानी से शिक्षा लेनी चाहिए और मिथ्या का त्याग करना चाहिए। अपने पुत्रों का मोह. इस संसार में कोई किसी का पुत्र अथवा पिता नहीं होता। माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी और बेटा सभी एक लंबी यात्रा के यात्री हैं।

यह नश्वर संसार उस यात्रा का मध्य बिंदु है। इस समय सभी लोग एकत्रित हुए हैं। किसी को किसी से सच्चा प्यार नहीं होता. स्वार्थ की डोर में सब एक दूसरे से बंधे हुए हैं। जब किसी के चलने का समय आता है तो वही व्यक्ति भय से मुक्त होता है। एक तरह से सबको छोड़ कर चला जाता है।

जो लोग मरने वाले व्यक्ति के लिए अपने प्राण त्याग देते थे या उसके लिए मरने को तैयार रहते थे, उनमें से कुछ लोग कुछ दूर तक उसके साथ जाते थे और कुछ उसे श्मशान में ले जाकर जलाकर भस्म कर देते थे। है। ऐसे सम्बन्धियों से स्नेह रखना-उनसे स्नेह रखना बहुत बड़ी भूल है।

“आत्मा अगली दुनिया के रास्ते पर अकेली जाती है; केवल कर्म ही उसके साथ चलता है। धन, भूमि, पशु और स्त्री घर में ही रहते हैं। लोग श्मशान जाते हैं और अंतिम संस्कार तक शव उनके पास ही रहता है।”

बहुत से लोग इस बात से सहमत हैं कि पुत्र के बिना मुक्ति नहीं है। पुत्रहीन मनुष्य नरक में तथा पुत्रहीन मनुष्य स्वर्ग में जाता है। जो लोग ऐसा सोचते हैं; वह बहुत बड़ी गलती करता है. बेटों से न तो कोई प्रगति हुई है और न ही होगी; हर किसी की प्रगति उनके अपने प्रयासों से होती है। यदि पुत्रों के माध्यम से स्वर्ग या मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, तो बहुत कम लोग नरक में जायेंगे।

जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। ब्रह्म हत्या, स्त्री हत्या, व्यभिचार और दूसरे का धन हड़पने जैसे विभिन्न पापों के अपराधियों को परिणाम भुगतना पड़ता है। जो लोग यह सोचते हैं कि यदि हम ऐसे पाप भी

करेंगे, क्योंकि हमारे बेटे-बेटियाँ हैं, तो हम दण्ड से बच जायेंगे, वे बहुत मूर्ख हैं। बुद्धिमान लोग स्वयं को सांसारिक बंधन से मुक्त करने के लिए अपने पुत्रों का भी बलिदान कर देते हैं।

एक ब्राह्मण और उसका अंधा बेटा

किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उनके कोई पुत्र नहीं था इसलिए उन्होंने गंगा की पूजा की। आखिरकार बुढ़ापे में उन्हें एक अंधा पुत्र प्राप्त हुआ। ब्राह्मण को अंधा पुत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने अनेक उत्सवों एवं दावतों का आयोजन किया। इसके बाद जब वह अंधा पुत्र पांच वर्ष का हो गया तो ब्राह्मण ने उसका पवित्र संस्कार किया और उसे विद्या सिखाना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में वह अंधा व्यक्ति पूर्ण विद्वान बन गया।

एक दिन पिता-पुत्र बैठे हुए थे। पुत्र ने अपने पिता से पूछा – “पिताजी ! बच्चा अंधा क्यों हो जाता है ?" पिता ने डाँटा - बेटा! "जो पिछले जन्म में रत्न चुराता है, वह अंधा होता है।" बेटे ने कहा - "पिताजी ! यह बात नहीं है। आप तो अंधे हैं, इसलिए मैं भी अंधा हूँ। मैं तो नालायक हूँ ?"

पुत्र ने कहा - "पिताजी ! माँ गंगा साक्षात मोक्ष देने वाली है। आपने पुत्र की इच्छा से उनकी पूजा की, इसलिए मैं आपको अंधा मानता हूँ। जो वेद पढ़कर भी मूत्र में कीड़ा चाहता है।" अंधा नहीं है क्या हो सकता है? जिस प्रकार मूत्र से अनेक प्रकार के कीड़े पैदा होते हैं, उसी प्रकार पुत्र भी उत्पन्न होता है। वह तो एक कीड़ा है। जिस पुत्र के लिए तुमने गंगा जी की इतनी तपस्या की, वह पुत्र कुत्ते, बिल्ली और सूअर के समान है।

बेटा ! न किसी का पुत्र है, न स्त्री है; सभी एक हैं, क्योंकि सभी में एक ही आत्मा है। वही आत्मा बाप में है बही। बेटे और औरत में। जिस प्रकार तालाब में जल दिखावटी प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में वहाँ जल का लेशमात्र भी नहीं होता; इसी प्रकार प्रेम से यह संसार सत्य प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में कुछ भी नहीं है। यह मेरा बेटा है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरा धन है, यह मेरा घर है - वासना से ऐसा दिखता है। वासना से ही जीव संसार के बंधन में बंधता है; अर्थात वासना के कारण ही व्यक्ति को शरीर प्राप्त होता है। वासना के कारण मनुष्य अज्ञानी होता जा रहा है।

जैसे ही मनुष्य अपनी इच्छाओं को त्याग देता है और ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसे आनंद की प्राप्ति हो जाती है।बुद्धिमान मनुष्य सच्चिदानन्दस्वरूप ब्राह्मणों को ज्ञान की आँखों से देखता है, परन्तु अज्ञानी मनुष्य उन्हें नहीं देख पाता। जिस प्रकार अंधों को सूर्य दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार अज्ञानी लोगों को भी दिखाई नहीं देता। 'नहीं' दिखता है; यही कारण है कि अज्ञानी व्यक्ति बाहरी आँखें होते हुए भी अंधा कहलाता है।

आपको भेदभाव छोड़कर सभी में एक ही आत्मा को देखना चाहिए। केवल प्रबुद्ध होने से ही तुम्हें शाश्वत सुख प्राप्त होगा।"पिता अपने पुत्र की प्रकांड पांडित्य और ज्ञान को देखकर आश्चर्यचकित हो गए और बोले, "बेटा, मैंने चारों वेद, छह शास्त्र, उपनिषद, स्मृति और पुराण पढ़े हैं। कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ; तुम्हारी बातों ने मेरी आंखें खोल दीं। संसार को मिथ्या समझने के बाद ही बुद्धिमान व्यक्ति कहता है:-- "हे मन! किसी स्त्री के प्रेम में मत भूलना; यह बिजली की चमक, नदी के प्रवाह और स्वयं नदी की तरह तरल है।

औरत के प्यार की कोई सीमा नहीं होती; आज तुम्हारा है, कल किसी और का होगा। एक करवट बदलने में रात अजीब हो जाती है.इसके झूठे प्यार से कोई फायदा नहीं होता। साँप, घोड़ा, स्त्री, राजा, नीच पुरुष और हथियार - इन पर सदैव नजर रखनी चाहिए, इनके प्रति कभी भी लापरवाही नहीं होना चाहिए, क्योंकि इन्हें पलटने में देर नहीं लगती।

हे मन ! यदि तुम्हें प्रेम करना है तो उठो, किनारे के वृक्षों के नीचे जाकर बैठो और आशुतोष भगवान चन्द्रशेखर--भगवान शिव से प्रेम करो। उसका प्यार सच्चा और फायदेमंद होता है। या तो भगवान के चरणों में प्रेम रखो या शरीर की सभी आसक्तियों को त्याग कर उदासीन हो जाओ और कर्म ज्ञान आदि साधनों से मन को शुद्ध करो। ईश्वर और संसार में से , इन दोनों चीजों में से जो नाशवान अहितकारी अनित्य संसार है , उसे छोड़ दें और उस श्रेष्ठ ईश्वर उसके साथ एक हो जायें ।

सारांश यह है कि ईश्वर के प्रति स्वाभाविक प्रेम रखें। यदि आपका मन भगवान की भक्ति में नहीं लग रहा है तो अपने मन को पत्नी, पुत्र आदि सांसारिक सुखों से हटाकर भगवान की भक्ति करने का प्रयास करें।

कब। जब आपका मन भगवान में लग जाए तो संसार से विमुख हो जाएं। मारो, ताकि लोगों के प्रति वासना मन में न आये; क्योंकि वासना के कारण हृदय की दृष्टि धूमिल हो जाती है। जब साँप की भीतरी त्वचा मोटी हो जाती है तो वह आँखों से स्पष्ट दिखाई नहीं देती; लेकिन जब वह गंदगी छोड़ देता है; फिर उसे अपनी आँखों से साफ़ दिखाई देने लगता है।

इसी प्रकार वासना का त्याग करने से भगवान के भक्तों का हृदय निर्मल रहता है और उन्हें भगवान के दर्शन होने लगते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०६१ .

हे मन ! आपके सामने चतुर गायक गाते हैं, दाहिनी और बाईं ओर दक्कन देश के श्रेष्ठ कवि मधुर काव्य सुनाते हैं, आपके पीछे ढोल बजाती हुई सुन्दर स्त्रियों के कुण्डलों की मधुर झनकार सुनाई देती है। यदि आपके पास ऐसी चीजें हैं, तो आप सांसारिक सुखों का आनंद लेने में लीन हैं। , नहीं तो सबका ध्यान छोड़कर निर्विकल्प समाधि में लीन हो जाओ।

हे मन ! आपके सामने चतुर गायक गाते हैं, दाहिनी और बाईं ओर दक्कन देश के श्रेष्ठ कवि मधुर काव्य सुनाते हैं, आपके पीछे ढोल बजाती हुई सुन्दर स्त्रियों के कुण्डलों की मधुर झनकार सुनाई देती है। यदि आपके पास ऐसी चीजें हैं, तो आप सांसारिक सुखों का आनंद लेने में लीन हैं। नहीं तो सबका ध्यान छोड़कर निर्विकल्प समाधि में लीन हो जाओ।

इसका मतलब यह है कि ये सभी शाही सामान, आराम और विलासिता नाशवान हैं। उन पर विश्वास करना मूर्खता है. इसलिए चाहे राजा हो, मंत्री हो या सामान्य मनुष्य, सभी को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि ये सब मात्र क्षणिक सुख देकर

मनुष्य के आवश्यक जीवन को नष्ट कर देते हैं। उचित तो यह है कि इन सबको त्याग कर ध्यान, योग और निर्विकल्प समाधि में लीन हो जाना चाहिए और केवल भगवान की ही भक्ति करनी चाहिए। जिससे हमारा अनमोल मानव जीवन सार्थक हो जाये।

वैराग्य शतकम् - ०६२ .

हे बुद्धिमानो ! स्त्रियों की संगति से बचें, क्योंकि उनकी संगति से मिलने वाला सुख अस्थायी होता है। आपको मित्रता, करुणा और ज्ञान की दुल्हन के साथ रहना चाहिए। जिस समय तुम्हें नरक में दण्ड मिलेगा, उस समय कन्याओं के बड़े-बड़े स्तनों के हारों से सुशोभित कमरे तथा उनकी कमर में बँधी हुई सुन्दर सोने की करधनियाँ तुम्हारी सहायता नहीं करेंगी।

मनुष्य! स्त्रियों में रुचि न रखें। उनके साथ रहने और उनके साथ समागम से जो ख़ुशी मिलती है; परन्तु वह सुख नाशवान और अस्थायी है। ऐसी कोई ख़ुशी नहीं जो हमेशा बनी रहे. फलस्वरूप यह अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बनता है। जो सुख शाश्वत है, शेष में वह दुःखों की जड़ और रोगों की खान है; उस सुख को सुख मानना बुद्धिमानों का काम नहीं है।

यदि तुम्हें मिलन करना है तो करुणा, दान और ज्ञान से युक्त किसी सुंदर स्त्री से प्रेम करो। उनके संग और प्रेम से तुम्हें नित्य सुख मिलेगा; तुम्हें ऐसा सुख मिलेगा जो इस लोक और परलोक में सदैव स्थिर रहेगा।

जिन्होंने पहले दूसरों के कष्ट दूर किये हैं, जिन्होंने परोपकार के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है, जिन्होंने सम्मान पूर्वक काम किया है, उनका ही भला हुआ है। यदि तुम स्त्रियों के सुखों में भूले रहोगे तो जब तुम्हें नरक की भयानक यातनाएँ सहनी पड़ेंगी, जब तुम पर नपुंसकों के लाठियाँ बरसेंगी, तब क्या स्त्रियों के हार से सजे हुए स्तन और ना ना प्रकार के आभूषणों से सजी हुई उनकी सुन्दर पतली कमर टिक पाएगी ? क्या आपकी रक्षा कर पायेगी ? क्या आपको मुक्ति दिलायेगी ? कदापि नहीं।

यदि ये कामनीय अंग प्रत्यंग मोक्ष मार्ग होते तो वह कब की पूर्वकाल में मुक्ति को प्राप्त कर चुकी होती। नहीं, इनसे कोई लाभ न होगा; उस वक्त ये बीच में नहीं आएंगे. उस अवसर पर दान-पुण्य करके आपने जो पुण्य अर्जित किया है, वह आपकी रक्षा करेगा। यह बेहतर होगा यदि तुम इस व्यवधान से दूर रहो।

क्योंकि ज्ञान ही तुम्हें नरक से बचने का मार्ग बताएगा; लेकिन एक औरत की चाह तुम्हें नरक का सीधा रास्ता दिखायेगी . आश्चर्य की बात है कि अज्ञानी लोग अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा समझते हैं।

इसका अर्थ है कि स्त्री चिंतन विष की लता है। इसकी जड़ें, इसकी शाखाएँ, इसकी पत्तियाँ और इसके फल सभी जहरीले हैं। संक्षेप में कहें तो स्त्री का पूरा शरीर जहर से भरा होता है। औरत का कोई भी अंग ऐसा नहीं है जिसमें जहर न हो. यह स्त्री रूपी विषबेल अज्ञानी लोगों को फंसा कर उनका नाश कर देती है।

और जब यही स्त्री मात्र रूप में स्वीकृत की जाती है , तो वही विष प्रपंच , दिव्य अमृत के रूप में परिणत हो जाता है। वही स्त्री अमृतस्वरूपा बन जाती है। फिर कोई भय नहीं होता।जैसे म्यान में रखी हुई तलवार कभी धारक को क्षति नहीं पहुँचाती ।

जहर की मिट्टी में जहर के अंकुर फूटे। तभी स्त्री रूपी एक विशाल लता उगी। उस लता में विषैली जड़ें उग आईं और विषैली शाखाएँ और पत्तियाँ निकल आईं। तब उन बेलों में फल और विष के कुण्ड उत्पन्न हो गए। उस विषाक्तता से विषैले रेशे निकले। तब उस लता ने अपना विषैला जाल फैलाकर नर वृक्षों को घेर लिया और उन्हीं से लिपट गई।

सुन्दरदास जी कहते हैं, उस विषैली लता के पाश में मनुष्य रूपी अधिकांश वृक्ष फँस गये - केवल संत रूपी दुर्लभ वृक्ष ही उससे अछूता रह सका। उनके अपने शरीर पर यह विषैली लता दिखाई नहीं देती थी।

इसका मतलब यह है कि स्त्री विष की लता है। इसकी जड़ें, इसकी शाखाएं, इसके पत्ते और इसके फल सभी जहर से भरे हुए हैं। संक्षेप में कहें तो स्त्री की योनि विष से भरी होती है। स्त्री का कोई भी अंग ऐसा नहीं है जिसमें दोष न हो। यह स्त्रीरूपी विषबेल अज्ञानी मनुष्यों को फंसाकर उनका नाश कर देती है; क्योंकि जहर स्वभावतः घातक होता है।

आंसुओं की इस जहरीली बेल से वही लोग बच पाते हैं, जो ज्ञानी हैं, जो इसकी वास्तविकता जानते हैं, जिन्होंने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर लिया है, जिनकी इंद्रियां विषयों की ओर झुकती नहीं हैं।

एक और रहस्योद्‌घाटन यह है कि एक महिला एक जहरीली छतरी की तरह होती है, जहरीली छतरी जिस पेड़ से चिपक जाती है उसे नष्ट कर देती है।

इसी तरह जो स्त्री किसी कामुक पुरुष के पीछे भागती है या जो पुरुष किसी स्त्री के जाल में फंस जाता है, वह भी हर तरह से नष्ट हो जाता है। इसके सभी अंग विष से भरे हुए हैं। कि इसी प्रकार जहर खाने से जहर फैलता है; वैसे ही इसकी आंखें, इसकी. गाल, भौहें, स्तन और नितंब, शरीर का कोई भी भाग देखने या छूने से विषैला हो जाता है। विष की उपस्थिति से बुद्‌धि नष्ट हो जाती है।

बुद्‌धि के नष्ट हो जाने से मनुष्य बिना पतवार की नाव की भाँति नष्ट हो जाता है। इस जीवन में अनेक प्रकार के रोग और दुःख भोगकर मृत्यु हो जाती है और परलोक में भी दुःख मिलता है। इस लोक में मनुष्य दुःख भोगता है, जहां इस स्त्री के विष का प्रभाव पड़ा है वह अनेक जन्मों तक दुःख भोगता है।

और जो जहर खाता है वह एक ही बार मरता है; परन्तु जो स्त्री के विष से ग्रसित हो जाता है, वह सदा के लिये मर जाता है। इसलिए बुद्धिमानों को इस स्त्री रूपी विष से सदैव दूर रहना चाहिए, ताकि इसका जहर शरीर में न फैले।

स्त्री का शरीर अत्यंत चिकना और अत्यंत अशुद्ध या गंदा होता है। इसका रोम-रोम गंदा है और सभी दरवाजे गंदे हैं। "इसका शरीर हड्डियों, मांस, शराब, वसा और त्वचा से ढका हुआ है। इसके अंदर जगह-जगह खून से भरी नलियां हैं। पेशाब और शौच की आंतें एक दूसरे को छू रही होती हैं। इन सबके अलावा पेट कई अन्य तरह की गंदगी से भी भरा रहता है।

सुंदरदास जी कहते हैं, स्त्री एड़ी से लेकर पैर तक निंदनीय है - पैर से सिर तक वह निंदा के योग्य है। जो लोग ऐसी निंदनीय स्त्री की प्रशंसा करते हैं वे निश्चय ही बड़े मूर्ख और कामी हैं।

रहस्योद्घाटन यह है कि, विषय वासना के सतह पर, एक महिला एक अच्छी महिला है, लेकिन वास्तव में वह गंदगी का ढेर है। इसकी नाक रूट से भरी होती है। इसकी आंखें काजल से सुन्दर दीखती है परतु चिपचिपे पदार्थ से भरी हुई हैं। इसमें कफ भरा रहता हैं। आश्चर्य है कवियों ने इन अंगों की कितनी भूरी भूरी प्रशंसा की है ! मूत्र अंग से सफेद या लाल रंग का गंदा पदार्थ द्रवित होते रहता है। जांघें पेशाब से गीली रहती हैं, अबोध बालक की तरह । मल-मूत्र त्यागने की इन्द्रियों में दो अंगुल से अधिक का अन्तर नहीं होता।

धन्य है वे कवि और उनकी कविता , जिनमे इन्हीं अंग प्रत्यंगों को बखूबी बड़ी रोचक और सुंदरता से प्रस्तुत किया गया। कमल , चाँद तारों , चन्द्रमा और ना जाने किन किन प्रकृत वस्तुओं से इस नाशवान शरीर की तुलना की गयी है। जिन स्तनों पर कामुक लोग दीवाने होते हैं, जिन्हें वे सुंदर सोने के दो कलश, फूलदान, कामदेव के डमरू या संतरे और अनार कहते हैं, वे दो मांसल, गोल-मटोल गेंदों के सिवा और क्या है ?

ये चमड़े से ढके होते हैं, इसलिए इनके अंदर गंदगी छिपी रहती है। मृत्यु पर्यन्त जा वही स्त्री का शरीर शमशान पे पड़ा रहता है , तब उन्हीं स्तनरूपी मांस के दो गेंदों को , कुत्ते और सियार बड़े चाव से भक्षण करते हैं। जो लोग गंदगी के ऐसे भंडार की प्रशंसा में कवितायें लिखते हैं वे वास्तव में मूर्ख और असंस्कृत, महिलाओं के मूर्ख गुलाम नहीं तो और क्या हैं?

कामुक सुखों से संबंधित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से बनी और सजी हुई स्त्री वस्तु लोगों को बहुत प्यारी लगती है। जब शक्तिशाली वासना जागृत होती है तो वे उसका विस्तार से वर्णन करने में अपनी सरल बुद्धि खर्च कर देते हैं। वे ऊपर से लेकर पैर तक शरीर के हर अंग की तारीफ करते हैं। जैसे रोगी मिठाई खाकर अपने रोग को बढ़ा लेता है; इसी प्रकार जो लोग किसी पराई स्त्री या प्रेमिका को गोद लेते हैं, आलिंगन करते हैं , वे जानबूझकर अनेक प्रकार के रोगों और दुखों को निमंत्रण देते हैं।

उन्हें हर तरह से कष्ट सहना पड़ता है। अनेक प्रकार के रोग होते हैं, बल घट जाता है, आयु कम हो जाती है, हर क्षण चिन्ताग्रस्त रहना पड़ता है। शान्ति निकट नहीं आती और ईश्वर की आराधना में मन नहीं लगता। उसे संतुष्ट करने की चिंता हमेशा बनी रहती है. मृत्यु के समय भी मन उसी में अटका रहता है, आत्मा उसे छोड़ना नहीं चाहती, उसके साथ ही रहना चाहती है, लेकिन समय आने पर कोई एक क्षण भी इस शरीर में नहीं रह पाता।

अतः शरीर छोड़ना ही पड़ेगा; लेकिन चूंकि स्त्री का मन स्थिर रहता है, उसकी वासना मन में ही रहती है, इसलिए वासना के कारण ही दोबारा जन्म लेना पड़ता है। जिसका जन्म हुआ है उसे मरना भी है। इस प्रकार जो पुरुष किसी स्त्री से प्रेम करता है उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है और बार-बार मरना भी पड़ता है। इससे मुक्ति कोसों दूर रहती है.

जन्म और मृत्यु के घोर कष्ट सहने पड़ते हैं। उसे कभी: सुख नहीं मिलता; उसे मोक्ष नहीं मिलता. इसीलिए कहा जाता है कि जो लोग स्त्री को पालते हैं लेकिन उसके हित के बारे में नहीं सोचते, उनका अंत बुरा होता है।

वैराग्य शतकम् - ०६३ .

किसी भी जीवित प्राणी पर हिंसा न करना, किसी दूसरे की संपत्ति न चुराना, सच बोलना, सही समय पर अपनी क्षमता के अनुसार दान करना, अजनबियों के साथ चर्चा में चुप रहना, शिक्षकों के सामने विनम्र रहना, जरूरतमंदों के प्रति दयालु रहना और विभिन्न धर्मग्रंथों में समान विश्वास रखना, - ये सभी शाश्वत सुख प्राप्त करने के निश्चित उपाय , शास्त्रों में बताये गए हैं।

यदि आप मोक्ष का अचूक मार्ग चाहते हैं, यदि आप शाश्वत सुख और शांति चाहते हैं, यदि आप चिरस्थायी समृद्धि चाहते हैं, तो किसी भी जीवित प्राणी को नष्ट न करें; अपने पेट के लिए किसी को मत मारो. जब भी मौका मिले, गरीबों और निराश्रितों को अपनी शक्ति का दान करें, उनके कष्ट दूर करें; उनके कष्ट को अपना कष्ट समझकर उनका कष्ट दूर करें।

जहां दूसरी महिलाओं का जिक्र हो वहां मत बैठो; अगर बैठना ही पड़े तो ज़बान से कुछ मत बोलो। अपने माता-पिता तथा गुरुजनों के सामने सदैव विनम्र रहें, उनकी आज्ञा का पालन करें, उनका आदर करें; भूलकर भी उनका अपमान न करें. छोटे-बड़े सभी प्राणियों के प्रति दयालु रहें। सभी धर्मग्रंथों के साथ समान व्यवहार करें; किसी पर भरोसा मत करो और किसी पर भरोसा मत करो, क्योंकि सबका लक्ष्य एक ही है, सब वहीं पहुंच जाते हैं।

जैसे नदियाँ मस्ती से बहती हैं और समुद्र में मिल जाती हैं; इसी प्रकार सभी धर्मग्रन्थ अपने-अपने ढंग से मोक्ष या ईश्वर का मार्ग बताते हैं। जिनके पास ऐसा विश्वास नहीं है, वे तर्क-वितर्क के जाल में फँसते हैं, व्यर्थ भटकते हैं और अपनी मंजिल-परम मंजिल तक नहीं पहुंच पाते।और फिर किसी पागल की तरह से गलियां गलियां भटका करते है। अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा बैठते हैं।

ईश्वर-भजन; गुरु, साधु-महात्मा तथा ब्राह्मणों की सेवा करना; जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होना; दुनिया पर नज़र रखना – सबको एक आँख से देखना ; सबको खुश करने के लिए; सुनीति का अनुसरण और सत्यव्रत का पालन - ये सात स्वर्ग तक पहुँचने के सात सोपान हैं। जो लोग इन कार्यों को वासना के साथ करते हैं, इन कार्यों का फल चाहते हैं, वे स्वर्ग की दुनिया में जाते हैं और जो लोग इन कार्यों को बिना वासना के करते हैं, वे भगवान में विलीन हो जाते हैं।जैसे नौकरी उद्योग करने वाला , मासिक वेतन पा जाता है। परन्तु , जो वेतन नहीं पाता , वह तो मालिक का अधिकारी लड़का है। वह सारे की सारी कंपनी का ही अधिकारी बन बैठता है।

रहस्योद्घाटन यह है कि, जो लोग भगवान की पूजा करते हैं, गुरुओं, महात्माओं और ब्राह्मणों की सेवा करते हैं और उनसे सलाह लेते हैं, जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होते हैं, किसी भी जीवित प्राणी को अपनी शक्ति से पीड़ित नहीं होने देते हैं, सभी को समान दृष्टि से देखते हैं, ...ना किसी से दोस्ती ना किसी से दुश्मनी; गपशप हर किसी को खुशी देती है - इससे किसी को दुःख नहीं होता।

न्याय और नैतिकता के मार्ग पर चलें - अन्याय से बचें और अत्याचार न करें वे हमेशा सच बोलते हैं - कभी सपने में भी झूठ नहीं बोलते - वे स्वर्ग जाते हैं, क्योंकि ये स्वर्ग की सात सीढ़ियाँ हैं।

गोस्वामी जी ने ऊपर खड़ग पर चढ़ने की सात सीढ़ियाँ बताई हैं, अब वे नरक में जाने के तीन रास्ते बताते हैं:- जो चोरी करते हैं। , जो लोग बलपूर्वक या धोखाधड़ी करके या अन्य तरीकों से धोखाधड़ी करके किसी और का धन हड़प लेते हैं, जो लोग अन्याय और अधर्म करते हैं - दूसरे की स्त्रियों से प्रेम करते हैं,

किसी और की निंदा या बदनामी करते हैं, किसी और का काम बिगाड़ते हैं, जुआ खेलते हैं, वेश्यावृत्ति या वेश्यावृत्ति में संलग्न होते हैं।

अपने सुख के लिए प्राणियों की हत्या करते हैं या प्रलोभन के वशीभूत होकर हत्या करते हैं, यानी छल, अन्याय और हिंसा का सहारा लेते हैं, वे निश्चित रूप से नरक में जाते हैं, क्योंकि ये तीन कर्म नरक के साधन हैं।

वैराग्य शतकम् **- 064 .**

हे माँ लक्ष्मी ! अब किसी और की तलाश करो, मेरी इच्छा मत करो; अब मुझे भौतिक सुखों की इच्छा नहीं है; मेरे जैसे निस्वार्थ, इच्छा हीन व्यक्ति के सामने आप नगण्य हैं। क्योंकि अब मैंने हरे पत्तों से बने पात्र में भिक्षा स्वीकार कर जीविकोपार्जन करने का निश्चय कर लिया है।

जो अपनी इच्छाओं को नष्ट कर देता है, जो किसी भी भौतिक वस्तु, लक्ष्मी की इच्छा नहीं करता है, वह दुनिया के सबसे बड़े सुख और धन को भी तुच्छ समझता है; वह राजाओं में कोई भी महान नहीं माना जाता। जो जड़ और फलों पर से गुजरती है या भिक्षापात्र में पानी में सत्तू मिलाकर पीती है। उसे तो कपड़ों की भी जरूरत नहीं, उसे परवाह क्यों होगी? वह कहाँ उदास है?

यदि मनुष्य को सच्चा सुख चाहिए, यदि वह परमात्मा या परमात्मा को चाहता है तो उसे “इच्छा” रूपी राक्षस का त्याग कर देना चाहिए। सभी परेशानियों की जड़ है "इच्छा"।

वैराग्य शतकम् **- 065 .**

पहले हमारा तुमसे इतना गहरा रिश्ता था कि; तुम थे और मैं था, और मैं था और तुम थे। अब क्या फर्क है? कि मैं सिर्फ मैं हूं और तुम सिर्फ तुम हो !

पहले तुममें और मुझमें कोई फर्क नहीं था. तुम जो भी थे, मैं भी था और जो भी मैं था, तुम भी थे। आप और मैं दोनों एक साथ थे - आप और मैं दोनों पहले कामुकता से जुड़े हुए थे; लेकिन: अब बड़ा फर्क आ गया; इसका मतलब है कि आप अभी भी विषयों से जुड़े हुए हैं, लेकिन मैं विषयों से अलग हो गया हूं। जब मैंने तुम्हें काम - वासना के कुँए से बाहर निकालने की कोशिश की, तो तुमने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने ज़हरीले कुएँ में खींचने की कोशिश की।

इसीलिए मुझे तुम जैसे कामी मित्र से भी अलग होना पड़ा, इसका दुःख मुझे अब तक है। - सांसारिक सुखों और इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। लेकिन मित्र, अब तो मैं उनसे डरने लगा हूँ - थक गया हूँ; मुझे उनमें कोई सार नजर नहीं आया, इसीलिए मैंने अब खुद को सबसे अलग कर लिया है और संन्यास ले लिया है। आप अभी तक नर्क में ही हैं, परंतु अपने विवेक और बुद्धि का प्रयोग करके नरक से मुक्त हो सकते हैं।

मैं नर्क से निकल कर स्वर्ग में आ गया हूं। तुम अभी भी दुःख के बीज बो रहे हो; लेकिन अब मैं खुशियों के बीज बो रहा हूं।' दोस्त! तुम भी मेरी तरह उन भयावह जंगलों को छोड़कर मेरी तरह ख़ुशी की राह पर क्यों नहीं आ जाते! दोस्त! इस मार्ग में सुख है, उस मार्ग में अत्यंत दुःख और नारकीय यातना है। संसार को छोड़कर ईश्वर से प्रेम करने में बहुत आनंद है।जैसे सोने के कंगन को छोड़कर , पारसमणि को ग्रहण करने में है।

वैराग्य शतकम् - ०६६ .

ओह सुंदर लड़की ! अब तुम अपनी मोहक माया से अधखुली आँखों से मुझ पर क्यों व्यंग्य बाण चलाती हो! जब मैं तुझे चाहता था तब तो स्वर्ण मृग की तरह फुदकियाँ भरते हुए भाग जाया करती थी। अब मैं तुझसे से विमुख हो गया हूँ तो क्यों तू मेरे पीछे , छुपकर , चुपके से घात लगाया करती है ? अब तुम उन आँखों को रोक लो जो वासना को जन्म देती हैं; इस मेहनत से आपको कोई लाभ नहीं मिलेगा। अब हम पहले जैसे नहीं रहे. हमारी जवानी चली गयी।

अब हमने वन में रहने का निश्चय कर लिया है और मोह-माया त्याग दी है; अब हम इन्द्रिय सुख को घास से भी बदतर समझते हैं। जब से मैंने शराब पीना छोड़ दिया है, बसंत लक्ष्मी का चेहरा पीला पड़ गया है. जब तक मैं शराबी था, मैं

उसकी सुंदरता से प्रभावित था। अब मुझे उस सुंदरता में कुछ खास नजर नहीं आता। अब मैं समझ गया। तुझ में सुंदरता कछु नहीं है।

वो मेरी शराबी , नशीली आंखों का कमाल था, जो तुझमें मुझे सुंदरता दीखि , तू तो कुरूपता की खान है। जो सत्यम , शिवम , सुंदरम भगवान से मुझे विमुख कर रही है।तू तो साक्षात् माया की बहन ही है।तुझ से और क्या अपेक्षा की जा सकती है ?

किसी कवि ने कहा है ;

“माया ऐसी पापिनी , करे हरि सो हराम।
कटु कड़ाई जीभ की , मुख बिसरावे नाम।।”

वैराग्य शतकम् - ०६७ .

यह सुंदर छोटी लड़की नीले कमल की सुंदरता से भी अधिक सुंदर आंखों से मुझे बार-बार क्यों चिढ़ाती है ? मुझे समझ नहीं आया, इसका मतलब क्या है ? अब मेरा मोह दूर हो गया-वासना के पुष्पों से निकलने वाली अग्नि की ज्वाला शान्त हो गई। हैरानी की बात तो यह है कि अब भी यह नादान नन्ही सी सुंदरी अपनी कोशिशों से बाज नहीं आती।

जिनका मोह का जाल कट गया है, जिनकी कामुक इच्छाएं शांत हो गई हैं, जो स्त्रियों की असलियत समझते हैं। जो उन्हें नरक का द्वार समझते हैं, उन पर स्त्रियों का दुष प्रभाव नहीं पड़ता है।

व्यंग्य बाणों का कोई असर नहीं होता. हाँ, वे अपने स्वभाव के अनुसार अपने तीखे तीर चलाते हैं - वे अपना जाल फैलाते हैं; लेकिन दार्शनिक लोग इनके जाल में नहीं फँसते। उनके अचूक बाण उन पर विफल हो जाते हैं।ऐसे ही जैसे गेंद को पाषाण पर फेंकने से , उस पाषाण पर कुछ भी असर नहीं होता , उलटे वह गेंद फेंकने वाले के पास ही लौट आता है।

वैराग्य शतकम् - ०६८ .

क्या संतों के रहने के लिए अच्छे महल नहीं थे, क्या सुनने के लिए अच्छे गाने नहीं थे, क्या सुंदर महिलाओं की संगति में रहने का आनंद नहीं था, जो वे लोग जंगलों में रहने के लिए चले गए ! हाँ सब कुछ। था ; लेकिन वह इस संसार से ऐसे बेचैन होकर चले गये जैसे गिरती पतंग के पंखों से उत्पन्न हवा में दीपक की छाया हिलती है; अथवा जो मूर्ख पतंग हवा के झोंके से हिलते हुए दीपक की छाया में छटपटाहट करके अपने शरीर को जलाकर राख कर लेती है, उसी प्रकार उसने स्वयं को नष्ट होते देख कर इस तुच्छ संसार छोड़ दिया।

यह संसार दीपक की लौ के समान है और इसमें रहने वाले प्राणी पतंगों के समान हैं। जिस प्रकार मूर्ख पतंगा दीपक की ओर आकर्षित होकर उस पर गिर जाता है

और जलकर राख हो जाता है, उसी प्रकार इस संसार में मनुष्य वास्तविकता को न समझकर तथा उसके भ्रम में फंसकर नष्ट हो जाते हैं। जैसे पतंगा यह नहीं समझता कि दीपक से प्रेम करने में मेरे मन में कुछ भी नहीं आएगा, वस्तुतः मेरे प्राण ही निकल जायेंगे।

उसी प्रकार सांसारिक लोग यह नहीं समझते कि हम इन सांसारिक कामनाओं और वासनाओं में फंसकर, इनसे प्रेम करके स्वयं को नष्ट कर लेंगे। जो बुद्धिमान और विचारशील हैं वे इन बातों को समझते हैं; इसलिए, हम सांसारिक वस्तुओं से आसक्त नहीं होते हैं और अपने विनाश से बचते हैं।

संसार को अनित्य और उसके विनाश का कारण मानकर वे अपना मन इससे हटाकर ईश्वर में लगा देते हैं। वे स्वयं को नई दुनिया का यात्री मात्र मानते हैं और सदैव मृत्यु को ध्यान में रखते हैं। यह शरीर एक सराय है, मन एक चौकीदार है।

मन-इच्छा एक पथिक है, जो शरीर की इस सराय में उतरा है; इस दुनिया में कोई किसी का नहीं होता. कबीर ने खूब जांच-पड़ताल की! उसके पैरों में रस्सी पड़ी हुई है. फिर भी तुम खुली जंजीर में क्यों सो रहे हो? देखो, इस दुत्रिया से चलने की ढोल जैसी साँस दिन-रात बज रही है !

यदि तुम चौपड़ के इस खेल में सचेत नहीं रहोगे, इस जन्म में भी सचेत नहीं रहोगे, शरीर को पशु की तरह पालोगे और राम को नहीं जानोगे; तो आख़िर में मरने के बाद यह धूल भरा , अशुद्ध सूक्ष्म शरीर ही साथ चलेगा ।

वैराग्य शतकम् - ०६९ .

क्या पहाड़ों की गुफाओं में जड़ें नहीं हैं, और उनकी चट्टानों में पानी के झरने नहीं हैं, क्या छाल वाले पेड़ों में रसदार फलदार शाखाएँ नहीं हैं, जो घमंडी और नीच लोगों के सामने खुद को विनम्र करते हैं, जिनकी भौहें गर्व से उठी हुई हैं और जिन्होंने बड़ी मुश्किल से थोड़ी सी संपत्ति जमा की है। कर चुके है !

पहाड़ों में रहने के लिए गुफाएँ, खाने के लिए तालाब, पीने के लिए मीठे और रसीले फल होते हैं; फिर भी, हम धनवान , घमंडी लोगों के टेढ़े विकृत चेहरों को क्यों देखते हैं ! उनके आँसू खट्टे क्यों होते हैं, जिनकी आँखें उस थोड़े से धन के कारण नहीं खुलती हैं जो उन्होंने किसी तरह बड़ी कठिनाइयों से इकट्ठा किया है।

ऐसे नीच और घमंडी लोगों से अपमानित होने से बेहतर होगा कि हम पहाड़ों में रहकर फलों और ठंडे पानी का आनंद लें। इससे उनकी आत्मा बहुत प्रसन्न होगी; अहंकारी और घृणित धनवानों के बुरे शब्दों से दिल जलकर राख हो जाती है।

पहाड़ों में रहने के लिए गुफाएँ हैं, खाने के लिए जड़ें हैं, पीने के लिए उनके झरनों का पानी है और पेड़ों में मीठे और रसीले फल हैं; फिर ऐसे नीच और अहंकारी लोगों से अपमानित होने की बजाय बेहतर होगा कि पहाड़ों में रहें और फलों और ठंडे पानी के लिए प्रार्थना करें। इससे उसकी आत्मा बहुत प्रसन्न होगी; अहंकारी और घृणित धनिकों के बुरे वचनों से आत्मा जलकर भस्म हो जाती है।

यदि कुछ भी संभव हो, यदि आत्मसम्मान की तनिक भी चिंता हो तो मनुष्य को अपनी "इच्छा" को नष्ट कर देना चाहिए। इच्छाओं से रहित व्यक्ति सात राज्यों के राजा के प्रति भी थोड़ा सम्मान रखता है। नम्र होकर धनवानों से वस्तुएँ माँगना बहुत बुरी बात है।

तुलसी कर पर कर करो, कर तर कर न करो |
जा दिन कर तर कर करो, ता दिन मरन करो॥

माँगन मरण समान है, मत कोई मांगो भीख |
माँगन से मरना भला , यह सतगुरु की सीख ||

हे भगवान ! हमारा हाथ सदा ऊपर को रहे। कभी किसी के सामने हम हाथ न फैलायें। जिस दिन हमारा हाथ नीचे , माँगने को झुका , उसदिन हमारी मृत्यु हो जाए , यही उत्तम गति है। मांगने से मरना भला होता है। इसका मतलब यह है कि जब तक हम दूसरों को देते रहेंगे, तब तक हम जीवित रहेंगे; जिस दिन हम भीख माँगने आएँगे, उस दिन मर जाएँगे।

मांगना मरने के बराबर है. इसलिए किसी को भीख नहीं मांगनी चाहिए. सतगुरु की शिक्षा है कि मांगने से मरना बेहतर है। यदि नम्रता ही करनी है तो ईश्वर के साथ करो। उनके सामने विनम्र रहकर सभी इच्छाएं पूरी की जा सकती हैं। भगवान को थोड़ा सा याद करने से ही बहुत खुशी मिलती है, बशर्ते याद करना आता हो। इसमें न तो सूत की आवश्यकता होती है और न ही बुनाई की; सहजता में आनंद है।

वह इंसान है! गुरुओं को याद करने में देर न करें। उनकी कहानी में कई छायाएं हैं. जो व्यक्ति अपनी कमियों को याद रखता है, संसारी लोग इस संसार में भी उसकी सेवा करते हैं और जब वह मर जाता है तो भी उसकी सेवा करते हैं। जब वह दूसरी दुनिया में जाता है, तो वह स्वर्गपुरी में बस जाता है।

वैराग्य शतकम् - ०७० .

हिमालय पर्वत की वे चट्टानें जो गंगा जल की लहरों से उठे छींटों से ठंडी हो जाती हैं। रहे हैं और कहां हैं. चारों ओर विद्याधर बैठे हैं ना। जो लोग दूसरों द्वारा दी गई रोटी के टुकड़े पर जीवित रहते हैं।

दूसरों के टुकड़ों पर जीने से मरना बेहतर है। यदि पूछना ही हो तो पूछने की विधि चातक से सीखनी चाहिए। एक से ही मांगता है, दूसरे से सब कुछ मांगता है, परिंदा भी नहीं मांगता, चाहे मर भी जाये; और मांगने में भी यही गुण है कि वह नम्र होकर नहीं मांगता, सिर झुकाकर नहीं लेता। वह छोटों से नहीं माँगता।

कोई भगवान से ही मांगता है. चातक के समान याचक और बादल के समान दाता संसार में कौन है? धिक्कार है उन लोगों को जो दूसरों से मांगते हैं और सबके पैर पकड़ते हैं! अतः मनुष्यो ! पपीहा जैसे एक ही घनश्याम से मांग लो।

तुलसीदास जी कहते हैं- तीनों लोकों में एक ही पपीहा का सिर सबसे ऊंचा है, क्योंकि वह अपने स्वामी के अलावा कभी किसी का आज्ञाकारी नहीं रहा। पपहिया की जाति ऊँची है; क्योंकि यह नदी, तालाब आदि का पानी नहीं पीता। वह या तो स्वाति नक्षत्र में से पानी मांगता है या कष्ट सहता है।

ऐसी स्थिति में प्रेम करने वाले को बादल के सिवा और कौन दे सकता है? भगवान ने जिन्हें दान देने के योग्य बनाया है, उन्हें गरीबों और जरूरतमंदों को दिल खोलकर दान देना चाहिए। जो देते हैं, उन्हें वापस मिलता है और जो देते हैं उनका ही जीवन सफल होता है।

वैराग्य शतकम् - ०७१ .

जब प्रलयकाल की अग्नि से सुमेरु पर्वत गिर जाता है; यहाँ तक कि समुद्र भी, जहाँ मगरमच्छ रहते हैं, सूख गया लगता है; पर्वतों के पैरों से दबी हुई पृथ्वी भी नष्ट हो जाती है; तो फिर उस मनुष्य का क्या हिसाब जो हाथी के कान के समान चंचल है ?

जब काल सुमेरु पर्वत को गिरा देता है। पर्वतों को जला देता है, समुद्रों को सुखा देता है और पृथ्वी को नष्ट कर देता है, तब इस छोटे, चंचल मनुष्य की गिनती क्या की जाय? इसके नष्ट होने में आश्चर्य क्या है ?

वैराग्य शतकम् - ०७२ .

एकांत में रहना, इच्छाओं का त्याग करना, शांत रहना, अपने हाथों से पानी पीना, पीने के बर्तनों का उपयोग करना, दिशाओं को वस्त्र समझना; यानी नग्न रहना और कर्म की जड़ को उखाड़ने में सक्षम होना सिद्ध होता है। ये कल्याण के मार्ग हैं। जिनमें ये गुण हैं वे धन्य हैं और वे ही वास्तव में सुखी हैं।

वैराग्य शतकम् - ०७३ .

यदि मनुष्यों को समस्त मनोकामनायें पूर्ण करने वाली लक्ष्मी मिल जाती तो क्या होता ? अगर दुश्मन हार गए तो क्या होगा ? अगर पैसा दोस्तों की खातिर इस्तेमाल किया जाए तो क्या होगा ? यदि हम इस शरीर में एक कल्प तक इस संसार में रहें तो क्या होगा ? परलोक में साथ एक कौड़ी तक को नहीं ले जा सकते। सब धन संपत्ति यहाँ , धरी धरी ही रह जायेगी। हाथ तो कुछ ना लगेगा।

वैराग्य शतकम् - ०७४ .

अगर मैं चिथड़ों से बना गोदड़ी पहनूं तो क्या होगा ? अगर निर्मल सफेद कपड़े पहने या पीले कपड़े तो क्या होगा ? यदि केवल एक ही महिला हो तो क्या होगा? यदि अनेक हाथियों और घोड़ों के साथ अनेक स्त्रियाँ भी मिल जायें तो क्या होगा? यदि आप शाम को तरह-तरह के व्यंजन खाते हैं या साधारण भोजन करते हैं तो क्या होगा ? चाहे कोई कितनी भी महिमा क्यों न प्राप्त कर ले, यदि वह आत्म-ज्ञान के प्रकाश को नहीं जानता है जो उसे संसार के बंधन से मुक्त करता है, तो उसने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है ?

सोने की नौका में चढ़ा , सोने की नौका डूबी और खुद भी डूब गया। घोर कष्ट उठाया , पर निष्फल हो गया। वही काठ की नाव होती तो , न कष्ट उठाना पड़ता और आनंद से नदिया पार कर लिया होता।

इसका मतलब यह है कि जो आनंद संपूर्ण विश्व के राज्य-वैभव में या त्रिभुवन का अधिपति होने में नहीं है, वह आत्म-ज्ञान या ब्रह्मज्ञान में है। आत्म ज्ञान से ही मनुष्य जीवन और मृत्यु के कष्टों से मुक्त होकर परम शांति प्राप्त करता है।अन्य किसी कष्टप्रद मार्ग से भी नहीं।

यदि अरबों-खरबों की सम्पत्ति हो और जहाँ सूर्य रहता हो वहाँ राज हो, फिर भी यदि स्वयं की मृत्यु हो जाय तो इन सब से क्या लाभ? धन और शक्ति सभी जीते जी काम आते हैं, मरने के बाद कोई काम नहीं आते।

वैराग्य शतकम् - ०७५ .

और हमें भगवान से कौन सा विशेष त्याग माँगना चाहिए ? सदैव शिव की भक्ति होनी चाहिए, हृदय में जन्म-मृत्यु का भय नहीं होना चाहिए। अपने परिवार के प्रति प्रेम नहीं होना चाहिए, व्यक्ति को वासना और मन के विचारों से मुक्त रहना चाहिए और संभोग के दोषों से मुक्त होकर जंगल में रहना चाहिए।

ईश्वर के प्रति प्रेम होना, मन में जन्म-मृत्यु का भय न होना, बन्धु-बान्धवों के प्रति प्रेम न होना, मन में स्त्री की इच्छा न होना, जंगल में एकान्त स्थान पर

अकेले रहना- ये त्याग के पूर्ण लक्षण हैं। इनसे बढ़कर वैराग्य का कोई लक्षण नहीं है।

वैराग्य शतकम् - ०७६ .

इसीलिए मनुष्यो! शाश्वत, अमर, अविनाशी और शांतिपूर्ण ब्रह्म का ध्यान करें। मिथ्या भ्रम में क्या रखा है? ब्रह्मा की दृष्टि में जिसे थोड़ा सा भी आनंद मिलता है, उसके लिए सभी राजाओं का आनंद तुच्छ प्रतीत होता है।

इसका अर्थ यह है कि लोगों को अनादि, अजर, अमर, अविनाशी, दुःख रहित, शांतिपूर्ण ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए। उसके ध्यान में पूर्ण आनन्द है; संसार के सुखों में तनिक भी आनंद नहीं है। वह आनंद चिरस्थायी है; यह खुशी क्षणिक है. इसमें सदैव प्रसन्नता रहती है; इसमें सदैव दुःख रहता है। जो लोग ब्रह्मानंद का थोड़ा सा भी आनंद लेते हैं, वे तीनों लोकों के स्वामी भगवान के आनंद को भी तुच्छ समझते हैं। राज्य, धन और स्त्री-पुत्रों का आशीर्वाद सब उस परमेश्वर के पीछे हैं; इसलिए उन्हें छोड़कर केवल उसी से प्रेम करना बुद्धिमानी है।

अरे दोस्त! जिसके एक क्षण के लिए भी स्पर्श मात्र से बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी तुच्छ भिखारी के समान प्रतीत होते हैं, उस अखण्ड एवं पूर्ण ब्रह्म की पूजा कोई निःसंदेह क्यों नहीं करता?

वैराग्य शतकम् - ०७७ .

हे मन, तू अपनी चंचलता के कारण पाताल में प्रवेश करता है, आकाश के पार जाता है, दसों दिशाओं में घूमता है; परन्तु तुम भूलकर भी उस विमल परब्रह्म परमपिता परमात्मा को याद नहीं करते, जो तुम्हारे हृदय में ही विद्‌यमान है, जिसके स्मरण मात्र से ही तुम्हें परमानन्द-मोक्ष या मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

ये इस चंचल मन की अद्‌भुत लीला है. कभी वह आकाश में ही चला जाता है, कभी पाताल में और कभी दसों दिशाओं में भटकता रहता है। वह इतना इधर-उधर भटकता रहता है; लेकिन गलती से भी वह वहां नहीं जाता जहां उसे जाना चाहिए। उसके पास ही अमृत का सरोवर है, वह उसे छोड़कर सड़े हुए नालों में भटकता रहता है।

मनुष्य को सब कुछ छोड़कर अपने हृदय में विराजमान ब्रह्म के पास जाना चाहिए और हर समय उसका ही चिंतन करना चाहिए; इससे उसके पाप नष्ट हो जायेंगे, वह संकटों से मुक्त हो जायेगा और परम शांति प्राप्त कर लेगा। और चिन्ता से कोई लाभ नहीं; वे केवल उलझाव की ओर ले जाते हैं।

मूर्ख लोग अपना हृदय भी परमेश्वर में नहीं लगाते। गलती होने पर भी वे भगवान की तलाश में हर जगह भटकते रहते हैं। लेकिन वे लोग अपने हृदय में परमेश्वर की खोज नहीं करते हैं। यह उनकी बहुत बड़ी अज्ञानता है। वह (भगवान) अगले कमरे में बैठे हैं, लेकिन मैं भ्रम में फंसा हुआ हूं। मैं उन्हें ढूंढने के लिए हर जगह घूमता हूं!

जैसे आँखों में पुतली है, वैसे ही हमारे हृदय रूपी कमल में भगवान विद्‌यमान हैं; परन्तु मूर्ख यह नहीं जानता और उसे ढूंढने के लिये बाहर जाता है। हिरण की नाभि में कस्तूरी होती है, परन्तु हिरन उसे जंगल में ढूंढ़ता है; इसी तरह ब्रह्म हर रूप में मौजूद है, लेकिन दुनिया इस अंतर को नहीं जानती। यदि आप कर सकते हैं, तो घर पर ही रहें और अपनी पलकें बंद करके देखें, आपका स्वामी आपके भीतर है;कहीं और जाने की जरूरत नहीं है।

भगवान की खोज में कोई प्रयाग, काशी, गया, पुरी, मथुरा, कुरुक्षेत्र और पुष्कर जाता है तो कोई द्‌वारका। सुन्दरदास जी कहते हैं, जो कण-कण में विराजमान है, उसे मूर्ख लोग व्यर्थ ही बाह्य लोकों में भटकते हुए खोजते हैं। हां, तीर्थ यात्रा पर जाना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी भावना रखना मूर्खता है कि तीर्थ यात्रा पर जाने से ही भगवान मिलेंगे।

सारांश यह है कि संसार अज्ञानता के कारण 'छोरा बगल में ढिंढोरा शहर में' वाली कहावत को चरितार्थ करता है। भगवान इस शरीर के हृदय-कमल में विद्यमान हैं, लेकिन अज्ञानी लोग उन्हें खोजने के लिए तीर्थों में भटकते हैं। इस प्रकार वह मिलता भी नहीं और अनावश्यक आश्चर्य भी होता है। जो लोग दास के दर्शन करना चाहते हैं उन्हें आंखें बंद करके हृदय में ही दर्शन करना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०७८ .

हालाँकि बुद्धिमान प्राणी जानते हैं कि दिन और रात में कोई अंतर नहीं है। 'यह पहले जैसा ही है; इसलिए वे उन्हीं लक्ष्यों के पीछे भागते हैं जिनके पीछे वे पहले भागते थे। वे पैर उसी काम में लगे रहते हैं, जिससे क्षणिक और बार-बार वही लाभ मिलता है, जो बार-बार कहा और भेजा गया है। आश्चर्य की बात है कि इंसानों को शर्म नहीं आती!

आइए देखें कि पहले की तरह दिन, रात, तिथि, समय, नक्षत्र और महीना और वर्ष आएं। और वे चलते हैं, उसी प्रकार 'हम खाते-पीते, सोते-जागते और अपना काम करते हैं; कोई कुछ नया मत देखो. जो काम हम पहले करते थे, वही काम हम बार-बार करते हैं। हम देखते-सुनते और समझते हैं कि उनमें कितना आराम और खुशी है। फिर भी आश्चर्य है कि हम इस मिथ्या संसार का मोह नहीं छोड़ते!

वैराग्य शतकम् - ०७९ .

राजा-महाराजाओं की तरह ऋषि-मुनि भी धरती को अपना सुख-शय्या मानकर आराम से सोते हैं। उसकी बाँह उसका कोमल तकिया है, आकाश उसकी चादर है, मैत्रीपूर्ण। वायु उसका पंखा है, चंद्रमा उसका दीपक है, वैराग्य उसकी स्त्री है; अर्थात् वैराग्य रूपी स्त्री के साथ वे उपयुक्त वस्तुओं से राजा के समान सुखपूर्वक विश्राम करते हैं।

संतों के पास राजाओं जैसे महल नहीं होते। वहाँ बहुत अच्छे बिस्तर और मखमली गद्दे और तकिए हैं। ओढ़ने के लिए शॉल और दुपट्टे नहीं हैं, बिजली

के पंखे नहीं हैं, झूमर या बिजली की रोशनी नहीं है और सुगनयनी, मोहिनी कामिनी भी नहीं है।

केवल ये हैं; फिर भी, मैं पृथ्वी को अपना, हाथ को तकिया के रूप में, ठंडी हवा को अपने पढ़ने के रूप में, चंद्रमा को दीपक के रूप में और सांखरि को अपना एकमात्र कर्तव्य मानकर पढ़ूंगा, जो कामुक सुखों से अलग रहेगा और सुखी नींद

लूंगा। राजा और अमीर लोग अपने अच्छे बिस्तरों, कालीनों, मखमली कवर वाले तकियों, बिजली के पंखों और रोशनी और सुंदर महिलाओं के साथ जो झूठी खुशी का आनंद लेते हैं, वह उस सच्ची खुशी से लाखों डिग्री बेहतर है जो ऋषि जमीन और उनकी बाहों पर आनंद लेते हैं, अनुकूल आनंद लें ह्रव, चंद्रमा और उसकी घृणा रूपी स्त्री के साथ।

अब बुद्धिमान लोगों को विचार करना चाहिए कि उनमें से कौन बुद्धिमान है और किसे वास्तविक सुख मिलता है। अमीरों को अपनी ख़ुशी के लिए कितने कष्ट और परेशानियाँ सहनी पड़ती हैं; फिर भी उन्हें सच्चा सुख नहीं मिल पाता और संत लोग बिना किसी झंझट, झंझट और बिना किसी प्रयास के सच्चे सुख का आनंद लेते हैं और शांति से सोते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०८० .

हे आत्मा! यदि आपने उस ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, जिसके सामने तीनों लोकों का साम्राज्य तुच्छ लगता है; फिर भोजन, वस्त्र और आदर के लिये भोगों की इच्छा न करना; क्योंकि वह भोग सर्वोत्तम एवं शाश्वत है; उसकी तुलना में त्रिलोकी सुख का राज्य कुछ भी नहीं है|

जब तक मनुष्य को ब्रह्म का ज्ञान नहीं होता, जब तक उसे आत्मज्ञान नहीं होता, जब तक उसे उस मधुर सुख का स्वाद नहीं मिलता, तभी तक मनुष्य को सांसारिक वस्तुओं और सुखों में सुख की समझ आती है। तभी मनुष्य को उस

सर्वोत्तम सुख-शाश्वत सुख का स्वाद मिलता है, फिर समस्त सांसारिक सुख या संसार के सुख-त्रिभुवन के राजसी सुख भी कुछ समझ में नहीं आते।

इसका मतलब यह है कि सच्चा और वास्तविक सुख ब्रह्म ज्ञान या आत्म-ज्ञान में निहित है। ब्रह्मांड में किसी अन्य वस्तु में इसके समान आनंद नहीं है। जो लोग सांसारिक वस्तुओं में सुख मानते हैं वे अज्ञानी और मूर्ख हैं। उन्हें अच्छे-बुरे, असली-नकली में फर्क करने का ज्ञान नहीं है। वे उसी प्रकार माया में डूबे हुए हैं जैसे रस्सी को साँप और हिरण को मृगतृष्णा समझकर पानी समझ लेते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०८१ .

वेद, स्मृति, पुराण तथा अन्य महान् शास्त्रों को पढ़ने तथा विविध अनुष्ठान करने से स्वर्ग में कुटिया प्राप्त करने के अतिरिक्त और क्या लाभ है? संसार के बंधनों को काटने में प्रलय के समान ब्रह्मानंद के किले में प्रवेश के प्रयास को छोड़कर अन्य सभी कार्य व्यापारियों के कार्य के समान हैं। ॥81॥

वेद, स्मृति, पुराण तथा अन्य बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ने-सुनने तथा उनके अनुसार कार्य करने से मनुष्य को कोई विशेष लाभ नहीं है। यदि इन अनुष्ठानों को ठीक से किया जाए, तो इतना ही प्राप्त होता है कि स्वर्ग में झोंपड़ी के योग्य स्थान

मिल जाता है, परन्तु वह स्थान भी सदा के लिए कब्जे में नहीं रहता; जिस दिन पुण्य कर्म समाप्त हो जाते हैं, वह स्वर्गलोक फिर छिन जाता है; इससे प्राणियों को पुनः दुःख होता है।

इसका मतलब यह है कि कर्मकाण्डों से जो सुख मिलता है वह स्थाई या स्थायी नहीं होता; उस जीवन के अंत में फिर दुःख होता है - फिर स्वर्ग छोड़कर मृत्युलोक में जन्म लेना पड़ता है - फिर जन्म और मृत्यु के वही दुःख भोगने पड़ते हैं।

इसलिये मनुष्य को 'ब्रह्म ज्ञानी' बनने का प्रयत्न करना चाहिये; क्योंकि ब्रह्म ज्ञान की अग्नि विनाश अग्नि के समान है। वह अग्नि संसार के बंधनों को जड़ तक जला डालती है; इसलिए सदा सुख है - दु:ख का नाम भी नहीं। इसीलिए मुनिवर ब्रह्मा ने कहा-'ज्ञान बुद्धिमानों को ज्ञान परम सुख देने वाला माना जाता है।'

इसका अर्थ यह है कि ब्रह्मज्ञान अथवा राम भक्ति के बिना सभी जप-तप आदि व्यर्थ हैं। शुद्ध वेदों और पुराणों का सार यह है कि ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है तथा जीव ब्रह्म का स्वरूप है। जो इस सिद्धांत को जानता है वही सच्चा विद्वान है। जो ब्रह्म या आत्माओं को नहीं जानता वह अज्ञानी और मूर्ख है। उनका 'पढ़ना-लिखना' उनका समय बर्बाद कर रहा है।

हे मेरे प्रिय आत्मन्! , इस संसार में जो लोग भगवान राम की भक्ति से दुखी हैं उनका जप, तप, दया, शौच, शास्त्र पढ़ना - ये सब व्यर्थ है। वास्तविक तत्व ईश्वर की निस्वार्थ भक्ति या ब्रह्म में लीन रहना है।

वैराग्य शतकम् - ०८२ .

आयु जल की लहरों के समान चंचल है, यौवन थोड़े दिनों का है, धन मन के संकल्पों से छोटा है, भोग बिजली की चमक से भी अधिक चंचल हैं, प्रिय स्त्री का आलिंगन भी स्थायी नहीं है। . इसलिये मनुष्यो! भवसागर से पार होने के लिए अपने मन को ईश्वर में केन्द्रित करें।

जीव की उम्र की कोई सीमा नहीं होती. यह पानी की लहरों की तरह गतिशील और पानी के बुलबुले की तरह अस्थायी है। यह अभी दिख रहा है और हो सकता है कि अगले पल न भी हो. जो सांस बाहर जाती है, वो वापस आएगी या नहीं इसका कोई भरोसा नहीं। , इधर प्राणी जन्म लेता है और उधर मृत्यु उसके पीछे-पीछे चलती है। हमें ऐसे क्षणभंगुर जीवन का जश्न क्यों मनाना चाहिए?

कमल के पत्ते पर पड़ा जल अत्यंत चंचल है, उसी प्रकार मानव जीवन भी अत्यंत चंचल है। यह सारा संसार रोग रूपी सर्पों से ग्रस्त हो रहा है। इसमें दुःख ही दुःख है।

युवा

जिस प्रकार मनुष्य की आयु पानी की लहरों के समान चंचल है और सदैव रहने वाली नहीं है; वैसे ही जवानी भी कुछ समय तक रहने वाली है. कोई भी व्यक्ति सदैव युवा नहीं रहता। स्थितियाँ बदलती रहती हैं. बचपन के बाद जवानी आती है और जवानी के बाद बुढ़ापा आता है और आता ही है। चार दिन की चाँदनी, फिर आधी रात, ऐसे ही।

तुरई हमेशा नहीं खिलती, मानसून हमेशा नहीं रहता, जवान आदमी हमेशा नहीं रहता और कोई भी हमेशा जीवित नहीं रहता।युवावस्था का काल जीवन भर अधिक समय तक नहीं रहता। वह फूल की खुशबू की तरह इधर आई और उधर चली गई।

जो लोग आज यौवन के नशे में मतवाले हो रहे हैं, जो अपने मिट्टी के शरीर को रगड़-रगड़ कर, साबुन लगाकर, सूखे चंदन, कपूर और सुगंधित फूलों से धोते हैं और तरह-तरह के आभूषण पहनते हैं, जो स्त्रियाँ अपने दोनों स्तन ऊंचे रखती हैं

और जो पुरुष अपनी मूंछों पर ध्यान देना चाहिए, होश में आना चाहिए और मन में यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि उनका यह शरीर हमेशा उनके साथ नहीं रहेगा।

एक दिन यह इधर-उधर पड़ा रहेगा और मिट्टी में मिल जायेगा। फिर आप सोचेंगे कहाँ गया मेरा सुन्दर, सुदृढ़, बलिष्ठ शरीर और कहाँ गयी एक सुन्दर स्त्री का सुन्दर, सुगठित शरीर ? शरीर नष्ट होने से पहले ही बुढ़ापा जवानी को निगल जायेगा। जो दांत आज मोतियों की तरह चमक रहे हैं, कल तुम्हारी नाक हिला देंगे और एक-एक करके तुम्हें छोड़ देंगे, पके फल की तरह उखड़कर जमीन पर गिर जायेंगे।

अंततः वह पेड़ को छोड़कर अनायास ही पृथ्वी पर गिर जाता है। जिन बालों को आप हर दिन कंघी और साफ रखते हैं और सजावट की मात्रा आप अलग-अलग तरीकों से करते हैं, एक दिन वे सफेद हो जाएंगे। ये फूले हुए गाल पिचक जायेंगे। /ये लापरवाही नज़रों में नहीं रहनी चाहिए. इनमें पीलापन और धुंध छा जाएगी. आज कोई अहंकार नहीं होगा बेटा!

शरीर नष्ट होने से पहले ही बुढ़ापा जवानी को निगल जायेगा। जो दांत आज मोतियों की तरह चमक रहे हैं, कल तुम्हारी नाक हिला देंगे और एक-एक करके तुम्हारा साथ छोड़ देंगे, पके फल की तरह उखड़कर जमीन पर गिर पड़ेंगे। अंततः वह पेड़ को छोड़कर अनायास ही पृथ्वी पर गिर जाता है। उस समय आपका चेहरा खोखला और बदसूरत हो जाता है।

जो बाल तुम प्रतिदिन धोते और साफ रखते हो और जितनी सजावट करते हो, एक दिन वे राख में बदल जायेंगे या धूल में मिल जायेंगे। ये फूले हुए गाल पिचक जायेंगे। आंखों में चमक नहीं रहेगी. उनमें पीलापन और धुंध होगी. आज जैसा अहंकार नहीं रहेगा. लाठी के सहारे चलना पड़ेगा। जो लोग आज तुम्हें देखकर प्रसन्न हैं और तुम्हारा आदर करते हैं, कल वही तुम्हारा अनादर करेंगे, तुम्हारे बारे में पूछेंगे भी नहीं। ये तो तेरे शरीर और यौवन का हाल है, अब सुन तेरे धन की चंचलता।

धन चंचल है

लक्ष्मी को चश्चला और चपला भी कहा जाता है। लक्ष्मी तो उस चपला के समान है, क्षण में चमकती है और क्षण में बादलों में छिप जाती है। बहुतों ने इस धन को अपने हृदयों को दे दिया है 'विचारों की भाँति इसे भी क्षणिक और अस्थिर कहा गया है। यह धन सदैव किसी के पास नहीं रहता। किसी ने कभी किसी परिवार के पास तीन पीढ़ियों से अधिक संपत्ति रखते नहीं देखा है।

जो आज अमीर है वह कल गरीब हो जाता है। जो हजारों लोगों को भोजन देता है वह आज अपने भोजन की तलाश में दूसरों के दरवाजे पर भटक रहा होगा। जो आज राजा है कल वही रंक बनेगा। जो आज रथ या घोड़े के बिना एक कदम नहीं चल सकता, कल वह पैदल ही इधर-उधर दौड़ता है।

आज उसके आदेशों का पालन करने के लिए हजारों गुलामों की आवश्यकता होती है। वे खड़े रहते हैं, कल दूसरों के आदेशों का पालन करने के लिए वहीं खड़े नजर आते हैं।

सारांश यह है कि न धन, न वैभव सदैव किसी न किसी के पास होता है! न ही भविष्य में ऐसा रहेगा. इसीलिए धन को चंचल भी कहा जाता है।यौवन, प्राण, मन, शरीर की छाया, धन और स्त्री आकर्षण - ये छः चलायमान हैं अर्थात् स्थिर नहीं रहते।

मूर्ख वे हैं जो इस मिथ्या और शाश्वत धन पर अभिमान करते हैं। वे सोचते हैं कि यह हमारे पास सदैव रहेगा; लेकिन ये उनकी बड़ी गलती है. धन को हमेशा बिजली की चमक और बादल की छाया की तरह क्षणभंगुर और चंचल नहीं समझना चाहिए और उस पर गर्व नहीं करना चाहिए।

इस दौलत और जवानी पर घमंड मत करो, वक्त पलक झपकते ही इसे छीन लेता है। इस मायावी संसार को छोड़कर शीघ्र ब्रह्मपद में प्रवेश करो, भगवान का ध्यान और भजन करो।

स्त्री का आलिंगन भी स्थाई नहीं होता

जिस प्रकार आयु, यौवन और धन चंचल हैं; उसी तरह... महिलाएं भी चंचल होती हैं. जो ख़ुशी हमारी अपनी है वो कल किसी और की बन जाने में देर नहीं लगती. जो आज हुस्न के साथ एन्जॉय करते हैं. जी हाँ, कल वे अपनी जुदाई का दर्द सहते नजर आ रहे हैं. कहते हैं । कि एक औरत पराई हो जाती है।

बहुत याद किये हुए शास्त्र को भी बार-बार पढ़ना चाहिए। बहुत सेवा करने वाले राजा को भी अपनी गोद में पड़े हुए स्त्री से डरना चाहिए।स्त्री की सावधानीपूर्वक सुरक्षा की जानी चाहिए; क्योंकि शास्त्र, राजा और कन्या पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

महिलाओं पर भरोसा नहीं करना चाहिए, ऐसे वाक्य हर जगह पाए जाते हैं। महाराजा भर्तृहरि को ही लीजिए। :.महाराजा से क्या गलती हुई? क्या उनमें बल, शौर्य, सौन्दर्य, ज्ञान है ? क्या चतुराई में किसी गुण की कमी थी ? क्या उसके महल में सुख-सुविधाओं की कमी थी ? कुछ भी नहीं।

सब कुछ था; लेकिन पिंगला ने महाराजाओं को छोड़ दिया और अस्तबल के निरीक्षक से प्रेम करने लगी। तब ; नारी का प्रेम शाश्वत कैसे कहा जा सकता है? असल में महिलाएं खुद को ही नहीं समझ पातीं, दूसरों को समझने का सवाल ही कहां है ?

एक महिला का विश्वासघात

एक साहूकार ने क्रोधित होकर अपने पुत्र को घर से निकाल दिया। जाते समय बेटे ने अपनी पत्नी से कहा – "मैं तुम्हें तुम्हारे माता-पिता के घर छोड़ आऊं; क्योंकि जंगल में बड़ा कष्ट है और इस समय रोजगार का कोई ठिकाना नहीं है। भगवान जाने क्या-क्या कष्ट सहना पड़ेगा।" "स्त्री ने कहा – "स्वामी, मैं आपके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकती।"

आपके अलगाव से निपटने के लिए मैं सक्षम नहीं हूँ। अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। और जंगल की मुसीबतें नगण्य हैं। मैं आपके साथ चलूंगी और आपकी सेवा करके अपने आप को धन्य समझूंगी ।" साहूकार के बेटे के बार-बार प्रयास करने पर भी जब वह स्त्री नहीं मानी तो वह उसे अपने साथ ले गया।

वे दोनों, साहूकार का बेटा और उसकी पत्नी, एक पुरुष और एक महिला, घर से कुछ पैसे लेकर चले गए। प्रतिदिन एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए एक दिन दोपहर के समय वे दोनों एक संत की कुटिया पर पहुँचे। की सघन छाया थी पेड़, सामने थोड़ी दूरी पर एक कुआँ था। साहूकार का बेटा रस्सी और बाल्टी और स्त्री को लेकर पानी लाने गया।

महिला वहीं बैठी रही. फकीर ने देखा कि वह स्त्री बहुत सुन्दर और जवान है; तो उन्होंने उससे कहा – “यदि तुम मेरे साथ रहोगे तो तुम्हें संसार का सुख दिखाई देगा।” जाओ, उसे कुएँ में धकेल दो और फिर हम - तुम दोनों पास के शहर में चले जाएंगे और बड़े मज़े से वहीं रहेंगे ।”

एक साहूकार के बेटे की पत्नी, जिसने अपने पति के लिए अपनी जान तक देने तैयार थी , जो अपने पति के समझाने पर भी मायके नहीं गई, एक पल में उसके लिए पराई हो गई। फकीर की बातों से प्रभावित होकर वह कुएँ के पास गई। जैसे ही उसका पति पानी की बाल्टी खींचने के लिए नीचे झुका, उसने उसे धक्का दे दिया और बाल्टी कुएं में गिर गयी. उसे तनिक भी दया नहीं आई।

वह वापस आई और भिखारी के साथ शामिल हो गई। भिखारी उसे नगर में ले आया और उसके धन पर ऐश करने लगा। उन्होंने गायन के उस्तादों को भी बुलाया और उस साहूकार के बेटे की पत्नी को गायन का प्रशिक्षण देना शुरू किया। वह युवा और सुंदर थी; अत: वह गायन में भी पारंगत हो गयीं। उसका नृत्य और गायन सारे नगर में प्रसिद्ध हो गया।

उधर वह लड़का कुएं में पड़ा रोते हुए अपनी परेशानी झेल रहा था। एक बंजारा कहीं से आया। उसके साथ दो सौ आदमी थे। वहीं रुक गये. लोग रोटी बनाने लगे. , कोई पानी भरने के लिए कुएँ पर गया। जैसे ही उसने ढोल टांगा, साहूकार के बेटे ने ढोल पकड़ लिया। लोगों ने पूछा – “आप कौन हैं?" "उन्होंने उत्तर दिया, "मैं दुर्भाग्य से मारा हुआ आदमी हूं। कृपया मुझे बाहर निकालो।”

लोगों ने एकजुट होकर उसे बाहर निकाला। लेकिन, वह पीला पड़ गया था। खानाबदोशों ने उसका इलाज कराया और उसे गर्म कपड़े पहनाकर सुलाया।फिर स्वस्थ होकर , वह साहूकार का बेटा रोजगार की तलाश में इधर-उधर घूमने लगा। एक बड़े सज्जन ईश्वर कृपा ने उसे अपने घर पर रखा। लड़का बहुत बुद्धिमान निकला, इसलिए उस सेठ ने उसको अपना मुख्य लेखाकार बना लिया।

उन्हीं दिनों राजा ने उस वेश्या की प्रशंसा सुनकर उसे अपने यहाँ नृत्य करने का आदेश दिया। सभा सजी हुई थी, चारों ओर नगर के धनपति, कवी -कलाकार और बड़े लोग बैठे हुए थे। राजा सिंहासन पर बैठे उस नर्तकी के हाव -भाव देखकर आनंदित, प्रसन्न हो रहे रहे और सारी भीड़ मंत्रमुग्ध थी। इतने में वह वेश्या, (साहूकार के बेटे की पूर्व पत्नी) उसकी नजर साहूकार के बेटे यानि अपने पति पर पड़ी. राजा ने प्रसन्न होकर कहा, “नर्तकी ! तुम मांगो, तुम्हें वही इनाम मिलेगा।”

वेश्या ने कहा--“महाराज [| यदि आप मुझे इनाम देने का वादा करते हैं, तो यह भी वादा करें कि मैं जो मांगूंगी , वही मुझे मिलेगा।” जब राजा अपने वचन पर सहमत हो गया तो वेश्या ने कहा, “राजा! वह सामने बैठा आदमी मेरा चोर है, उसे मार डालो।” जब राजा ने उसे मारने का आदेश दिया तो साहूकार के बेटे ने कहा- मेरी कुछ संपत्ति उसके पास है, उससे कहो, हाथ में पानी लेकर मुझे दे दे. संकल्प करके दे दो।" वेश्या ने कहा- "मूर्ख। मेरे पास तुम्हें देने के लिए क्या है?

फिर साहूकार के बेटे जल लेकर कहने लगा - यह मेरी पत्नी है। हम इसे ले लेंगे; मैं जल लेकर संकल्प करता हूं और कहता हूं , पूर्व संकल्प अनुसार जो कुछ भी बची हुई मेरी आयु है   , वह मुझे प्राप्त हो।” उसके सत्य वचन सुनकर , विश्वासघाती पत्नी , वेश्या के मुँह से आह निकली और वह तत्काल ही ज़मीन पर गिरकर मर गयी। राजा आश्चर्यचकित थे।

तब राजा ने लड़के से इस घटना का वास्तविक सार पूछा। लड़के ने कहा--राजा! ये मेरी शादीशुदा औरत है. वो और मैं घर से बाहर आये. रास्ते में उसे साँप ने काट लिया और वह मर गयी; मैं भी उसके साथ जलने को तैयार था। इतने में महादेव-पार्वती वहाँ आये। पहले तो उन्होंने कहा, “अरे मूर्ख ! एक औरत के लिए अपनी जान दे देता है ! तुमको तो और भी औरतें मिल जायेंगी।

परन्तु मैं उनकी बात से सहमत नहीं हुआ, तब देवाधि देव महादेव जी कहा - “यदि तुम हाथ में जल भरकर उसे अपनी आधी आयु दे दो तो वह जीवित रह सकती है।” फिर भी जब कभी तुम उससे अपना शेष जीवन मांगोगे और वह अपना संकल्प त्याग देगी तो उसकी मृत्यु हो जायेगी।

महाराज, वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय थी; इसलिए मैंने अपना आधा जीवन इसमें लगा दिया। इसके बाद उसने मुझे एक कुएँ में धकेल दिया और फकीर के साथ चली गयी और वेश्या बन गयी। आज तो वह मुझे मरवाने पर तक तुली हुई थी। नारीवादी प्रेम, कमल के पत्र पर टिका हुआ एक पानी की बूँद के समान है। यह कब लूडक जाए , इसका कोई ठिकाना नहीं है ।

फिर भी लोग जानते हैं की कमल की बूँद तो लुढ़क ही जायेगी , निश्चित है। पर नारी के प्रेम के लुड़कने की संभावना करना कठिन है। इसलिए मैं नारी के प्रेम में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता।

राजा उनसे बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें अपना प्रधानमंत्री बना दिया।इस कहानी के माध्यम से हमने महिलाओं के प्रति प्रेम का एक उदाहरण दिखाया है। निश्चित रूप से सभी महिलाएँ ऐसी नहीं होतीं; परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि उनमें से अधिकांश ऐसे ही हैं; इसलिए, एक महिला के प्यार का हमेशा आनंद नहीं लिया जा सकता। मान लीजिए कि एक महिला केवल अपने पति से प्यार करती है और किसी से नहीं, तो संभव है कि उसकी मृत्यु जल्दी हो जाए।

अलगाव इस तरह भी हो सकता है. संक्षेप में, आयु, यौवन, धन और स्त्री सभी चंचल, अनित्य और क्षणभंगुर हैं। वास्तव में कोई कामातुर मूर्ख ही वास्तविकता को जानने के बाद इन पर विश्वास कर सकता है।

इसलिए इसका परिणाम दुखों से भरा होता है। इसलिए बुद्धिमानों को ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए, दिन-रात उनका ध्यान करना चाहिए और उनका ही चिंतन करना चाहिए। इससे वे भवसागर से पार हो जायेंगे। उन्हें बार-बार जन्म-मृत्यु का कष्ट नहीं होगा-उन्हें स्थाई सुख मिलेगा। स्त्री-बेटा, अगर तुम पैसे के सवाल पर ध्यान दोगे तो तुम्हें सदैव दुःख के सागर में गोता लगाना पड़ेगा। मरने के बाद दोबारा जन्म लेना पड़ता है और फिर मरना पड़ता है। अब बुद्धिमान मनुष्य सोचे कि इन दोनों में से कौन सा मार्ग अधिक सुखदायक है ?

वैराग्य शतकम् - ०८३ .

जो ईश्वर के विषय में विचारशील और ज्ञानी है उसके लिए संसार मोहक नहीं हो सकता। मछलियों के कूदने से समुद्र ऊपर नहीं उठता।

जैसे मछलियों की उछल-कूद से समुद्र अपना गुरुत्वाकर्षण नहीं छोड़ता, ज़रा भी उछलता नहीं, उतना ही तनावग्रस्त रहता है; उसी प्रकार विचारशील, ज्ञानी व्यक्ति सांसारिक वस्तुओं से मोहित नहीं होता, समुद्र की भाँति शांत लहराता रहता है। अपनी गंभीरता और सीमा का कभी उलंघन नहीं करता।उसी तरह हमें भी कभी हमारी शांति और गंभीरता को भंग नहीं होने देना चाहिए।

समुद्र मछलियों की उछल-कूद को कुछ नहीं समझता, उसी प्रकार तीनों लोकों के सुख और ऐश्वर्य को वह तुच्छ समझता है। तात्पर्य यह है कि सांसारिक इच्छाएँ उन्हीं को आकर्षित करती हैं जो सदाचारी नहीं हैं, जिनमें विचार करने की शक्ति नहीं है, जो ब्रह्मज्ञान के आनन्द को नहीं जानते।

दुनिया एक ऐसा जाल है जिसमें लगभग हर कोई फंसा हुआ है। इस जाल से केवल ज्ञानी यानि विचारशील व्यक्ति ही बच पाता है। संसार अंततः अमूर्त है, इसमें कुछ भी नहीं है। यह बिल्कुल आंवले जैसा होता है, जो बाहर से बहुत सुंदर और चिकना दिखता है; लेकिन अंदर कुछ कड़वा है. किसी ने कहा है कि संसार स्वप्न के समान है और इसे खोखला विचार कहा है!

वैराग्य शतकम् - ०८४ .

जब तक हम कामदेव के कारण अज्ञान और अंधकार से भरे हुए थे, तब तक हम पूरी दुनिया को एक महिला के रूप में देखते थे। अब हमने अपनी आँखों में बुद्धि रूपी काजल लगा लिया है, इससे हमारी दृष्टि बराबर हो गयी है। हमें सच्चा ज्ञान प्राप्त हो रहा है। अब हम तीनों भुवनों को ब्रह्मा के रूप में देखते हैं।

जब हम वासना में अंधे हो गये थे, जब हमें अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं था, तब हमें केवल स्त्रियाँ ही दिखाई देती थीं, स्त्रियों के बिना हमें एक क्षण भी चैन नहीं पड़ता था; लेकिन अब हम में विवेक आ गया है, अब हम अच्छे-बुरे को समझने लगे हैं। इसीलिए अब हमें पूरी दुनिया एक जैसी लगती है. अब हमें महिलाएं कहीं

नजर नहीं आतीं, हर कोई एक जैसी दिखती है।' हम जिधर भी देखते हैं, हमें ब्रह्म ही दिखाई देता है।

अरे! संसार के अज्ञानी मानव, शरीर के हाड़-माँस की सच्चाई को समझें। इसका मतलब यह है कि न तो कोई महिला है और न ही कोई पुरुष, सभी एक हैं; फर्क सिर्फ शरीर में है. आत्मा न तो पुरुष है और न ही स्त्री; अच्छा ये बताओ! क्या आप किसी कंकाल को देखकर बता सकते हैं कि यह पुरुष का कंकाल है या महिला का? कोई कुछ नहीं कह सकता।

यह आत्मा न तो स्त्री है, न पुरुष और न ही नपुंसक। यह जिस भी अंग को अपना लेती है उसी अंग से जुड़ जाती है। जब एक स्त्री को इस बात का ज्ञान हो जाता है कि पुरुष और मुझमें कोई अंतर नहीं है, मैं जो स्त्री हूं वह वही स्त्री है - स्त्री ने अलग तरह के कपड़े पहने हैं और मैंने अलग तरह के कपड़े पहने हैं - तब उसका मन उस ओर नहीं जाता है। महिला अपने ही स्वरूप को समझने और उसके साथ संभोग करने की इच्छा नहीं होती।

बुद्धिमान व्यक्ति संसार में शत्रु, मित्र, स्त्री-पुत्र, स्वामी-सेवक नहीं देखता। वह पत्नी, पुत्र, शत्रु-मित्र सबको समान समझता है; वह किसी के प्रति द्वेष या द्वेष नहीं रखता। वह कुत्ते, आदमी और हर जीवित प्राणी में विष्णु को देखता है। यह राज्य परम पद का राज्य है। स्वामी शंकराचार्य कहते हैं कि शत्रुओं, मित्रों या पुत्र-संबंधियों के बीच झगड़ा या समझौता कराने की कोशिश करो। यदि शीघ्र मोक्ष चाहते हो तो शत्रु-मित्र और पुत्र-पर्याय स्वभाव को एक दृष्टि से देखो। सब

अपने समझें, किसी को पराया न समझें; समबुद्धि बनो। जैसा पुरुष, वैसा स्त्री, वैसा पुत्र, वैसा शत्रु और वैसा धन। उस तरह की मिट्टी.

एक सच्चा संत

एक ऋषि सदैव आत्मज्ञान की अवस्था में रहते थे। वह कभी किसी से अनावश्यक बात नहीं करते थे। एक दिन वह गाँव में भिक्षा मांगने गया। वह एक

घर से रोटी लेकर स्वयं खाने लगा और भोजन में कुत्ते को भी खिलाने लगा। यह देखकर वहां बहुत से लोग जमा हो गए और उनमें से कुछ लोग उसे पागल कहकर उस पर हंसने लगे। यह देखकर महात्मा ने उनसे कहा- तुम लोग क्यों हंस रहे हो?

विष्णु के पास विष्णु है. विष्णु विष्णु को भोजन कराते हैं। हे विष्णु, तुम क्यों हंसते हो? संपूर्ण जगत् विष्णुमय है, अर्थात संपूर्ण जगत् परम पुरुष विष्णु से व्याप्त है।

सच्चे और सिद्ध साधु-संत पूरे संसार में एक ही ईश्वर को देखते हैं। उसे कोई और नजर नहीं आता. - केवल अज्ञानी लोग, जिनकी ज्ञान की आंखें बंद हैं, वे ही दुनिया में किसी को अपना और किसी को पराया समझते हैं।

किसी एकांत स्थान पर आराम से बैठना चाहिए। मनुष्य को पूर्ण परमात्मा का ध्यान करना चाहिए। परमात्मा परम ब्रह्म के आमने-सामने है। ऐसा करना चाहिये और इस संसार को उस परम ब्रह्म से व्याप्त मानना चाहिये। मनुष्य को पूर्व जन्म के कर्मों को भूल जाना चाहिए... और ज्ञान के प्रभाव से वर्तमान जीवन में किए गए कर्मों का फल त्याग देना चाहिए' यानी निष्काम कर्म करना चाहिए' कर्म बंधन में बंधकर दोबारा जन्म लेना पड़ता है।

इस संसार में मनुष्य को अपने प्रारब्ध या पूर्व जन्म के कर्म भोगने पड़ते हैं और उसके बाद उसे ईश्वर के रूप में इस संसार में निवास करना पड़ता है; अर्थात हममें और ईश्वर में कोई अंतर नहीं होना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०८५ .

चंद्रमा की किरणें, हरी घास, मित्रों का जमावड़ा, प्रेम से भरी कविताएं, क्रोध के आंसुओं से भरा चंचल प्रियतमा का चेहरा - पहले ये सब हमारे मन को मोह लेते

थे; लेकिन चूँकि हमने संसार की नश्वरता को समझ लिया है, इसलिए अब हमें यह सब पसंद नहीं आ रहे हैं।

जब तक मनुष्य संसार की असारता, उसकी अनित्यता, उसकी लघुता, उसकी सत्यता को नहीं समझता, तब तक मनुष्य संसार और सांसारिक झगड़ों में उलझा रहता है और विषय-सुख को अच्छा मानता है; लेकिन जैसे ही उसे संसार की वास्तविकता का पता चलता है, उसे विषय-भोगों से घृणा होने लगती है।

उस समय न तो उसे चन्द्रमा की शीतल चाँदनी अच्छी लगती है, न अपनी सखियाँ और सहेलियाँ अच्छी लगती हैं, न सौन्दर्य की कविता अच्छी लगती है और न ही चन्द्रमा की चांदनी वाली लड़कियाँ देखकर ही उसका मन उद्वेलित होता है और सुंदरियों की आँख , नाक हृदय प्रदेश ही आकर्षित लगते है।

वैराग्य शतकम् - ०८६ .

ऐसा साधु मिलना दुर्लभ है, जो भिक्षा मांग कर भोजन करता हो, जिसे अपनी प्रजा के बीच रहकर भी उनसे कोई लगाव न हो, जो स्वतंत्रता-चेतना के साथ अपना जीवन व्यतीत करता हो, जिसने देने और लेने का व्यवहार त्याग दिया हो। सड़क पर पड़े चिथड़ों से कोई अनजाना नहीं है। वह दुपट्टा पहनता है, जिसे मान-सम्मान की परवाह नहीं है, जिसे अभिमान नहीं है और जो ब्रह्मज्ञान के सुख को ही सुख मानता है।

जो भिक्षा मांगकर अपने पेट की भूख मिटाता है, परंतु किसी को प्रसन्न नहीं करता, किसी का अंधा नहीं होता, सड़क पर पड़े हुए कूड़े-कचरे उठाकर स्वतंत्र

रहता है। वह अपमान और सुख समझकर उनकी गुड़िया बनाकर उन्हें ओढ़ लेता है और दुःख बराबर; न किसी से कुछ लेता, न किसी को कुछ देता; किसी ग्रह पर या अपने रिश्तेदारों के बीच रहते हुए भी उसके मन में उनसे कोई स्नेह नहीं होता।

उसे अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक कुछ भी समझ नहीं आता; वह किसी को नीचा और किसी को ऊँचा नहीं समझता, वह सब में एक ही आत्मा देखता है; बंधन और मोक्ष के प्रति मन का संकल्प या प्रयास समतापूर्ण होता है और वह ब्रह्मज्ञान में ही लगा रहता है और उसी में पूर्ण सुख मानता है - उससे अधिक ज्ञानी और कौन है?

ऐसा ज्ञानी व्यक्ति जीवन से मुक्त हो जायेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। उसे जन्म और मृत्यु का कष्ट नहीं सहना पड़ता। वह सदैव परमानंद में डूबे रहते हैं, लेकिन ऐसे महापुरुष बहुत कम होते हैं।

वैराग्य शतकम् - ०८७ .

हे धरती माता! पिता वायु ! मित्र अग्नि ! जल भाई ! और हे! भाई आकाश ! अब मैं आप सभी से अंतिम विदाई लेता हूं। आपकी संगति में मैंने पुण्य कर्म किये और उन पुण्यों के फलस्वरूप मुझे आत्मज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे मेरा सांसारिक मोह नष्ट हो गया। अब मैं परब्रह्म में लीन हो गया हूँ। अब न तो कोई प्रेमी है ना प्रियतमा , सब के सब शुद्ध चेतन आत्म स्वरूप में स्थित हो गए है। जहाँ कोई दूसर नज़र ही नहीं आता , तब कौन मित्र और कौन दुश्मन !

मानव शरीर पांच तत्वों से बना है: पृथ्वी, वायु, प्रकाश, जल और आकाश। जिसने आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया है, जिसने ब्रह्म को पहचान लिया है, वह

इन पांचों तत्वों को विदा करता है और प्रणाम करके कहता है, "आप पांचों के सानिध्य में रहकर, यह शरीर धारण करके, मैं आत्म-प्राप्ति के योग्य हो गया हूं।

ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त हो गया है। माया तो मुझे लूटने आयी थी , पर देखो भगवत कृपा से , माया अपना सर्वस्व मेरे चरणों में अर्पित कर , मुझे अपना छोटा भाई समझ कर प्रेम से मेरा हाथ थाम कर , उस परम पिता परमात्मा , भगवन के महा धाम की ओर चल पड़ी है , मुझे ले जा रही है , देखो अब माँ महामाया भी , जैसे ही मैंने भगवत स्मरण किया , वही कठोर जीवनाशिनी माया , अब कितनी करुणामयी माँ बन गयी है।क्योंकि वह महामाया भगवान की शक्ति स्वरूपा है , भगवान के आधिपत्य में रहती है , और भगवत भक्तों का सम्मान करती है।

अब मेरे सम्मुख हाथ जोड़े बड़े प्रेम से और आदर से वे पांच तत्व ; शब्द , स्पर्श , रूप , रस , और गंध - कह रहे हैं कि - अब हम तुम्हारे साथ मैं तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे। अब हम किसी भी रूप में नहीं आएंगे। किसी भी तरह तुम्हारा जन्म नहीं होगा। इसलिए अब मुझे जन्म नहीं लेना पड़ेगा। अब मैं पूर्णकाम , पूर्ण मुक्त हो चुका हूँ। मैं अब किसी बंधन में नहीं फंसा हूँ।

मैं आप सभी का आभारी हूं; क्योंकि आपकी संगति के कारण ही मुझे यह फल मिला है। अब मैं आपसे विदा लेता हूं. अब मैं ब्रह्मानन्द में मग्न हो गया हूँ। अब मेरा मन हो रहा है कि मैं यहां आऊं और आप सबके बीच रहूं; अर्थात शरीर धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसका अर्थ यह है कि मानव शरीर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए प्राप्त होता है; और यह ज्ञान अन्य प्रजातियों के शरीर में नहीं हो सकता। जो लोग मानव शरीर में आकर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करते हैं और इसके माध्यम से परम पद या मोक्ष प्राप्त करते हैं, वे ही धन्य हैं, उनके लिए मानव शरीर प्राप्त करना सार्थक है। दूसरों का पृथ्वी पर जन्म लेना व्यर्थ है, क्योंकि बिल्ली, कुत्ता, गधा आदि योनियों में खाना, पीना, भोग-विलास, यौन क्रियाएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं। फिर मनुष्य और सामान्य पशुओं में क्या विशेषता है?

वैराग्य शतकम् - ०८८ .

जब तक शरीर स्वस्थ है, बुढ़ापा दूर है, इन्द्रियों की शक्ति अक्षुण्ण है, जीवन के दिन शेष हैं, तभी बुद्धिमान मनुष्य को अपने कल्याण के लिये प्रयत्न करना चाहिये। जब घर जल जाए तो कुआँ खोदने से क्या लाभ ?

जब तक आपका शरीर स्वस्थ और फिट रहता है, बुढ़ापा नहीं आता, आपकी इंद्रियाँ ठीक रहती हैं, आपका अंत दूर है, आपके पास जीने के लिए अभी भी जीवन है, तब तक आप अपने लिए अच्छा करने का प्रयास करते हैं; यानि ऐसी स्थिति में ही भगवान की पूजा और ध्यान करें।

तब क्या करोगे जब आप रोगों के बोझ तले दब जाते हैं, खाँसते और दम घुटने लगते हैं, आँखों से दिखाई नहीं पड़ता, कानों से सुनाई नहीं देता, गला बैठ जाता है, मृत्यु अपने पंख फैलाने लगती है। यानी फिर कोई कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं. उस समय यदि आप कुछ करने का प्रयत्न भी करेंगे तो आपकी स्थिति उस व्यक्ति के समान होगी जो घर में आग लगने पर कुआँ खोदता है।

यदि तुमने बचपन में विद्या नहीं सीखी, यदि तुमने युवावस्था में धन अर्जित नहीं किया, यदि तुमने बुढ़ापे में अच्छे कर्म नहीं किये तो मृत्यु के बाद के जीवन में , परलोक में जन्म लेकर में तुम क्या करोगे ?

सबसे अच्छी बात तो यह है कि बचपन में ही ईश्वर की आराधना कर ली जाए। घुवा और प्रह्लाद ने बचपन में ही भक्ति करके भगवान के दर्शन किये थे। यदि ऐसा न हो सके तो युवावस्था में ही करें और यदि युवावस्था में भी न हो सके तो बुढ़ापे में भगवान की भक्ति अवश्य करनी चाहिए। पत्नी, पुत्र और धन का मोह छोड़कर भगवान में मन लगाओ; आज या कल पर मत टालो; क्योंकि मौत हमेशा छिपी रहती है, आप कभी नहीं जानते कि वह आपको कब पकड़ लेगी।

जब मृत्यु आएगी तो तुम कुछ भी नहीं कर पाओगे, डर जाओगे, भगवान का नाम तुम्हारे मुंह से नहीं निकलेगा।जब जीवन भर धन दौलत - हाय पैसा ! हाय पैसा ! किया करते थे तो फिर अंत समय में - हे राम ! हे राम ! यह पवित्र शब्द में मुख से कैसे निकल सकते है ? जो जीवन भर जिसकी स्मृति बनाये रखता है , अंत समय में वही स्मृति ही उजागर होगी। यह सृष्टि का अटल कायदा है। और तुम

अपने हाथों से दान-पुण्य या दूसरों की मदद नहीं कर पाओगे। उस समय, अपने परलोक का निर्माण करने का प्रयास करें, आग लगने की स्थिति में कुआँ खोदें: ऐसा करना मूर्खतापूर्ण बात होगी। इसलिए जो कुछ भी करना है, मृत्यु के समय से पहले ही कर लेना।

किसी ने आख़िरत के लिए क्या अच्छी सलाह दी है:--- प्रतिदिन वेद पढ़ें और वेदविहित अनुष्ठान करें। वेदों के अनुसार ईश्वर की आराधना करें। अपने मन से कामुक सुखों को दूर करो; अर्थात विषयों का त्याग कर दो। पापों के समूह से छुटकारा पाओ। सांसारिक सुख सुगंध, फूल, चांदनी को छूने, महिलाओं का आनंद लेने और नृत्य और गाने देखने के प्रकृति के विचारों का परिणाम हैं; यानी उनके दोषों को महसूस करें. भगवान की भावना में प्रेम करो और गृहस्थ जीवन

के अनेक दोषों को समझकर शीघ्र ही घर छोड़कर वन में चले जाओ।या स्वयं मन को वन बना डालो।

यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जैसा कि ऊपर कहा गया है, व्यवहार की दृष्टि से शरीर को लेकर जंगल में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आइए हम अपने मन के एक हिस्से को जंगल में बदल दें, और मन में ही त्याग की इमारत को मजबूत कर लें, और उसी में रमण करते रहें, इतनी भावनात्मक क्रिया आवश्यक है और इसे ही मानसिक त्याग कहा जाता है, जो आजकल चलन में है। आज के कलयुगी माहौल को आज के व्यावहारिक जीवन में व्यवहारिक दृष्टि से क्रियान्वित किया जा सकता है।

और भी प्राचीन समय थे, जब जंगल में फल और कंद-मूल मुफ्त में खाने को मिलते थे। आजकल हालात ऐसे नहीं हैं. अतः हमें अपने घर में ही विचारों के माध्यम से वन की कल्पना करके भक्ति, ध्यान आदि में संलग्न रहना चाहिए।

आजकल हमें वर्तमान समय, कलयुग का आभारी होना चाहिए कि घर बैठे साउंड सिस्टम, वातानुकूलित कमरा, ठंडा पानी, रेफ्रिजरेटर पानी आदि आसानी से उपलब्ध हो जाते है। जब की जो जंगल में ऋषियों को बड़ी परेशानी के बाद प्राप्त होते थे। ये सभी सुविधाएं हमको हमें हमारे घरों में अनायास ही दिए जाते हैं। ये बहुत आसानी से और कम प्रयास से उपलब्ध हो सकते हैं।इन सुविधाओं का हमें सदुपयोग करना चाहिए।

हे कलियुग! कौन कहता है तुम बुरे युग हो ? तुम घर को ही जंगल बना दे सकते हो। तुम घर को ही एयर कंडीशनर द्वारा हिमालय की कन्दराएँ बना दे सकते हो।
तुम घर बैठे ही आधुनिक उपकरणों द्वारा , महान ऋषि - मुनियों , संत महापुरुषों का अमोघ , उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त करा देते हो। तू गुरु की प्राप्ति के बिना ही महा ज्ञान की प्राप्ति करा देते हो। हे आज के कलयुग ! तुम्हें नमन है , तुम धन्य हो।

चेतावनी : हर एक मनुष्य को चाहिए कि मरने से पहले अपने मन को सांसारिक बंधनों से हटा लें और परमात्मा में लगा दें। अमर होने का यही एकमात्र उत्तम उपाय है, अन्यथा मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती।

वैराग्य शतकम् - ०८९ .

हमने उस ज्ञान का अध्ययन नहीं किया जो इस दुनिया के बुद्धिमान लोगों को संतुष्ट करेगा और वेद - वादियों को गौरवान्वित करेगा। हाथी के सिर का पिछला भाग तलवार की धार से काटकर हमने अपनी कीर्ति स्वर्ग तक नहीं पहुँचाई। चाँदनी रात में सुन्दरी के कोमल अगर-पल्लव (निचले होंठ) का रस भी नहीं पिया। अफसोस, हमारी जवानी उस दीपक की तरह हो गयी है जो खाली घर में जलता है और अपने आप बुझ जाता है।

वैराग्य शतकम् - ०९० .

अच्छे लोगों में ज्ञान उनके अभिमान आदि को नष्ट कर देता है, लेकिन दुष्टों में वही ज्ञान सद्गुणों और गुणों को बढ़ाता है। एकान्त स्थान योगियों के लिए तो मुक्तिदायक है, परन्तु कामी मनुष्यों की कामनाओं और वासनाओं को भी बढ़ाने वाला है।

जैसे स्वाति की बूँद सीप में पड़कर मोती बन जाती है, परन्तु साँप के मुँह में पड़कर विष बन जाती है; इसी प्रकार एक ही चीज़ अलग-अलग पुरुषों में अलग-अलग गुण दर्शाती है। अच्छे लोगों का अभिमान ज्ञान से नष्ट हो जाता है,

वे सभी को अपने समान समझते हैं, सभी के प्रति सहानुभूति रखते हैं, किसी को दुःख नहीं पहुँचाते।

परन्तु उसी ज्ञान के कारण दुष्टों की दुष्टता और भी बढ़ जाती है, वे संसार को अपने सामने तुच्छ समझने लगते हैं; अपने ज्ञान के घमंड के कारण वह किसी की तरफ देखता भी नहीं, अपने अलावा बाकी सभी को जानवर ही समझता है। एक ही ज्ञान दो जगह, अलग-अलग जगह अलग-अलग प्रभाव दिखाता है।

जैसा; एकांत स्थान योगियों के मन को ब्रहमा के विचारों में लीन कर देता है और इसके माध्यम से उन्हें परम मुक्ति प्राप्त होती है; परन्तु वही एकांत स्थान कामी व्यक्तियों के हृदय में हर्ष उत्पन्न करता है और बुरे विचार उत्पन्न करता है। यदि वह जिस कन्या की पूजा करता है, उसे मंदिर में या कुमारी पूजा के दौरान एकांत में देख लेता है, तो वह कामोत्तेजित हो जाता है। यह प्राकृतिक स्वभाव है. स्थान से बहुत फ़र्क पड़ता है. ब्रहमाजी भी एकान्त में इसी काम-इच्छा के शिकार हो गये।

वैराग्य शतकम् - ०९१ .

हमारे हृदय में अभिलाषाएँ पुरानी हो गई हैं, हमारी जवानी भी चली गई है, कद्रदानी के अभाव में हमारे अच्छे गुण भी बेकार हो गए हैं, ईश्वर का सर्वनाशी काल (मृत्यु) बहुत शीघ्र हमारे पास आ रहा है; अत: अब भगवान शिव के चरणों के अतिरिक्त कोई अन्य सुरक्षा का स्थान नहीं है।

वह आदमी उदास होकर कहता है, - हमारा मन हमारे मन में ही रह गया, हमारी इच्छाएँ पूरी नहीं हुईं और हमारी जवानी छीन गयी; अब उसके वापस आने की

कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि जवानी कभी किसी के वापस आने के बारे में नहीं सुना गया है. इंसान की प्यास कभी नहीं बुझती, उसे एक के बाद एक और इच्छाएं मिलती रहती हैं। इच्छाएं पूरी नहीं होती और मौत आ जाती है।

वह आदमी उदास होकर कहता है, - हमारा मन हमारे मन में ही रह गया, हमारी इच्छाएँ पूरी नहीं हुईं और हमारी जवानी छीन गयी; अब उसके वापस आने की कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि जवानी कभी किसी के वापस आने के बारे में नहीं सुना गया है. मनुष्य की प्यास कभी नहीं होती बुझते ही उसकी एक के बाद एक और इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं। इच्छाएं पूरी नहीं होती और मौत आ जाती है।

मन में हजारों इच्छाएं हैं, लेकिन इच्छाएं पूरी न होने का दुख भी कम नहीं है। हाय भगवान ! मैं अपने मन की विशालता से तंग आ गया। अब तो बस यही चाहता हूं कि इस विशाल हृदय से तंग आकर कहीं चला जाऊं। इसी प्रकार महात्मा सुन्दर दास जी भी कहते हैं- इस लालसा से अन्त में सभी बुद्धिमान लोग दुःखी हुए हैं और उन्होंने खेदपूर्वक ऐसी बातें कही हैं।

इस प्यास के कारण मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, लेकिन प्यास बूढ़ी नहीं होती, बुढ़ापे में इसकी तीव्रता भी बढ़ जाती है। इन तीनों लोकों को पीकर तथा सातों समुद्रों को पीकर भी वह थकती नहीं। इसलिए मनुष्य को आशा व इच्छा का त्याग कर ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिए। जो लोग सावधान नहीं रहते, उसका परिणाम बुरा होता है। जब अचानक बुढ़ापा आ जाए और शरीर कमजोर हो जाए तो कुछ नहीं होता।

जब आयु समाप्त हो जाती है या मृत्यु निकट आ जाती है तो व्यक्ति सबको पीछे छोड़ देता है। देखिये कितनी सच्चाई है, एक महान कवि सुंदर दास जी ने कहा है -

ये मम देश विलायत हैं गज |
ये मम मन्दिर ये मम मित्र॥
ये मम पिता पुनि बांधव |
ये मम पूत सु ये मम नाती॥ |
ये मम कामिनी खेली करे नित।
ये मम सेवक हैं दिन रति॥

सुंदर ऐसे ही चला गया सब।
बिन तेल न जरियोन सु बुझी जब बाती ॥

यह मेरा देश है, ये मेरे हाथी, घोड़े, महल और घर हैं, ये मेरे माता-पिता, मेरे रिश्तेदार और पोते-पोतियाँ हैं, यह मेरी पत्नी है और ये मेरे सेवक हैं; आदमी ऐसा करता है और सबको पीछे छोड़ता चला जाता है. जिस प्रकार तेल जल जाने पर दीपक की लौ बुझ जाती है, उसी प्रकार वृद्ध होकर व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। इसलिए युवावस्था में ही पत्नी और पुत्र का मोह त्याग कर एकांत में चले जाना चाहिए और परमात्मा की आराधना करनी चाहिए, क्योंकि बुढ़ापे में। कुछ नहीं हो सकता।

युवाओं में जिन्होंने एकांत में ईश्वर की आराधना की है वही सच्चे भक्त हैं। यदि कोई बूढ़ा व्यक्ति अपने अकेलेपन पर गर्व करता है, तो वह मूर्ख है, क्योंकि वह जहां पड़ा है वहां से हिल नहीं सकता। स्वामी सुंदर दास जी ने उन लोगों का बहुत अच्छे से चित्रण किया है जो अपना सारा जीवन सांसारिक उलझनों में ही बिता देते हैं और भगवान की भक्ति नहीं करते हैं।

किसी पुरुष की गर्दन हिलने लगती है, त्वचा लटकने लगती है, कमर झुक जाती है, बाल सफेद हो जाते हैं, फिर भी वह किसी स्त्री के साथ संभोग करता है। मुंह के दाँत उखड़ जाते हैं, यद्यपि अभिलाषा पूर्ण गधे की अभिलाषाएं दूर नहीं होतीं, शरीर कांप उठता है; लेकिन वह स्त्रियों से प्रेम करता है और दिन-रात पैसे का जप करता है। आखिरकार वह घर छोड़ देता है, लेकिन मूर्खतावश, वह अपने स्वामी या भगवान की पूजा नहीं करता है।

वैराग्य शतकम् **- 092 .**

जब मनुष्य का गला प्यास के कारण सूख जाता है तो वह ठंडा पानी पीता है। जब उसे भूख लगती है, तो वह सब्जियों और करी के साथ चावल खाता है; जब

उसकी कामवासना तीव्र होती है तो वह स्त्री को कसकर आलिंगन करता है; इस पर विचार करने से पता चलता है कि ये सभी रोगों की औषधि हैं; लेकिन लोग गलती से इन्हें ख़ुशी समझ लेते हैं. ये सभी तात्कालिक सुख, शाश्वत सुख देने के साधन हैं और भगवान के चरणों में स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित करने से ही आनंद की प्राप्ति होती है। बाकी सब तो जादू-टोना का झूठा जादू है।

प्यास की दवा है ठंडा पानी; अर्थात ठंडे पानी से प्यास बुझती है। भूख का इलाज है रोटी-भात और साग दाल। अर्थात दालों और दालों से भूख लगने का रोग नष्ट हो जाता है। वासना भी रोग है। इस रोग को शांत करने का उपाय है स्त्री को आलिंगन करना अर्थात स्त्री सहवास से, काम की आग , काम रोग शांत हो जाती है।

इन बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ठंडा पानी पीना, भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन और स्त्रियों का मैथुन, भूख, प्यास और मैथुन ये ही शांति के उपाय हैं, ये उन रोगों की औषधि हैं। ऐसे तुच्छ कार्यों और तुच्छ वस्तुओं को सुख मानना बहुत बड़ी भूल है।

वैराग्य शतकम् - ०९३ .

हे शिव ! वह गंगा में स्नान कराकर आपको पवित्र फल और फूल चढ़ाकर आपकी पूजा करेगा। ऐसा हुआ, शिष्य गुरु की आज्ञा के अनुसार पर्वत की गुफा में अपने

आत्ममग्न होकर जंगल के फल खा रहा है और आपके चरणों का ध्यान कर रहा है। मुझे इन सांसारिक दुःखों से कब छुटकारा मिलेगा ? कब मैं इस संसार को पूर्णतया भूल जाऊं ?

वैराग्य शतकम् - ०९४ .

मैं उसे भगवान मानता हूं, जो किसी के सामने सिर नहीं झुकाता, जो पहाड़ की चट्टानों को अपना बिस्तर समझता है, जो गुफा को अपना घर मानता है, जो पेड़ों की छाल को अपना वस्त्र और जंगली हिरण को अपना दोस्त मानता है। जो वृक्षों की कोमल झुरमुटों को समझता है, वह पेट की अग्नि को शांत करने वाला है, जो प्राकृतिक झरनों का पानी पीता है और जो ज्ञान को अपना प्रिय जीवन मानता है।

जो किसी चीज़ की चाहत नहीं रखते, किसी की परवाह नहीं करते, किसी के सामने झुकते नहीं; जिनकी चाहतों का कोई अंत नहीं होता, वो हर किसी के सामने सिर झुकाते हैं। जो लोग संसार के गुलाम नहीं हैं वे वास्तव में देवता हैं।

जो मनुष्य संसार का दास नहीं है, संसार का कुत्ता नहीं है, वह देवताओं से कहीं ऊँचा है। देवता उनकी बराबरी नहीं कर सकते. जिस मनुष्य में सांसारिक इच्छाओं का लेशमात्र भी नहीं है, उसमें और देवताओं में कोई अंतर नहीं है। सच्चे महात्मा कभी जंगल और पहाड़ छोड़कर इस संसार में नहीं आते; वे मांग कर नहीं खाते; वे जंगल में जो कुछ भी पाते हैं उसे खा लेते हैं।

बिना मांगे कुछ पाने में बड़ा आनंद होता है। फकीर वही अच्छा है जिसे पूछने की आदत न हो। महापुरुष ईश्वर पर निर्भर रहते हैं, इसीलिए उन्हें अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ अपने स्थान पर ही मिल जाती हैं। उनको पसंद नहीं है कि आकर दुनिया की कालिख पोतें। सांसारिक लोगों की संगति करने से कोई लाभ नहीं है।

दुनिया से दूर रहना ही बेहतर है. क्योंकि इंसान जिन लोगों को देखता है और जिन लोगों के साथ रहता है वैसा ही बन जाता है। ऐसे लोगों के साथ जुड़कर जो चीजों के प्रति भावुक होते हैं, एक वैरागी भी भावुक या कामुक हो जाता है।महापुरुष ईश्वर पर निर्भर रहते हैं, इसीलिए उन्हें अपनी आवश्यकता की

वस्तुएँ अपने स्थान पर ही मिल जाती हैं। उनको पसंद नहीं है कि आकर दुनिया की कालिख पोतें।

सांसारिक लोगों की संगति करने से कोई लाभ नहीं है। दुनिया से दूर रहना ही बेहतर है. क्योंकि इंसान जिन लोगों को देखता है और जिन लोगों के साथ रहता है वैसा ही बन जाता है। ऐसे लोगों के साथ जुड़कर जो चीजों के प्रति भावुक होते हैं, एक वैरागी भी भावुक या कामुक हो जाता है।

यहाँ तक कि जल और वृक्षों के पत्ते खाने वाले ऋषि भी स्त्रियों को देखकर ही अपनी तपस्या से क्षीण हो गये। इसीलिए यह है शास्त्रों में लिखा है कि संन्यासियों को सांसारिक लोगों से दूर रहना चाहिए। सच्चे महापुरुष जो सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं; किसी के दरवाजे पर मत जाओ. , जो कुछ चाहता है; वह किसी के दरवाजे पर जाता है. कामनाहीन मनुष्य कभी किसी के पास नहीं जाता। सच्चे महात्मा स्वयं को सांसारिक लोगों से छिपाते हैं।

दो महात्मा जो राजा से मिलना नहीं चाहते थे

एक नगर के बाहर जंगल में दो महान तपस्वी संत रहते थे। राजा उससे मिलना चाहता था। राजा अपने परिवार सहित उनसे मिलने गये। महात्माओं ने सोचा कि यह तो कोई बुरा अभिशाप है। इससे हमेशा बचना चाहिए. आज राजा आये हैं, कल सारा नगर आयेगा। फिर हम भजन नहीं कर पायेंगे।

जब राजा निकट आये तो वे आपस में लड़ने लगे। एक कहने लगा, “तू ने मेरी रोटी खा ली।” दूसरे ने कहा-- । “कल तुमने मेरा भी खाया था।” यह हालत

देखकर राजा निराश हो गये और लौट आये। इस प्रकार महात्माओं को अपने एकांत में कोई विघ्न नहीं पड़ता था।

सांसारिक लोगों की संगति बुरी है

एक महात्मा कहीं से आकर काशी में ठहरे। दस-पाँच साल बाद बहुत से लोग उसे जानने लगे और उसे भोजन के लिए अपने घर ले जाने लगे। महात्मा ने देखा कि घर जाने से ध्यान भटकता है इसलिए उन्होंने अपनी लंगोटी और धोती उतारकर फेंक दी। माना कि नग्न रहने से लोग इसे अपने घरों में ले जाने से बचेंगे। परन्तु परिणाम विपरीत हुआ, उनका यश और भी बढ़ गया।

अब बड़े-बड़े राजा, धनवान और जमींदार उससे मिलने आने लगे। उनका सारा समय अमीरों से मिलने में व्यतीत होने लगा। इतने में महात्मा एक ओर आये और अकेले में उससे पूछा- “कैसे हो?” महात्मा ने कहा, "हम बवासीर से मरते हैं।" अतिथि महात्मा ने कहा, "लोग तुम्हें सिद्ध कहते हैं।" महात्मा ने कहा--"चाहे कुछ भी हो, लोग मूर्ख हैं।

हमारा मन उन इच्छाओं से भरा हुआ है, हमें नहीं पता कि हम किस गर्भ में जन्म लेंगे। लेना पड़ेगा। इन धनवानों की संगति में हमारा सारा त्याग नष्ट हो गया।” यह सच है कि निवृत्ति पथ पर चलने वालों के लिए प्रवृत्ति वाले लोगों का साथ करना अच्छा नहीं होता।

वैराग्य शतकम् - ०९५ .

जबकि गंगा, जो भगवान शिव के सिर को चूमती हुई अच्छी लगती है, बड़ी-बड़ी शाखाओं की छाल और अपने किनारे पर उगने वाले फलों से मनुष्य को जीविका प्रदान करने के लिए तैयार है, फिर कौन सा विद्वान या बुद्धिमान व्यक्ति है, जिसे दुखियों पर दया नहीं आती है। क्या रिश्तेदार गरीबों को मुसीबतों से बचा पाएंगे? आह भरते हुए - उदासी के साथ गहरी साँस लेते हुए - वह महिला का चेहरा देखना चाहता था।

इसका मतलब यह है कि मनुष्य को किसी भी प्रकार का दुःख सहन करने की आवश्यकता नहीं है, गंगा स्वयं उसे सब कुछ देने के लिए तैयार है। उन्होंने गंगा जल पिया और उसके तट पर बस गये। वह जंगल के फल खाकर और पेड़ों की छाल से बने कपड़े पहनकर जीवित रह सकता है, लेकिन एक महिला के कारण वह ऐसा नहीं कर सकता।

सारांश : स्त्रियां ही सब दुखों की जड़ हैं। यदि वंश वृद्धि की कोई आवश्यकता नहीं है तो फिर स्त्री की भी कोई आवश्यकता नहीं है और यदि स्त्री ही नहीं है तो फिर दुःख की बात ही क्या है? वह महिला ही है जो लोगों को खुश करने और अपनी बात मनवाने के लिए दुष्टों की बातें सुनने को मजबूर होती है। दया के कारण पुरुष को अपना और अपने बच्चों का दुःख दिखाई नहीं देता।

वैराग्य शतकम् - ०९६ .

आश्चर्य की बात है कि जहां के बाग-बगीचों में तरह-तरह के पकवान बनाना और खाना एक कठिन तपस्या है, जहां लंगोटी पहनना सर्वोत्तम वस्त्र है, वहां लोग काशी छोड़कर अन्यत्र क्यों बसते हैं! भीख माँगना प्रतिष्ठा की बात है और काशी मरना ही यहां शुभ माना जाता है।

लोगों का मानना है कि काशी में मरने वाले को मोक्ष मिलता है; इसके चलते कई लोग बुढ़ापे में पहुंचते ही सब कुछ छोड़कर कांशी में बस जाते हैं। वहाँ मृत्यु से कोई नहीं डरता; वहां के लोग मृत्यु को परम शांति देने वाला मानते हैं। वहां कोपीन पहनकर भीख मांगने वालों को बुरी नजर से नहीं देखा जाता, इसलिए लोगों को काशी में ही निवास करना चाहिए।

वैराग्य शतकम् - ०९७ .

हे मन! किसके दरवाजे पर, - "घर के मालिक से मिलने का मेरे पास समय नहीं है, वह इस समय अकेले बैठे हैं, इस समय सो रहे हैं, तुम्हें यहां खड़ा देख लेंगे तो नाराज होंगे?" - जहां ऐसी बातें सुनने को मिलें, उन्हें त्याग दें। विश्वेश, उस भगवान की शरण में जाओ, जिसके द्वार पर कोई द्वारपाल नहीं है, जहां कभी

भी निर्दयी और कठोर शब्द नहीं सुने जाते, जो शाश्वत और दैनिक सुख का दाता है।

मूर्ख मनुष्य नासमझी के कारण व्यर्थ धनवानों के द्वार पर जाता है और अपमान भरी बातें सुनता है; जब वह उनसे मिलने जाता है तो उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और द्वारपालों से तरह-तरह की बकवास सुननी पड़ती है।

यदि वह अपनी अक्ल का जरा भी प्रयोग करे तो उसके द्वार पर जाए, जहां उसे कोई रोकने वाला न हो, जहां दिल तोड़ने वाली बातों का जिक्र तक न हो, जो सारे संसार का स्वामी है। और प्रतिदिन भूख का दाता। क्या वह हमारी इच्छा पूरी नहीं करेगा? जरूर पूरा करेंगे. जो पाषाण के भीतर / नीचे उत्पन्न हुए प्राणी को आहार पहुँचता है , तो क्या इतने बड़े काया वाले मनुष्य के भोजन की व्यवस्था नहीं करेगा ? वह अवश्य करेगा।

एक राजा बहुत आलसी और स्वार्थी था। उसने राज कर्मचारियों की ओर बिल्कुल भी नहीं देखा। सारा भार वजीर के सिर पर था। यदि मंत्री किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए आदेश लेने आता तो राजा उसे घंटों दरवाजे पर बैठाए रखता, लेकिन अंदर नहीं बुलाता। यह बात मंत्री को नागवार गुजरी. वह घर आया और अपने बेटों से कहा कि वे चार घंटे के भीतर जितना हो सके उतना धन और सामान दूसरे राजा के राज्य में ले जाएं।

अब मैं इस दुनिया को छोड़कर भगवान में ध्यान लगाऊंगा।' लड़कों ने जितना पैसा ले सकते थे ले लिया। मंत्री ने बचा हुआ धन गरीबों में बाँट दिया और किसी दूसरे राजा के राज्य में कुटिया बनाकर तपस्या करने लगा।

दो-तीन दिन बाद जब उस आलसी राजा के राज्य में संकट आया तो उसे अपने मूल मंत्र याद आये। जब उसे बुलाने के लिए किसी को भेजा गया तो पता चला कि वह साधु बन गया है। राजा स्वयं उनके पास गये और बोले- हे मन्त्रिवर! आप इतने बड़े राज्य के प्रधानमंत्री और शासक थे, फिर भी आपने सारी सुख-सुविधाएं छोड़कर जंगल में डेरा क्यों डाला है ? तुम्हें इससे क्या मिला ?”

मंत्री ने कहा--'महाराज! भगवान की शरण पाकर दो-चार दिन में ही मुझे इतना कुछ मिल गया कि मैं घंटों आपके द्वार पर बैठा रहता, पाँच घण्टों तक आपकी प्रतीक्षा करता रहता; परन्तु आपने दर्शन तक न दिये; लेकिन आज सर, मेरा परिवार. बल्कि मुझे ही आदर्श मानकर इस घने जंगल में आये हैं। ये दो-तीन

दिन की कमाई है. , इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो सभी आशाओं को त्यागकर एक परमात्मा की शरण लेता है, उसे कोई अभाव नहीं रहता; परन्तु आवश्यकता है दृढ और अटल विश्वास की।

जो भी व्यक्ति जिस इच्छा से भगवान की पूजा करता है, उसकी वह इच्छा अवश्य पूरी होती है। परन्तु जो कोई निस्वार्थ भक्ति से उनकी पूजा करता है, उसे स्वयं भगवान मिल जाते हैं, और जब वह मिल जाता है, तो कुछ भी शेष नहीं रहता; त्रिलोकी की सम्पत्ति बलपूर्वक उसके चरणों में आना चाहती है।

इसलिए, बुद्धिमान लोगों को भगवान के अलावा किसी के सामने खुद को विनम्र नहीं करना चाहिए। इंसानों के पास है ही क्या? कुछ छोटे भिखारी होते हैं और कुछ बड़े। जिसे कुछ नहीं चाहिए वही सच्चा अमीर है। इतनी समृद्ध नदी करोड़ों में एक भी नहीं; तो फिर क्या भिखारी को भिखारी से मांगना उचित है?

केवल भगवान ही इच्छाएं पूरी कर सकते हैं

एक राजा ने दूसरे राजा का राज्य छीन लिया। वह राजा तपस्या करने लगा. कुछ दिनों के बाद उसकी प्रशंसा सुनकर राजा उस तपस्वी राजा के पास गये और बोले

– "आप अपना राज्य वापस ले लीजिये, इसके अलावा आप जो कुछ भी माँगेंगे मैं आपको दूंगा।" तपस्वी राजा ने कहा – "राजन् ! धन्यवाद; परन्तु यदि तुम मृत्यु के बिना जीवन, बुढ़ापे के बिना युवावस्था, दुःख के बिना सुख और क्रोध के बिना सुख दे सकते हो, तो दे दो।

राजा ने कहा, "मैं उन्हें तुम्हें नहीं दे सकता।" ये सब केवल ईश्वर से ही प्राप्त किया जा सकता है।" यह उत्तर सुनकर तपस्वी-राजा बोले--। "इसीलिए अब मैं सब को छोड़कर परमेश्वर के पास आया हूं, कि मेरी इच्छा पूरी हो; क्योंकि! यह कार्य मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता।"

बहुत से अज्ञानी लोग जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, वे अपने हृदय में सोचते हैं कि ईश्वर हमें भोजन देने को तैयार नहीं होंगे। ये उनकी गलती है. भगवान उनको भी भोजन देते हैं जो उन्हें कभी याद भी नहीं करते। तब; वह उन लोगों को भोजन क्यों नहीं देगा जो उसे याद करते हैं? भोजन अवश्य आएगा, शर्त यह है कि उसमें दृढ़ विश्वास हो। भगवान अपने भक्तों के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

भगवान हमारे लिए सब कुछ कर रहे हैं

एक नाई दुर्योधन के पैर सहलाता था। एक दिन जब नाई दुर्योधन की सेवा के लिए जा रहा था तो उसके दरवाजे पर उसे दो महापुरुष मिले। वह उन्हें भगवान का भक्त समझकर उनकी सेवा में लग गया और राजा के यहाँ जाने को तैयार हो गया। समय रहते राजा को नाई की याद आई। भगवान नाई का रूप धारण करके दुर्योधन के पास पहुंचे और उसके पैर दबाने लगे। अन्त में अपना इच्छित कार्य पूरा करके वह वहाँ से चला गया।

इतने में नाई डर से कांपता हुआ आया और राजा से क्षमा मांगने के लिए रुक गया। दुर्योधन: बोला, “क्या तुम पागल हो गये हो? अभी तो तुम मेरे पैर दबा रहे थे।” यह सुनकर नाई को समझ आ गया कि भगवान ने ही मेरे लिए नाई का काम किया है। यह इतनी भक्ति और पूजा का फल है! अब मैं उन्हें छोड़कर उनकी ख़ुशी के लिए दूसरों की सेवा क्यों करूँ? यह सोचकर वह घर छोड़कर जंगल में चला गया।

भगवान का दूसरा नाम विश्वम्भर है। विश्व का पालन-पोषण करने वाले को विश्वस्मर कहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश्वर संसार के सभी प्राणियों को भोजन प्रदान करता है। एक सच्ची घटना है -

एक बार महाराज शिवाजी एक विशाल महल का निर्माण करा रहे थे। वहां हजारों मजदूर और कारीगर कार्यरत थे। उसे देखकर शिवाजी को गर्व हुआ कि मैं ऐसा हूँ जो प्रतिदिन इतने लोगों को रोटी देता है। इतने में समर्थ स्वामी रामदास आ गये। वह महाराज से अपना आपा खो बैठा। कहा--- “राजन. सामने पड़े पत्थर के दो टुकड़े कर दो।”

शिवजी के हुक से पत्थर दो टुकड़ों में टूट गया। उस चट्टान के अंदर से एक मोटा और ताजा मेंढक निकला। शिवाजी उसे देखते ही आश्चर्यचकित रह गये। स्वामी जी बोले – “राजन् ! इस पत्थर के अंदर इन मेंढकों को भोजन किसने उपलब्ध कराया? ईश्वर के सामने मनुष्य कुछ भी नहीं है, उसकी स्वयं इच्छाएं हैं, इसलिए वह मात्र एक साधन मात्र है। वह ईश्वर है जो सबका पालन-पोषण करता है और प्रेम से उनका पालन-पोषण करता है।

पिता पुत्र की इच्छा अवश्य पूरी करते हैं

एक व्यापारी उनके निधन से तंग आकर काशी चला गया और वहीं काम करने लगा। कुछ समय बाद उसके पास लाखों-करोड़ों की संपत्ति हो गई। उन्होंने एक मंदिर बनवाना शुरू कर दिया. घर से निकलते समय वह अपने पीछे एक छोटा

लड़का छोड़ गये। जब लड़का सोलह वर्ष का हुआ तो उसने अपनी माँ से अपने पिता का पता पूछा। माने ने कहा – “मुझे नहीं पता।”

यह सुनते ही बेटा अपने पिता की तलाश में निकल पड़ा। वह अपनी मां को भी अपने साथ ले गया. कुछ दिनों के बाद बहुत परेशानी झेलते हुए वह काशी पहुंचे और जीविकोपार्जन के लिए उसी मंदिर में मजदूर के रूप में काम करने लगे। सेठ ने उसे नया मजदूर समझकर उसका निवास स्थान तथा उसके पिता का नाम पूछा। उसने सारी बात बताई और कहा कि मां भी आई थीं. सेठ ने अपनी पत्नी को पहचान लिया, अपने बेटे को गले लगाया और सारा धन उसे दे दिया।

इस दृष्टांत से यह समझना चाहिए कि इसी प्रकार जो मनुष्य कष्ट सहकर ईश्वर की खोज करता है, वह उसे अवश्य पाता है और अपने पुत्र की इच्छा पूरी करता है।अहंकार का त्याग करें और शुद्ध मन से ईश्वर की खोज करें। वह दूर नहीं है, वह आपके भीतर मौजूद है। खोजोगे तो अवश्य पाओगे।

खोज एक शर्त है; खोजने वालों को क्या नहीं मिलता? जब तक मनुष्य में स्वार्थ या अहंकार है, तब तक उसे ईश्वर नहीं मिलते। जैसे ही हृदय से अहंकार छूट जाता है, वहीं ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं। यदि ईश्वर मिल गया तो समझो संसार का राज्य मिल गया। तो मनुष्यो! मनुष्य के सुखों को छोड़कर केवल ज्ञानसिंधु जगदीश की शरण लो! वह आपकी बात सुनेगा और आपका अपमान किये बिना प्रेम से आपकी कमियों को दूर करेगा और आपको सदैव सुख और शांति प्रदान करेगा।

वैराग्य शतकम् - ०९८ .

हे प्रिय मित्र बुद्धि! जिस प्रकार कुम्हार गीली मिट्टी का एक ढेला चाक पर रखकर उसे छड़ी से बार-बार घुमाता है। उससे वह अपनी इच्छानुसार बर्तन तैयार करता है; उसी प्रकार, संसार के रचयिता ब्रह्मा हमारे मन को चिंताओं के चक्र में डालकर और विपत्तियों की छड़ी से लगातार पहियों को घुमाकर हमारे साथ क्या करना चाहते हैं, यह हमें समझ में नहीं आता है।

परमेश्वर ने मनुष्य के पीछे बुरी चिन्ताएँ डाल दी हैं। बात यह है कि व्यक्ति के पिछले जन्म के कर्मों के कारण या इस जन्म की गलतियों के कारण उसे विपत्तियाँ भोगनी पड़ती हैं। इन परेशानियों से उबरने के लिए इंसान दिन-रात परेशान रहता है।

चिन्ता या चिंता के कारण व्यक्ति का रूप-रंग नष्ट हो जाता है और बुढ़ापा जल्दी आ जाता है। आज्ञा- 40 की उम्र में लोग बूढ़े हो जाते हैं, इसका कारण चिंता है। यदि चिन्ता न हो तो मनुष्य को कोई दुःख न हो। जहां तक हो सके मनुष्य को चिंता को अपने पास नहीं फटकने देना चाहिए; क्योंकि चिंता चिंता से भी बदतर है. वह मरे हुओं को जलाकर राख कर देती है, परन्तु चिंता जीवित को ही जला डालती है।

इसलिए चिंता से दूर रहें. पत्नी, पुत्र और धन की चिंता में अपने बहुमूल्य और दुर्लभ शरीर को नष्ट मत करो; क्योंकि यह स्त्री पुत्र प्रभृति तुम्हारी नहीं है, यदि तुम्हें चिंता करनी ही है और सोचना ही है तो यह सोचो कि तुम कौन हो और कहां से आये हो ?

तुम्हारी पत्नी कौन है? आपका बेटा कौन है? यह शंख अत्यंत पवित्र है। आप कौन हैं? आप कहां से आए हैं? अरे भैया ! इस तत्व के बारे में सोचो; इसका मतलब है कि कोई भी आपकी पत्नी नहीं है और कोई भी आपकी नहीं है। ना तेरा कोई बेटा है, ना तेरी कोई जान से प्यारी गर्लफ्रेंड है, सब समंदर की रेत पर लिखे रंगे हुए रिश्ते हैं। एक लहर अचानक आती है और बिना किसी निशान के गायब हो जाती है। कोई व्यर्थ चिंता क्यों करता है ?

हाँ, तुम व्यर्थ चिंता क्यों करते हो ? आप कौन हैं ? कहाँ से आया है? वह क्यों आया है ? आपने अपना कर्तव्य निभाया या नहीं? आपका अंतिम परिणाम क्या है? ऐसे विचारों से अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने या ईश्वर की शरण लेने से ही चिंताओं से मुक्ति मिलेगी और शांति मिलेगी।

निश्चय ही चिंता और परेशानियों से बचने के लिए भगवान की शरण लेना ही सर्वोत्तम उपाय है। विपत्ति के सागर में डूबते हुए मनुष्यों के लिए भगवान का नाम ही सच्चा सहारा है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है:--

सारांश यह है कि यदि हम उसकी शरण लेते हैं और उससे प्रेम करते हैं जो हमारे मन को चिंताओं के पहिये पर डालता है और उन्हें परेशानियों की छड़ी से घुमाता है, तो वह हमारे मन की मदद करेगा। इसका मतलब है कि हमें अपने मन में जलना होगा सुख और शांति सदैव हमारे सामने हाथ बांधे खड़ी रहे। यह संकट

केवल उन्हीं को प्रभावित करता है जो ईश्वर से अलग रहते हैं। इसलिए यदि आप इस चिंता-चुड़ैल से बचना चाहते हैं तो ईश्वर से प्रार्थना करें।

वैराग्य शतकम् - ०९९ .

यद्यपि मैं; विश्वेश्वर शिव और सर्वज्ञ विष्णु के बीच कोई अंतर नहीं है; हालांकि, मेरा दिल उन लोगों को छूता है जिनके सिर में युवा चाँद रहता है; अर्थात् मुझे शिव ही प्रिय हैं।

विष्णु और शिव में कोई अंतर नहीं है, एक ही भगवान के अलग-अलग नाम हैं, वही कृष्ण हैं, वही रघुनाथ हैं, वही राम हैं और वही शिव हैं। लेकिन फिर दोबारा; जिस नाम की शरण ली हो उस नाम पर विश्वास करना ठीक है। मन को भटकने देना अच्छा नहीं है. , एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी वृन्दावन गये।

वहां उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किये। भगवान की झाँकियाँ देखकर गोस्वामी जी मंत्रमुग्ध हो गये, परन्तु उन्होंने उन्हें सिर नहीं झुकाया; क्योंकि उनके इष्ट देव रामचन्द्र थे।

उन्होंने उस समय कहा- आज आपकी छवि बड़ी मनमोहक है, परंतु मैं आपको तभी प्रणाम करूंगा जब आप हाथ में धनुष लेकर रामचन्द्र बन जायेंगे। भगवान को तुरंत राम का रूप धारण करना पड़ा और धनुष-बाण हाथ में लेना पड़ा। यह कार्य भगवान को भक्त की एकान्त भक्ति देखकर करना पड़ा।

प्रीति पपीहे की सच्ची और आदर्श है। वह प्यास से मर सकता है, परन्तु बादल को छोड़कर किसी जलाशय से पानी नहीं पीता। "उत्तर चवकष्टक" में लिखा है:--- हे मेघ! चाहे तुम पानी दो या न दो, चातक तुम पर निर्भर रहता है। वह अत्यधिक प्यास से मर सकता है, लेकिन वह दूसरों की पूजा नहीं करता है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी कहा है: चातक ने अपने जीवन में मेघ के अतिरिक्त कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। मरते समय उन्होंने गंगाजल भी नहीं पिया।

एक शिकारी ने एक चातक को मार डाला। प्यास लगने पर वह गंगा में गिर पड़ा, लेकिन गंगा ने पानी नहीं पिया। पानी उसके मुँह में जाने से रोकने के लिए उसने

अपनी चोंच बंद कर ली।चले जाओ और मेरी प्रतिज्ञा टूट जाएगी।वाह, क्या बात है, उस प्रियतम को सलाम! यदि प्रेम और भक्ति है तो ऐसा ही होना चाहिए।

सारांश यह है कि भगवान के नाम के अतिरिक्त किसी अन्य से प्रेम नहीं करना चाहिए। एक ही पति होना अच्छा है. जिसके कई पति हों, वह अच्छा नहीं होगा। अनेक देवी-देवताओं के उपासकों को उस चातक से शिक्षा लेनी चाहिए।

जिस व्यभिचारी स्त्री के एक पति होते हैं वह सदैव सुखी रहती है, परन्तु जिस स्त्री के अनेक पति होते हैं वह सदैव दुखी रहती है। पतिव्रता सदैव अपने पति को ही चाहती है; उसे कोई और पसंद नहीं है. शेर का बच्चा छलांग लगाकर ज्यादा दूर तक नहीं जा सकता क्योंकि वह बहुत छोटा होता है। अभी भी घास नहीं खाता।

विलासिता चंचल है और यौवन क्षणभंगुर है। मनुष्य का जीवन समय के दांतों के बीच है। फिर भी मनुष्य परलोक प्राप्ति के साधनों की अवहेलना करता रहता है। अरे! मनुष्य का यह प्रयास कितना अद्भुत है ?

वैराग्य शतकम् - १००

हे कामदेव! तुम बार-बार धनुर्धारी से कहने के लिए हाथ क्यों उठाते हो? यह बुलबुल है! आप अपनी मधुर, सुखद आवाज में क्यों सहवास करते हैं? हे मूर्ख स्त्री! तुम मुझ पर अपनी मनमोहक मधुर व्यंग्य क्यों करते हो? अब तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते; क्योंकि अब मेरा मन शिव के चरणों को चूम कर अमृत पी चुका है। 100.

जब तक मनुष्य का मन ब्रह्मानंद के आनंद को नहीं जान पाता, जब तक वह भगवान के चरणों में ध्यान लगाकर अमृत का पान नहीं कर लेता, तब तक कामदेव की शक्ति प्रबल रहती है, तब तक कोयल की पश्चिमी ध्वनि उसके हृदय में हलचल पैदा कर देती है, तभी । जब तक स्त्री के व्यंग्य बाणों का उस पर असर न हो; शिव-प्रेम के कारण कोई यह सब कार्य नहीं कर सकता। भग चैन,

शिव और कामदेव में शत्रुता है; इसलिए कामदेव शिव के भक्तों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते।

जब पृथ्वी जलकर राख हो जाती है, सुमेरु पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और समुद्र सूख जाता है, तब इस नश्वर शरीर के बारे में हम क्या कह सकते

वैराग्य शतकम् के १०० श्लोकों का भावार्थ समाप्त

वैराग्य शतक के विविधांश

1.खुश कौन है**?**

वही योगी सुखी होता है, जो सैकड़ों फटे-पुराने चिथड़ों से बना कोट पहनता है और उसी दुपट्टे से अपना शरीर ढक लेता है, जिसे कोई चिंता नहीं होती, जो भिक्षा से लाया हुआ भोजन प्रसन्नतापूर्वक खाता है, श्मशान या जंगल में जाकर सोता है। वह मित्र और शत्रु के समान है, जो खाली झोपड़ी में ध्यान करता है और जिसका अहंकार और लापरवाही पूरी तरह से नष्ट हो जाती है! गये हैं।

वह वही है जिसका घमण्ड और अभिमान पुराना फटा हुआ कोट पहनने, चिथड़ों से शरीर ढकने, निश्चिन्त रहने, भिक्षा का भोजन करने, दलदल या जंगल में सोने, मित्र और शत्रु को समान समझने और पूर्णतया निर्जन घर में ध्यान करने से नष्ट हो गया है। . योगी जग में सुखी। ऐसे महापुरुष किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखते।

उसको क्या चाहिए? जो लोग मित्र और शत्रु को समान रूप से देखते हैं, वे जहां भी होते हैं, उन्हें जगह मिल जाती है। वे पड़े रहते हैं, जो कुछ मिल जाए खा लेते हैं, न उन्हें कोई चिंता सताती है, न उन्हें अहंकार सताता है, न उन्हें कोई मौज आती है। वे ब्रह्म के ध्यान में लीन रहते हैं, इसलिए उन्हें प्यास नहीं लगती। वे सदैव अपने दिन सुख में व्यतीत करते हैं।

जो अच्छे कपड़े पहनते हैं, शॉल और शाल ओढ़ते हैं, स्वादिष्ट भोजन करते हैं, मखमली गद्दे पर सोते हैं, किसी को मित्र और किसी को शत्रु मानते हैं, वे ब्रह्म का ध्यान करते हैं। ऐसा नहीं करने पर उन्हें चिंता होती है. वे बाहर से ख़ुश नज़र आते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर उनकी आत्मा जलती रहती है। चिंता उन्हें थका देती है। क्योंकि उन्हें हमेशा अच्छा भोजन और कपड़े पाने के तरीके खोजने पड़ते हैं। ,

और जिसको को अपनी सुरक्षा की चिंता करनी होगी। ऐसे लोगों के ही मित्र और शत्रु होते हैं। वे जिनका भला करते हैं, जिनकी कुछ सहायता करते हैं या जिनसे कुछ पाने की आशा रखते हैं, वे मित्र बन जाते हैं; लेकिन जिनका स्वार्थ साधन नहीं है।

जो लोग उनके वैभव और ऐश्वर्य को एक आँख से भी नहीं देख पाते, वे उन्हें नष्ट करने की कोशिश करते हैं और उनके दुश्मन बन जाते हैं, इसलिए उन्हें दिन-रात अपने दुश्मनों से लड़ना पड़ता है। बदला लेने और उन्हें हराने की चिंता के कारण सुख को एक पल भी नींद नहीं आती। उनके वैभव और ऐश्वर्य को देखकर उन्हें स्वतः ही गर्व महसूस होता है। अभिमान के वशीभूत होकर वे उत्पात करने लगते हैं; वे हमेशा इस बात से डरते हैं कि कहीं यह मुझसे आगे न बढ़ जाए।

मैं और क्या कह सकता हूँ, जिन्हें तुम धनवान देखते हो, जिन्हें तुम स्त्री, पुत्र, पत्थर, कार, घोड़े और मोटर शक्ति से सुखी देखते हो, वे वास्तव में बिल्कुल भी सुखी नहीं हैं। सुखी वह है जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं, जिसके मन में किसी के प्रति घृणा या द्वेष नहीं है। जिसमें लेशमात्र भी अहंकार नहीं है,

जिसकी इंद्रियां वश में हैं, जो चिंताओं को कभी अपने पास नहीं आने देता और जो ब्रह्मानंद में ही लीन रहता है।

राजा और धनवान लोग यह सुख कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यदि तुम सुखी रहना चाहते हो तो संसार का त्याग कर दो, पूर्णतया निश्चिन्त हो जाओ और ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की चिन्ता मत करो।जो लोग संसार का त्याग करते हैं उन्हें सच्चे मन से त्याग करना चाहिए, दिखावा करने का कोई बहाना नहीं है। आजकल ऐसे बहुत से कृत्रिम महात्मा मिलते हैं, जो बाल बढ़ा लेते हैं, भस्म लगा लेते हैं, आंखें लाल कर लेते हैं, गंगा में जागरण करते हैं, शूल के बिछौने पर सोते हैं, परन्तु उनकी आशा और अभिलाषा नष्ट नहीं होती।

वे स्पष्ट रूप से पीड़ित होते हैं, लेकिन अपने काम के लिए अपने शारीरिक अंगों का उपयोग नहीं करते हैं; लेकिन वे अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं रखते, अपनी इच्छाओं को नहीं छोड़ते, इससे उनका जीवन दुखमय हो जाता है। जो मनुष्य अपनी कर्मेन्द्रियों के वश में होकर कोई कार्य नहीं करता; परंतु जो व्यक्ति विषयों का ध्यान करता है, उसके मन की इंद्रियाँ झूठी और पाखंडी हैं।

इसका मतलब यह है कि मनुष्य को अपने हाथ, पैर, मुंह, गुदा और लिंग पर नियंत्रण रखने और उनसे कोई काम न करने से कोई लाभ नहीं है; उनसे उनका काम लिया जाना चाहिए; लेकिन आंख, कान, नाक, मसूड़े और त्वचा पर नियंत्रण रखना चाहिए। आंख और कान जैसी पांचों इंद्रियों पर नियंत्रण रखना या उन्हें अपने-अपने विषयों से रोकना जरूरी है।

बहुत से लोग पूर्ण बनने के लिए अपने शारीरिक अंगों जैसे हाथ और पैर का उपयोग नहीं करते हैं, बल्कि अपने मन में विभिन्न प्रकार की इंद्रिय वस्तुओं की इच्छा रखते हैं। ऐसे लोगों को भगवान श्रीकृष्ण पाखंडी कहते हैं। सबसे अच्छा और सबसे उत्तम मनुष्य वह है जो सभी कार्य करता है, लेकिन अपने आंतरिक मन और इंद्रियों को कामुक इच्छाओं से रोकता है।

जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में कर लेता है, वह कुछ भी नहीं कर पाता। मैं करता तो हूँ, परन्तु मन में इन्द्रियों के विषयों का ही ध्यान करता हूँ। हाँ, वह मनुष्य झूठा और पाखण्डी है।इसका मतलब यह है कि मनुष्य किसी काम का नहीं है; उनसे उनका काम लिया जाना चाहिए; लेकिन आँखें, कान, नाक, मसूड़े और त्वचा पर नियंत्रण रखना चाहिए। आंख और कान जैसी पांचों इंद्रियों को नियंत्रित करना या उन्हें उनके संबंधित विषयों से रोकना आवश्यक है।

बहुत से लोग दिखने में परफेक्ट बनने के लिए अपने हाथों और पैरों का इस्तेमाल अपनी शारीरिक इंद्रियों के अनुसार नहीं करते हैं, बल्कि मन ही मन तरह-तरह की कामुक वस्तुओं की इच्छा करते हैं। ऐसे लोगों को भगवान श्रीकृष्ण पाखंडी कहते हैं। सबसे अच्छा और सबसे उत्तम मनुष्य वह है जो बाहरी तौर पर काम करता है, लेकिन भीतर से वह अपने मन और इंद्रियों को कामुक इच्छाओं से रोकता है।

इसका मतलब यह है कि दिखावा करने से कोई फायदा नहीं है. किसका जो साफ दिल के हैं और दिल से उतर चुके हैं,नहाने, धोने, काम करने या दुकानदारी में प्रगति दिखाने की जरूरत है वहाँ नहीं। रहीम कहते हैं, मन हाथ में तो मन कहीं।क्यों न जाऊँ, कोई हानि नहीं; क्योंकि शरीर की परछाई पानी में पड़ती है शरीर गीला नहीं होता. लोग शरीर की पूजा करते हैं - तिलक लगाओ, बल बढ़ाओ, नेत्रों को ठीक करो, भभूत लगाओ घिसकर बाँध देते हैं।

लेकिन मन से कोई विरला ही योगी होता है।है। कुछ लोग ऊपरी तौर पर योगी तो बन जाते हैं, लेकिन मन भोग-विलास में ही लगा रहता है।मैं लगा रहता हूं. शरीर से चाहे कोई भी कार्य किया जाए।परन्तु मन में वस्तुओं की इच्छा नहीं होनी चाहिए; अर्थात शरीर योगी नहीं होना चाहिए,मन को योगी बनने दो; अतः सफलता अथवा मोक्ष प्राप्ति में कोई संदेह नहीं है।सार यह है कि मन के योग से ही भगवान को पाया जा सकता है।

जिन्होंने संसार से हाथ धो लिया है वे सिर से पाँव तक पवित्र हो गए हैं। उन्हें सिर से पैर तक पानी डालकर निकलने की जरूरत नहीं है। जब मन कामनाओं से रहित हो जाता है तो वह सूखे दीपक के समान हो जाता है। आग जलाने का तरीका तेजी से जलता है, लेकिन गीला होने पर नहीं जलता; उसी तरह, भगवान की उपस्थिति वासना-रहित मन में प्रवेश करती है; लेकिन इच्छाओं से भरे मन में कोई बुराई नहीं है. इसलिए मन में वासना ना लाहिये। भक्ति के साथ-साथ भक्ति भी निस्वार्थ होनी चाहिए।

भगवान से मनोकामना नहीं मांगनी चाहिए. मनोकामना लेकर भक्ति करने से मनोकामना अवश्य पूरी होती है--- भगवान भक्त की इच्छा अवश्य पूरी करते हैं; लेकिन अधर्म भक्ति के परिणाम से डर लगता है क्योंकि फल भोगने के लिए जन्म और मरना पड़ता है, लेकिन जो बिना किसी इच्छा के भगवान की पूजा करते हैं, वे मुक्ति के स्रोत हैं - उन्हें जन्म लेना और मरना नहीं पड़ता है।

जब मन में कोई चाहत नहीं रह जाती, तो वो तो बस उसकी ही होती है! मन से ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम, बैर सब दूर हो जाते हैं। वह समस्त लोकों को एक आँख से देखता है। पुरुषों की आशा वह रखता नहीं, केवल भगवान की शरण लेता है; इसलिए उसे मोक्ष आसानी से मिल जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है: जब तक मन में हर आशा रहती है तब तक इंसान किसी एक चीज़ को बड़ा मानकर किसी की धड़कन बन जाता है; जब कोई आशा नहीं रहती तो वह सब कुछ वैसा ही मान लेता है। पक ने सबका साथ छोड़कर केवल भगवान का ही सहारा लिया; इससे वह सभी बंधनों से मुक्त हो जाता है और परम फल प्राप्त करता है।

मनुष्य यह जानते हुए भी कि विभिन्न प्रकार के इन्द्रिय सुख नाशवान हैं और सांसारिक बंधन का कारण हैं! तुम उनके जाल में क्यों फँसते हो? इस प्रयास से क्या लाभ होगा? यदि आप हमारी बात पर विश्वास करते हैं, तो आपको सदैव नाना प्रकार की आशाओं के जाल को तोड़कर अपने मन को पवित्र करके वासना का नाश करने वाले भगवान के चरणों में लगाना चाहिए। (या अपनी इच्छाओं को पूरी तरह से नष्ट करके अपनी आत्मा के ध्यान में लीन हो जायें।

आज सुखों को देखकर आप फूले नहीं समाइये। वे कामुक सुख हमेशा आपके साथ नहीं रहेंगे। वे आज यहां हैं, लेकिन कल वे वहां नहीं रहेंगे. वे बिजली पर आधारित व्यंग्य जितने ही दिलचस्प हैं। आप कितने नश्वर, अमूर्त हैं।क्षणिक सुख में मत डूबो. होश में आओ! तुम्हारा शरीर नाशवान है. तुम सदैव इस दलदल में नहीं पड़े रहोगे। आपको अपने जीवन पर कोई भरोसा नहीं है। आपके पास जो भी शक्ति है, उसे आशीर्वाद समझें।

एक कदम उठाने के बाद दूसरा कदम उठाने की उम्मीद न रखें। तुम्हारा जंगल हवा के झोंकों से बिखरे हुए बादलों के समान है। अब बादल छाए हुए थे; देखते ही देखते हवा उन्हें कई स्थानों पर उड़ा ले गयी; आसमान साफ़ हो गया. यह सारा संसार, सांसारिक सुख और स्त्री, पुत्र, धन और संतान सभी स्वप्न के समान भ्रम हैं। ये दुनिया एक पाखंड है. यात्री आश्रयों, सरायों अथवा धर्मशालाओं में प्रतिदिन बहुत से लोग आते-जाते हैं; वहां कोई भी हमेशा के लिए नहीं रहता।

जिस प्रकार वे एक दिन या दो या तीन दिन रुक कर चले जाते हैं; उसी प्रकार तुम्हें भी इस संसार रूपी सराय में कुछ दिन रहकर आगे बढ़ना होगा। ये सारी चीजें यहीं रहेंगी. ये सब होता रहेगा, लेकिन तुम नहीं रहोगे। इसलिए सावधान

रहें, भूलें नहीं। आज तुम जिस जवानी पर इतना इतराते हो, उस पर इतराते हो, वह भी एक चाँदनी दिन है।

ये चार दिन की चांदनी है. इसके बाद अँधेरी रात अवश्य आयेगी; अर्थात इसके बाद बुढ़ापा अवश्य आएगा। उस समय यह अहंकार, यह उछल-कूद, यह छटपटाहट, यह सूखी मरोड़ गायब हो जायेगी। "तुम जल्द ही सीना झुकाकर चलने के लिए उठोगे। तुम्हारा रूप और यश नष्ट हो जायेगा। आज जो कोई भी सोचता है कि आप सुंदर हैं।

वे जो तुमसे प्यार करते हैं, कल जब वे तुम्हें देखेंगे तो नाक-भौं चढ़ा लेंगे। फिर, तुम्हें ऐसे नश्वर, मूल्यहीन शरीर पर इतना गर्व क्यों है? आपको अपना अहंकार त्याग देना चाहिए और खुद को उस खिलाड़ी की मिट्टी की मूर्ति मात्र समझना चाहिए। हर किसी का शुभकामनाएँ चाहो और दान करो, और अपना हृदय उस एकमात्र ईश्वर को समर्पित करो जिसने तुम्हें बनाया है। इसी में आपका कल्याण है।

यह संसार महज़ श्रम के अलावा और कुछ नहीं है। यह एक सपने जैसा है - या एक सपने जैसा भ्रम है। बुद्धिमान लोग यह बात नहीं भूलते।धन्य हैं वे लोग जो पहाड़ों की गुफाओं में रहते हैं और परमात्मा के प्रकाश का ध्यान करते हैं, जिनके आनंद के आँसू उनकी गोद में बैठे पक्षी आसानी से पी जाते हैं। हमारा जीवन अपने प्रेमियों के महल में बावड़ी के किनारे खेल के मैदान में खेल खेलने में व्यर्थ व्यतीत होता है।

और वे उस ध्यान में इतने लीन हो जाते हैं कि उन्हें अपने शरीर का भी होश नहीं रहता। ब्रह्मा का ध्यान करने से उन्हें जो आनंद मिलता है, उससे उनकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगते हैं। पंछी उनकी गोद में बेधड़क बैठे हैं।   चलो उन आँखों से पीते हैं। उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि पक्षी उनकी गोद में बैठे हैं या वे क्या कर रहे हैं। वे आनंद में बेहोश रहते हैं. यह आनंद ही आनंद है; इससे बढ़कर कोई दूसरा आनंद नहीं है) जिन्हें यह सच्चा आनंद मिलता है, वे ही वास्तव में भाग्यशाली हैं। एक वह और एक हम अभागे हैं, जो दिन-रात इच्छाओं के महल बनाते हैं-दिन-रात झूठी कल्पनाएँ रचते हैं।

इन शेखी बघारने वाली कृतियों से हमें कोई लाभ नहीं - हमारा दुर्भावनापूर्ण जीवन इन ख्याली पुलाव पकाने में ही बर्बाद हो जाता है।जो मनुष्य मनुष्य शरीर पाकर भगवान की भक्ति नहीं करते, भगवान को देखने का प्रयास नहीं करते, उनका जीवन व्यर्थ है। ऐसा कोई हृदय नहीं है जो परमप्रिय ईश्वर को पाने की

इच्छा न रखता हो और ऐसी कोई आँख नहीं है जो अपने ईश्वर के दर्शन की लालसा न रखती हो।

अतीत तो अतीत है, अब होश में आओ!

भाईयों, जो बीत गया सो बीत गया, अब आप शांत हो सकते हैं और प्रश्न पूछ सकते हैं। आज रंग मत लगाना, नहीं तो पछताओगे। अंत में पछताने से कोई लाभ नहीं होगा। जो लोग केवल विचारों के बारे में ही सोचते रहते हैं वे धोखे में रहते हैं और एक दिन अचानक समय आकर उन्हें पकड़ लेता है।

नदी की जो धारा चली गई वह वापस नहीं आएगी। जो दिन गए वो कभी वापस नहीं आएंगे. जो दिन आज है वही कल भी है। कल कुछ भी नया नहीं होगा. इसलिये जो कुछ करना हो, आज ही कर लो; और जो कुछ आज करना है, अभी कर लो; क्योंकि यदि एक क्षण में विनाश हो जायेगा - तुम चले जाओगे, तो फिर कब करोगे? बचपन से ही राम का नाम याद रखना अच्छा होता है।

जो लोग बचपन से तैरना सीखते हैं वे धोखे से नहीं डूबते। जो लोग यह सोचते हैं कि अमुक काम हो जायेगा तो उसके बाद हम सब घर का भांगड़ा छोड़कर भगवान की पूजा करेंगे, वे ऐसा ही सोचते हैं।अर्थात उनका समय खत्म हो जाता है और समय उन्हें पकड़ कर चिढ़ाता है। उस समय उसे बहुत ग्लानि होती है और हृदय भारी हो जाता है।

लेकिन उस समय क्या हो सकता है? उस समय उनकी गति प्रभात के समान होती है, जो कमल में मुख बंद करके कहती है। बड़े-बड़े वृक्षों के तनों को भेदने की शक्ति रखने वाला भौंरा प्रेमवश कोमल कमल में फँस जाता है। रात हो जाती है और कमल के भीतर बैठा भौंरा सोचता है: “अब रात कटेगी, सुबह होगी, खजूर

उगेंगे और यह कमल खिलेगा; फिर मैं चला जाऊंगा. अब मुझे रात को यहीं एन्जॉय करना चाहिए ।"

वह इसी प्रकार सोचता रहता है कि मदमस्त हुआ हाथी कमल को उखाड़ कर खा जाता है और यह बात भृंग के मन में ही रह जाती है। लोभी प्रजा का यही हाल है! वे विचार हमें बांधते हैं और समय उन्हें हमसे दूर ले जाता है। इसलिए यह संभव है कि आप बचपन में ही ईश्वर की आराधना करें। यदि बचपन में ऐसा सौभाग्य न मिले तो युवावस्था में ही प्राप्त करें। युवावस्था इसके लिए अच्छा समय है। उस राज्य में शक्ति है. युवावस्था में जो ईश्वर की शक्ति प्राप्त कर लेता है उसे निश्चित ही मोक्ष या स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

गरीबों को दान देना, विनम्र सलाह देने की शक्ति होने पर क्षमा करना, युवावस्था में तपस्या करना, विद्वान के रूप में चुप रहना, सुखों का आनंद लेने में सक्षम होने पर इच्छाओं को रोकना और जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होना - ये स्वर्ग की प्राप्ति का कारण बनते हैं।

एक अमीर आदमी हमेशा अपने घर के कामों में उलझा रहता था। उनकी पत्नी उनसे बहुत कुछ कहती थी, 'सर! यह शरीर भौतिक सुखों के लिए नहीं बल्कि भगवान की भक्ति के लिए प्राप्त हुआ था। इसे बहुमूल्य पत्थर समझकर मोक्ष की खान बना दो। ऐसा न हो कि आप इसे खो बैठें और यह कीमती पत्थर आपसे छीन लिया जाए। इस स्टॉक को बार-बार ढूंढना मुश्किल है। चौरासी लाख अलग-अलग योनियों का अनुभव करने के बाद मुझे यह मानव शरीर मिला है।

यदि इस बार भी इसका उपयोग न किया गया तो चौरासी लाख जन्म-मरण भोगने के बाद यह मनुष्य योनि प्राप्त होगी; इसलिए कम से कम एक-दो पल के लिए अपने मन को एक तरफ कर दें और भगवान को याद करें। महिला ने उससे बार-बार कहा, लेकिन सेठ ने उसकी बातों को नजरअंदाज कर दिया।

एक दिन सेठ बीमार हो गया। उन्होंने सेठानी से डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा। खेतानी ने डॉक्टर को बुलाया. डाक्टर ने नाड़ी देखकर, रोग का हाल पूछा, दवा की खुराक लिखी और सेवन की विधि समझा कर चले गये। सेठानी ने दवा मंगवाई और अलमारी में रख दी। सारा दिन बीत गया, परन्तु सेठ को दवा न दी गई। शाम को सेठ ने सेठानी से पूछा, "अब तक मुझे दवा क्यों नहीं दी ?"

सेठानी ने कहा - "हाँ, तुमने दवा माँगी थी, पर वह उस आले में रखी है।" सेठ ने पूछा – "तुमने अब तक क्यों नहीं दिया?" सेठानी ने कहा – "इतनी जल्दी क्या है? आज नहीं तो कल, नहीं तो परसों मैं तुम्हें कभी निराश नहीं करूंगी।" सेठ ने

कहा – “अगर मैं मर जाऊंगा, तो दवा से क्या फायदा ?” सेठानी ने कहा – “तुम्हें मरने में विश्वास नहीं है।”

सेठानी ने कहा - जब भी मैं तुमसे भगवान की पूजा - प्रार्थना करने को कहती हूँ तो तुम हमेशा यही कहते हो कि देखा जाएगा थोड़ी जल्दी है। अगर तुम्हें सिर्फ मरना याद होता तो आज मुझे दवा के लिए मरने की याद आती रोग दूर करने के लिए उसी प्रकार जन्म-मृत्यु के जाल को रोकने के लिए पूजा की आवश्यकता होती है, ऐसा न हो कि सारा गुड़ गोबर हो जाए उसी दिन से सेठ के मन में भगवान की भक्ति करने लग गया। वह जीवन भर मृत्यु और भगवान को नहीं भूला।

मौत को हमेशा याद रखें

एक राजा ने अपने दरबार और बैठने की जगह पर कब्रें बनवाई थीं। मैं चाहता था कि जब भी मैं कब्रों को देखूं तो मौत को न भूलूं। मृत्यु को स्मरण रखने से मैं पापों से बच जाऊँगा और ईश्वर को नहीं भूलूँगा। हमारे यहां से. कई सच्चे सिद्ध अक्सर श्मशान भूमि में ही अपना डेरा लगाते हैं। संक्षेप में, मनुष्य को अपनी मृत्यु को सदैव याद रखना चाहिए, ताकि वह त्याग के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर सके और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

जो दिन आज है कल वैसा नहीं रहेगा; यानी आज जैसा मौका कल दोबारा नहीं मिलेगा. होश है तो होश में आओ! देखो, मौत तुम्हारा इंतजार कर रही है. वह बिल्ली की तरह चूहे पर झपटना चाहती है।

देवताओं की आराधना में विलम्ब न करो; , क्योंकि श्वास रूपी तीर जो सार है, वह शरीर रूपी तरकश से निकलता है। जो काम कल करना हो, वह आज ही कर लो और जो काम आज करना हो, वैसे ही करो; क्योंकि यदि एक क्षण में विनाश हो जायेगा तो फिर कब होगा ?

जो लोग दिन-रात अपने घर के कामों में लगे रहते हैं, कभी खुश होते हैं, कभी दुखी होते हैं, उन्हें अपनी बेटी के विधवा होने का दुख सताता है। यह देखकर वे

ईर्ष्यालु बने रहते हैं, कभी पुत्र की मृत्यु से दुःखी होकर पड़े रहते हैं, या पत्नी की मृत्यु से दुःखी रहते हैं, या धन की तलाश में इधर-उधर भागते रहते हैं।

लेकिन ये भगवान का नाम कभी नहीं लेते, अगर लेते भी हैं तो हाथ तो व्यस्त रखते हैं, लेकिन दिमाग को कामों में व्यस्त रखते हैं, लोगों से बातें करते रहते हैं और माला तेजी से घुमाते हैं, ऐसे चतुर लोगों को ऐसे लोगों के साथ एक पल के लिए भी नहीं रहना चाहिए दिन।

चतुर लोग धर्महीन राजा को, निष्क्रिय ब्राह्मण को, ज्ञानहीन योगी को, झूठी स्त्री को, गतिहीन घोड़े को, चमकहीन रत्न को, शौर्यहीन योद्धा को, नियमहीन तपस्वी को, श्लोक हीन कविता को शीघ्र ही त्याग देते हैं। प्रेम के बिना एक भाई और भगवान के प्रति समर्पण के बिना एक आदमी।

चतुर लोग हरिभक्ति से रहित मनुष्य से दूर रहते हैं, जिससे उसकी संगति में उनकी भावनाएँ एक जैसी न हो जाएँ। मनुष्य जैसी संगति करता है, वह वैसा ही बन जाता है। जो कामुक पुरुषों की संगति करता है वह कामुक हो जाता है; परन्तु जो ज्ञानी और वैरागी को डांटता है, वह ज्ञानी और वैरागी हो जाता है। महापुरुषों का एक शुभ दर्शन ही मनुष्य को सुखी बना देता है; अर्थात वह नश्वर संसार से मुक्त हो जाता है।

हम आगे दोनों प्रकार के उदाहरण देते हैं:--.-

एक राजा और एक संत

एक जंगल में एक महात्मा रहते थे। वह महात्मा पेड़-पौधे, पत्ते और हवा खाकर अपना जीवन व्यतीत करते थे। उनकी प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई। उस देश का राजा भी उससे मिलना चाहता था। मंत्री ने यह समाचार महात्माओं को दिया। महात्मा उस पेड़ से दूर भागने को तैयार थे; लेकिन मंत्री के अत्यधिक आदर के कारण वह वहीं रुक गया और राजा को दर्शन देने को भी तैयार हो गया।

एक दिन राजा अपने परिवार और दरबारियों के साथ महात्मा से मिलने गये। महात्मा को देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उनसे नगर में जाकर बगीचे में तपस्या करने का अनुरोध किया। बहुत आग्रह के बाद महात्मा इस बात पर सहमत हुए। राजा ने ख़ुशी-ख़ुशी अपने बगीचे में उसके लिए एक एकांत कमरे की व्यवस्था कर दी। मखमल बिछाया गया, तकिए, सोफे, बिस्तर और कुर्सियाँ व्यवस्थित की गईं और चौदह वर्षीय सुंदर मनमोहिनी कामिनी को महात्मा जी की सेवा में नियुक्त किया गया।

महात्माजी सुखपूर्वक और सुन्दर स्त्रियों का सुख भोगते हुए अपने दिन बिताने लगे। कुछ ही दिनों में वह अपनी प्रजा के अधीन हो गया। एक दिन/ राजा फिर उनसे मिलने गये। उसने देखा कि महात्माजी का रंग गुलाबी हो गया है। वह तकिये पर लेटा हुआ है और चन्द्रमा की रोशनी वाली स्त्रियाँ उसे सहला रही हैं। यह दृश्य देखकर राजा को बहुत दुःख हुआ।

राजा ने यह बात अपने मंत्री को बतायी। मंत्री ने कहा, “महाराज! निवृत्ति वाले साधु संतों की रहनी ही कुछ और होती है। संसार से पूर्ण वैराग्य प्राप्त करने , के महात्मा लोग ऐसे विपरीत व्यवहार किया करते हैं। और कुछ तो संघ के दोष परिणाम से ऐसे प्रदूषित हो जाते हैं। सब पर समाज संघ का बहुत असर पड़ता है। इसलिए भूल कर भी संत महात्माओं को अपने शुद्ध सात्विक आचरण को छोड़ कर , काम इच्छाओं के वशीभूत नहीं हो जाना चाहिए।

कामी स्त्री-पुरुष की संगति से मनुष्य अगले जन्मों में कामी, क्रोधी और मोहग्रस्त होता है। काम, क्रोध आदि के संबंध से मन भी अशुद्ध हो जाता है। अशुद्ध मन द्वारा उपदेशित ब्रह्मज्ञान भी नष्ट हो जाता है।

एक साधु और एक वेश्या

एक दिन एक महात्मा बारिश में भीगे हुए और कीचड़ में सने हुए एक घर की बालकनी के नीचे खड़े थे। वह घर राजा की वेश्या का था। महात्मा ठंड के कारण कांप रहे थे। वेश्या ने महात्मा को देखा और सारी कहानी अपनी मालकिन को बता दी। वेश्या ने कहा - "जाओ, महात्मा को ले आओ -।" दासी महात्मा को लेकर आई।

वेश्या ने उसे नहलाया, नये कपड़े पहनाये और भोजन कराया। इसके बाद आप खाना खाकर उसके पास गये और उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके पैर दबाने लगे महात्मा ने वेश्या की ओर घूरकर देखा और उसके हृदय में अमृत की धारा प्रवाहित कर दी। वह सो गया और वेश्या सारी रात उसके पैर सहलाती रही। रात्रि भोजन कर के समय पर वह सो गयी और महात्मा ने उठकर उसे पानी दिया।
सुबह उठते ही वेश्या ने दासी से पूछा, महात्मा कहां गए हैं ? उन्होंने कहा कि वे चले गये हैं। उसी समय वेश्या नग्न होकर घर से बाहर भाग गई और एक पेड़ के नीचे बैठ गई। जैसे ही राजा ने यह खबर सुनी, उसने अपने सेवकों को वेश्या को लाने के लिए भेजा। वेश्या ने कहा, “राजा से कहो कि अब मैं वही गंदगी बीनने वाली नहीं रही जो कभी हुआ करती थी!”

यह सुनकर राजा ने आदेश दिया कि कोई भी उस वेश्या के साथ छेड़छाड़ न करे। अगले दिन वह कहीं चली गयी. यह सच है कि महापुरुषों की क्षणिक संगति से महापापी भी आनंदित हो जाता है। _निःसंदेह सत्संग बहुत बड़ा फल देता है।

महापुरुषों की संगति में कौन उन्नति नहीं करता? कमल के पत्ते पर पड़े जल में मोती के समान शोभा होती है। जो ऐसी संगति करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। बादल की एक बूँद कपूर को केला, मोती को सीप और विष को साँप के मुँह में बदल देती है।

सत्संग की महिमा अपरम्पार है। सत्संग से ही दस्यु भील वाल्मीकि ऋषि बने। ब्रह्मा पद्मयोनि से पैदा हुए, व्यास जी केवर्ची से पैदा हुए, वशिष्ठ जी अप्सरा उर्वशी से पैदा हुए और शतदली ऋषि हिरण से पैदा हुए, सत्संग से ब्रह्मत्वक बने; इसलिए महापुरुषों की संगति करो. "सत्संग" भवसागर से पार उतरने वाली नाव के समान है।

साधु पुरुषों की संगति करनी चाहिए। मनुष्य को ईश्वर के प्रति दृढ़ भक्ति रखनी चाहिए। संसार में आसक्ति के कारण मनुष्य को अपने निष्फल कर्मों का शीघ्र ही त्याग कर देना चाहिए। सच्चे विद्वानों की सेवा करनी चाहिए और उनकी जूतियाँ उठानी चाहिए। ब्रह्म-बोधक एकाक्षरी प्रणव ओंकार या भगवत नाम का जाप करना चाहिए और वेद के मुख्य श्लोक "बेदांत" को सुनना चाहिए।

बहुत खूब ! इस वचन का पालन करने वाले को परमानंद की प्राप्ति क्यों नहीं होगी? ऐसा जरूर होगा। मृत्यु ने जन्म को, बुढ़ापे ने बिजली के समान चंचल यौवन को, धन की इच्छा ने संतोष को, स्त्रियों के भावों ने मानसिक शांति को अपने अधिकार में ले लिया है। जो लोग ईर्ष्यालु हैं उन्होंने सद्गुणों को बचाकर रखा है; सर्पों और जंगली जानवरों ने वनों को, दुष्ट मनुष्यों ने राजाओं को, अस्थिरता या चंचलता ने धनवानों और ऐश्वर्यशाली लोगों को ग्रसित कर लिया है; फिर ऐसी कौन सी अच्छी चीज़ है, जो किसी अन्य विनाशकारी चीज़ के चंगुल में नहीं है?

रहस्योद्घाटन यह है कि जन्म में मृत्यु का भय है, युवावस्था में बुढ़ापे का भय है, संतोष में लोभ का भय है, शांति में महिलाओं के व्यवहार और विलासिता का भय है, जानवरों में उनसे या उन्हें खाने वालों से ईर्ष्या करने का भय है , राजाओं को जंगल में साँपों और हिंसक जानवरों का भय रहता है, राजाओं को दुष्ट दरबारियों का भय रहता है। भय है, धन और विलासिता में क्षणभंगुरता का भय है। संसार में ऐसी कोई अच्छी चीज़ नहीं है जिससे किसी का भय न हो।

इसका अर्थ यह है कि संसार और संसार की सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे काल नष्ट न कर देता हो, या जिसमें किसी प्रकार का भय न हो, जिसमें कोई अवगुण न हो।संसार का यह हाल है, फिर भी मनुष्य ध्यान नहीं देता, यह आश्चर्य की बात है! अज्ञानी मनुष्य मोह में पड़कर अपना लाभ-अहित नहीं देखता और संसार के मोह-माया में फंसा रहता है।

वस्तुओं के संयोग से मनुष्य के मन में इच्छा और तृष्णा उत्पन्न होती है। जब इच्छा पूरी नहीं होती तो क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोध से मोह उत्पन्न होता है। मोह के कारण जीव न तो अपना हित देखते हैं और न ही परलोक की हानि। राग और द्वेष के कारण उसे ज्ञान का दर्शन नहीं होता; परंतु पढ़ने-लिखने के कारण वह स्वयं को अत्यंत चतुर समझता है और ठीक उसी प्रकार जैसे तोता जिद्दी होकर बहेलिये के जाल में फंसकर पिंजरे में कैद हो जाता है और बंदर छोटे मुँह में हाथ डालकर रोटी के थैले पर बंदर का मालिक कब्ज़ा कर लेता है; उसी प्रकार

कामुक मनुष्य विषयों के लालच में आकर स्वतः ही संसार के बंधन में फंस जाता है।

मनुष्य भूख, प्यास, रोग, शोक, दरिद्रता, प्रियतम के वियोग से पीड़ित रहता है। वह बुढ़ापे, जन्म-मृत्यु, चौरासी लाख योनियों के कष्ट तथा नरक के भय से हर तरह से दुखी है। उसे बिल्कुल भी भूख नहीं है, लेकिन वह मोह में इतना अंधा हो गया है कि उसे ऐसा महसूस होता है जैसे कोई मछली काँटे में फंस गई हो। समझ में ही नहीं आता. एक छोटी मछली को रोटी का एक टुकड़ा बहुत पसंद है; उसी प्रकार मनुष्य को इन्द्रिय सुख प्रिय होता है।

जैसे कोई मछली फंसी हो. उसी तरह प्यार इंसान के हिस्से का कांटा है. इसका तात्पर्य यह है कि अज्ञानी व्यक्ति वस्तु रूपी चारे के प्रलोभन से मोह के जाल में फंस जाता है। अपने को नष्ट कर लेता है; लेकिन मजा यह है कि उसे दुख का दुख नहीं होता: वह दुख को समझता है; वह नाना प्रकार के भयों से घिरा हुआ अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करता है, मछली, तोते और बंदर की तरह बंधनों में फंस जाता है, लेकिन बाहर नहीं निकलना चाहता।

इन दुखों का ख्याल ही नहीं आता. हर दिन वह लोगों को मरते हुए देखता है, हर दिन वह बूढ़ों को अत्यधिक पीड़ा सहते हुए देखता है; परन्तु क्या तुम यह नहीं समझते कि मेरी भी वही गति होने वाली है! इसके विपरीत हम हर वर्ष जन्मोत्सव मनाते हैं। दोस्त और प्रेमिका. रिश्तेदारों को आमंत्रित करता है. संगीत बजाना और नृत्य करना व्यक्ति को गाने के लिए प्रेरित करता है। क्या बात है, जहाँ दया करने की जगह है, वहाँ... भोला आदमी आनन्द मनाता है!

उसे हर किसी के साथ यह समझना चाहिए सालगिरह पर उसका जीवन एक वर्ष कम हो जाता है। जिस प्रकार पेट्रोल खुली हवा में प्रशिक्षण वायु बन जाता है और अन्त में उसकी एक बूँद भी नहीं बचती। उसी प्रकार मनुष्य का अनमोल जीवन हर पल विनाश की ओर जा रहा है, अंत में मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

इसलिए, जीवित रहते हुए, व्यक्ति को मृत्यु के बाद अपनी आत्मा के कल्याण के लिए काम करना चाहिए। क्योंकि साकार कार्य निराकार रूप में नहीं हो सकता। क्योंकि शारीरिक मृत्यु मनुष्य को भौतिक स्वरूप से निराकार की ओर ले जा रही है। , सतर्क रहें।

सैकड़ों मानसिक एवं शारीरिक रोग स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं। जहां धन और शक्ति है, वहां विपत्ति चोर की तरह टूट पड़ती है। जिसका जन्म हुआ हो; शीघ्र ही

मृत्यु उसे बलपूर्वक अपने जबड़ों में जकड़ लेती है; तो फिर अत्याचारी विधाता ने ऐसा क्या रचा है जो सदैव बना रहेगा?

मानव शरीर बीमारियों का घर है। उसके अंदर मानसिक और शारीरिक रोग सदैव निवास करते हैं और उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं। संपत्ति पर हमेशा विपत्ति छिपी रहती है। वह डटकर खड़ी रहती है और मौका मिलते ही दरवाजा तोड़कर उसे नष्ट कर देती है। जो जन्म लेता है उसके सिर पर मौत हमेशा मंडराती रहती है और मौका मिलते ही उसे अपने पंजों में फंसा लेती है।

तात्पर्य यह है कि शरीर के साथ रोग, धन के साथ विपत्ति, जन्म के साथ मृत्यु, संयोग के साथ वियोग, भूख के साथ दुःख होता है। और जवानी और बुढ़ापे को विधाता ने नाश कर दिया है। सृष्टिकर्ता ने किसी भी चीज़ को हमेशा के लिए स्थायी नहीं बनाया है; जो कुछ भी बनाया गया है वह केवल कुछ दिनों के लिए बनाया गया है और नाशवान है।

मनुष्य का अपना घर ही वह स्थान है जहाँ से वह आया है, यह नहीं; अतः उसे उस घर से अपना मन विमुख नहीं करना चाहिए। तुम्हें इस घर में आना चाहिए और मेहमान की तरह रहना चाहिए और मेहमान की तरह अपना दिल ऊंचा रखना चाहिए। यह किसी और का घर है और वह हमारा घर है। यहां बाजार में अपना कारोबार करने आये हैं। बाज़ार में अपना सामान बेचकर; अर्थात इस संसार में अपने कर्मों का फल भोगने के बाद , यहां से चल देना है।

...इस दुनिया में कोई साथी नहीं है. पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री आदि सभी सार्थक साथी रिश्तेदार इस संसार में तात्कालिक रिश्ते हैं और सार्थक से संबंधित हैं। इसका संबंध पिछले जन्म से है। सारांश यह है कि यह संसार एक विचित्र घर है और प्राणी यहाँ अतिथि मात्र हैं; या ये दुनिया एक सराय है और हम मुसाफ़िर हैं। हमें इस संसार से मोह नहीं रखना चाहिए।

हमें अपना दिल वहीं लगाना चाहिए जहां से हम आते हैं, या जहां हमारा असली घर है, उस स्थान को कुछ लोग वैकुण्ठ लोक , साकेत लोक , गोलोक , महर्लोक और कैलाश लोक आदि लोकों के नाम से जानते हैं।

संसार एक गंदा व्यवसाय है

यह संसार सर्वथा मिथ्या और निरर्थक है; इसमें कोई दम नहीं है। केले के पत्तों और छिलके को कितना भी छीलो, पत्तों और छिलकों के अलावा उनमें से कुछ भी नहीं निकलता। यह संसार भी उन्हीं की भाँति अभौतिक है। इसमें कुछ भी नहीं है. यह महज एक भ्रम या धोखाधड़ी है. जो लोग इस गंदे धंधे में फंस जाते हैं, वे बुरी तरह बर्बाद हो जाते हैं और अंत में पछताते हैं। इसलिये भाइयो! इस भ्रम जाल से बाहर निकलने का प्रयास करें। बहुत सावधान रहें! इस संसार के सभी सुख व भोग मिथ्या तथा प्राणियों के लिए हानिकारक हैं।

यह चोला दान और ईश्वर की आराधना के लिए दिया गया है। इस दुनिया में आने के बाद हमें अगली दुनिया के लिए भी कुछ करना चाहिए। इसका मतलब ये नहीं कि कोई चिंता ही नहीं होनी चाहिए. , हमें पृथ्वी के प्रत्येक पदार्थ और प्रकृति के प्रत्येक कार्य की आवश्यकता है।

सृष्टि से शिक्षा प्राप्त करें। सूर्य परोपकार के लिए आकाश में भ्रमण करता है। चंद्रमा दान के लिए दिए गए कष्टों को सहन करके संसार में शीतल चांदनी बिखेरता है। अंधेरे में यात्रियों का मार्गदर्शन करने के लिए तारे रात भर तारों को घुमाते रहते हैं। ध्रुव उत्तर दिशा का ज्ञान कराने तथा समुद्र की अथाह गहराई में जहाजों का मार्गदर्शन करने के लिए चमकता है। नदियाँ परोपकार के लिए ही बहती हैं।

वृक्ष परोपकार के लिये ही फल देते हैं। परोपकार के लिये ही शेष जी ने इस विशाल पृथ्वी का भार अपने सहस्त्र पंखों पर उठाया है। उन्होंने अपनी दयालुता और परोपकार के कारण ही पृथ्वी सहित पृथ्वी का भार अपनी पीठ पर उठाया है। भगवान ने परोपकार के लिए बार-बार अवतार लिया और जन्म-मरण का कष्ट सहा।

व्यापारी ने अपने करोड़ों रुपये यज्ञों में खर्च कर दिये। इससे वह गरीब हो गया। उनकी पत्नी ने उन्हें सलाह दी कि आप राजाओं को अपने दो-चार यज्ञों का फल देकर धन लेना चाहिए।

आओ, अपना शेष जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करें। व्यापारी सहमत हो गये। रास्ते में सेठानी ने उसके खाने के लिए कुछ रोटियाँ रख लीं। वह जंगल में पहुंचा और एक पेड़ के नीचे रुक गया। भारी बारिश के कारण वहां सड़क नहीं थी. उसी पेड़ के नीचे एक कुतिया बैठी थी. पिछले कुछ दिनों से बारिश के कारण वह भोजन की तलाश में कहीं नहीं जा पा रही थी; इसलिये वह भूख से मर रही थी। उस कुतिया ने उसकी सारी रोटियाँ काट-काटकर खा ली और वह भूखा रह गया।

वह भूखा-प्यासा राजा के पास पहुंचा और उसे अपनी राम कथा सुनाई। राजा ने शाही ज्योतिषी से पूछा, "इस सेट के किस यज्ञ का परिणाम सबसे अच्छा है?" ज्योतिषी ने कहा – "महाराज! उसने मार्ग में कुतियों को अपनी रोटी खिलाकर जो उपकार किया है, वही सर्वोत्तम प्रतिफल है; आप ही इसे खरीद लीजिए।" व्यापारी उस दान का फल देने को तैयार नहीं हुआ; तब राजा ने उसे कई लाख रुपये देकर विदा किया।

तात्पर्य यह है कि दान और दया के समान संसार में दूसरा कोई गुण नहीं है। इसलिए मनुष्य को निःस्वार्थ भाव से दान करना चाहिए।

प्रथम अवस्था में जीव माता के गर्भ में रहता है। वहाँ वह मल, रक्त, मूत्र आदि गन्दी चीजों के बीच पड़ा हुआ बहुत कष्ट भोग रहा था और हिल भी नहीं पा रहा था। द्वितीय अवस्था - युवावस्था में वह अपनी प्रिय स्त्री से वियोग का दुःख सहन करता है। तीसरी अवस्था - वृद्धावस्था में वह स्त्रियों द्वारा तिरस्कृत हो जाता है और दुःखी रहता है। हे मानव! अगर आपके पास इस दुनिया में थोड़ी सी भी खुशी है तो हमें बताएं।

गर्भावस्था

जीव का शरीर माता के रक्त और पिता के वीर्य से गर्भाशय में बनता है। चार महीने के बाद आत्मा उस शरीर में आती है। उस समय वह हाथ-पैर बांधकर अंधेरी जेल में उल्टा लटका रहता है। उसके मुंह पर झिल्ली के कारण वह न तो बोल सकता है और न ही रो सकता है। जिस स्थान पर वह नौ महीने तक रहता है, गर्भाशय, वह मल, मूत्र, बलगम, स्पर्श, मवाद और कफ आदि महान अशुद्धियों से भरा होता है। वह स्थान गंदा होने के साथ-साथ इतना संकीर्ण भी होता है कि वह वहां ठीक से चल भी नहीं सकता।

उसी गंदे और संकरे स्थान में, जो वास्तव में नरक तुल्य है, बड़ी कठिनाई से वह कई महीने गुजारता है। वह नरक-कुंड के कष्टों से दुखी हो जाता है, वह परमात्मा को याद करता है और उससे वादा करता है कि इस बार मैं जन्म लूंगा तो बिना कुछ किए केवल आपकी पूजा करूंगा। खैर, ईश्वर दया करके उसे बाहर निकालता है; परन्तु बाहर आते ही वह मोह-माया के कारण भगवान को भूल जाता है।

यदि आप भगवान की भक्ति करते हैं तो इस प्रकार करें कि आप भगवान के अलावा किसी अन्य देवी, देवता या सांसारिक वस्तुओं को कुछ न समझें; अर्थात् 'दास जगदीश को छोड़कर सबको झूठा, निकम्मा और नालायक समझो।' बस उसके प्यार में डूब जाओ और उसके प्यार के बदले में कुछ मत मांगो; फिर देखो कैसा मजा आता है

मनुष्य की औसत आयु 100 वर्ष मानी जाती है। इसका आधा भाग रात्रि को सोने में व्यतीत होता है; बाकी में से एक हिस्सा बचपन में और दूसरा हिस्सा बुढ़ापे में खो जाता है। शेष में जो कुछ बचता है, वह रोग, वियोग, दूसरे की सेवा, शोक तथा हानि आदि नाना प्रकार के कष्टों में व्यतीत हो जाता है। जलतरंगों जैसे जीवन में प्राणियों का सुख कहाँ?

मानव जाति को कभी सुख नहीं मिलता

पचास वर्षों में से प्रथम 17 वर्ष बचपन में व्यतीत होते हैं। इस स्थिति में बच्चा पैदा होते ही आश्रित हो जाता है। बच्चा अपने आप उठ, बैठ या चल नहीं सकता। यदि कोई इसे उठा ले तो यह उठ सकता है, अन्यथा यह मल में ही पड़ा रहता है। कोई खाने-पीने को दे, तो खा-पी ले; अन्यथा वह वहीं पड़ा-पड़ा रोता रहेगा। ऐसे में उसे क्या ख़ुशी?

फिर कुछ उम्र में बड़े होने पर पढ़ाई लिखाई की चिंता सताने लगती है। घर में माता-पिता की डांट और स्कूल में शिक्षकों से डर लगता है।इसके बाद युवावस्था आती है. एक महिला वयस्कता में आती है। अगर धन नहीं कमाता तो माता-पिता कहते हैं, हमने तुम्हारी शादी कर दी, हमने तुम्हें जितना हो सके उतना पढ़ाया।अब इंतज़ार करें; अगर नहीं कमाओगे तो पत्नी के साथ अलग हो जाओ।

हम तुम दोनों का खर्च नहीं उठा सकते. यदि कोई व्यवसाय शुरू किया गया है, तो ठीक है; नहीं तो जब तक नौकरी या रोजगार नहीं मिल जाता, बेचारे के चने दिन-रात भुनते रहेंगे। अगर कोई बिजनेस शुरू भी कर दिया जाए तो मालिक खुश है या नाराज इसकी चिंता या फिर बिजनेस से होने वाले मुनाफे की चिंता शरीर को अंदर से जला देती है। बीच-बीच में बीमारियाँ भी हो जाती हैं। दूसरों से मुकदमा चल रहा है. अत: इस स्थिति में भी शांति नहीं है।

अब बुढ़ापा है. बुढ़ापा दुखों का भंडार है। इसमें कई बीमारियाँ दुश्मन की तरह आक्रमण करती हैं, शरीर काम नहीं करता और परिवार के सदस्यों का अनादर होता है। ऐसे में तो और भी ज्यादा दुख होता है. इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राणी को अपने दैनिक जीवन में एक क्षण भी सुख नहीं मिलता।

प्राणी दुःखमय जीवन से संतुष्ट हैं

यद्यपि इस जीवन में बिल्कुल भी सुख नहीं है, एक क्षण के लिए भी शांति नहीं है; फिर भी मनुष्य को ऐसा मोह है कि वह मरना नहीं चाहता; मौत का नाम सुनते ही रूह कांप उठती है. अगर यदि इस जीवन में सुख होता तो क्या पता क्या होता? घोर कष्ट और पीड़ा के बीच भी यदि कोई व्यक्ति मर जाता है तो वह कहता है- हम कुछ न जिए तो अच्छा होता, कुछ दिन और जी लेते!

हजारों वर्ष भी लग जाएं, तो भी मरते समय हम यही कहेंगे, इस संसार में कुछ भी नहीं रहेगा, हम अब आये हैं और अब जायेंगे। जीने की चाहत अब भी बाकी है। हम घृणित जीवन से भी नफरत क्यों नहीं कर सकते?

मानव जीवन में दुःख ही दुःख है; फिर भी मनुष्य इस घृणित जीवन से संतुष्ट क्यों रहता है? उन्हें इस पर घिन क्यों नहीं आती? जिस प्रकार सफाई करने वाले को गंदगी से घृणा नहीं होती, उसी प्रकार मानव जीवन के दुःख जिनके स्वभाव में हैं, उन्हें इस गन्दे और घृणित जीवन से, इस दुःखमय जीवन से घृणा नहीं होती। गंदगी का कीड़ा गंदगी में ही खुश रहता है; जब वह इससे बाहर आता है तो उसे दुख होता है। यही हाल उनका होता है जिनका अंतःकरण मैला होता है। गन्दे घराने में ही सुखी रहते हैं।

मनुष्य का मुख्य कर्तव्य क्या है?

मनुष्य जन्म दुर्लभ है. 84 लाख योनियों को भोगने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। यदि मनुष्य इस मानव जीवन में भी गलतियाँ करता है तो जन्म-मरण के जाल से बचने का उपाय है। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो वह पछताता है और रोता है; परन्तु मनुष्य को यह अवसर जल्दी नहीं मिलता।

उन्हें देखकर वह डर गया और सुरक्षा का स्थान ढूंढने लगा। उसे एक अंधा कुआँ दिखाई दिया, जो घास से ढका हुआ था। और अनेक प्रकार की लताएँ 'लटकी हुई' थीं। कि एक बेल 'उसे लटकाकर उसने अपना सिर उल्टा कर लिया और खुद कुएं में लटक गया।' थोड़ी देर बाद उसने नीचे की ओर देखा तो उसे एक विशाल साँप दिखाई दिया जिसका मुंह खुला हुआ था।

जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो मुझे एक शानदार हाथी खड़ा दिखाई दिया। दस हाथियों के छह सिर थे। उसका आधा शरीर सफ़ेद और आधा काला था। उसके हाथ में जो बेल थी उसे हाथी खा रहा था और दो सफेद और काले चूहे बेल की जड़ों को कुतर रहे थे।

इसका अर्थ है:--वह एक ब्राह्मण प्राणी है. घना जंगल! यही संसार है. काम, क्रोध आदि भयानक जीव इस जीव को नष्ट करने के लिए घूम रहे हैं। स्त्री रूपी पिशाचिनी इस जीव को फंसाने के लिए प्रसाद रूपी फंदा लेकर घूमती है। कुएं में लटका हुआ बैल आयु है। ये जीव उसे पकड़कर लटका हुआ है। कुएं में कालसर्प इस जीव का काल है, वह अपनी घात की प्रतीक्षा कर रहा है; दिन-रात चूहे उम्र की इस बेल की जड़ें कुतर रहे हैं।

वह हाथी वर्ष का प्रतीक है। उनके छः मुख और छः ऋतुएँ हैं। शुक्र और कृष्ण हाथी के दो पहलू हैं। इस प्रकार मनुष्य मृत्यु के कगार पर है। मौत उसे हर पल निगल रही है; लेकिन आश्चर्य की बात है कि इस संकट में भी जब वह मौत के मुंह में है अपने आप को खुश मानता है और इस डर भरी जिंदगी से पूरी तरह संतुष्ट है।

जो बीत गया सो बीत गया, भविष्य के बारे में सोचो

बहुत से लोग कहते हैं कि हमने तो अपना सारा जीवन दुःख और पाप कर्मों में ही व्यतीत कर दिया, हमें ईश्वर का स्मरण तक नहीं रहा, अब हम क्या कर सकते हैं? ये कहना बहुत बड़ी गलती है. जो समय बीत गया वह कभी लौटकर नहीं आएगा; लेकिन जो भी समय हाथ में आए उसे अच्छे कार्यों और भगवान के स्मरण में लगाना चाहिए। यदि बचा हुआ समय व्यर्थ की झंझटों में नष्ट कर दिया जाय तो अन्त में बड़ा पछताना पड़ेगा।

बच्चों के साथ क्या करना चाहिए?

प्रथम तो यह कि आपकी कोई पत्नी, पुत्र आदि नहीं है। वह सराय में मुसाफिर के समान है। यहां आकर रिश्ता जुड़ गया है. हर कोई अपने-अपने तरीके से अपने समय पर रुकेगा। इसका।इसके अलावा, वे आपसे सच्चा प्यार भी नहीं करते। उनका काम आपसे बनता है, आप पाप और प्रेम की गठरी बांधते हैं और वे सुख भोगते हैं।

इसीलिए तो कोई आपको “बाबूजी” कहता है, कोई “चाचा जी” तो कोई “नानाजी” कहता है। अगर आप उनकी जरूरतों को पूरा करते हैं। या फिर अगर आप मांग पूरी नहीं करोगे तो वो आपका नाम भी नहीं लेंगे. ऐसे स्वार्थी लोगों के झूठे प्यार का शिकार होकर, आप अनमोल जिंदगियाँ क्यों बर्बाद करते हैं?

जब आप इस शरीर को छोड़कर परलोक में जायेंगे तो क्या वे आपके साथ वे सब कुटुम्बी जायेंगे ? नहीं । कुछ आपके शव के साथ सड़क तक जाएंगे और कुछ

श्मशान तक। वहां पहुंच कर , तुम्हें जलाकर राख कर देने के बाद सब तुम्हें भूल जायेंगे।

आप भी मुसाफिर हैं और आपकी पत्नी और बेटे भी मुसाफिर हैं। आपकी अगली यात्रा बहुत लंबी है. यह बीच का बिंदु है. आप कर्मों का फल भोगने के लिए यहां रुके थे और अपने कर्मों के कारण आप उन सभी से जुड़े हुए थे। चाहे वे अपनी यात्रा व्यवस्था स्वयं करें या नहीं, आप इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। लेकिन तुम्हें अपनी यात्रा की व्यवस्था अवश्य करनी होगी। मिथ्या भ्रम मत भूलो।

अगर आप बच्चों के लिए रोटी ढूंढ रहे हैं और अगर आप घर में अपने पालन-पोषण और कपड़ों की चिंता करते रहेंगे तो यह चिंता अंत तक बनी रहेगी और कौन सी गाड़ी आपको ले जाएगी या मौत आ जाएगी। उस समय बड़ी कठिनाई होगी। जो लोग ऊँचे होते हैं- वह जीवन भर घरेलू झंझटों में ही उलझा रहा, अन्त में उसका दुर्भाग्य हुआ। ये दरवाजे और घर भगवान के दर्शन या स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति में बाधक होते हैं।

नापसंद आदमी

एक आदमी का एक ही बेटा था ! लड़का जवान हो गया था. वह भी शादीशुदा था. एक दिन पिता ने किसी उद्देश्य से शाम को एक बैठक बुलाने के लिए आमंत्रित किया। दुर्भाग्य से दोपहर को उनके पुत्र की अचानक मृत्यु हो गई। उसने उसके शव को अपनी सीट पर ले जाकर कपड़े से ढक दिया और दरवाजे पर बैठकर शांति से हुक्का पीने लगा। इस समय तक दिन का अंत हो चुका था; दोस्तो, आप जल्दी आओगे। हमारे एक मित्र किसी जरूरी काम से उसी मीटिंग में गये थे. वह बाहर आया और वहाँ एक शव पड़ा देखकर पूछा, “यह क्या बात है?”

उसने कहा--भाई! लड़का मर चुका है. पहले बैठक का काम करो, फिर सब मिलकर उसे श्मशान ले जायेंगे। दोस्त निर्मोही पिता की बात सुनेंगे, उनसे बात

करेंगे। दोनों आश्चर्यचकित थे. उन्होंने कहा – "अजीब आदमी हो तुम! उन्होंने कहा कि उन्हें अपने इकलौते जवान बेटे की भी परवाह नहीं है ?
उन्होंने कहा--'भाई. इसका मुझसे क्या लेना-देना है ? हम सब सराय से वे झूठे हैं. पिछले जन्म के कर्मानुसार एक दूसरे में विलीन हो गए हैं। अपना-अपना समय पाकर हम अपने-अपने रास्ते चल रहे हैं; इसमें परेशान या दुखी होने वाली क्या बात है?" इसी प्रकार गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी लोग जन्म-मृत्यु के जाल से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं और जीवनमुक्त कहलाते हैं।

ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग कौन सा है ?

घर-गृहस्थी में रहने की बजाय, घर-बार त्याग कर जंगल के एकांत हिस्से में रहकर ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करना निश्चित रूप से आसान है। घर में रहने से मन हमेशा कामुक बातों की ओर भागता है। स्त्री को देखकर वासना जागती है; लेकिन मुझे इसे देखने का मन नहीं है. जब ऋषि पराशर ने मत्स्यगंधा को देखा तो उनका मन विचलित हो गया।

जब विश्वामित्र ने मेनका को देखा तो उनका मन खिन्न हो गया। जब शिव ने मोहिनी को देखा तो उनका मन रोमांच से भर गया।इसीलिए अतीत के कई महापुरुष अपना घर-बार छोड़कर जंगल में चले गए और वहीं उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। परंतु जो लोग वन में जाकर भी अपना मन विषयों में लगाए रखते हैं, वे अपने प्रेम का त्याग नहीं करते; जो चाहते हैं वे छोड़ते नहीं, वे प्राणियों से भी बदतर हैं। वे धोबी के कुत्ते की तरह घर के ना घाट के हैं।

त्याग में ही सुख है

जो लोग धन, राज्य, राज्य, पुत्र आदि सब त्याग कर वन में रहते हैं; किसी वस्तु की इच्छा नहीं, खाने के लिए एक पाव आटे की भी आवश्यकता नहीं।उन्हें जहां जगह मिलती है, वे वहीं रह जाते हैं; उन्हें जो कुछ भी मिलता है उससे वे अपना पेट भर लेते हैं, वे वास्तव में खुश रहते हैं।

जो लोग भगवान के मंदिर में या किसी वृक्ष के नीचे लेटे हैं, जिनका शय्या पृथ्वी है, जिनके वस्त्र मृग की सीप हैं, जिन्होंने भोग की सभी वस्तुओं का त्याग कर दिया है; वासना-मुक्त हो गए हैं,--ऐसे कौन से लोगों को सुख नहीं मिलता? अर्थात ऐसा त्यागी सदैव सुखी रहता है।

शरीर नहीं ! मन की शांति से लाभ होता है

कई लोग भगवा वस्त्र पहनते हैं, गले में लंबी माला पहनते हैं, तिलक या भस्म लगाते हैं। परंतु उसका मन सदैव भोग-विलास में ही लगा रहता है। वे अपने शरीर को वैरागियों जैसा बनाते हैं; परन्तु उनका मन उन लोगों के समान है जो भोजन का आनंद लेते हैं, इसलिए उनका जन्म व्यर्थ हो जाता है। आजकल साधु बनना एक तरह का रोजगार बन गया है।

जो लोग कोई मेहनत नहीं करते, वे साधु का भेष बनाकर लोगों को ठगते हैं और उनके घर मनीऑर्डर भेजते हैं। .कई धोखेबाज शहरों में आते हैं और बड़े लोगों के घरों में डेरा डालते हैं, युवा शिष्यों से उपहार लेते हैं, सुंदर महिलाओं को अपने पास बैठाकर उपदेश देते हैं, और उनके चरणों में पैसे के ढेर छोड़ देते हैं। ऐसे लोगों का मन भगवान में कैसे एकाग्र हो सकता है?

विश्वामित्र और पराशर जैसे ऋषि जब हवा और पानी पर रहते हैं तो स्त्रियों को देखकर उनका मन बेचैन हो जाता है। तो फिर रबड़ी-मलाई आदि खाने वालों को स्त्रियों से आसक्ति क्यों नहीं होगी?

जिसके हरिभक्ति से परिपूर्ण शुद्ध हृदय में काम, लोभ और भगवान के प्रति आसक्ति उत्पन्न हो जाती है, वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह के नीच कर्म करता है; तब इसके साथ आने वाली अशुद्धि और बदनामी का वर्णन करना कठिन है। इसका अर्थ यह है कि जिसके हृदय में केवल 'एक ईश्वर' की ही इच्छा होती है, उसका हृदय श्रेष्ठ और पवित्र माना जाता है।

यदि इसके अलावा उसके हृदय में ईश्वर के प्रति अन्य इच्छाएं उत्पन्न हो जाती हैं, उसका हृदय धन, दौलत, राज्य आदि की ओर बढ़ने लगता है तो उसकी खांसी बड़ी बदनामी लाती है।

सारांश : यदि कोई सन्यासी, यति अथवा हरिभक्त सांसारिक वस्तुओं को त्याग कर सांसारिक वस्तुओं के जाल में फँस जाता है, शॉल ओढ़ता है, इत्र लगाता है, रेशम पहनता है तथा घने तकिये पर विश्राम करता है; अतः उसका अपमान अवर्णनीय है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो घर पर रहते हैं और शारीरिक रूप से अपने परिवार के सदस्यों की तरह व्यवहार करते हैं; लेकिन मन को बाकी सब चीजों से हटाकर, मोह को त्यागकर भगवान में ही एकाग्र करता है। ऐसे ही भक्त हुए हैं प्रहाद और अम्बरीष। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तन और मन दोनों से भगवान की पूजा और आराधना करते हैं। नारद और शुकदेव की गिनती ऐसे लोगों में ही होती है। उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और खुद को हरि को समर्पित कर दिया।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तोते की तरह मीठे-मीठे मजाक करते हैं। सीधे-सादे मूर्ख उनके बालों को सहलाते हैं और उन्हें रबड़ी-मलाई और मोहन-भोग खिलाते हैं। जब कामदेव इन वस्तुओं को खाने की जिद करते हैं; फिर ये लोग यौन संतुष्टि के लिए व्यभिचारी औरतों को इधर-उधर से उड़ाकर अपने घर में रख लेते हैं।

हम मन में सोचते हैं कि हम विरक्त हैं और इसी अभिमान में डूबे रहते हैं। चाहता है कि दुनिया उसकी पूजा करे; लेकिन आप घर में रखी स्त्री की पूजा करते हैं. इस प्रकार मनुष्य जन्म का व्यर्थ नष्ट हो जाता है।

जब योगी के मन में कोई आशा नहीं होती, वह किसी से कुछ नहीं चाहता, तब योगी जगत का गुरु होता है, लेकिन जब योगी के मन में आशा और इच्छा उत्पन्न होती है, जब योगी किसी से कुछ चाहता है , तो योगी शिष्य है। जाता है और दुनिया उसके साथ शुरू होती है; इसका मतलब है कि दुनिया उसकी निंदा करती है और उसे सलाह देती है।

इसका मतलब यह है कि सच्चे योगी किसी की इच्छा नहीं रखते पदार्थ; इसलिये वे संसार को कंकड़ के समान तुच्छ समझते हैं; परन्तु जो लोग वासना या अभिलाषा रखते हैं वे संसार को प्रसन्न करते हैं और इस प्रकार सांसारिक लोगों से हीन हो जाते हैं।

आजकल बहुत से ऐसे लोग हैं जो वेद विरुद्ध कार्य करते हैं, मिथ्या विश्वास फैलाते हैं, झूठ बोलते हैं तथा बगुले व बिल्ली के समान आचरण वाले हैं। गृहस्थों को वाणी से भी उनका आदर नहीं करना चाहिए। ठगों को सम्मान देने के कारण वे ठग और मित्र बन जाते हैं।

बढ़ रहे हैं। उनमें से कुछ मानव गुरु की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं और अपनी पूजा करवाते हैं। कोई अपने को कबीरपंथी कहता है, कोई नानकपंथी, कोई रामानुजी तो कोई दादूपंथी। इन सम्प्रदायों से कोई लाभ नहीं है। जब तक आत्म-ज्ञान नहीं होता, तब तक कोई सिद्धि या मुक्ति नहीं होती; इसलिए मन को हर चीज से हटाकर आत्मनिरीक्षण पर केंद्रित करना चाहिए।

दिखावा करने से मनुष्य का जीवन व्यर्थ हो जाता है। यतियों द्वारा ही सारा काम किया जाता है, कष्ट भी उन्हीं की तरह सहे जाते हैं; लेकिन नतीजा कुछ नहीं मिलता. आत्मज्ञान अथवा आध्यात्मिक विचारों के बिना कल्याण नहीं है। गृहस्थों को भी ऐसे ठगों का सम्मान नहीं करना चाहिए। ऐसे कृत्रिम साधु नरक में जाते हैं और अपने शिष्यों को भी नरक में खींच ले जाते हैं।

संन्यासी का मन किसी के प्रेम में नहीं फंसना चाहिए अथवा किसी के प्रेम के बंधन नहीं फंसना चाहिए; इसीलिए धार्मिक ग्रंथों में भिक्षुओं को एक दिन से ज्यादा एक गांव में रहने की इजाजत नहीं है।निषिद्ध लिखा है।

जो योगी अपने मन को वेदांत वाक्यों या उपनिषदों या ब्रह्मविद्या में लीन रखता है, जो केवल भिक्षा के भोजन से संतुष्ट रहता है, जो अपने मन को दुःख और शोक से मुक्त करके संतुष्ट रहता है और जो कोपिन धारण करता है वह भाग्यशाली है।

जो केवल वृक्ष की जड़ में आश्रय लेता है, जो भोजन के लिए अपने दोनों हाथों का उपयोग नहीं करता, जो कैवल्य आत्मा की तरह लक्ष्मी की निंदा करता है, अर्थात जो प्रशंसा और धन से दूर रहता है। धन्य है वह योगी जो कौपीन धारण करता है।

जो अपनी आत्मा के आनंद में मग्न रहता है, जो आंख, कान, नाक, जीभ आदि इंद्रियों के विषय सुखों का त्याग करके खुश रहता है और जो आत्म-साक्षात्कार के बाद खुश रहता है और जो जन्म लेने के दिन खुश रहता है और रात्रि में ब्रह्मा का दर्शन करके वह योगी प्रसन्न होता है।

हम उन बुद्धिमान, शुद्ध ज्ञानी, ब्राह्मणवादी लोगों के कठोर व्रत को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं, जो विषय-वस्तु, धन आदि से मुक्त हैं। वे सोना, चांदी, स्त्री, पुत्र आदि को तुरंत त्याग देते हैं और फिर कभी उनकी इच्छा नहीं करते हैं।

जो सत्य और असत्य पर विचार करते हैं, शरीर और आत्मा को अलग-अलग समझते हैं, इस संसार को स्वप्न समझते हैं और इस संसार की झूठी चमक-दमक से आकर्षित नहीं होते, वे "ज्ञानी" कहलाते हैं। जिनके ऊपर से मोह का पर्दा हट जाता है, उन्हें यह पता चल जाता है कि शरीर नाशवान है और आत्मा शाश्वत एवं अविनाशी है, उन्हें ईश्वर के दर्शन होने लगते हैं।

भगवान का ध्यान करने में जो आनंद मिलता है, उसकी बराबरी त्रिभुवन के सभी सुख-ऐश्वर्य भी नहीं कर सकते। ऐसे लोग खुद को इस दुनिया से क्यों जोड़ने लगे? जब तक उनके पास ज्ञान न हो; उनकी आंखों से माया का पर्दा नहीं हटता, शरीर और आत्मा का अंतर मालूम नहीं होता, तब तक वे इस सांसारिक जाल में ही फंसे रहते हैं; जहां से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और संसार की वास्तविकता समझ में आयी, उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया।

एक बार छोड़ने के बाद दोबारा उसकी चाहत नहीं रखते, क्योंकि समझ कर छोड़ देते हैं; वे इसे मजबूरी में या किसी के समझाने पर या दुकानदारी के लिए नहीं छोड़ते, ताकि उनकी वासना इसमें बनी रहे।

जो लोग धन कमाने या पूजा-पाठ के लिए अपना घर और ग्रह छोड़ देते हैं, उनका मन सांसारिक सुखों में ही लगा रहता है। वे न तो यहां रहते हैं और न ही यहां आते हैं। वे 'घोबी का कुत्ता घर का न घातक' या 'खुदा ही मिलता न विसाले सनम' या 'दोनों दुविधा में हैं, न माया मिली न राम' जैसी कहावतें गिनाते हैं।

यानि यहां वे अपने परिवार, पत्नी, बेटे और अपने कुछ काम छोड़ देते हैं और दूसरी तरफ वे भगवान की पूजा नहीं करते हैं। वे आधार के मध्य में हवा के बवंडर या भूल भुलैया में घूमते पत्ते की तरह चक्कर लगाते रहो।

यदि वह अपने घर में ही रहता तो अपने कुल के अनुसार कार्य करता और महात्माओं की संगति में रहकर उनकी सेवा करके ईश्वर की आराधना करता, संसार की असारता, स्वजनों के स्वार्थ तथा स्वार्थों का ज्ञान प्राप्त करता। परमेश्वर की महिमा।

प्रल्हाद, जनक और असबरीश आदि की भाँति उन्हें घर पर रहकर ही सिद्धि प्राप्त होती। अज्ञानी लोग, पूर्ण वैराग्य और ज्ञान से रहित, अपना घर छोड़कर जंगल में चले जाते हैं; परन्तु उनकी वासना और स्नेह अपने परिवार के सदस्यों या अन्य स्त्रियों या धन के प्रति ही रहता है; इसीलिए सांसारिक लोगों की निंदा के डर से वे छिपकर सांसारिक सुखों का आनंद लेते हैं और ईश्वर में ध्यान नहीं लगाते।

इस प्रकार उनका लोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं।वे न तो सांसारिक सुख मांग सकते हैं और न ही स्वर्ग या मोक्ष। संक्षेप में, व्यक्ति को संसार से पूर्णतया विरक्त होने के बाद ही संन्यास लेना चाहिए और एक बार त्यागी बनने के बाद दोबारा संन्यासी नहीं बनना चाहिए। जिसने त्याग किया है और विषयों में वासना रखता है, वह अत्यंत तुच्छ है।

दोनों की दुनिया में गंभीर दुविधा है। प्रत्येक मनुष्य को यह समझना चाहिए कि यह संसार वास्तव में माया का जाल है। यहां कोई नहीं है. सबके अपने-अपने मतलब हैं. मतलब अगर नहीं तो कोई किसी का नहीं।

सभी स्वार्थी लोग रिश्तेदार हैं; बिना स्वार्थ के कोई भी व्यक्ति नहीं होता। जब तक पेड़ पर फल रहते हैं, तब तक पक्षी उस पर रहते हैं; जहां पेड़ पर फल लगते हैं, वे उसे छोड़कर दूसरी जगहों पर उड़ जाते हैं। सारे संसार के साथ भी यही स्थिति है। सब कुछ उचित है. जो जीवित हैं वे सब मित्र हैं; हमारे मरते ही सारा प्यार खत्म हो जाता है।

जो स्त्री अपनी अर्धांगिनी कहलाती है, जो पुरुष को अपना प्रियतम कहती है, उसे गले लगा लेती है और उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हो जाती है, वह सांस लेते ही उससे डरने या डरने लगती है। रोती भी है तो अपनी ख़ुशी के लिए रोती है; उसके लिए मत रोओ. और रिश्तेदार - माता-पिता, बहन, भाई आदि भी

सांस फूलते ही कहने लगते हैं - "जल्दी उठाओ, अब इसे घर में रखना संभव नहीं है।"

मुझे इस अवसर की एक कहानी याद है। पाठकों के लाभ के लिए इसे नीचे लिखा गया है:--

हर कोई एक जीवित साथी है

एक सेठ का लड़का किसी महात्मा के पास जाता था। सेठ को डर था कि कहीं उसका बेटा संन्यास न ले ले; इसीलिए उन्होंने अपने बेटों और बहुओं से कहा कि किसी तरह नियंत्रण रखो; जिससे महात्मा का सानिध्य छूट जाएगा। उस दिन के बाद से लड़के की पत्नी उसकी और भी अधिक सेवा करने लगी; वह उसके मन को अपने हाथों में पकड़ने लगी।

जब भी लड़का घर से बाहर जाता तो वह कहती, "मैं तुम्हारी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकती. एक क्षण में ही मेरे प्राण दुखने लगते हैं, अत: कृपया मुझे छोड़कर कहीं मत जाओ।

लड़का महात्मा के पास जाने से अवश्य बचता था; लेकिन कभी-कभी वह चला जाता था. एक दिन मैं बहुत दिनों के बाद पहुंचा. महात्मा ने कहा – "भाई, तुम आज या कल क्यों नहीं आते?" उन्होंने कहा--"मेरी पत्नी मुझसे बहुत प्यार करती है। उसे मेरे बिना एक क्षण भी रहना सहन नहीं होता; यह आने का तरीका नहीं है. महात्मा बोले – "भाई ! ये झूठी कहानियाँ हैं. इस दुनिया में कोई किसी का नहीं होता. विश्वास न हो तो परीक्षण कर लो।

महात्मा ने कहा- "आज तुम घर जाकर कहो, मेरे पेट में बड़ा दर्द है।" इसके बाद सांस भरते हुए नीचे गिर जाएं; लेकिन पहले यह बताओ कि अगर मैं मर जाऊं तो किसी महात्मा को बुलाए बिना मुझे जलाना मत [" लड़का घर पहुंचा और पेट दर्द के कारण चिल्लाने लगा। कुछ देर बाद वह जमीन पर गिर पड़ा और अपने माता-पिता से कहने लगा, "अगर मैं मर जाऊं तो बिना ऐसे-ऐसे साधु-संतों को बुलाए और उन्हें दिखाए मुझे मत जलाना।" इसके बाद उन्होंने राहत की सांस ली।

जब घर वालों ने उसे देखा तो कहा, “अब इससे कोई मतलब नहीं, लाओ काठी और कफ़न तैयार करो और श्मशान घाट के लिए तैयार हो जाओ।” इतने में उनकी मां बोलीं, पूतना ने किसी महात्मा को बुलाने को कहा था। अत: पहले उन्हें बुलाओ।

सेठ ने एक आदमी को महात्मा के पास भेजा। वह तुरंत आ गया. उन्हें देखते ही सेठ ने कहा, “मैं मर भी जाऊँ तो कोई हानि न होगी; लेकिन मेरा बेटा फिर से उठे, यही मेरी इच्छा है।” सेठानी और लड़के की पत्नी ने भी यही बात कही। महात्मा ने कहा, “मैं तुम्हें एक पैकेट दूंगा।” “तुम में से जो कोई उसे खाएगा वह मर जाएगा और लड़का जीवित हो जाएगा।”

ये बात सुनते ही सभी बगलें झांकने लगे और बहाने बनाने लगे. तब मद्दात्मा ने कहा – “यदि तुम सब लोग नहीं खाओगे, तभी मैं खाऊँगा।” यह कहकर महात्मा ने पुड़िया खा ली और लड़के की साँसें ठीक करके उसे होश में ला दिया; लड़के ने सारा हाल सुना। सुनते ही उसे संसार के दुःख का यथार्थ हाल मालूम हो गया और वह घर छोड़कर वैरागी बन गया।और उन्होंने घर छोड़कर सन्यास धारण कर लिया।

संत निरंतर उपदेश देते रहते हैं। तुम्हारे भूरे बाल सफेद हो गये हैं; मौत ने अपना संदेश भेज दिया है. अरे मूर्ख मन! आज या कल तुम जाग जाओगे। लेकिन अफसोस. बहुत सारी ख़बरें पाकर भी तुम्हें इसका एहसास नहीं होता और अब भी तुम अपना स्नेह नहीं छोड़ते। अरे मूर्ख! कितने गुजर गये तेरी आँखों देखते देखते; क्या तुम यहीं रहोगे? इस संसार में सदैव कौन रहता है? तुम्हें अब भी भगवान की याद क्यों नहीं आती?

अरे अंधबुद्धि ! अपने काम-धंधे में व्यस्त रहते हुए तुम्हें होश नहीं रहता, वह तुम्हारे बाद सबसे पीछे आता है और तीतर को दबा देता है, जैसे बगुला मछली को निगल जाता है, जैसे मकड़ी मक्खी पर घात लगाकर बैठ जाती है। व्यस्त रहता है, जैसे साँप चूहे को पकड़ लेता है; उसी तरह वक्त भी तुम्हें ताना देना चाहता है. अरे लापरवाह आदमी! होश में आओ और भगवान को याद करो।

अगर यह मेरा शरीर है, यह मेरा घर है, यह सब मेरा परिवार है, यह मेरी संपत्ति है, तो मैं हर तरह से एक बड़ा आदमी हूं। सभी मेरे आदेश पर चलने वाले सेवक हैं।मैं अपनी पत्नी का बहुत प्रिय हूँ; मेरे पास कुछ उच्च वंश है; मेरे पिता और दादा ऐसे प्रसिद्ध लोग हैं; मैं जगत की ज्योति हूं; इस प्रकार मनुष्य अपने बारे

में डींगें हांकता है। चन्द्रदास जी महाराज कहते हैं, मूर्ख ! हे मन, तू सदा ये मेरा ये मेरा ही रटते रहता है; परन्तु वह नहीं जानता कि वह स्वयं मृत्यु का चारा है।

एक आदमी घन को एक साथ रखता है और कहता है, यह एक दिन मेरे काम आएगा। अरे मूर्ख! तुम्हें मरने में देर नहीं लगेगी; कुछ ही समय में, पानी के बुलबुले की तरह, आपका जीवन नष्ट हो जाएगा। आपका पैसा यहीं रहेगा; जाते समय तुम एक पैसा भी अपने साथ न ले जाओगे; जैसे वह खाली हाथ आया था, वैसे ही खाली हाथ वापस जायेगा। अरे मूर्ख! यदि दोबारा मौका न मिले तो दान या धार्मिक दान करें। "सुन्दरदास" जी सावधान करते हैं, यदि तुमने इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया तो अन्त में पछताओगे।

बुढ़ापे की तस्वीर

मनुष्य का बुढ़ापा सचमुच दुःखों की खान है। .जिस तरह से दुश्मन घात लगाए बैठे रहते हैं और मौका मिलते ही हमला कर देते हैं; जवानी में छुपी रहती हैं ऐसी ही बीमारियाँ, लेकिन बुढ़ापे की कमजोरी देखते ही ये व्यक्ति पर आक्रमण कर देते हैं। बुढ़ापे में शरीर बेकार हो जाता है, इंद्रियां बेकार हो जाती हैं, आंखें देख नहीं पातीं, कान सुन नहीं पाते, पैर चल नहीं पाते और व्यक्ति थक जाता है।

हर समय लगातार खांसी बनी रहती है; दांतों में बहुत दर्द होता है और दांत हिलते और खर्राटे लेते हैं। कोई भी कठोर वस्तु नहीं खाई जा सकती. जरा सी भी सख्त चीज दांतों के नीचे आ जाए तो सांस फूलने लगती है। जब कोई व्यक्ति दांत के दर्द के कारण अपना सिर और कंधे हिलाने लगता है तो उसे मृत्यु की याद आने लगती है।

जिन दांतों से मैं अपनी जवानी में खिलखिलाकर हंसा करता था करते थे, अब बुढ़ापे में वही दांत हिलते हैं और रुलाते हैं।

गरीबी बुढ़ापे में मौत

यदि मनुष्य युवावस्था में प्रचुर धन कमा कर देवता हो जाता है, तो बुढ़ापा आनन्द से बीतता है; घरवाले हलवा और मोहन-भोग खिलाते, गर्म दूध या कुछ और पिलाते। और ऐसी वस्तुएँ बनाओ जिन्हें आनन्द से खाया जा सके; यदि धन न हो, तो घर के सब लोग सब प्रकार से अनादर करते-और सूखे टुकड़े आगे रख देते; तुम चाहो तो बूढ़ा खायेगा, चाहो तो न खायेगा।

यदि बूढ़े आदमी के पास पैसा है, तो वह, उसका बेटा, बेटी और दामाद हर समय बूढ़े आदमी के सामने खड़े रहते हैं; मेरे मुँह से कुछ निकलता नहीं और काम हो जाता है। अगर बूढ़ों के पास पैसा न हो तो हर कोई उनका साथ छोड़ देता है। क्योंकि ये दुनिया स्वार्थी है; बिना स्वार्थ, बिना मतलब और बिना पैसे के कोई बात नहीं करता। इसी माध्यम से लोग एक-दूसरे के रिश्तेदार और मित्र बने रहते हैं; वस्तुतः कोई किसी का नहीं होता।

एक बूढ़े व्यापारी की दुर्दशा

किसी नगर में एक बड़ा व्यापारी रहता था। उन्होंने अपनी युवावस्था में बहुत सारा धन जमा कर लिया था। बुढ़ापे में उनके बेटों ने उनकी सारी संपत्ति छीन ली। बूढ़े के कमरे में एक टूटी खाट पर एक पुरानी फटी हुई चटाई बिछाकर डाली गई थी। उसने हाथ में एक छड़ी रख दी और कहा कि घर में कोई चोर, कोई उचक्का, कोई कुत्ता, कोई बिल्ली न आये। घर में सभी के खाना खा लेने के बाद बहुएँ बचा हुआ खाना एक छोटी प्लेट में रखतीं और बूढ़े को दे देतीं।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गए. यह भी बेटे-बेटियों को पसंद नहीं आया। उन्होंने कहा- "मेरे ससुर की वजह से मुझे बार-बार बाहर जाते समय और अपने बेटे के बारे में घूंघट पहनना पड़ता है, इससे बहुत दर्द होता है। इन्हें ऊपरी अलमारी में रखें और इन पर घंटी बजा दें तो बेहतर रहेगा।

इसे दिया जाए. जब उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत होगी, तो वे यह घंटी बजाएंगे।" कलियुग में स्त्री की आज्ञा भगवान की आज्ञा के बराबर मानी जाती है। बेटों ने सुन लिया कि उनके घर वाले क्या कह रहे हैं और उनकी बात सुनने के बाद बढ़े ने ऊपर जाकर उन्हें घंटी दी। जब बूढ़े को भोजन, पानी आदि की आवश्यकता होती, तो वह घंटी बजाता।

कुछ दिनों के बाद एक दिन बूढ़े का पोता ऊपर चला गया। बूढ़ा उसे खाना खिलाता रहा।..खेलते-खेलते वह घंटी ले आया। अब तो मुश्किल हो गई; बिना खाये पिये ही वृद्ध की मौत हो गयी. 24 घंटे बीते और किसी को शाम की याद आई। देखा तो बूढ़ा राम चला गया था। बेटों ने उन्हें श्मशान ले जाकर मुखाग्नि दी। 'बुढ़ापे में ऐसा दुर्भाग्य होता है।

आसक्ति का त्याग करना ही श्रेयस्कर है

मोह और आसक्ति ही सांसारिक बंधन का कारण है। समझदार लोग समझते हैं कि यहाँ कोई मज़ा नहीं है। हम सभी सराय के मेहमान है। रास्ते में चलते-चलते वे एक जगह जमा हो गये। जब हमारा समय आता है तो हम अपने रास्ते पर चलते हैं। कोई किसी की पत्नी नहीं है और कोई किसी का पति नहीं है. न कोई किसी का बेटा है, न बाप; कोई किसी का नहीं है।

वह भतीजा है, चाचा आदि नहीं। सब स्वार्थ की जंजीर में बंधे हुए हैं। फिर इन खाथियों का साथ भी हमेशा नहीं रहता. आज हम साथ हैं तो कल अलग भी हो जायेंगे. जन्म से मृत्यु के साथ, मृत्यु निश्चित है और संयोग के साथ, अलगाव स्थायी है।
जब कोई पुरुष अपनी पत्नी से अलग हो जाता है तो उसे बहुत दुख और पीड़ा का अनुभव होता है। इसी प्रकार किसी की मृत्यु पर भी बड़ा दुःख होता है

बेटा। लेकिन जो लोग ज्ञानी और दार्शनिक हैं वे इस दुनिया की आवाज़ों की वास्तविकता को जानते हैं: या तो वे ग्रहों को जानते हैं। वे अपने रिश्तेदारों के साथ रहते हुए भी उनके प्रति स्नेह छोड़ देते हैं या उनमें स्नेह नहीं रखते। जो लोग परिवार में रहते हुए भी परिवार में मोह नहीं रखते, वे जीवन से मुक्त हैं।

शोक और चिन्ता करना व्यर्थ है

यह संसार मिथ्या एवं नाशवान है। यहां कोई नहीं है. फिर अपने दुर्लभ मानव शरीर को व्यर्थ की चिंताओं में बर्बाद करना और जिस काम के लिए इस संसार में आये हो उस पर ध्यान न देना वास्तव में बहुत बड़ी मूर्खता है। अगर बेटा मर गया तो क्या होगा? अगर महिला मर गयी तो क्या होगा? अगर पैसा ख़त्म हो गया तो क्या होगा?

जैसे कोई पुत्र-पत्नी या मित्र-सम्बन्धी संसार से चला गया हो, वह मर जाए; इसी प्रकार हम भी एक दिन मरेंगे; फिर वे चले जाते और हम खड़े रह जाते तो दुःख क्यों होता? अभी भी शोक मना सकता है; लेकिन जब सबको जाना है तो कौन किसका शोक मनाये ?

मौत से डरने या घबराने की जरूरत नहीं है

जब तक मनुष्य को शरीर और भौतिक या शरीर और आत्मा के पृथक्करण का ज्ञान नहीं होता, जब तक वह यह नहीं समझ लेता कि आत्मा अमर, अविनाशी, नित्य और शाश्वत है; आत्मा कभी नहीं मरती, पानी उसे डुबा नहीं सकता, आग उसे जला नहीं सकती, हवा उसे चूस नहीं सकती, बंदूकें और तलवारें आदि उसे मार नहीं सकतीं, तब तक वह डरा हुआ और घबराया हुआ रहता है।

शरीर ही नष्ट होता है, आत्मा नहीं; मरना एक वस्त्र उतारकर दूसरा पहनने के समान है। शरीर, स्व -धर्मशाला तो बस ठहरने की जगह है। यदि यह धर्मशाला टूट गई तो वह आत्मा दूसरे लोक में चली जाएगी - ऐसा ज्ञान हो जाने पर मनुष्य के मन में कोई भय व भावना नहीं रहती। दुःख और दुःख का सम्बन्ध शरीर से है आत्मा से नहीं। आत्मा को दुःख और सुख छू नहीं पाते क्योंकि वह निराकार है। यह ज्ञान हुआ कि तुम अपने से दूर भागते हो।

जी हां, आपको अपनी मौत को हमेशा याद रखना चाहिए क्योंकि मौत को याद रखने से पाप नहीं होते। ईश्वर की शरण में शांति प्राप्त करना अच्छा लगता है; लेकिन मौत से कभी नहीं डरना चाहिए. मृत्यु के नाम से केवल वे ही कांपते हैं जो शरीर और आत्मा के बीच अंतर नहीं समझते।

लेकिन जो लोग शरीर और आत्मा को अलग-अलग मानते हैं, जीवन में कोई पाप नहीं करते, हमेशा सबका भला करते हैं और हर पल भगवान को याद करते हैं, वे मुस्कुराते हुए अपने वस्त्र त्याग देते हैं।

भगवान की शरण में ही सुख है

इस संसार में मनुष्य को किसी भी स्थिति में सुख नहीं मिलता। ..._फिर बुढ़ापा हर तरह से दुखों की खान है। इसलिए व्यक्ति को जवानी में अपने मन को बातों से दूर रखकर आने वाले बुढ़ापे के बारे में सोचना चाहिए और अपने परिवार के नाम से मोह नहीं रखना चाहिए। दोस्तो, कम से कम जवानी के उतार-चढ़ाव में।

मनुष्य को सारी गंदगी छोड़कर जंगल में जाकर भगवान की भक्ति और आराधना करनी चाहिए। बार-बार दबाने और समझने से मन शांत हो जाता है और धीरे-धीरे ही सही लेकिन प्यार भी आराम करना जानता है।

अभ्यास के फलस्वरूप मन को ईश्वर में केन्द्रित रखने से अन्त में मनुष्य मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है; इसका मतलब है कि व्यक्ति जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। परमात्मा या ईश्वर के प्रति समर्पण से जो आनंद मिलता है, उसे लिखित रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

रहस्योद्‌घाटन - बुढ़ापे का चित्र देखना, मृत्यु से डरना, संबंधियों के संबंध को मिथ्या समझना, विषय-वासना, पुत्र, धन-संपत्ति का त्याग करना तथा मोह छोड़कर त्याग पर ध्यान दो। अच्छा होगा यदि तुम्हारे शरीर में शक्ति हो तो तुम अपना घर-बार छोड़कर जंगल में चले जाओ और सबसे नाता तोड़कर सबसे नाता जोड़ लो।

एकमात्र भगवान. उसका रिश्ता ही सच्चा रिश्ता है; और सब रिश्ते झूठे हैं. उसकी शरण लो मौत का दर्द हमें नहीं सता सकता. यदि कोई मनुष्य ईश्वर को भूलने से पीड़ित है और सांसारिक शत्रुओं से परेशान है।

लेकिन जो भगवान के चरण कमलों में चला जाता है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता और दुःख-दर्द उससे हजारों कोस दूर भाग जाते हैं। याद रखें, भगवान की शरण में जाने वालों से मृत्यु और यमराज भी डरते हैं और रिद्‌धि-सिद्‌धि उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ी रहती है।

कम से कम बुढ़ापे में तो भगवान को याद करो

जो लोग बुढ़ापे के बाद भी परलोक बनाने की चिंता नहीं करते, संतान के मोह में पड़ जाते हैं और पारिवारिक जीवन के जाल में उलझ कर अपना जीवन पूरा कर लेते हैं, उन्हें भयंकर हानि और निंदा का सामना करना पड़ता है।

बूढ़ा ब्राह्मण, बूढ़ा गृहस्थ, दरिद्र कामी, धनवान तपस्वी, कुरूप वैश्या और स्वेच्छाचारी राजा - ये छह ही संसार में अपमान और लोक-निंदा का कारण बनते हैं।

मनुष्य नाटक के अभिनेता के समान है; जो क्षण भर में बालक; एक क्षण में वह युवा और कामी हो जाता है, एक क्षण में वह दरिद्र हो जाता है और एक ही क्षण में धनवान हो जाता है। तब; अंत में, बुढ़ापे के कारण घिसी हुई और सिकुड़ी हुई त्वचा का आभास होता है; फिर यमराज की नगरी में छिप जाता है।

जैसे रंगमंच में एक ही अभिनेता कभी बच्चा, कभी जवान, कभी बूढ़ा, कभी अमीर, कभी गरीब, कभी राजा, कभी भिखारी, कभी साधु, कभी महात्मा और कभी बीमार होता है।

वह स्वस्थ, त्यागी और ज्ञानी , भोगी और योगी, गृहस्थ और तपस्वी होकर तरह-तरह के तमाशे दिखाता है और बाकी में नाटक के पर्दे के पीछे छिप जाता है; इसी प्रकार, मनुष्य, बच्चा और युवा, अमीर और गरीब, पैगम्बर होने का दिखावा करते हैं। अन्त में जीवन-नाटक का अंतिम दृश्य-बुढ़ापे का रूप-दिखाकर वह यमपुरी के परदे के पीछे छिप जाता है; अर्थात वह इस संसार से चला जाता है।

हे भगवान, मेरे शेष दिन किसी पवित्र जंगल में “शिव शिव; साँप और फूलों की माला, बलवान शत्रु और मित्र, कोमल फूलों की शय्या और चट्टान, मणि और पत्थर, तिनका और सुन्दर स्त्रियों का समूह, ये सब मुझे दिखाई दें, मुझे क्या करना है? उनके साथ? यही मेरी इच्छा है मन, मैं सब में समान हूं।

प्रकटीकरण - मोहग्रस्त मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह अपने मन को ऐसा बना दे कि वह साँप और हार, शत्रु और मित्र, पुष्प-शय्या और पत्थर, मणि

और पत्थर तथा तिनके और तिनके में अंतर कर सके।स्त्री-पुरुष सभी एक जैसे दिखने लगे; मुझे इनमें कोई अंतर मत बताना; मैं एक समदर्शी व्यक्ति बनूंगा और अपना शेष जीवन पवित्र वन में "शिव शिव शिव" का जाप करते हुए बिताऊंगा।

यह राज्य सर्वोत्तम राज्य है. इसमें आनंद है. इस अवस्था में दुःख-शोक का नाम ही नहीं रहता; परंतु यह अवस्था उन्हीं को प्राप्त होती है जिन पर परमपिता की कृपा होती है या जिनके पूर्व जन्मों के संचित पुण्य उभर कर सामने आते हैं।

मौत को याद करना. मृत्यु का स्मरण करने से पापों का निवारण होता है और त्याग की प्राप्ति होती है। श्मशान में जाने मात्र से ही व्यक्ति के मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाता है, लेकिन वह घर आकर वह सब कुछ भूल जाता है और फिर अपने विषयों में व्यस्त हो जाता है। एक राजा केवल स्वयं को पाप और अन्याय से बचाने के लिए! मैंने अपने दरबार में ठीक सामने एक कोठी बनवा लिया था, ताकि लोगों पर निगाह रखकर कोई अन्याय न करूँ। मृत्यु स्थायी है।

सारी यात्राएँ स्थगित की जा सकती हैं, लेकिन मृत्यु को टाला नहीं जा सकता, वह आएगी ही; चाहे वो आज आये या कल. जो जन्मा है उसे मरना ही होगा। जो मरने के बारे में भूल जाते हैं। जिन्हें यह याद नहीं रहता कि वे दो दिन में मरेंगे या दस दिन में, वे ही पाप कर्म करने वाले होते हैं और वे ही लोग हैं जिन्हें संसार से वैराग्य नहीं होता।

जो लोग हर पल मृत्यु को देखते हैं, उनका मन नश्वर वस्तुओं जैसे कामुक सुख या पत्नी, पुत्र, घर, छत आदि से जुड़ा नहीं होता है। मन को संसार से हटा देना "वैराग्य" कहलाता है।सांसारिक सुखों के प्रति आसक्ति दुःख का कारण है और उनसे वैराग्य सुख का कारण है। दूसरे शब्दों में इसे समझें- जिसे संसार से प्रेम है, वह अनेक प्रकार के दुःख भोगता है।

और जिसे संसार में 'प्रेम' नहीं है, जो संसार का त्याग कर देता है, उसे परम सुख प्राप्त होता है। त्याग के अतिरिक्त संसार में अन्यत्र कहीं भी सुख नहीं है, यह निश्चित है।प्रत्येक व्यक्ति का जन्म पारिवारिक जीवन से होता है। घर-परिवार में हमेशा खुशियां बनी रहें, यह संभव नहीं है। इसमें हमेशा कुछ न कुछ दुःख रहता है।

कभी कोई लड़का मर जाता है, कभी कोई स्त्री मर जाती है, कभी धन नष्ट हो जाता है, कभी कर्ज का बोझ सिर पर आ जाता है, कभी शत्रु सताते हैं; इसलिए, मनुष्य कुछ हद तक त्याग का अनुभव करता रहता है; लेकिन यह धीमा वैराग्य

है. जब मनुष्य कष्ट भोगता है तो उसे त्याग का अनुभव होता है; लेकिन जैसे ही दुख समाप्त होता है और सुख का क्षण आता है तो त्याग नहीं होता, बल्कि त्याग का मूल कारण पारिवारिक जीवन ही होता है।

रामचन्द्र जी और वशिष्ठ जी जैसे महापुरुषों ने अपने घर में ही वैराग्य प्राप्त कर लिया था।संसार में तीन प्रकार के लोग होते हैं:- (1) कंजूस और आलसी, (2) कामुक, (3) उदार और मेहनती। इनमें पहला प्रकार है आलसी और कामचोर और कभी-कभी दैवीय-। पहुंच भी नहीं सकते; क्योंकि यह हाथ से बनाया गया उपहार नहीं है. और वे महात्माओं तक अपने पैरों से नहीं पहुंच पाते थे।

दो प्रकार। -पीड़ित व्यक्ति अंधा है। वे न दान देखते हैं, न ईश्वर; इसलिए वे भगवान की पूजा नहीं कर सकते. तीव्र किस्म के लोग उद्योगपति और दान देने वाले होते हैं। वे "अपने हाथों से दान करते हैं और अपने पैरों से चाट कर वे महात्माओं के होठों तक पहुँचते हैं; अतः सत्संग के कारण उन्हें पता चलता है।

उनका अंतःकरण शुद्ध हो जाता है, इसीलिए उन्हें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता । जो पुरुष दिन-रात अपने स्त्री-पुत्रों की सेवा में लगे रहते हैं, जो रात-दिन उनके कल्याण की चिंता में लगे रहते हैं, वे कभी सत्संग में नहीं आते; तभी तो वह औरत- बेटों की चिंता करते-करते वे मरते हैं और फिर जन्म लेते हैं और फिर मर जाते हैं। उनके लिए कोई मुक्ति नहीं है।

जब यह जीव अहंकार और मोह का त्याग नहीं करता। जब तक मनुष्य के मन में "मैं और तू" का द्वंद्व रहता है, जब तक उसका प्रेम अपनी पत्नी, पुत्र, घर, बाजार आदि के प्रति बना रहता है, तब तक उसे सुख नहीं मिलता।

हे प्रेम पथ के प्रिय! मैं आपके चेहरे में भगवान का जादू देखता हूं। आपका चेहरा सृजन का अद्भुत नमूना है. तेरा हुस्न देखकर मेरे दिल से दिल निकल जाता है... फिर तो तेरा बनाने वाला तुझसे भी बड़ा होगा; अत: मैं तुम्हारे बदले उस जादूगर से प्रेम क्यों न करूँ? क्योंकि वह मायावी सत्य है और उसकी माया मिथ्या है।

बहुत से लोग ईश्वर की प्रकृति या प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और भगवान के अनन्य भक्त बन जाते हैं। और अंत में अपना कल्याण कर लेते हैं।

<u>समाप्त</u>